

॥ श्री हरिवंस चरित्र ढाळ सागर ॥

पंडित श्री गुणसागर सूरि विरचित
श्रीकृष्ण, बलदेव, नेमिश्वर, सांव, प्रद्यु
म्न, पांडवादिकोनुं चरित्र अति सुरस

ढाळा राग रागीणी युक्त

ओ समग्र ग्रथ
जैन धर्मी श्रावक लोकाने चणवा
वाचवाने अर्थे योग्य जाणीने

नाना दादाजी गुंड इणनें

" सौजन्यमित्र " छापखानामें छपायोछे

समत् १९१८ अने सन १८९१

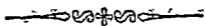
ओ पुस्तक पुना पेठ नानाकी आठे
बाई जगवानदासजी केशरचदजी नाहारकी
दुकान उपर मिलशी

किंमत एक रूपया बारा आणा.

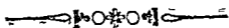
जैनधर्म संबंधी विषयों पर पुस्तकों का सूचीपत्र.

- १ श्री जैन धर्म ग्यान प्रदीपक पुस्तक किंमत १॥ रुपया
- २ जैन धर्म सिद्धांतसार पुस्तक किंमत १। रुपया
- ३ श्री जैन धर्म ज्ञान प्रकाश पुस्तक किंमत १२ आणें
- ४ श्री रामलक्ष्मण चरित्र कथा युक्त किंमत १। रुपया
- ५ चंद्रराजाको रास किंमत १ रुपया
- ६ लक्ष्मण बोध नाट किंमत १२ आणा
- ७ श्रीपाल राजाको रास चार खंडको किंमत १० आणें.
- ८ जैन शिलोका संग्रह किंमत ५ आणें.
- ९ मानतुंग मानवतीको रास किंमत ८२ आणें
- १० रतनकवरकी चोपाई किंमत ४ आणें
- ११ भक्तामर स्तोत्र किंमत ५ आणें
- १२ घन्ना साळमद्र शैठकी चोपाई किंमत ४ आणें
- १३ मगळ कळमकी चोपाई किंमत ४ आणें
- १४ देवकी राणीको रास (छे भाइनी रास) किं० ४ आणें
- १५ लिलावती राणीकी चोपाई किंमत ४ आणें
- १६ अमरसेन जयसेन राजाकी चोपाई किंमत ४ आणें
- १७ चंदन मलीयागीरीकी चोपाई किंमत ४ आणें
- १८ परदेशी राजाको रास किंमत ४ आणें
- १९ रुच्यवत्सा शाहकी रास किंमत ८४ आणें
- २० महिपती राजा अने मतिसागर प्रधानकी चोपाई किंमत ४ आणें
- २१ कानड कठीयाराकी चोपाई कर्म बंध रास किंमत ८४ आणें
- २२ स्नात्र पूजा तथा वीस ध्यानरुनी पूजा किंमत ४ आणें
- २३ स्तवन सजाय संग्रह जाग पहीला किंमत ४ आणें
- २४ मेणरहयानी चोपाई किंमत २ आणें
- २५ पाचपदारी मोठी वदना किंमत ३ आणें
- २६ करकडू आदि चारराजाका चारराम किंमत ५ आणें
- २७ एलापुत्रकी चोपाई अने विजेशेठनी रास किंमत ४ आणें
- २८ श्री जैन काव्यमाला [आठ जाग] किंमत १ रुपया
- २९ श्रीरामलक्ष्मणजीको रास किंमत १। रुपया
- ३० श्री द्विवध रतन प्रकाश किंमत १२ आणें
- ३१ हसगज वल्लराजको रास किंमत ५ आणें
- ३२ हरीचंद्र राजाकी चोपाई किंमत ४ आणें

॥ श्री अरिहंत परमात्मनेज्योनमः ॥



॥ अथश्री हरीवंस प्रबंध ढालसागर लिरुयते ॥



दुहा ॥ श्री जिन आदिजिनेसरु, आदि तणो
किरतार ॥ युगलाधर्म निवारणो, वरतावण व्यवहार
॥ १ ॥ शांति सकल सुखदायकं, शांतिकरणसंसार ॥
अरति असुख दुःख आपदा, चारे निवारण हार
॥ २ ॥ नेमनाथ मति निर्मलि, अनमि नमाणव देव
॥ वालब्रह्मचारी प्रज्जु, सुरनरसारे सैव ॥ ३ ॥ पार्श्व
पार्श्व सारिखो, सुख संपति दातार ॥ क्षुद्रउपद्रव टा
लणो, नामे सदा जयकार ॥ ४ ॥ वीरस्वामी त्रिजुव
न तिलो, गुणमणिनो चंडार ॥ तिर्थकर चणविसमो,
शासणरो सिरदार ॥ ५ ॥ काल अतिते जे हुवा, वर्तमान
जिन ईश ॥ कोडी दोय केवल धरा, चरण नमुं निसदी
स ॥ ६ ॥ गणहर गौतमगुण निलो, गौतम गुरु यो नाम
॥ गौतमगुरु सर्वमें वडो, गौतम करुं प्रणाम ॥ ७ ॥ का
मधेनु गौ शब्दयी, तते तरु सुरवृक्ष ॥ समेयु मणि
चिंतामणि, गौतमस्वामी प्रत्यक्ष ॥ ८ ॥ देश देशांत
र कांड चमो, मूरखलोक अजाण ॥ घर वेठां हरीपू
रिसो, गौतम केरो ध्यान ॥ ९ ॥ ब्रह्माणी ब्रम्हा सु
ता, सारद मात प्रणाम ॥ करी मागु मति निर्मली,
जीम पासु कवि नाम ॥ १० ॥ कविवाणि वारु कही,

जस तूठि तुं माय ॥ तुज तूठा विण बोलणो, मूरख
मांही कहाय ॥ ११ ॥ पढे गुणे मति आगळो, रास
सजा सनमान ॥ लहेनिवाजा ताहरा, मोटप मेरु स
मान ॥ १२ ॥ मात मया करी सांचलो, सेवकनी अ
रदास ॥ तिमकर जिम पोहचे सहि, माहरा मननी
आस ॥ १३ ॥ गुरु नमीए गुरुताजणि, गुरुविण गु
रुता नाहि ॥ गुरुजनने प्रगटो करे, लोक त्रिलोका
मांही ॥ १४ ॥ गुरु कारीगर सारिखा, टांके वचन प्र
हार ॥ पथ्थरथी प्रतिमा किया, पूजा लहे अपार
॥ १५ ॥ अंधकार अज्ञानता, ज्ञान सलाइ सार ॥
फेरी किया जग देखतां, धन्य गुरुना उपगार ॥ १६ ॥
तिर्थेकर गणधर सहु, सारद सुगुरु सकाम ॥ सहु
मिलि मुज आपज्यो, काव्यकला अजीराम ॥ १७ ॥
उतपत्ति श्री हरीवंशनी, हलधर कृष्ण नरेश ॥ नेमी
मदन जुग पांडवा, चरित्र जणुं सुविशेष ॥ १८ ॥
जादव कथा सुहामणी, जे सुणशे नरनार ॥ सुकृत
तणो फल पामशे, नहीं संदेह लिगार ॥ १९ ॥

ढाल १ ली ॥ दश कंधर राजा, चढतो तेज प्रतापे
॥ एदेशी ॥ नहीं संदेह लिगार निरोपम, श्रीहरी वंश
वखाणुं ॥ उत्तम पुरुषतणा गुण सुणतां, थाइ जन्म
प्रमाणुं ॥ जंबुद्वीप प्रसिद्ध प्रमाणे, जोयण लाख क
हावे ॥ पटकुलगीरीने खेत्रसातशुं, शोचा अधिकी
पावे ॥ १ ॥ नरत खेत्र जोयणसें पंच, षवीसकला

गेठावे ॥ गिरी वैताढ्य विचाल विशेषके, आधोआ
 ध कहावे ॥ सोल हजार सुसारदेशमें, आर्य साढापं
 चविसे ॥ जिहां जिन पंचकल्याणिक होवे, इम जिनम
 तमां दिसे ॥ २ ॥ कोसंवि नगरी वनवासी, कुवा वा
 व विशेषी ॥ गढमढ मंदिर पोल पगारक, इंद्रपुरी स
 म लेखी ॥ राजा राज करंत विशेषे, विद्यावंतसनूरो ॥
 हय गय रथ पायक दल पुरित, राय महा रणसूरो
 ॥३॥ आयो मासवसंत विराजीत, राय सुसुख सरागी ॥
 रामतिरंग करेवाकारण, नृपतिनी मति जागी ॥ कोइ अ
 टाले कोइ माले, नारी तमासे लागी ॥ कौतक जोणुं वं
 स विगोणुं, हुइ घणुं अनुरागी ॥ ४ ॥ वीरकोविंदक केरी
 नारी, वनमाला सुविशाला ॥ नयणे निरखि हरखि राजा,
 राग धरे ततकाला ॥ रूपे रुडी रंजा सरशी, वश वर
 तावे देवा ॥ आइ इहां हुं जाणुं ए मुऊ, पास कराव
 ण सेवा ॥ ५ ॥ खेली रूयाल वैहाल प्रणामे, राजा
 मंदिर आवे ॥ मंत्रीश्वर उपाय करीने, वनमाला राय
 तेडावे ॥ नारी सुसिला पर पुरुपाने, कदिय न आवे
 पासे ॥ वाचतणे बलदेवलनीध्वज हुइ अपुठि नासे
 ॥ ६ ॥ शीलसुधारी जे ब्रह्मचारी, नारी देखी न चूके
 ॥ रामचंद्रजी सुर्पनखा ज्युं, माथे मारी मूके ॥ नूडे
 जुंडा दोय मीलंता, कोडी अकारज फिजे ॥ दीरघ रा
 जा चुलाणिराणी, केरी उपमा दिजे ॥ ७ ॥ राजाराणी
 प्रिततणे वश, जोगधे जोग उदार ॥ विद्युत पाते मरण

लहि तव, हरीवरपे अवतार ॥ त्रिजे प्रहरे के त्रीजे वा
 सर, त्रण मासे त्रण वरपे ॥ प्रगट उखाणो ए जग
 जाणो, पुण्य पाप फल वरशे ॥ ८ ॥ नारी विजोगे वि
 रकोविंदक, गहिलो गर्व गिमारो ॥ रड्योपड्यो विलव्यो
 विलखाणो, विकल थयो अपारो ॥ तापसरुपी चारित्र
 पालि, कष्टतणि करी कोन्नी, स्वर्गसौधर्मेकील्विपीयामे,
 देव थयो दिन थोन्नी ॥ ९ ॥ किधांकर्म न कोइ बूटे,
 कांड रांकने राणो ॥ राजा राणि साथे केहिपरे, सालेवैर पु
 राणो ॥ पहिलि ढाल रसाल रागमें, आणंदरंगविलासा
 ॥ श्री गुणसागर सूरिपयपे, सबजुग मिठिआसा ॥ १० ॥

दुहा ॥ सेवकरुपि देवता, कहै तदा सिरनाम ॥ कु
 ण कारण सुर उपना, आप प्रकासो स्वाम ॥ १ ॥
 अवधिज्ञान करी देखियो, पूर्व जवंतर ताम ॥ राजा रा
 णि पेखिया, युगलपणे अनिराम ॥ २ ॥ अंगुठाधि
 उपनी, अग्नीज्वाल असराल ॥ कालरुप कोप्यो तिहां,
 आव्यो सुर ततकाल ॥ ३ ॥ मारुतो सुरगंति लहे, खे
 त्रंस्वजावे एह ॥ दुःखेफोड्यो फूटे नहि, तो फिर चिंते
 तेह ॥ ४ ॥ नरक तणी गति सचरे, पावे दुःख अपा
 र ॥ एह मतो मनमें धरी, किधो तव अपहार ॥ ५ ॥
 सौथेलिया सुरतरु तदा, चंपापुरी सुर जाय; वनमें मू
 कि देवता, प्रनरलियायत्त थाय ॥ ६ ॥

ढाल २ जी ॥ विसर्जणासु वाद नकिजे ॥ ए देशी ॥
 ॥ आदिनाथनो नंदननीको, बाहूवल बलवंतजी ॥ चैर

तेश्वर नृजवले हरायो, ए बहुलो विरतंजी ॥ आ० ॥
 ॥ १ ॥ पुत्र पनोता तेहने प्रगटे, तिनलाख गुणधाम
 जी ॥ सोमजसाथी सोमवंसनी, थिरथापन अचिराम
 जी ॥ आ० ॥ २ ॥ सोमजसा कुंवर करमेतो, श्री
 श्रेयांसकुंमारजी ॥ आदिनाथने जीणे करायो, इन्द्रस
 नो आहारजी ॥ आ० ॥ ३ ॥ तेहनो नंदन सार्वज्ञो
 मजी, तेहनो हुवो सुनुमजी ॥ सुघोपराजा तस पाटे,
 वैरीकुलनो धूमजी ॥ आ० ॥ ४ ॥ घोपसुवर्द्धन तेह
 नो नंदन, महानंद सुनंदजी ॥ सुनद्रसुनंकर सोमवंस
 मे, उदया पुनमर्चदजी ॥ आ० ॥ ५ ॥ को मुगते को सु
 रगति पामी, एह वंसना नृपजी ॥ असंख्यातमी पेढी
 ए उपज्यो, किरतिचंद्र अनूपजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ नि
 संतान राजा तव सूवो, दैवतणे संजोगजी ॥ नृप पद
 वी लायक नहि कोइ, मिलिया सघला लोकजी ॥ आ०
 ॥ ७ ॥ पंचदिव्य करी वनमें आया, सुनट ने मंत्रीश
 जी ॥ हरी हरणि युगलपणे देखी, मनमें धरे जगीशजी
 ॥ आ० ॥ ८ ॥ अंवरथी सुरवाणी प्रगटी, सोच करो
 तुम्हे कांइजी ॥ चंपा नगरीनो जल नृपति, थाप्यो ए
 ह उढाहिजी ॥ आ० ॥ ९ ॥ राजाराणीने तुम्हे देज्यो,
 मदिरा मांस आहारजी ॥ माहरो वचन न मानशोतो, क
 रशुं सहि संहारजी ॥ आ० ॥ १० ॥ सुर वचने चंपापु
 र नायक, करी थाप्यो सहु तेमजी ॥ बेरी बेरपणुं न
 वि सूके, अमरख पाल्यो एमजी ॥ आ० ॥ ११ ॥ हरि

नामे राजा तव हुवो, लोक नम्यां करजोरुजी ॥ पाय
क लायक परीग्रहपूरो, ह्य गय रथनो कोडजी ॥ आ० ॥
॥१२॥ एह थापना हरिवंशनी, वसुधामें विख्यातजी ॥
दसमा जिनवरजीने वारे, आगेनी सुणो वातजी ॥
॥ आ० ॥ १३ ॥ हरी हरणीथी नंदन उपज्यो, पृथ्वी
पती गुणधामजी ॥ महागिरी वसुगिरी राजा, उत्तम
नाम प्रणामजी ॥ आ० ॥ १४ ॥ मंत्रिगिरी सुयसान
र नायक, ए मोठो राजानजी ॥ ब्रह्मखंड पृथ्वी मांहि
अखंभीत, वरतावी निज आणजी ॥ आ० ॥ १५ ॥
एवा हरिवंशी नृप हुवा, संख्या रहित अपारजी ॥
किण सुरगति किण सिवगति साधी, सफल कीया अ
वतारजी ॥ आ० ॥ १६ ॥ मुनि सुव्रत स्वामि जगता
रक, राजग्रही हरिवंशजी ॥ मुनि सुव्रत सुत सुव्रत
राजा, वंशतणो अवतंशजी ॥ आ० ॥ १७ ॥ चुरी चू
पनो अंतर होतां, मथुरापुरी मजारजी ॥ वसु पुत्र व
र बहतकेतुवर, वंश विचुपण सारजी ॥ आ० ॥ १८ ॥
केतलाएक कालने अंतर, यदुराजा उत्पन्नजी ॥ जेह
थी यादव नाम कहाया, धन ए पुरुपरतनजी ॥ आ०
॥१९॥ यदुराजानो सुत सनुरो, सूर सरीखो रावजी ॥
शाखा प्रतिशाखा हिवे चाली, ते कहेवा चित्त चा
वजी ॥ आ० ॥ २० ॥ विजी ढाल सुपांता गौरी, दुः
ख दुरगतिनुं जांजजी ॥ गुणसागर गुणवंत नमंता.
सिजे सघलां काजजी ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ सुरवंश मूरराजाना, नंदन उपज्या दौय ॥
 पहेलो सौरी सुलक्षणी, सुवीर विजो होय ॥ १ ॥
 सौरीकुमर राजा कियो, अपर कियो युवराज ॥ सूर
 नृप संजम ग्रही, सारथा आतमकाज ॥ २ ॥ सौरीराय
 सौरीपुरी, वास कियो निज वास ॥ लघु आताने आ
 पीयो, मथुरापुरी निवास ॥ ३ ॥

ढाल ३ जी ॥ इणपुर कंबल कोइ नलेशी ॥ ए
 देशी ॥ सौरीराय नंदन वखाणुं, अंधक विष्णु वडो नृ
 प जाणुं ॥ सुविरराय सुत विश्ववदितो, नौजग वि
 ष्णु जगमें जस जीतो ॥ १ ॥ रायसुविर मथुरानो रा
 जा, सुतने दिधो जाणीसकाजा ॥ सिंधुदेश जाइ पु
 रवासी, वास कियो नृप लिल विलासी ॥ २ ॥ अंधक
 विष्णु कुमर पटथापी, हयगय रथ पायक सहु आपी
 ॥ सुप्रतिष्ठ मुनिपें व्रत पामी, सौरीराय हुवा सिवगा
 मी ॥ ३ ॥ नौजगविष्णु नरेशर राजा, पाले प्रजा ने
 सारे काजा ॥ उग्रसेन आदिक सुत सूर, शस्त्र शा
 स्त्रकला गुणपूरा ॥ ४ ॥ अंधकविष्णु घरे पटराणी,
 रुपेरुडी रंजा समाणी ॥ सुनद्रा नामे गुणखाणी, सति
 यामांहि आधिक वखाणी ॥ ५ ॥ जाया कुंवर दसहि
 दसार, पुत्रीदोय अति उत्तम सार ॥ समुद्रविजय गु
 णनो नंनार ॥ दाता नृका अधिक उदार ॥ ६ ॥ अहोन्न
 अहोन्न महारण सूर, स्तमित नाम कुंवर गुण पूरा ॥
 सागर सागर, उपमा धारी, हिमतवान सहने सुखकारी

॥७॥ अचल अचल संग्रामे लहि, धराणिधरसम धरण
 संग्रहि ॥ पूरण पुरो सघली वात. धन्य अन्नचंद्रत
 णा अवदात ॥ ८ ॥ श्रीवासुदेव दूग्ंधक देव, जेह
 नी सारे सुरनर सेव ॥ ए दसही वधवनी जोमी, पू
 ण्य पसाइ पहुचे कोडी ॥ ९ ॥ समआचारी सघला
 कहिया, माहोमांहि सप्रिती लहिया ॥ मायत्रापनि न
 क्ति करंता, वहिनम आशीसे जयवंता ॥ १० ॥ वहि
 न नलि दोइ समसीला, नाग्यवंति आति रुप सुलि
 ला ॥ कुंति रुप कलागुण पात्र, माहेद्रि महिमावंत
 सुगात्र ॥ ११ ॥ कुंतिकुमरि व्याहण कान, कवि कु
 रुवंश कहे अजिराम ॥ आदिनाथनो सुत कुरु जाणुं,
 तेहथी कुरुक्षेत्र कहाणुं ॥ १२ ॥ कुरुसुत हस्तीराय
 कहायो, हथीणापुर नल नगर वसायो ॥ हस्ती नृप
 संतान वखाणुं, विश्वविर्य नरेश्वर जाणुं ॥ १३ ॥
 तदनंतर कुरुवंशे वारु, सनतकुमार चक्रीश्वर वारु ॥
 शांतिकुंधु अरजी सुख दाया, दोदो पदवी नाथ क
 हाया ॥ १४ ॥ इंद्रकेतु नृप किरति केतु, शुभविर्य
 सुविर्य समेतु ॥ रायअनंत विर्यकृतविरज, सुभुम च
 क्रीश्वर अति धिरज ॥ १५ ॥ असंख्यात नृप हुवा
 अनंतर, सांतनुराय हुवो हथीणापुर ॥ दुखकेदारण
 साधुउजागर, त्रिजीढालकहे गुणसागर ॥ १६ ॥

दुहा ॥ हस्तिनागपुरवर धणी, पाले राज निशं
 क ॥ पिण राजाने एकए, लाग्यो वनो कलंक ॥ १ ॥

साच कहे ए लोकहो, इह लोके अपजस अति पा-
 मे ॥ अरु विणसे परलोकहो ॥ कु० ॥ २ ॥ मृगसा
 थे राजा एकाकी, अटवी मांहि आवंतहो ॥ गंगा त
 ट एक देवल देखी, गाढी सुख पावंतहो ॥ कु० ॥ ३ ॥
 एटले खेचरनी वर कुमरी, अमरीने अनुहारहो ॥ न
 यणे निरखी हरखी राजा, चिंतवे चित्त मझारहो ॥
 कु० ॥ ४ ॥ के इद्राणी के हरी राणी, के हर नार ज
 दारहो ॥ विद्याधर एक आवी ज्ञापे, सांजल राय
 विचारहो ॥ कु० ॥ ५ ॥ जानु सुता ए गंगा देवी,
 गिरि वैताड्य निवासहो ॥ ए कुवरी वर पूठयो राजा,
 जंघाचारण पासहो ॥ कु० ॥ ६ ॥ सांतनुराया सीधो
 बतायो, गंगातट विवाहहो ॥ देवल कीधो कारज सी
 धो, स्वामी आणी उठाहहो ॥ कु० ॥ ७ ॥ खेचर ज
 इ खेचरपति लायो, मांझ्यो व्याह मंडाणहो ॥ गंगा
 ज्ञाखे तो हु व्याहं, जो मानो मुज आणहो ॥ कु० ॥
 ॥ ८ ॥ जीम कहीशु तिम करगो राजा, वाद कीया
 रसनाहीहो ॥ काम विमासीने धूरे कीजे, अविमास्यो
 दुख प्राहीहो ॥ कु० ॥ ९ ॥ काम असोचि कीयोथो
 आगे, सूर्यजसा नरनाथेहो ॥ इंद्रतणी नाटकणी पर
 णी, अरति करी सहु साथेहो ॥ कु० ॥ १० ॥ कणि
 क मांही पडे जव पाणी, थाये ताम नीकामहो ॥ वा
 यस वोटयो कुंज अकारज, लोक वचन अजिरामहो
 ॥ कु० ॥ ११ ॥ पतिव्रता पति साथे न बाजे, जन्म

अकारज जातहो ॥ ठोकी बजाइ घडो लीजे. अघ
 तणी शी वातहो ॥ कु० ॥ १२ ॥ सघली मानी क
 पटराणी. आव्या मंदिर रायहो ॥ लामीनी लावण्यत
 निरखी, सहु रलियायत थायहो ॥ कु० ॥ १३ ॥
 गा जायो लोक सुहायो. श्रीगांगेय कुमारहो ॥ राज
 नव नवा कीधा उठव. जगमांही जयकारहो ॥ कु०
 ॥ १४ ॥ गंगा वर मागंती बोले, स्वामी आहेडो वं
 डहो ॥ राय न माने पुत्र लेइसा. पिहर गइ मुहमो
 हो ॥ कु० ॥ १५ ॥ कुव्यसन वालो वाच न माने. स
 ढ न जाणे मर्महो ॥ नेम न माने प्रेम न माने. नर्व
 माने कुल कर्महो ॥ कु० ॥ १६ ॥ मात न माने त
 त न माने, भ्रात न माने जोरहो ॥ नारी न माने न
 द न माने, बोले बोल सजोरहो ॥ कु० ॥ १७ ॥ ह
 थी जेरे हरायो होवे, कीम सामो थया जायहो ॥ ज
 नीए नहीतो जाजी सकीजे, रुसी गइ सा न्यायहो ।
 ॥ कु० ॥ १८ ॥ मात पिता घर नंदन शिख्यो, सव
 ल कला गुण वंदहो ॥ चउवीसां वरसानो हुव, नंदन
 आनंद कंदहो ॥ कु० ॥ १९ ॥ एक दिवस राजा नि
 कलायो, साथे घणा नर वंदहो ॥ गंगातटे अति उ
 गमो मंड्यो, श्री गांगेय नरेंदहो ॥ कु० ॥ २० ॥ गं
 गा चिंते दोइ पवाडा, ए मुऊ आरति ठामहो ॥ पुत्र
 मरंता निपुत्री प्रीतम, मरंता रंरु कुनामहो ॥ कु० ॥
 ॥ २१ ॥ गंगा आवी दे समजावी, पाठी गइ ततका

लहो ॥ गुणसागर नृप सुत घर आव्या, चौथी ढाल
ल रसालहो ॥ कु० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ राजा कुव्यसन नवी तजे, गंगा नावे बा
र ॥ साहंकारी नारीनी, ए सहीनाणी विचार ॥ १ ॥
आदरनो चलो कापडो, निरादर स्यो चीर ॥ चलो
समुहनी रावडी, महातम विणसी खीर ॥ २ ॥ बालो
सोनं सामटं, बालो भोग विलास ॥ आदर अजराम
र महा, बीजु सहु विखास ॥ ३ ॥ खेचीकुटी कामनि,
लाता बुकाखाय ॥ निःपितामरवाडरे, ते कीम मुह
गी थाय ॥ ४ ॥ तेज नसहे ताजणो, त्रिया नसहे अ
पमान ॥ तिम तिम मूल, वाधे घणो, शंक धरे राजा
न ॥ ५ ॥ जाव जीवनु रूशणु, गंगादेवी नरेश ॥ ए
क वचनने कारणे, सह्यो न जाय कलेस ॥ ६ ॥ कुंवरे
करी नृप सोचीत, कमले करी जिम वार ॥ दिवस क
री दिनकरज्युं, सिलेकरी जिम नार ॥ ७ ॥ जमुना त
ट नृप आवियो, दिठी कुमरी एक ॥ तनमन लाग्यो ते
हसुं, विसरी गयो विवेक ॥ ८ ॥

ढाल ५ मी ॥ वधव बोल मानोहो ॥ ए देशी ॥
राजा प्रेम लगायोहो, लोचन हुवा लालची ॥ लज्या
गुण नांग्योहो ॥ रा० ॥ १ ॥ नयन अन्याइठे खरा,
जिहां तिहां लागेहो ॥ सोच न आगल पाठले, चुंमा
पण आगेहो ॥ रा० ॥ २ ॥ कोडी कुहेडा केलवे, ए
केकिमां कुवाणीहो ॥ चतुरा चहुटे पारिखा, ए मनकी

सहिनापिहो ॥ रा० ॥ ३ ॥ स्वर्गमृत्य पातालनी, स
 ब नारी लुंटीहो ॥ जातीथी लुंची अंधरे, अधवचथी
 तूटीहो ॥ रा० ॥ ४ ॥ एकही अंग वखाणता, कवि
 पार न पावेहो ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरू, ए लिला गावे
 हो ॥ रा० ॥ ५ ॥ इंद्र चंद्र नर राजवी, बलवंता बं
 लीयाहो ॥ कोई किरणों को नहि, एहे मार्या बलिया
 हो ॥ रा० ॥ ६ ॥ नयण नं पाठा आवहि, जाणी बां
 ध्या ताणीहो ॥ नाविडा साथे बोलीयो, राय कोमल
 वाणीहो ॥ रा० ॥ ७ ॥ ए कहे केहनी कुंवरी, डोकर
 तं जाणेहो ॥ ए कुंवरी नृप माहरी, रांय केरे सुख आ
 णेहो ॥ रा० ॥ ८ ॥ सत्यवंती नामे चली, सुरतरु
 नी वेलीहो ॥ पुण्यवंत जे प्राणीया, थाइतसु जेलीहो
 ॥ रा० ॥ ९ ॥ राय प्रधान बोलावीयो, ए मुज परणा
 वोहो ॥ ढिल किया ढीलो पडे, व्याह वेग करावोहो ॥
 रा० ॥ १० ॥ नावडीयो माने नहि, एक अडवी रोमे
 हो ॥ पुत्री पुत्रा कारणे, नृप पदवी लोमेहो ॥ रा० ॥
 ॥ ११ ॥ विलखाणो राजा फिरी, निज मंदिर आवे
 हो ॥ बाप दुचितो देखता, कुंवर दुख पावेहो ॥ रा० ॥
 ॥ १२ ॥ जंक्ति नहि मा वापनी, नवी जाणे पीमाहो ॥
 तेतो वेटा जाणवा, पेटना किडाहो ॥ रा० ॥ १३ ॥
 जाणी वात सुधेगसुं, नाविना समजावेहो ॥ करी दि
 लासा तेहने, नृप व्याह मनावेहो ॥ रा० ॥ १४ ॥ रा
 ज तणे तो कारणे, सुत बापने मारेहो ॥ गांगेया गुरु

आपणो, गुरु कार्य सारेहो ॥ रा० ॥ १५ ॥ माहरी धरणी
 धरणिनो, हु धणीज कहेताहो ॥ उचा जाइ अंबरे,
 बोले गह गहनाहो ॥ रा० ॥ १६ ॥ करी नहि कर
 शे नहि, को करत न दीठाहो ॥ गुरु गांगिया सारी
 खा, जगमें जस मीठाहो ॥ रा० ॥ १७ ॥ नाविमो कुं
 रमु कहे, एठे नृप कुपरीहो ॥ वेली समां फल नीप
 जे, एसा नहि अमरीहो ॥ रा० ॥ १८ ॥ सत्यवंती
 सुं व्याहती, कीधां रंगरोलहो ॥ पंचेंद्रि सुख चोगवे,
 वर पुण्य कलोलहो ॥ रा० ॥ १९ ॥ सत्यवंती कूखे
 उपनां, दो नदन सलुणाहो ॥ वाप थकी अधिकां हुवां,
 तेजे करी दुणाहो ॥ रा० ॥ २० ॥ चित्रांगद नामे जे
 लो, कुवरजी नीकोहो ॥ चित्रविरज ए दूसरो, कुरु
 वंशी टीकोहो ॥ रा० ॥ २१ ॥ राजा आहेहो तजी,
 शुभ मारग आयोहो ॥ साधु संगति चालतां, जग
 में जस पायोहो ॥ रा० ॥ २२ ॥ पाप खमोषी पाठ
 लो, आतम आराधिहो ॥ काल कीयो धरणि ठली,
 सुरनी गति साधीहो ॥ रा० ॥ २३ ॥ चित्रांगद रा
 जी कीयो, सब लोका साखीहो ॥ श्रीगांगेयनरेश्वरे, नि
 ज वाचा राखीहो ॥ रा० ॥ २४ ॥ निलांगद गांधर्व
 सुं, चित्रांगद लडीयोहो ॥ कह्यो न मान्यो जाइनो, स
 मरांगण पडीयोहो ॥ रा० ॥ २५ ॥ माये रोती सुत दुः
 खयी, फिरी सोग मीटायोहो ॥ पांचमी ढाले सांतनुं,
 गुणसागरे गायोहो ॥ रा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ सगपण संसारे घणां, जाइ समो नव को
 य ॥ लक्ष्मण काजे रामजी, कहो केम दीधो रोय ॥
 ॥ १ ॥ नीरु पढ्या जाइ नजे, जाइ बिराणा जाज ॥
 नरतनूप, नर रात्रिमें, दोढ्यो लक्ष्मण काज ॥ २ ॥
 पुरुपोने नारी घणी, नारीथी सुत होय ॥ मा जाया बं
 धव हुवे, अंतर मोठो जोय ॥ ३ ॥ जाइ वयर वीशो
 धवा, श्रीगांगेय कुमार ॥ निलांगद रणमें हण्यो, रा
 स्यो कुल व्यवहार ॥ ४ ॥ लघु भ्राता पट थापियो,
 वरती आण अखंड ॥ प्रबल प्रताप महाबली, तस
 नुज दंरु प्रचंड ॥ ५ ॥ कासी नूपतिने नली, कन्या
 तीन प्रधान ॥ अंबा बाली अबिका, व्याह तणो मं
 नाण ॥ ६ ॥ काशी नूप ते तेडीया, राजा राजकुमा
 र ॥ गजपुर घणीने तेनीयो, जाती द्विण अवधार ॥ ७ ॥
 ढाल ६ ठी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ आ
 मण दुमण होइ रह्योरे, गजपुर केरोरे राय ॥ गंगासु
 त पूबयो तदारै, जाब नदिणो जायरे ॥ १ ॥ पद्ध न
 लो सहि, निपद्धिसिदायोरे, पद्ध नगंजिए, पद्धिणि इं
 ना पायो ॥ ५० ॥ ए आंकणी ॥ अरति अलुर बाधी
 घणीरे, गहवरीयो नूपाल ॥ जाणे धरणी विवर दीएरे,
 तो जइए पायालोरे ॥ ५० ॥ २ ॥ जाणी निश्चे वातनो
 रे, निषम-निषम रूप ॥ मुऊ बइठां लघुता हुवेरे, तो मु
 ऊ वनो विरूपरे ॥ ५० ॥ ३ ॥ गंगासुत चाली ग
 योरे, काशी नृपते पास ॥ कन्या तीने अपहरीरे,

मांड्यो जुज उल्लासोरे ॥ ५० ॥ ४ ॥ नाना-लोगा
 मोचणोरे, बलीया उजड माग ॥ बलीया होड करे जी
 केरे, नली शिर उपर पागोरे ॥ ५० ॥ ५ ॥ हत प्रहत नू
 पति कीयारे, जीत्यो गंगानद ॥ कन्या लेइ आवी
 योरे, गजपूरमें आणंदोरे ॥ ५० ॥ ६ ॥ परणावी ती
 ने तदारोरे, हररूयो गजपुर इश ॥ पद प्रसादे हुइ
 खहीरे, सफल सकल जगीसोरे ॥ ५० ॥ ७ ॥ अवी
 का कूखे उपनोरे, श्री धृतराष्ट्र कुमार ॥ वाला पांडु
 जाइठरे, अंबा विदूर उदारोरे ॥ ५० ॥ ८ ॥ रोग व
 से आतुर थयोरे, बूटयां नृपनां प्राण ॥ ए दया ग
 ति अनुसारथीरे, प्राण लीया घट आनोरे ॥ ५० ॥
 ॥ ९ ॥ पांडु राजा थापीयोरे, थंजण सहु परिवार ॥
 पृथ्वी फलदायक माहारे, राजा पुण्य प्रकारोरे ॥ ५०
 ॥ १० ॥ बढी ढाल सुहामणीरे, गुणसागर उवाह ॥ नवि
 क जनो तुमे सांजलोरे, कुंता कुमरी व्याहोरे ॥ ५० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ श्री पांडु पृथ्वीपति, मधु उडवने काज ॥
 राजी गाजी वनमे गयो, खेलण केरे साज ॥ १ ॥ खे
 ल खेलतां खांतसुं, एक नर आव्यो नेठ ॥ पलक
 विलोकन कीजतो, उचो तरुवर हेठ ॥ २ ॥ पलक
 हाथ राजा लीयो, नारी रूप अपार ॥ सुंदरता नख
 शिख लगे, जोवे वारंवार ॥ ३ ॥

ढाल ७ मी ॥ सीताजी दीएरे उलंजडो ॥ एदेशी ॥
 राजा रंज्यो रूपसुं, नयन रह्या लोनाय ॥ जोतां त्रप

ति न ऊपजे, सोजा मुख कही न जाय ॥ १ ॥ ए ज
 ग मांही मोहनी, मोह्यो सहु संसार ॥ पशु पंखी न
 र देवता, वश कीधा इण, नार ॥ ए० ॥ २ ॥ पहीली
 मोह्यो सुरपति, सो लाग्यो इंद्राणी प्राय ॥ इंद्राणी ला
 ते हएयो, तो तस रोष न थाय ॥ ए० ॥ ३ ॥ शंकर
 स्वअंगज ठवियो. राच्यो पार्वती रूप ॥ टेक तजी त्रि
 या आगले, नाच्यो धरी विरूप ॥ ए० ॥ ४ ॥ राधा
 रूप रसापति, रमीयो रलियायत होय ॥ रासघंमल
 रचना कीया, ए कौतक प्रगट्यो जोय ॥ ए० ॥ ५ ॥
 राजा पुढे पुरुषने, ए रूप कहे केहनो होय ॥ कुंति
 रूप सुहामणो. इम जाखे परदेशी सोय ॥ ए० ॥ ६ ॥
 खेल सहु ए वीसरयो. वीसरियो सहु काज ॥ दुधा त्र
 षा सहु विसरयो. जाणे मिलीए आज ॥ ए० ॥ ७ ॥ कुं
 ति कुंति कुंतिको. लाग्यो राजा ध्यान ॥ उठे जल जि
 म माबलो, नृप वेदन असमान ॥ ए० ॥ ८ ॥ दीधो
 दान अनंतते, पंथी सोरीपुर जाय ॥ राजा आगे व
 र्णवे. गुणवंतो गजपुर राय ॥ ए० ॥ ९ ॥ तात गोदे
 बेठि सुणे. कुंति नृपना बखाण ॥ रूपकला गुण मन
 वस्यो. तत्र कुंवरी कराहे निदान ॥ ए० ॥ १० ॥ के
 परणु गजपूर धणी. के परणु पर जव जाय ॥ अवर
 पुरुष बंधव समा. ए निश्च्ये मन लाय ॥ ए० ॥ ११ ॥
 पांडु नृप घर आवियो. आहाट दोहट अपार ॥ करे फि
 रे उचाटीये. न जणावे केहने सार ॥ ए० ॥ १२ ॥ एक

दिवस वनमें गयो, खेचर खील्यो देख ॥ आप चिंता
 तजी पर चिंता, आणी मनसु विशेष ॥ ए० ॥ १३ ॥
 विरला जाणे परगुणा, विरला पाले प्रेम ॥ विरला पर
 कारज करा, पर दुखे दुखीया तेम ॥ ए० ॥ १४ ॥ उ
 रेपरे अवलोकता, खांडो दिठो उदार ॥ उपध बलिया
 दोय जला, एक घाव रुजावणहार ॥ ए० ॥ १५ ॥ खी
 ला काढ्यां अगथी, उपधे क्रीध निरोग ॥ राजा पुढे
 ए वडो, कीयो तुऊ दुःख संजोग ॥ ए० ॥ १६ ॥ खे
 चर कहे सुण मित्रजी, मुऊ राणी लीधो को जाय ॥
 केड हुवो हुं एकलो, तेह कारण दुःख थाय ॥ ए० ॥
 ॥ १७ ॥ निःकारण उपगारीयो, हुं थारी फिरफ़ीर व
 लिजाडं ॥ चाम करावु खासडा, तोहि उंसीगल नवि
 थाउ ॥ ए० ॥ १८ ॥ उपध वलियां ए ग्रहो, ए मु
 द्रडीलीजे स्वाम ॥ बहु गुणगारी ए मुद्रडी, लेइ जा
 ये वंठित ठाम ॥ ए० ॥ १९ ॥ अवसर जाणी काम
 नो, चित्तमांहि आणावे देव ॥ इम कही सोइ चाली
 यो, निज स्थाने ततखेव ॥ ए० ॥ २० ॥ मुद्रडी प्र
 सादथी, मन केरी पहुचे आश ॥ जयति श्रीगुनग
 ति मति, पामे ते पुण्य प्रकाश ॥ ए० ॥ २१ ॥ ढाल
 सातमीए कह्यो, मिलवा उपाय अपार ॥ गुणसागर
 उपदेशथी, नवि करजो सर्वने उपगार ॥ ए० ॥ २२ ॥
 दुहा ॥ कुंती कुमरी चितवे, मन चिंत्या ए काज
 ॥ देवन पूरा पाडसे, तो जलो मरवो आज ॥ १ ॥

इम चिंतवि ते नीसरी, गई महावनमांही ॥ गलफा
सो मांडी कहे, सुण कुलदेवते प्राहि ॥ २ ॥

ढाल ८ मी ॥ गौतम समुद्रकुमार ॥ ए देशी ॥ तुं
जई केहेजे माय, माहारा मन तणी, पांडु पृथ्वीपति
जणीए ॥ कुंतिकुमरी आज, विरह तुंमारुने, प्राण त
ज्या विण तुं धणीए ॥ १ ॥ इम कही गले पास, मां
के जेटले, सानिध हुई तेटलेए ॥ वर मुद्रनी प्रजाव,
मिलवा सुंदरी, राजा आव्यो एटले ए ॥ २ ॥ पल
करुण अनुहार, कुमरी उलखी. पासो तोडी नाखीयो
ए ॥ पदमनिने परसंग, आतुरता घणी, जाव हिया
नो जाखियोए ॥ ३ ॥ दासी पास मंगावी, सामथ्री
सहू, व्याहतणी विधि साचवीए ॥ पूरो मनना कोड,
होडा होरुसुं, हसीरमी मन राचवीए ॥ ४ ॥ गर्ज त
णी उत्पति, चित्त विचारीत. राय जणावी सादरीए ॥
सहिनाणिने काज. आपी मुद्रडी, राय गयो घर संच
रिए ॥ ५ ॥ कुमरी पिण घरे आवी, माय जणावीए,
दिनकेतेए घातडीए ॥ गुप्तपणे सुत जायो. जलमें वा
हित, जई निसरीयो गुन घनीए ॥ ६ ॥ कर्ण कहा
यो नाम, मोटो राजवी, माता कीधी उजलिए ॥ कु
मरी केरो व्याह. पांडुरायसुं, प्रगट कियोपुगीरलिए ॥
॥ ७ ॥ गुनसुपना अवलौय. सुन वेलासहि. युधीष्ट
र सुत जाईतए ॥ जीम महा बलवंत, कौरव किचक.
हंता नाम धरावितए ॥ ८ ॥ अर्जुन अरी कुलकाल,

त्रिष्व करणनो. हणणहार कहाईउए ॥ नकुल, अने
सहदेव, पांडव पंचए, जगमांहि जसपाइउए ॥ ९ ॥
परमारथ आराधी, करणिनें वले, मातासु सिव पाम
शेए ॥ उत्तमगति मतिवास, लेहसे ते सहि, गीरुआ
ना गुणगायशेए ॥ १० ॥

दुहा ॥ तेणे समे देश गंधारनो, नृप सुंबल इणे
नाम ॥ आठ ठे तेहने अगजा, गंधारी आदे गुण
ग्राम ॥ १ ॥ गोत्रदेवीना वचनथी, धृतराष्ट्रने गेह ॥
शकुनी सुतसुं मोकली, कन्या आठे तेह ॥ २ ॥ श
कुनी धृतराष्ट्रने. जगनी परणावी आठ ॥ महामोक्ष
मंडाणसु, सघलो मेली ठाठ ॥ ३ ॥ कन्या नामे कौमु
दीनी, देवक नृपनीताम ॥ वीदुर पिण परणयो वली,
सुधारया सघला काम ॥ ४ ॥

ढाल तेहिज ॥ श्री धृतराष्ट्र सुग्रेह, गंधारी कूखे,
कौरव शतहि सुतपणेए ॥ ऊपजीया अदचूत. दुर्योध
न आदे, वाधे आनद अतिघणेए ॥ ११ ॥ माहेंद्रि
कुमरी व्याही, दमघोषां जणी, सुत शीसुपाल चरी
घणीए ॥ संक्षेपे सबध, ग्रंथ वधतो घणो ॥ जाणी
कथा न विस्तरिए ॥ १२ ॥ ढाल आठमी एह, नेह
धरी सुणे, तस आगणे अफला फलेए ॥ गुणसागर
गुणगेह, तेह पनोताए, जेह कथा रस सांजलेए ॥ १३ ॥

दुहा ॥ दुर्योधन कपटि महा, कपटकेलवे कोना
पांडव सरल सजाविया, न करे तोना तोड ॥ १ ॥

कौरव निखस खोटणी, पांडव जोर विशेष ॥ बालप
 णाहीथी चल्यो, मांहो मांही अद्वेष ॥ २ ॥ कौरव
 बांधी नीमने, नांखे पाणी मांही ॥ बंधन तोडी कुटि
 था, कौरव सोहि प्राही ॥ ३ ॥

ढाल ९ मी ॥ जुठन हाले ने जुठन चाले ॥ ए दे
 शी ॥ बलवंतो जाणी खरो, श्री नीम कुमार होलाल ॥
 विप दीधो दुर्योधने, आणी द्वेष अपार होलाल ॥ १ ॥
 जोजो क्युं न करे अरि, अरिनो शो विश्वास होला
 ल ॥ कोई म करजो पंडितो, अरिथी विपनास होला
 ल ॥ जो० ॥ २ ॥ काम पच्चा बेटो हुवे, काम सरी
 यां बाप होलाल ॥ दावलही दुर्जन घणं, देखावे सहि
 आप होला० ॥ जो० ॥ ३ ॥ अंतःकरण न मेलवे, मु
 खे मीठा होय होलाल ॥ सक्कन ललितांग संबंदथी,
 समजो नविलोय होला० ॥ जो० ॥ ४ ॥ जो परमे
 श्वर पाधरो, नहि पीसु न प्रवाह होलाल ॥ कौरवनी
 गरसण कला, पांडव जुए राह होला० ॥ जो० ॥ ५ ॥
 जरयामे अंतर करे, मुंगाने ए जोई होलाल ॥ कर
 ता राखे जेहने, अरिथी सुं होई होलाल ॥ जो० ॥
 ॥ ६ ॥ विप अमृत होई प्रणामिउं, वायु सुतने सोई
 होलाल ॥ पूर्व पुण्य प्रसादथी, पहुंचे नहि कोई हो
 लाल ॥ जो० ॥ ७ ॥ विजकुखेता दानज्युं, वि
 णपात्र विचार होलाल ॥ बांजणसुं घरवासजी, नीफल
 ते अवधार होलाल ॥ जो० ॥ ८ ॥ कौरवना उपक

मंथी मारण श्री जीमहोलाल ॥ एक न लागे आक
 रो, वाउल जीम हीमहोला० ॥ जो० ॥ ९ ॥ ठोत्तरसो
 एकठा, पढवाने काजहोलाल ॥ कृपाचारजजी नणी,
 सोप्या श्री माहाराज होला० ॥ जो० ॥ १० ॥ प्रज्ञा
 वले आगे निसरे, अर्जुन ने ए कर्ण होलाल ॥ बुद्धी
 विशेष विचारिये, ग्रहे पडंता वर्णहोला० ॥ जो० ॥ ११ ॥
 दिवस अणोजाने सहू, रमवाने जायहोलाल ॥ गेंद
 दडे अति खेलतां, रलियायत थायहोलाल ॥ जो० ॥
 ॥ १२ ॥ दडी कूदी कूवे पडी, न कढाई जामहोला
 ल ॥ माखि जेम महूआलने, रहे विंटी तामहोला
 ल ॥ जो० ॥ १३ ॥ द्रोणाचारज आवीयो, कीधो त
 व प्रणाम होलाल ॥ बाणकलासु गइंदने, काढी ते
 अनिराम होलाल ॥ जो० ॥ १४ ॥ कृपाचारज पू
 ठियो, जीष्म धरी स्नेहहोलाल ॥ द्रोणाचारज पा
 खति, मेल्या सुत तेहहोलाल ॥ जो० ॥ १५ ॥ अ
 ल्पशास्त्रनीकला, साधे ते सु विशेषहोलाल ॥ कर्ण श
 शि तारा विषे, रवि अर्जुन देख होलाल ॥ जो० ॥
 ॥ १६ ॥ धनुष्य चहाडे खेंचवे, नाखेवे ए बाणहोला
 ल ॥ करवे चोट अचुकजी, हरीनंद सुजाणहोला० ॥ जो० ॥
 ॥ १७ ॥ दिन दिन तेज प्रतापसुं, वाधंतो ए वान
 होलाल ॥ सघला मांही सामटो, पामे अति सनमा
 न होलाल ॥ जो० ॥ १८ ॥ द्रोणाचारज एकदा, का
 लिद्रीमें स्नानहोलाल ॥ करतां तांतणिए ग्रहो, नवि

दोब्ज्या आनहोलाल ॥ जो० ॥ १९ ॥ अर्जुन तव
 आयो धर्मी, गोडावणने हेतहोलाल ॥ हेत घणो गु
 रु शिष्यने, जेहवा ए युग नेतहोलाल ॥ जो० ॥ २० ॥
 बाहिर आव्या प्रेमसुं, न प्रसशो तेहहोलाल ॥ जा
 रयुं कौरव कोपशो, गर्वामे वलि एहहोलाल ॥ जो० ॥
 ॥ २१ ॥ एकांते हरीनंदसुं, गुरु बोल्या एमहोलाल ॥
 धनुष्यकला अवरा जणि, देवा मुऊ नेमहोलाल ॥ जो०
 ॥ २२ ॥ राधावेद कला शिखरी, अर्जुन वाचा ली
 धहोलाल ॥ दुर्योधनने चीम गदानी, युद्धतणी विधि
 साध होलाल ॥ जो० ॥ २३ ॥ यथा योग्य जे जा
 णिया, तेहवी विद्या आपहोलाल ॥ कला देखावणआ
 पणी, वात विशेषे थायहोलाल ॥ जो० ॥ २४ ॥ ए
 तो नवमी ढाल विशेषे, कुमर विद्या पामहोलाल ॥ श्री
 गुणसागर सुरजी, गुरु प्रणम्यो शिरनामहोला ॥ २५ ॥
 दुहा ॥ निष्म तो जलपण जणी, मंचक संच आ
 रंज ॥ मडावी पुत्रां तणो, देखण समरारंज ॥ १ ॥
 बैठा वड वड राजीया, आगल सकल कुमार ॥ कला
 दिखावे आपणी, शस्त्रास्त्र तणी अपार ॥ २ ॥ रणरंगे
 रांच्या सह, विस्मय पाम्यां ताम ॥ लोक सकल मन
 चिंतवे, मतको थाय अकाम ॥ ३ ॥ दुर्योधनने चीम
 जी, मांहोमांही कलेश ॥ करत निवारया द्रोणसुत,
 लहि तात आदेश ॥ ४ ॥
 ढाल १० मी ॥ तुमें पीतावर परो होके मुखने

मरकलडे ॥ ए देशी ॥ एतो गुरु दृढक प्रेरयाहो, पां
 डव अर्जुन उदाश ॥ एतो विद्या देखावेहो, पांडव ध
 नुष्यकी वारु ॥ १ ॥ एतो राधा वेदहो. पांश्रव निरखी
 राजानो ॥ एतो सराहण किजेहो. पांडव मेरु समान
 ॥ २ ॥ एतो कौरव रायहो. पांडव सयनो वताई ॥ ए
 तो करण कराईहो. पांडव चंपापुरी पाई ॥ ३ ॥ ए तो
 सारथ सुतहो. पांडव एतले आयो ॥ ए तो रायके आ
 गेहो. पांडव करणे बेसायो ॥ ४ ॥ ए तो विपरित वा
 तहो. पांडवराय रिसाणा ॥ ए तो खरखावा द्राखहो.
 पांडवकु दिले सयाणा ॥ ५ ॥ ए तो अर्जुन जीमहो.
 पांडव लठिया दोई ॥ ए तो चंपाकि उपावेहो. पांश्र
 व कर्णठे कोई ॥ ६ ॥ ए तो दोई वरुविराहो. पांडव
 शणरंग मांगे. ए तो कौरव करणहो. पांडव उना आ
 गे ॥ ७ ॥ ए तो हाकोहाकहो. पांडव रवि रथ वाजी ॥
 ए तो चालीया वेगेहो, पांडव रजनी विराजी ॥ ८ ॥
 ए तो रजनी बमासहो, पांश्रव कौरव जाणी ॥ ए तो
 मंडीया प्रातहो, पांडव गुरु दया आणी ॥ ९ ॥ ए
 तो समजीया दोइहो, पांडव सेट लडाई ॥ ए तो कौ
 रव तातेहो, पांडव सुत बोलाई ॥ १० ॥ ए तो पूगी
 यो वंशहो, पांडव मुद्रां देखाई ॥ ए तो करणजी जा
 एयोहो, पांडव पांश्रव चाई ॥ ११ ॥ ए तो गंगामें
 आयोहो, पांश्रव लीयो कढाई ॥ ए तो कियो मोठ
 वहो, पांडव खाट वधाई ॥ १२ ॥ ए तो सहणामां दे

ख्योहो, पांडव सुरस तेजो ॥ ए तो रविसुत नामहो,
 पांडव लहियो सहेजो ॥ १३ ॥ ए तो करतल काने
 हो, पांडव दीठा ताम ॥ ए तो थाप्यो अन्निरामहो,
 पांडव वर्णजी नाम ॥ १४ ॥ ए तो कौरव नूपहो, पां
 डव मठर धरंतां ॥ ए तो निज घर आवेहो, पांडव
 सोच करंतां ॥ १५ ॥ ए तो प्रचुताई पेखेहो, पांडव
 जगीमऊरो ॥ ए तो प्रत्यक्त खिजेहो, पांडव वहे अ
 तिखारो ॥ १६ ॥ ए तो मांहोमांहीहो. पांडव उपज्यो
 विरोधो ॥ ए तो पांडव नूपहो, पांरुव टालवा क्रोधो
 ॥ १७ ॥ ए तो देश विलातहो. पांरुव आपिया जुवा ॥
 ए तो एवमो पद्धहो. पांडव जूआ जूआ हुवा ॥ १८ ॥ ए
 तो गयाकरो शोकहो, पांरुव रंचन आणे ॥ ए तो हो नारी
 वातहो. पांडव अधिक न ताणे ॥ १९ ॥ ए तो वरत ति
 वारहो. पांडव वरते अपारो ॥ ए तो एहथी जाण्योहो,
 पांरुव श्रीहरी प्यारो ॥ २० ॥ ए तो कहि दसमीहो.
 पांरुव ढाल थुणिजे ॥ ए तो श्रीगुणसागरहो, पांरुव
 सुजस सुणिजे ॥ २१ ॥

दुहा ॥ अंधक विष्णु दिक्का ग्रही. पाले जिनवर
 आण ॥ सौरिपुर राज करे नलो. समुद्रविजे राजान
 ॥ १ ॥ नामें शिवादे नामनी, आश्रव तणो परीहार ॥
 सुखदाई सहू लोकने. शिलतणे शिणगार ॥ २ ॥ रूप
 शिरे लक्षण शिरे, कलाशिरे गणधाम ॥ श्रीवसुदेव
 कुमारनो, चरित्र नणुं अन्निराम ॥ ३ ॥ चारित्र पाली

निर्मलो, नंदिखेण अणगार ॥ करी वेयावच साधुनी,
पायो सुजस अपार ॥ ४ ॥ आयु सागर विशनो,
जोगवि सुर सुख सार, शेष पुण्यने कारणे, थयो वसु
देव कुमार ॥ ५ ॥

ढाल ११ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ श्री वसुदेव
कुमारजी. रूप अनुप रसाल हो कुमर ॥ जोग
पुरंदर सुंदर. सोजागी सुकुमाल हो ॥ कु० ॥
॥ १ ॥ मोहनवेल कुमारजी ॥ ए आंकणी ॥ अवर
अनेरा राजीया. राजा जरत कहेवहो ॥ कु० ॥ अवर अ
नेरा कुमारीया, कुंवर तो वसुदेवहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २ ॥
॥ मित्र इंद्र समान ठे. सेवक अमर अनूपहो ॥ कु०
॥ आपण सुरपति साचलो. गजऐरावण रूपहो ॥
कु० ॥ मो० ॥ ३ ॥ स्वर्ग सरीखो जाणीए. सौरिपुर सु
ख वासहो ॥ कु० ॥ स्वईचा रमत करे. करतो लि
ल विलासहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ४ ॥ देव दूगंधक सारिखो,
काम तणो अवतारहो ॥ कु० ॥ मोही रही अति मान
नी. लागी होमे लारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ५ ॥ करे
कुतुहल कामनी. वांडी घर व्यापारहो ॥ कु० ॥ फि
रे कुदाति हरणली, न लहे घरनी सारहो ॥ कु० ॥
मो० ॥ ६ ॥ केई अलुणो रांधति, केई लुण दोवार
हो ॥ कु० ॥ आधो पीरसी. पिरसणो, जाइ तजी ज
रतारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ७ ॥ नूपण थानक पालटे,
आधो करी सिणगारहो ॥ कु० ॥ टोले टोले सामटि,

साथे फिरे सब नारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ८ ॥ घर उघा
 डांही रहे, थाये अति उजाड़हो ॥ कु० ॥ साह मिली
 रावले गयां, वालण पगे किवाडहो ॥ कु० ॥ मो० ॥
 ॥ ९ ॥ राजा नाखे सादरो, केम पधरया साहहो ॥ कु० ॥
 पामी आदर अति घणो, साह वदे सोचाहहो ॥
 ॥ कु० ॥ मो० ॥ १० ॥ पुज्य प्रमाद तुमारडे. सुखि
 या सगला लोकहो ॥ कु० ॥ लाज घणो व्यापारमें,
 अनधन सर्व संजोगहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ ११ ॥ तो तुमे
 केम देखाउंगो, आरतिवंता आजहो ॥ कु० ॥ जे जिमठे
 तिम दाखवो, लाजे विणसे काजहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १२ ॥
 एघात कहंता संकिए. अण कहिया नरहायहो ॥ कु० ॥
 सापे ग्रहि बढुंदरी, एह परे अम थायहो ॥ कु० ॥
 ॥ मो० ॥ १३ ॥ दोश न कोई कुमारनो, निरंकुशी
 त्रिय जातहो ॥ कु० ॥ विकल थइ विधुल महा, किशी
 कराई तातहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १४ ॥ कान गया
 लोचन गयां, गई लाज विशेषहो ॥ कु० ॥ कुमर दे
 रूयां प्रियानी, रहिठे इंद्रि शेषहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १५ ॥
 तरुणि बुद्धि बालिका, एक सरिखि होयहो ॥ कु० ॥
 सोवंती नांखे सखी, आवंतो प्रभु जोयहो ॥ कु० ॥
 मो० ॥ १७ ॥ कुमर न रहे खेलतो, त्रिया न रहे घ
 र मांहीहो ॥ कु० ॥ वास अनेरी जायगा, आप आप
 नृप प्राहिंहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ १८ ॥ नृपने थइ वि
 च्यारणा, कुमरशुं अति प्रेमहो ॥ कु० ॥ लोक विणा

नही साहिबी, अब कहो किजे केमहो ॥ कु० ॥ मो०
 ॥ १९ ॥ अर्थ मीत दोई राखणो, एह सयाणो का
 महो ॥ कु० ॥ विप्रसुता संवधथी, सोच महा अनिरा
 महो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २० ॥ शिख देइ शाहा जणी,
 सहिलमांही नर देवहो ॥ कु० ॥ आयो आरति जा
 एके, देवि वदे ततखेवहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २१ ॥ ना
 मे शिवा शिव कारणी, पट गुण धारक नारहो ॥ कु०
 जेद लही लोका तणो, किम ले वात समारहो ॥ कु०
 ॥ मो० ॥ २२ ॥ एतले कुमर आविया, वेठो, नृप
 नी गोदहो ॥ कु० ॥ राजा राणी रिजवे, वारु वात
 विनोदहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २३ ॥ प्रिती पोपी परि
 घल पणे, राय वदे खुविच्यारहो ॥ कु० ॥ आज का
 ल तो अति घणो. दुर्वल थयो कुमारहो ॥ कु० ॥
 मो० ॥ २४ ॥ राणी जाखे रायशु, आणी अतिशे प्या
 रहो ॥ कु० ॥ माहारो वचन विशेषथी, माने नहींय
 लिगारहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २५ ॥ फिरे घणुं वन वा
 गमें. तने लागे अति तापहो ॥ कु० ॥ थयो खरोही
 दूबलो, माहरे मन संतापहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २६ ॥
 भूप जणे वठे सांजलो, मित्रा केरे संगहो ॥ कु० ॥
 खेल करो मन जावतो, मेहेल मांही मन रंगहो ॥
 कु० ॥ मो० ॥ २७ ॥ प्राण थकी प्यारो खरो, जाई
 पुत्र समानहो ॥ कु० ॥ तुज सुखीए सुखीया हमे,
 तुवे प्रेम निधानहो ॥ कु० ॥ मो० ॥ २८ ॥ ए इ

ग्यारमी ढालमें, सानी वात विशेषहो ॥ कु० ॥ श्रीगु
णसागर सूरिजी, अवकीम उपजे द्वेषहो ॥ कु० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ मेहेल मांहिठे वाग वर, तरुवर जात अ
नेक ॥ वृद्ध अशोक सुहामणा, कुवा वाव विशेष ॥
॥ १ ॥ द्वाण घरमें द्वाण वागमें, द्वाण जाई चित
चाव ॥ खेलावे अति खांतशुं, जोजाई चल चाव ॥ २ ॥

ढाल १२ मी ॥ ऊठ गौविंदा ऊठ गोपाला ॥ ए
देशी ॥ जूठ न हाले जूठ न चाले, जूठ न आघो
थाय होलाल ॥ जेद लही जूठी मायानो, कुमर परदेशे
जायहोलाल ॥ जू० ॥ १ ॥ वावना चंदन कर कचा
ली, दिधी दाशी हाथहोलाल ॥ एतले कुमरजी चली
आयो, मित्रा केरे साथहो लाल ॥ जू० ॥ २ ॥ कुमर
पूठे रे ए काई, सा तव बोले गाजहो लाल ॥ देवी शी
वाए चंदन जेज्यो, राय विलेपन काजहो लाल ॥ जू० ॥ ३ ॥
घे मुजने ए चंदन चेटी, करु विलेपन आपहो लाल
॥ चेडीनापे जीनकरंता, दीए मुह माथे थापहो ला०
॥ जू० ॥ ४ ॥ चंदन लेई विलेपन करी तन, घणुं पो
मावे साईहो लाल ॥ माहरा मारयां वुंब न वाहरु, प
हिली न समजी काईहो ला० ॥ जू० ॥ ५ ॥ होइ
खिसाणी बोले ताणी, चेडी चंचल जातहो ला० ॥
तन मन जूठी ने अति रूठी, वाणी वदे अकुलात
हो ला० ॥ जू० ॥ ६ ॥ नमणो खमणो माणस नि
फो, न नमे न खमे जेहहो ला० ॥ आका केरां इंधण

सरिखो, लेखविए नर तेहहो ला० ॥ जू० ॥ ७ ॥ जो
 एहवां लक्षण ठे तारां, तरे पुकारया लोकहो ला० ॥
 न्याये पड्योठे बंधीखाने, कुमर कहे ए रोकहो ला०
 ॥ जू० ॥ ८ ॥ चित्तमे चमकी चतूर पणाथी, करी दि
 लासा सातहो ला० ॥ पूवंता तव प्रगट कीधो, सहु
 संबंध प्रकाशहो ला० ॥ जू० ॥ ९ ॥ साच जूठनी
 करण परिद्धा, पोले आवे तामहो ला० ॥ दरवाजो
 रोकि तव जाणयो, साचो सघलो कामहो ला० ॥ जू०
 ॥ १० ॥ पाठो फीरी मंदिर आयो, चित्तशुं चित्ते ए
 हहो ला० ॥ कुकर नूसानो काम नहीं कोई, जाणयो
 जाई सनेहहो ला० ॥ जू० ॥ ११ ॥ धिग् मुज जा
 णपणो ए अधिको, धिग् मुज रूप रसालहो ला० ॥
 दुःखदाई हुड हुं सहुने, अरु शिर आयो आलहो
 ला० ॥ जू० ॥ १२ ॥ अहि मणि कस्तूरी मृग मैंग
 ल, दंत थकी विपनाशहो ला० ॥ चमरी पूठ थकी
 नर रूपे, गुणथी वैरनिवासहो ला० ॥ जू० ॥ १३ ॥
 विण गुणहे ए लोक पूकरया, राजा मानी वातहो
 ला० ॥ अणख आया जाई रीसे, मेंतो दुःख न ख
 मातहो ला० ॥ जू० ॥ १४ ॥ मान गयो ने माहतम
 मिटीयो, रेहणो नहि एह थानहो ला० ॥ जांगी शा
 खाए विलगेवो. तेतो उपजे हानहो ला० ॥ जू० ॥
 ॥ १५ ॥ पुरुपां पाणी इम राखेवो. ज्युं राखे नालिये
 हो ला० ॥ गोकलकोतो पैमो न्यारो, साधां सूधो

शेरहो ला० ॥ जू० ॥ १६ ॥ गाम तलाई न तजे व
 गलो, न तजे मालो कागहो ला० ॥ मानसरोवर त
 जे ततद्विण. हंस तणो सो जागहो ला० ॥ जू० ॥
 ॥ १७ ॥ मध्यम राते अश्व चढीने, साथे एक खवा
 सहो ला० ॥ निकलियो पुर बाहीरे आयो. मतो करे
 सोल्हासहो ला० ॥ जू० ॥ १८ ॥ अश्व ग्रहीने रहे
 तुं अलंगो. शेवकशुं दाखंतहो ला० ॥ हुं विद्या सा
 धु समसाने, चेद न को जाखंतहो ला० ॥ जू० ॥
 ॥ १९ ॥ लाकर लावे चित्ता बनावे, मृतक आणी ए
 कहो ला० ॥ आचूपण पहिराधी बाले, टालण खोज
 धिवेकहो ला० ॥ जू० ॥ २० ॥ जंघा चीरी लोहीका
 ढी. ताम लिख्यो ए लेखहो ला० ॥ में ए किधीराजा
 परजा, करज्यो राज विशेषहो ला० ॥ जू० ॥ २१ ॥
 पोले चिठी बांधी चाल्यो. धरी ब्राम्हणनो वेशहो ला
 ल ॥ एह वारमी ढाले जाखे, गुणसागर सु विशेष
 हो ला० ॥ जू० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ प्रात हुआ सहु जागीया. कुमर न दीठो
 सोय ॥ सुध न लाधी शोधतां. आरतिवंतो होय ॥
 ॥ १ ॥ चूप नलीपरे पूगीयो. सेवक सोई सुजाण ॥
 विचरी वात कही सहु. आचूपण अहिनाण ॥ २ ॥
 चिठी दीठी पोलेजी. खोले वाची जाम ॥ साची सघ
 ली जाणता. मुरबाणो नृप ताम ॥ ३ ॥ मुरबाणो जा
 ई अवर. मर्बाणी नृपनार ॥ वान गुलाम आदे करी,

हाहारव संसार ॥ ४ ॥ चेतन लेई राजा प्रजा, गुणनो करे
प्रकाश हा वनजाग कियो किशुं, विलवे राय उदासा ॥ ५ ॥

ढाल १३ मी ॥ सारगीयो गणरुद्धिबे ॥ ए देशी ॥
कुमरजी एसी किजे केम, समुद्र विजय शीवादेवी वि
लवे ॥ बेहन दिजे एम ॥ कु० ॥ १ ॥ हा सोजाग
निध्यान निरुपम, जादव वंश वतंस ॥ हा सतवंत
महंत गुणाकर, प्रथिव माहि प्रसंस ॥ कु० ॥ २ ॥ हा
चंद्रानन पंकज लोचन, हा गुण चरित शरीर ॥ स
व विध सुंदर जोग पुरंदर, सायर जेम गंजीर ॥ कु०
॥ ३ ॥ हा जाई हा बंधु सहोदर, हा वडवीर सधी
र ॥ जीवेक्युं चित करि अति गाढो, माठलडि विण
नीर ॥ कु० ॥ ४ ॥ पुत्र पनोता पुनरपि होवे, रमणी
रूप अनूप ॥ गाम नगर पुर नवि पामिजे, जाईजी
जल नूप ॥ कु० ॥ ५ ॥ देवरियो दिल दरियो देख
त, पेखत प्रचुता पूर ॥ नजरे न आवे नर कोइ वी
जो, किया काम करूर ॥ कु० ॥ ६ ॥ शुं किजे ए
लोका साथे, सोर मचायो नूर ॥ वात कहंता विचि
द्वण शु. ऊडी गयो अति दूर ॥ कु० ॥ ७ ॥ रे
कुडा किरतार कलेशी, सोच नहीं तुज मांहि ॥ सा
जन मेलि विगेहो करतां, कालज कांपे प्रांहि ॥ कु०
॥ ८ ॥ इम विलवंता राजा राणि, एक नीमतिथो
ताम ॥ बलते वांट सुधारस केरी, वाणि वदे अजि
राम ॥ कु० ॥ ९ ॥ कुमर न मूठ ठे जयवंतो, अ

रति म करजो कोई ॥ लाज घणो दिन थोडा मा-
हि, आवि मिलशे सोई ॥ कु० ॥ १० ॥ काईक ए
निमति वचने, काईक चित्त विचारी ॥ सुसता हुआ
राजा राणि, आशाने अधिकारी ॥ कु० ॥ ११ ॥ ए
तेरमी ढाले राजा, वरते धरतो कोड ॥ श्री गुणसागर
र चाई दसनी, ठे जग अविहड जोरु ॥ कु० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ चालंतो पश्चिम दिशे, मेलंतो बहू ग्राम ॥
विजय खेडपुर आवियो, ताम ग्रहो विसराम ॥ १ ॥
चूप चलो सुग्रीवजी, सुंदरि नामा नार ॥ पुत्र पंच उ
परैहूई, पुत्रि दोय सुविचार ॥ २ ॥ सोमा नाम सु
हामाणि, सोम सुसेना जाण ॥ पढि गुणि मति आ
गलि. पुत्रि गुण मणिखाण ॥ ३ ॥

ढाल १४ मी ॥ राग खेंगारना गीतनी देशी ॥ गुण
वंताने गुण चढे, किरति हो किरति वधाति जोया ॥ में
गलानि परे मानवि, चुलेहो चुले मूंधा होय ॥ गु० ॥ १ ॥
हीरा लाल पिरोजडा, मोतीहो मोति माणिक मोल ॥
पारखियाथि वाधतो, माणसहो माणस तिम निर मो
ल ॥ गु० ॥ २ ॥ कुमरी कला गुण आगलि जा
णेहो जाणे राग प्रमाण ॥ वेण बजावे चातुरी, रीं
जेहो रींजे चतुर सुजाण ॥ गु० ॥ ३ ॥ एह आनि
ग्रह मन धरघो, अमने हो अमने जिते जेह ॥ वेण ब
जावी वेगशुं. पिउडो हो पिउडो म्हारो तेह ॥ गु०
॥ ४ ॥ राय जादा रूयडा. राजाहो राजा आवेके

ई ॥ काज न सरहि कोईनो, जाईहो जाइ कर शी
 र देई ॥ गु० ॥ ५ ॥ कुमर चाली तिहां आवियो,
 लिधोहो लिधो विणा हाथ ॥ सुघड पणैरे वजावतो,
 अचरिजहो अचरिज सघले साथ ॥ गु० ॥ ६ ॥ के
 किरर के खेचरु, के हो के ए सुर अवतार ॥ नूचर
 जरमाणा घणु, कुमरीहो कुमरी मोहि अपार ॥ गु०
 ॥ ७ ॥ पहिरावी वरमालिका, किधोहो किधो अधि
 क उवाह ॥ कुमरी दोई शुं जलो. हुनहो हुन ते वि
 वाह ॥ गु० ॥ ८ ॥ सुख विलसंता सुंदरु, नंदनहो नंदन
 नाम अकूर ॥ सोम सुसेना जाईयो, दिन दिनहो दि
 न दिन चरुतो नूर ॥ गु० ॥ ९ ॥ एक दिवस आगे चा
 लियो, खबर न हो खबर न जाणि केण ॥ सजला व
 र्त सुहासणो, दीठोहो दिठो सरोवर तेण ॥ गु० ॥
 ॥ १० ॥ सरोवर जलमें जीलतां, आयोहो आयो ए
 क गयंद ॥ गज शिद्धाए वश करी, चढियोहो चढि
 यो ताम नरिंद ॥ गु० ॥ ११ ॥ खेलावे अति खांत
 शुं. उलखियोहो उलखियो असवार ॥ मँगल मनमें
 मोहियो, उलट हो उलटनो अधिकार ॥ गु० ॥ १२ ॥
 कमरे उचो देखियो. इहांहो इहां नहि निज कोई ॥
 जे देखे बल साह्यरो, सोरीहो सोरीपुर कहि सोई
 ॥ गु० ॥ १३ ॥ आया दोई विद्याधरु, जाखेहो जा
 जे मीठी वात ॥ नागावर्तन पुर जलो, राजाहो रा
 जा विश्वविख्यात ॥ गु० ॥ १४ ॥ असनी वेग वि

राजतो, राणिहो राणि विजया ताम ॥ कुमरी करम
 यति महा, जाईहो जाई शामा नाम ॥ गु० ॥ १५ ॥
 कुमरीनो वर पूठतां, निमतिहो निमति चारुव्यो सारा ॥
 जे गजने वश आणशे, थाशेहो थाशे सोई चरतारा ॥ गु०
 ॥ १६ ॥ वेशी विमाने हरखशु, आवेहो आवे पुरमें
 चाल ॥ राजा राणी रंजीया, प्रचुनोहो प्रचुनो नूर
 निहाल ॥ गु० ॥ १७ ॥ कंचननो मंडप कियो, मणि
 नाहो मणिना थंज उदार ॥ पूतलिया मन मोहनी,
 शोनाहो शोना विविध प्रकार ॥ गु० ॥ १८ ॥ ढो
 ल दमामा दमवनी, वाजांहो वाजां अधिक उदार ॥
 विहाह तणी विधि साचवि, वरत्याहो वरत्या मंगल
 चार ॥ गु० ॥ १९ ॥ ए चउदमी ढालमें, सुखमेंहो
 सुखमें विसरजाय ॥ श्री गुणसागर सूरिजी. पूरवहो
 पूरव पुण्य पसाय ॥ गु० ॥ २० ॥

दुहा ॥ शामा मंजुल चापिणी, सुघडमहा गुणजा
 ण ॥ त्रिणा वजावि एकदा. रंजत्रियो राजान ॥ १ ॥
 रंजीयो राजाघणुं, वाणिवदे अनूप ॥ मांग मांग व
 र माननी. फिरफिर चाखे चूप ॥ २ ॥

ढाल १५ मी ॥ आदि जिणंद मया करो ॥ ए दे
 शी ॥ तव बोले सा सुंदरी, सांजल जादव नाथरे ॥
 निसदिन रेहेशुं पाखति, नवि ढोडूं तुम साथरे ॥ त
 व ० ॥ १ ॥ प्रचु जणी शुं, मांगीयु, ए लघुतानी वा
 तोरे ॥ पुरुष अबंध सरांहयो, बंधक परवश थातोरे

॥ त० ॥ २ ॥ अति मनमानि माननी, नर शिर, च
 ढती जायरे ॥ गंगा देवी शीव तणे, बेठी माथे आ
 थारे ॥ त० ॥ ३ ॥ नारी कहे निजसुखजाणि, एतो
 हुं नवि जाखुरे ॥ कारण जाणि विशेषथी, देव तमासो दा
 खुरे ॥ ४ ॥ खेचर अंगारक आकतो, पापीडो मति पीडरे
 ॥ नूचर जाणी चोलवी, नुज बलशुं मति चीडरे ॥ त०
 ॥ ५ ॥ नूप नलीपरे जाखेरे, एठे कवण विचारोरे ॥
 रुपाचल दक्षणादिशे, पुरवरठे अति सारोरे ॥ त० ॥
 ॥ ६ ॥ कीन्नर उठंगति एहवो, अर्चितमाली राजारे ॥
 प्रजावती कूखे उपन्या, नंदन दो अति ताजारे ॥
 त० ॥ ७ ॥ अग्निवेग अति आकरो, अशनी सुवेग
 स्रोजागीरे ॥ समरथ जाणी नदन, राजा थयो वैरा
 गीरे ॥ त० ॥ ८ ॥ प्रज्ञप्ती वर विद्यासुं, प्रथमने नृ
 पपद आप्योरे ॥ अवर नणी युवराजनो, पदतो स्थी
 र करी थाप्योरे ॥ त० ॥ ९ ॥ आपण संजम लेइ
 ने, मुनिनो मारग साध्योरे ॥ तप जप करणीने बले,
 आपे आप आराध्योरे ॥ त० ॥ १० ॥ विमला ना
 म सुलक्षणा, राय घरे पटराणीरे ॥ अंगारक सुत जा
 इयो, कीरति अधिक वखाणीरे ॥ त० ॥ ११ ॥ युव
 राजा घर जाणइ, नामे सुप्रजा नारीरे ॥ तस उरे हुं
 उपनी, आदि लगे सुविचारीरे ॥ त० ॥ १२ ॥ रा
 यतणे पद थापियो, प्रीति नणी लघु जाइरे ॥ वि
 द्यासु निज नंदन, युवराज पद ठाइरे ॥ त० ॥ १३ ॥

चारित्र लीधो मुनीवरु, मोटप मेरु समाणीरे ॥ आ
 प सरीखा लेखवे, जगमां जे ठे प्राणीरे ॥ त० ॥
 ॥ १४ ॥ राय अने युंवरजमां, उपज्यो अधिक क
 लेशरे ॥ जुजबलने विद्यावले, राय वंझयो देशरे ॥
 त० ॥ १५ ॥ नागावर्त्तसुं नगरीए, राजाजी गयो ना
 सीरे ॥ पंखी पिंजरानी परे, वासर जाए उदासीरे ॥ त
 व० ॥ १६ ॥ एक दिवस नंदन वने, गयो एह नरिं
 दोरे ॥ जंघाचारण ज्ञानीजी, मीलियो एक मुणिंदोरे
 ॥ त० ॥ १७ ॥ पगे लागीने पूगीयो, राज गयो के
 आसोरे ॥ पुत्री पतिथी थाशेये, तरे लील विला
 सोरे ॥ त० ॥ १८ ॥ पुनरपि जाखे रायजी, पुत्री प
 ति कोण थाशेरे ॥ सजलावर्त्त सरोवरे, हाथी सा
 मो धाशेरे ॥ त० ॥ १९ ॥ गज शीखाइ खेलवी,
 हाथीने वश करशेरे ॥ श्री वसुदेव नरेश्वरु, सामा कुम
 री वरशेरे ॥ त० ॥ २० ॥ ते उपर ए खेचरु, जा
 सुसीने हेतोरे ॥ काम सरयां प्रचु तुमने, लेइ आ
 व्यो गह गहतोरे ॥ त० ॥ २१ ॥ विस्तारथी ए वा
 तजी, खेचर सगली जाणीरे ॥ पिशुनपणे तुम हण
 वानी, बुद्धी अठे तिही ठाणीरे ॥ त० ॥ २२ ॥ उ खे
 चर तुम नूचरु, मतके वीणसे कामोरे ॥ तेहथी हुं
 वर मांगुं, साथरही अनिरामोरे ॥ त० ॥ २३ ॥ तव
 वर आपी थापियो, गाढो प्रेम अपारोरे ॥ ए पन
 रमी ढालमां, गुणसागर जयकारोरे ॥ त० ॥ २४ ॥

दुहा ॥ निशिन्नर निंदमे सोवतो, खेचर ते अंगार ॥
 र ॥ लेइ गयोवसुदेवने, आणी द्वेश अपार ॥ १ ॥
 जागी शामा सुंदरी, पीड न देख्यो जाम ॥ शस्त्र ग्र
 ही पुठे हुइ, आण पहती ताम ॥ २ ॥ अरि संघाते
 सामीका, लागी होई विरूप ॥ अरिने सनमुख होव
 तां. कोप्यो जादव नूप ॥ ३ ॥ मुष्टी प्रहारे मारियो,
 खेचर जादवराय ॥ नाखी दीधो आकाशथी. पड्यो
 सरोवर माह्य ॥ ४ ॥ समरंता नवकारने. आल न
 आयो अंग ॥ जलपयरी तट आवियो. सुसतो थ
 यो सुचग ॥ ५ ॥

ढाल १६ मी ॥ गौरांजी थें मुने गोमे न राख्यो
 ॥ ए देशी ॥ धन धन करमे तो नर कहीउं. जिहां
 जाइ तिहा आदर लहीउं ॥ ध० ॥ ए आकणीमार
 ग, जाता बलदेव केरो, देवल देखी हरख घणरो ॥
 जाणी शुभ स्थान राते तिहां वसियो, कर्म चरि लि
 खी मनमां हसीयो ॥ ध० ॥ १ ॥ प्रात हुओ एक
 आव्यो पूजारो, देखी कुमर मनहरख अपारो ॥ पृठे प्रचू
 जी पुज प्रकासो, ए कवणपुरी कोण नृपनो वासो ॥ ध०
 ॥ २ ॥ नगरी चंपा नामे निकी, नु जामनीने सीर
 टीकी ॥ चारुदत्त राजा जयवंतो, विशालाह्न त्रीय
 नो कंतो ॥ ध० ॥ ३ ॥ श्री गंधर्व सुसेना कुमरी, रु
 पे रुडी जाणी अमरी ॥ चोसठ नारी कला ते
 जाणे. राग कलामां अधिकु ताणे ॥ ध० ॥ ४ ॥

वेण वजावे ने मुख गावे. आपे रहीणे अधिके
 दावे ॥ एह कलाए जीते जेही. मुज नरतार
 करुं हुं तेही ॥ ध० ॥ ५ ॥ नूपतने नूपतिना जाया. पंच
 सया परिणाम कहाया ॥ श्री सुदर्शन गधर्व पासे, रात दि
 वस ए कला अच्युतासे ॥ ध० ॥ ६ ॥ ग्राम तीन
 स्वर सात कहीजे. मूर्धना एकविस लहीजे ॥ गुण
 पंचासय तान वखाणी, जाण कहावे ए विधि जाणि
 ॥ ध० ॥ ७ ॥ पुण्यने दिन मुजरो होवे, एना मुख सा
 मुं जोवे ॥ कारज करवा कोई न सूरु, कुमरी हसी
 कहे अवतो अधूरो ॥ ध० ॥ ८ ॥ पुनरपि विद्या अ
 धिकी सीखे. हठे पडीया ए नूपति नाखे ॥ वणिना
 वे ठे एलेतन मेलत. मास मास एक आघो ठेलत
 ॥ ध० ॥ ९ ॥ कुमर गयो आचारज संगे, साचवतो
 अति सेव सुचगे ॥ कलाग्रहंता वार न लावे, पिण
 तो वेण विपरीत वजावे ॥ ध० ॥ १० ॥ राजकुमार
 तव करतां हांसो, मुख नाखे एवढो तमासो ॥ अवर
 नही पण ए गुणवंतो, थाशे कुमरी केरो कंथो ॥ ध० ॥
 ११ ॥ तामस आणे यादव जाचो, अबही जाणशे
 कुमो साचो ॥ कांसो शब्द करेणे जेही, सोना शब्द
 करे नहि तेही ॥ ध० ॥ १२ ॥ पुनमनो दिन आयो
 जामो, कुमरी मंरुप आवी तामो ॥ गाइवाइ वीण वहे
 ली, साथे घणेरी तास साहेली ॥ ध० ॥ १३ ॥ तिलोत्तमा
 उर्वशी उलासो, सूर्य यक्षने प्रारुण प्रासो ॥ स्वर्ग थ

की जेम चाली आयी, विश्व मोहनी नाम धरावी ॥
 ध० ॥ १४ ॥ गावे अने वजावे विणा, मोहीरह्या सव
 लोक प्रवीणा ॥ कुमरी रूप कला गुण देखी, एही स
 नामां सुख विपेखी ॥ ध० ॥ १५ ॥ भूप तदा चरमा
 णा चारी, विसरीया सुघडाइ सारी ॥ आरतियो आ
 चारज होइ, विणा ग्रही कर कुवर सोइ ॥ ध० ॥ १६ ॥
 उत्तम घाट वनायो रूडो, कोइ वाते नाहिज कूडो ॥
 गान वजावणी ठे वेउ सरखी, कुमरी घणुं मनमांही
 हरखी ॥ ध० ॥ १७ ॥ कुमरी जांखे वात जलेरी, ए
 सी विणा आणी अनेरी ॥ विण सुघोपा नामे वारु,
 जेही रिजायो विष्णु कुमार ॥ ध० ॥ १८ ॥ सा विणा
 कर साहि प्यारे, आचरज तव हूओ जगसारे ॥ कहे
 अब केवो गाव गानो, सहने लागे अभी समानो ॥
 ध० ॥ १९ ॥ सा जांखे सुण चतुर सिरोमणि. तुं दे
 खाय ठे नचो मणि ॥ विष्णु कुमारनो टालण क्रोधो,
 उपद्रव्य मेटणने प्रतिबोधो ॥ ध० ॥ २० ॥ हाहा तुं
 बुरु नारद आयो, जेहि ग्याने ऋषिजी रिंजायो ॥ जो
 आवे तो सोहि सुणावो, अवर ग्यान ठे मोहि अजा
 वो ॥ ध० ॥ २१ ॥ जेद संगितहि जाणे सुधो, जेहि
 ग्याने ऋषिजी प्रतिबोधो ॥ सोहि सुणायो ग्यान स
 याणे, जलो जलो कही खलक वखाणे ॥ ध० ॥ २२ ॥
 रंजी रामा अति अजीरामा. पहेरावी वरमाल सकामा
 ॥ व्याह तपो कींधो मंमाण, ए पिण मोटो पुण्य प्रमाण

॥ ध० ॥ २३ ॥ वहू वरनी सरखीठे जोडी, पोहोचावे
मन केरा कोडी ॥ धर्म विपे पिण सरिखा दोइ, सुखमां
वासर जाता जोइ ॥ ध० ॥ २४ ॥ एक दिवस हरी उंठव
हेते, आवे कमर निज महिलसमे ते ॥ ढाल सोलमी क
ही सुणावे. श्रीगुणसागरजी गुण गावे ॥ ध० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ विद्याधर आव्या घणा. हरी उंठवने काज
॥ हसत रमत खेले तिहां, नरनारी शुच साज ॥ १ ॥
विद्याधरनी कुमरी, नीलजसा नामेण ॥ कुमरी रूपे रंगी
ली. अमरी जीती नेण ॥ २ ॥ नीलजसा वसुदेवने,
दृष्टी रागनी चूर ॥ उपजी जाणी विशेषथी; चमकी
चुचरी चूर ॥ ३ ॥ प्रीतम लेइ पाधरी. आवी निज आवा
स ॥ विद्याधर उंठव करी, चाली गया आकाश ॥ ४ ॥

ढाल १७ मी-॥ हम मगनचये प्रचु ध्यानमे ॥ ए
देशी ॥ कुमरी हूइरे उदासणी, हसत न बोलत डो
लत चित्तडो, कुमर चरण निवासणी ॥ कु० ॥ १ ॥
भोजन व्याग न पिवत पाणी. सोवत निंद न आव
ती ॥ लांबा अति निसासा लेती, यदुपतिने चित्त
धावती ॥ कु० ॥ २ ॥ प्रेम रागठे तीखीकाती, का
लिजने अति कापती ॥ जो सुख चाहे माननी मन
मां, परने चित्त मत आपती ॥ कु० ॥ ३ ॥ जाणी
आरती अपार अनोपम, धाइ पूठे वातजी ॥ चत
तणा बलनीपरे तुंतो, दिसेठे अकुलातजी ॥ कु० ॥
॥ ४ ॥ तव सा धाइ प्रते चांखे, श्रीवसुदेव कुमा

रजी ॥ दिठो देव उठव करंतां. चित्तनो चोरण हा
 रजी ॥ कु० ॥ ५ ॥ ए वरपामुं तो परणवो, अवर न
 परणुं कोइजी ॥ अणसरखे पीउडे पद्मनीनो, आवट
 सरणो होयजी ॥ कु० ॥ ६ ॥ घाइ तणा मुखनी सुणी
 राजा, ए सघलो वृत्तांतजी ॥ संतोपी वचने वर कु
 मरी, चाल्यो आप तरंतजी ॥ कु० ॥ ७ ॥ सोवंतो कु
 मर अपहरियो, करीयो काम अनूपजी ॥ नीजपुर
 आणी राजाराणी, पुज्यो यादव नूपजी ॥ कु० ॥ ८ ॥
 कुमरी अमरी सरखी सघली, सात सया परिमाण
 जी ॥ परणावी कुमरने हरखे, किधो अति मंमाणजी
 ॥ कु० ॥ ९ ॥ सौर सुणंतो पूढे प्रचुजी, एशो सौर
 प्रकारजी ॥ प्रतिहारणी चांखे स्वामी, एहनो एह वि
 च्यारजी ॥ कु० ॥ १० ॥ कुमरी तणी मातासुं चाइ,
 वोल्योथो ए बोलजी ॥ जो माहरे होशे सुत सुंदर,
 ताहरे सुता अमूलजी ॥ कु० ॥ ११ ॥ सगपणनो संवध
 करेता, ए हुवो ते न्यायजी ॥ लोक मिली ए जगडो
 जाज्यो, नारी क्रियो नवी थायजी ॥ कु० ॥ १२ ॥ क
 मली रमली करतो अति वरते, नोगी नमरो जेमजी ॥
 श्री वसुदेव कुंवर रमतो, पदमनियाने प्रेमजी ॥ कु०
 ॥ १३ ॥ गिरिसर खेलत निलकंठसो, आयो होई मो
 रजी ॥ निलयगाने लेई गयो तत्र, कांइ न चाल्यो
 जोरजी ॥ कु० ॥ १४ ॥ दक्षिणदिश गिरितटवर नगरे,
 सोमा राज कुमारिजी, देवतणे वांदे जीती प्रचु, पर

णी रति अवतारीजी ॥ कु० ॥ १५ ॥ ए केहेता रायथी
 सुर आवी, लेइ गयो ततखेवजी ॥ यद्द तणा देवल
 मांही मूक्यो, साचवतो अतिसेवजी ॥ कु० ॥ १६ ॥
 राक्षस एक तणोठे वासो, पेहेला देवल मांहीजी ॥
 देश नगरना लोक सहने. राक्षस दुःख दे त्राहीजी
 ॥ कु० ॥ १७ ॥ राक्षसने वश करवा सुरवर. करता ज
 य जय कारजी ॥ रायथी पण सघले आवीने, प्रणम्यो
 कुमर उदारजी ॥ कु० ॥ १८ ॥ कन्या पाच सया प
 शीमाणे, परणावी नूपालजी ॥ सुख मानता विविध
 प्रकारे. पुढ्यो सालो ख्यालजी ॥ कु० ॥ १९ ॥ कुल
 अणजाण्या किम परणावी, कन्या ए सतपंचजी ॥
 सालो नाखे स्वामी सांचल, सघलानो एक संचजी ॥
 ॥ कु० ॥ २० ॥ निमति वचने यदूनायक, राक्षस जी
 तण सूरजी ॥ कन्या सकल तणो वरथाशे. वाज्या ए
 जसतूरजी ॥ कु० ॥ २१ ॥ यादव राजा रायगया
 ना, जिहां जइए तिहां आपजी ॥ गुणसागर सत्तर-
 मी ढाले. पूर्व पुण्य प्रतापजी ॥ कु० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ अचलपुरी प्रभु आवीयो, वनमाला सुखका
 र ॥ पुत्री सारथ वाहनी. परणावी प्रेम अपार ॥ १ ॥
 सचरतो सोमापुरी, आइ गयो ते स्वाम ॥ कंपीलरा
 थनी कुंवरी. परणि कपिला नाम ॥ २ ॥ विविधप
 रे सुख मानता, सरोवरमां जीलंत ॥ निलकंठ गजरू
 प धरी. आइ कुमर चढंत ॥ ३ ॥

ढाल १८ मी ॥ चांदलिनी देशी ॥ हाथी आकाशे
 गालिउ, विद्याधर विद्या बलिउ ॥ जन चाखे कुंवर
 लियोहो ॥ कुंवरजी ॥ १ ॥ कुंवरजीरुपे निको, कुंवर
 जी प्यारो जीको ॥ कुंवर कुमरा सीर टिकोहो ॥ कु०
 २ ॥ हाथी तो चाल्यो जाये, राख्यो कोइनो न र
 ये ॥ कुंवर चित चिंता थायेहो ॥ कु० ॥ ३ ॥
 व मुष्टि प्रहारे मारयो, हाथिनो मद उतारयो ॥ आ
 णुं काम समारयोहो ॥ कु० ॥ ४ ॥ पडीयो गंगाज
 माही, नवकार जणंतो प्राहि ॥ अंगे दुखाणो ना
 हो ॥ कु० ॥ ५ ॥ गंगोजल पयरी जामो, अटवि
 पनीयो तामो ॥ आगे आयो एक गामोहो ॥ कु०
 ६ ॥ सिंहगुहा तस नामो, विमलप्रज नृप गुण
 नामो ॥ त्रीय श्रीमति अनीरामोहो ॥ कु० ॥ ७ ॥
 त्री पोमांवाइ वारु, अति वेद कला इंचारु ॥ सा
 तीति आणी उदारुहो ॥ कु० ॥ ८ ॥ परणीने सुख
 नीजे, आपणु पूधन जाणजे ॥ आंगेकि मति ठां
 शेजेहो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जयपुरना तो पति साधी,
 एक कुमरी नीकी लाधी ॥ दिन दिन अति किरति
 साधीहो ॥ कु० ॥ १० ॥ नदिलपुर चाली आयो, ति
 राजा पोद्र सुहायो ॥ प्रजुजी सौने मन जायो
 हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ कुमरी धारयो पूर्व वेसो, तस रुप
 कला सुविशेसो ॥ परणे जदुराय नरेशोहो ॥ कु० ॥ १२ ॥
 पुरुप वेशनो जेवो, तव पूठे श्रीवसुदेवो ॥ सा उत्तर दे

ततखेवोहो ॥ कु० ॥ १३ ॥ तव एक निमती राइ, पुढयो
 मुज वरने ताइ ॥ तिहां नाम लीयो गोसाइहो ॥ कु० ॥
 ॥ १४ ॥ योग कहो किम मिलशे, रुडे जइ रुडु न
 लशे ॥ ए आरति वेगे टलशेहो ॥ कु० ॥ १५ ॥ रूप
 पुरुषनो ठाणि, सा राज राखंति जाणि ॥ प्रचुजी मि
 लसे वेगो आणिहो ॥ कु० ॥ १६ ॥ गुरु गोत्रजने
 सुपसाइ. ए एकसरीखे दोइ ॥ सातमे वासर जाइहो
 ॥ कु० ॥ १७ ॥ अंगारक क्रोधे जरीयो, तिहां रूप
 हंसको करीयो ॥ सुखे सोवंतो अपहरीयोहो ॥ कु० ॥
 ॥ १८ ॥ मुष्टी प्रहार ज्यां दीधो ॥ चेतनथी अलगो
 कीधो ॥ गंगामे पनीयो सीधोहो ॥ कु० ॥ १९ ॥ पा
 णि तरी कांठे आवे, अटवि तजी वसती पावे ॥ इ
 लावर्धन नगर सुहावेहो ॥ कु० ॥ २० ॥ हाटे बेठा
 वेपारी, ते लक्ष्मीवंता जारी ॥ एक शेठ अठे अधि
 कारीहो ॥ कु० ॥ २१ ॥ कुमर बेठो तस पासे, ति
 हां मिलिया लोक तमासे ॥ ए मोटो शेठ विमासेहो
 ॥ कु० ॥ २२ ॥ तव अन्न वस्त्रने नाणुं. जुहरीयाने कि
 रीयाणुं ॥ ते दिन अधिकुं वेचाणुंहो ॥ कु० ॥ २३ ॥
 लाजंतणो नही पारो, तव शेठ करे सुविच्यारो ॥ ए
 तो एहनो उपगारोहो ॥ कु० ॥ २४ ॥ आदर अ
 धिके घर आण्यो, जोजनशुं प्रेम परमाण्यो ॥ वख
 नावर पुरुष पिढ्याण्योहो ॥ कु० ॥ २५ ॥ कन्या ठे
 रूप रसाली. सा रतनवति सुविशालि ॥ परणावी जा

क जमालिहो ॥ कु० ॥ २६ ॥ अष्टादशमी ढाले प्रे
मा, मुख विलमे मुरपति जेमो ॥ गुणसागर नांखे ए
मोहा ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ लाने लोच वाधे घणो, उद्यमे अधिको ला
न ॥ लाने सीर जाइ अडे, उचो तो अति आन ॥ १ ॥
स्नान विशेष विचारवे, आगे चाल्यो स्वाम ॥ महाप
री आयो सहि, हरख्यो अचरज पाम ॥ २ ॥ ठाम
ठाम दिसे घणां, मदिरनां मरुण ॥ निश्चे करवा क
रणे, पूढ्यो पुरुष प्रधान ॥ ३ ॥

ढाल १९ मी ॥ पांचमी वाडे परमेश्वरु ॥ ए ते
शी ॥ पुरुष कहे प्रनुजी सुणो, ए वातज वारु ॥ अ
चरजकारीछे घणी, चतुरा चितचारु ॥ १ ॥ सोमदर
राजा नलो, राणी सुविचारी ॥ पूरणनद्रा जाणीए
नृपने सुखकारी ॥ २ ॥ सोमश्री नामे नली, कुमरी
अनिराम ॥ स्वयंवर मंडप तेहनो, ए कीधां धाम ॥ ३ ॥
राय घणा-चाली आवीया, ए अनिरुनरीखो ॥ विचे
हुयो संबंधजी, ते सुणण सरीखो ॥ ४ ॥ उपर नोमी
एकदा; सा राजकुमारी ॥ देखे लंठन चंद्रनं, लय ला
गी नारी ॥ ५ ॥ ऋषि केवल उठव नणी, सुर जात
देखी ॥ जाति समरण पामियो, मूरठा सुविशेख
॥ ६ ॥ उठाडी वेठी करी, करी सीतलताई ॥ मौन उ
हिने सा रहि, कही वात न कांइ ॥ ७ ॥ धाय माय
ने पूढतां, दिए जवाव गरीठो ॥ ज्ञान वले परचव

तणो, में प्रितम दीठो ॥ ८ ॥ हुं हुती देवांगना, तुं
 हुतो देवो ॥ जोगघां आयु सुरगति तणो, चवीयो त
 तखेवो ॥ ९ ॥ त उपज्या हरीवंशमें, हुं आइ इहांजी ॥
 देव विठोहो पाकियो, केम कीजे खाजी ॥ १० ॥ जो प
 ति पामं मूलगो, तोथें परणावो ॥ नहींतर परणावा
 आखमी, सही संजम लेवो ॥ ११ ॥ धाय जणांवी
 वातनी, राजाने जाइ ॥ लोक विसरंजा वेगशुं, मन
 मां दुचिंताइ ॥ १२ ॥ तुठे भूचर राजवी, माहरो
 खग नाम ॥ विपम वात आवी बनी, केम सीजे का
 म ॥ १३ ॥ एटले एक निमीत्तीयो, जाखे सुसनेहो ॥
 इंद्र उठव देखण चणी, आवशे एहो ॥ १४ ॥ हाथी
 पासो ठोडायने, परणशे आपो ॥ इम सुणंता हरखी
 यो, कुमरीनो बापो ॥ १५ ॥ हरीध्वजने देखण चणी,
 अंते उर आयो ॥ वाहन विविध प्रकारनां, अति सो
 र सचायो ॥ १६ ॥ बंधन तोमी जोरशुं, हाथी
 विखरायो ॥ अवला उपरे आकुलो, होइने धायो
 ॥ १७ ॥ सुजट न आवे आसना, सहु जाइ जा
 ग्या ॥ शस्त्र ग्रंहिने सामटा, संवाहण लाग्या ॥ १८ ॥
 साचो मूर सिरोमणी, यादवजी जाचो ॥ अटल ट
 ल्यो नहीं ठामथी, नरफाडे माचो ॥ १९ ॥ अग्नी
 जाल गज केसरी, एह सामुं होणुं ॥ निःसत्व नरने
 दोहिलुं, साहसियाने जोणुं ॥ २० ॥ श्वासनरी आ
 वी धसी, शरणे सा बाल ॥ राख राख प्राणेशजी

कोप्योठे काल ॥ २१ ॥ उलवल 'केलवी' घणो, हाथी
 वश आण्यो ॥ उवारी कुमारीका, जंग जादव जा
 एयो ॥ २२ ॥ राय त्रीयानि कुमरी, हरख्यां मनमा
 हि ॥ ए मोठो उपगारियो, पुरुपोत्तम प्राहि ॥ २३ ॥
 सूर घणो ने बल घणो, धन्य यौवनवंतो ॥ ए उंग
 णिसमी ढालमां, गुणसूरि कहतो ॥ २४ ॥

दुहा ॥ विस्मय उपजावी घणो, सहू नणी सुकु
 मार ॥ शेठ कुवेरज दत्तने, घर आयां तेणिवार
 ॥ १ ॥ कुमरीने राणी सहू, निज घर करे प्रवेश ॥
 वाट वधी ए अति घणी, उंभव कीयो विशेष ॥ २ ॥

ढाल २० मी ॥ सुगण नरनारी रूप नजाय ॥ ए
 देशी ॥ एह सुणी नृप हरखीयारे, करे प्रशंस अ
 पार ॥ वारंवार वधामणारे, मिलियो सहू परीवाररे ॥
 मोहनजी ॥ १ ॥ तुं सूरतिका सोहनजी, तुं दूपजल
 का प्रोहणजी ॥ तुं गुणमणिका रोहणजी, तुं चित्त
 कज्जा बोहनजी ॥ तेरारे तेरा धन अवताररे, मोहनजी ॥
 मेरारे मेरा तुजशु प्याररे ॥ त्रुठ्यो त्रुठ्यो मुऊ किर
 ताररे, पायारे पायो जल नरताररे ॥ मो० ॥ ए आं
 कणी ॥ व्याह तणी विधी साचवीरे, जेसा चित्त वित्त
 होय ॥ आनंद रंग विनोदमांरे, वासर जाता जोयरे
 ॥ मो० ॥ २ ॥ मनोवेग मनोहररे, विद्याधर बलवंत ॥
 निशचर सुखे सोवतारे, आइ गयो मयमंतरे ॥ मो० ॥
 ॥ ३ ॥ सोमश्री कुमरी हरारे, चाली गयो आकाशा

जाग्यो श्री वसुदेवजीरे, देवी न दिठी पासरे ॥ मो०
 ॥ ४ ॥ प्रीया प्रीया पूकारतांरे, मोमश्री आकार ॥
 अरि जगना आवी धसीरे, वेगवाति वर नाररे ॥ मो
 ह० ॥ ५ ॥ जेद न जाण्यो जूपतिरे, पूठण लाग्यो
 तास ॥ किहां गइथी बाहीरारे, वोले सा जल्हासरे ॥
 मो० ॥ ६ ॥ गर्मि हुइ सुजने घणीरे, सीतलताइ जा
 ण ॥ उनीथी हुं वायरेरे, प्रीतम आरति मत आणरे ॥
 ॥ मो० ॥ ७ ॥ रामा रची रूपसुरे, ना कीयो किश्यो वि
 चार ॥ करी अति खिजमत खरीरे, जोगवे जोग उ
 दाररे ॥ मो० ॥ ८ ॥ पोढ्यो प्रजुजी पालंकरे, पोख्यो
 पदमनी प्रेम ॥ विमासण विधी साचवीरे, अवसर पा
 मी तेमरे ॥ मो० ॥ ९ ॥ एक दिन सुखे सोवतांरे,
 खेचरी ए अन्निराम ॥ रूप धरियो मूलगोरे, जागी
 यो प्रजु तामरे ॥ मो० ॥ १० ॥ बाल मुद्रा शशिकलारे,
 युवा हारचा दाम ॥ दिवस भीजे प्रगटेरे, तिमही ए
 ह अकामरे ॥ मो० ॥ ११ ॥ पूठी प्रजुजी पदनीरे, को
 णगे तुमे आप ॥ रजुपणे नांखो जलोरे, कोइ न रा
 खे पापरे ॥ मो० ॥ १२ ॥ रुपाचल दहणदिशेरे, स्व
 र्ण प्रजुपुर देख्य ॥ चित्तवेग विद्याधरुरे, राय रुडो
 पेख्यरे ॥ मो० ॥ १३ ॥ त्रिय अंगारवति कहीरे, मनो
 वेग तस नंद ॥ नंदनी तो हुं जलीरे, अबु नयना
 नंदरे ॥ मो० ॥ १४ ॥ रूप अधिको सांचलीरे, मनो
 वेग नरेश ॥ सोमश्री लेइ गयोरे, सीता ज्युं लंकेशरे ॥

रे ॥ मो० ॥ १५ ॥ सोमश्री साची सतीरे, जोर न चा
 ल्यो चोर ॥ केश मणिने कामनिरे, न लेवाइ जोररे
 ॥ मो० ॥ १६ ॥ हुं सखीतुं तेहनीरे, प्राणहीथी प्या
 र ॥ मोकलीतुं तुम्ह कन्हरे, आणी एह विचाररे ॥
 मो० ॥ १७ ॥ मुऊ संघाते ठे घणोरे, नाथजीको नेह ॥
 वाकतो होइ खरोरे, मति तजे नीज देहरे ॥ मो०
 ॥ १८ ॥ रूपे मोही प्रचुतणोरे, शुद्धही नाठी दूर ॥
 हाणि मनमथ बाणशुरे, उपज्यो राग सनूररे ॥ मो०
 ॥ १९ ॥ रूप धरीने बेहनी तणोरे, मानीयो में जोग ॥
 स्वारथीयो-संसार ठेरे, आपवंबो लोकरे ॥ मो० ॥ २० ॥
 स्वामी थारी सुंदरीरे, हुं हुइ सुख हेत ॥ ठामी मणि
 चिंतामणीरे, काच कुण चित्त देतरे ॥ मो० ॥ २१ ॥
 सोमश्री अपहारनिरे, एहवी सुणी वात ॥ हुड नूप
 उदासीयोरे, अरतिमें दिन जातरे ॥ मो० ॥ २२ ॥ ढा
 ल जली ए विसमीरे, करत जोग विलास ॥ श्री गुण
 सागर सूरिजीरे, पुण्ये पूरे आशरे ॥ मो० ॥ २३ ॥
 दुहा ॥ श्री वसंत ऋतु राजीयो, आयो अधिक
 विराज ॥ फूल फल शोभा खरी, कोयल बोले गाज ॥ १ ॥
 मीत्रोना परीवारसुं, खेले वसंत नरेश ॥ सुखे सोवंतो
 अपहरयो, मानसवेग विशेष ॥ २ ॥ मुष्टी प्रहारे मा
 रता, शुद्ध रही नहीं कोय ॥ समरंतो नवकारने, उर
 होइ आयो सोय ॥ ३ ॥ गंगा तटविद्याधरु, विद्या साधे
 जाम ॥ आणी पढ्यो उपर प्रनु, विद्या सिद्धी ताम ॥ ४ ॥

ढाल २१ मी ॥ आजको दिहाडो मोहे जावे हो न
 एदी ॥ ए देशी ॥ आवी एक विद्याधरी हेयादु, ले
 इ चाली जाम ॥ प्रचुने मेली वागमे हेयादु, खवर क
 री अनिरामहेयादु ॥ १ ॥ जगमगियोराय तेहवे, पर
 खंड परदेशमे हेयादु ॥ शोचा अधिकी पावे हेया
 दु ॥ ऊ० ॥ २ ॥ राजा अमृत द्वारना हेयादु, खेचर
 बंधव तिन ॥ दधिमुख दिलनो सूरठे हेयादु, चतुर
 शिरे सुप्रविण हेयादु ॥ ऊ० ॥ ३ ॥ हंडसुवेग वि
 राजतो हेयादु, चंडसुवेग प्रचंड ॥ आया प्रचुनी सा
 मा हेयादु, माने आण अखंड हेयादु ॥ ऊ० ॥ ४ ॥
 पधरावी निज मंदिरे हेयादु, श्रीवसुदेव नरेश ॥ मद
 न सुवेगा वेगसुं हेयादु, परणावी सुविशेष हेयादु ॥
 ऊ० ॥ ५ ॥ प्रीतम पद्मनी प्रेमशुं हेयादु, मग्न महा
 मनमांही ॥ उलट अति घणी मानतो हेयादु, सुख मां
 ही दिन जाइ हेयादु ॥ ऊ० ॥ ६ ॥ उगंतो दिनकार
 नो हेयादु, घनीए वधतो तेज ॥ तिम नरिंद वसुदेव
 नो हेयादु, चढतो तेज सहेज हेयादु ॥ ऊ० ॥ ७ ॥
 वाप गोमावण कारणे हेयादु, दधिमुख जाखे वात ॥
 श्रीनमीवंश विशेषथी हेयादु, विद्युत वेग विख्यात हे
 यादु ॥ ऊ० ॥ ८ ॥ पुत्र पनीता तेहना हेयादु, एह म
 ति नविआण ॥ थारा मननी जावती हेयादु, पुत्री चो
 थी जाण हेयादु ॥ ऊ० ॥ ९ ॥ निमित्तिने पूर्णियुं हेया
 दु, कुमरी कारण कंत ॥ निर्मल मति बोलीयो हेयादु.

निमतीए गुणवंत हेयादु ॥ ऊ० ॥ १० ॥ चंडसुवेग कु
 मारने हेयादु, विद्या साधन जोइ ॥ परशु खांधा उप
 र हेयादु, पुत्रीनो वर सोइ हेयादु ॥ ऊ० ॥ ११ ॥ ते
 दिनथी लघु जाइजी हेयादु, निश्चय करवा हेत ॥ वि
 द्या साधे वेगशुं हेयादु, शुचवंगीत फलदेत हेयादु ॥
 ऊ० ॥ १२ ॥ नचनु तिलक सुहामणुं हेयादु, नगर
 नीरोपम नाम ॥ श्री त्रिशिखर नरेश्वर हेयादु, सर्पक
 सुत गुण धाम हेयादु ॥ ऊ० ॥ १३ ॥ तेहने अरथे
 मागता हेयादु, पुत्री नापी तात ॥ युद्धे हरावीता तेह
 ने हेयादु, चाल्यो लेइ आरात हेयादु ॥ ऊ० ॥ १४ ॥
 बंधीखाने राखीया हेयादु, देव हमारो वाप ॥ जोरन
 चाले माहरो हेयादु, अरिनो प्रवल प्रताप हेयादु ॥
 ऊ० ॥ १५ ॥ पुज्य प्रताप करी खरो हेयादु, सरसे
 सघलो काज ॥ आज थकी तो आगले हेयादु, कुमर
 ने सबलि लाज हेयादु ॥ ऊ० ॥ १६ ॥ विद्या साधी
 सादरी हेयादु, बंधव तुम प्रसाद ॥ साहज्जे करी स्वामि
 ने हेयादु, होसि ए अहिलाद हेयादु ॥ ऊ० ॥ १७ ॥
 दीन वचन साजली हेयादु, उठयो मूठ मरोड ॥ आ
 रति कोइ मतराखजो हेयादु, करशुं कारज कोड हेया
 दु ॥ ऊ० ॥ १८ ॥ साला पासे शिखयो हेयादु, अ
 स्त्र अनेक प्रकार ॥ अग्नि अने ब्रह्माजला हेयादु, श्री
 महेंद्र उदार हेयादु ॥ ऊ० ॥ १९ ॥ वैष्णव वारु नाम
 थी हेयादु, जमदंड अस्त्र विचार ॥ स्यंजन मोहन तो

टिका हेयादु, अण रोहण अविधार हेयादु ॥ ऊ० ॥
 ॥ २० ॥ बंधनमोक्ष न जाणीए हेयादु, जंजनने ए सा
 न ॥ वायव्य ठेदन चेदना हेयादु, आरुढ अस्त्र प्रधान
 हेयादु ॥ ऊ० ॥ २१ ॥ सर्व सुअस्त्रहि ठादना ह्यादु,
 शल्य निवारण हार ॥ गुणसागर गुण गाजतो हेयादु,
 ढाल एकवीसर्मा सार हेयादु ॥ ऊ० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ साहण वाहन सामटो, साथे घणा नरेश ॥
 चढीयो आडंबर घणे, अरि उपरे सुविशेष ॥ १ ॥
 मंगल मिलियो मलपतो, घोमो दक्षिण हाथ ॥ मंगल
 गाती गोरमी, सात पांचनो साथ ॥ २ ॥ उदयो न
 णती योगिनी, सामो आव्यो शाह ॥ दक्षिण जयरव
 कलकली, उपज्यो अति उगाह ॥ ३ ॥ खर देवी मा
 बी नली, बोले होमाहोडे ॥ कुंकर वामे उतरयो, का
 ज समारे कोम ॥ ४ ॥ हरिणमाल अधूरडी, जमणी
 जाइ प्रात ॥ सांड चास दक्षिण दिशे, वामे वायस
 जात ॥ ५ ॥ डांबा लाली बोलीयां, अवर अनेरा सा
 र ॥ शुकन विच्यारी चालीयो, श्री वसुदेव कुमार
 ॥ ६ ॥ अरि पिण आयो सामुहो, दल बलनो नही
 अंत ॥ रेणु रहीं उंची चढी, समजे न कोई पडंत ॥ ७ ॥
 ढाल २२ मी ॥ तेतरीया चाई तेतरीया ॥ ए दे
 शी ॥ पुण्य बले अधिको यदुराजा, करतो अधिक
 दिवाजारे ॥ खेचर सामे आणी अडीयो, वाज्या शुभ
 जश वाजारे ॥ पु० ॥ १ ॥ हाथीउथी हाथी साथीउथी

साथी, असवारे असवाररे ॥ रथसाथे रथ जिडीया
 चारी, मच्यो युद्ध अपाररे ॥ पु० ॥ २ ॥ नील सुक
 ठ अगारक आतुर, सर्पक मानमवेगोरे ॥ चंद्रसंवे
 ग तणे आगे ए, हारथो नफूरी तेगोरे ॥ पु० ॥ ३ ॥
 खेचरने यादवने लडवे, एवो अचरिज पायोरे ॥ विवि
 ध प्रकार विशेष विशेषे, बाणे अंबर गयोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥
 अघिसु बाणे अग्नी विकुर्वि, हाथी घोडा बालेरे ॥ वारुण
 बाणे घन वरसावी, एह उपद्रव ट लेरे ॥ पु० ॥ ५ ॥
 मोहन बाणे निदतणे बल, लोक सह ते सोयरे ॥ वा
 ण प्रबोधे निद निवारी, हुशियारिमां होयरे ॥ पु० ॥
 ॥ ६ ॥ श्री माहेन्द्र बाणे हणतो, खेचर पडीयो मंद
 रे ॥ यादवनी जग जीत गवाणी, उपज्यो अति आ
 नदरे ॥ पु० ॥ ७ ॥ सुसरो बंधनथी ठोडावी, देइ द
 मामे घावरे ॥ पामी यश निज नगर जणी ते, आ
 वे सह परिवाररे ॥ पु० ॥ ८ ॥ सर्पनखा नामे अरि
 नारी, वैर विशोधन आवीरे ॥ मदन सुवेगा रूम वि
 राजी, प्रजुजीके मन चावीरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ ठल पा
 मीने प्रजु सोवतो, चाली लेइ आकाशरे ॥ मान सवे
 ग जणी प्रजु सोप्यो, करवा काज विनाशरे ॥ पु० ॥
 ॥ १० ॥ अरि करथी खसी अण मांही, पमीयो ला
 गी थोमीरे ॥ राजग्रही नगरी चाली आयो, नीती
 कंचन कोमीरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ कंचन वाटे देतां बोले,
 किरति चारण चाटोरे ॥ श्रीवसुदेव पधारया पहिली,

जरासंध उच्चाटोरे ॥ पु० ॥ १२ ॥ निमीतिने पुढ्योथो
 राजा, मुजने मारण हाररे ॥ वेग वतावी करु उपक
 र्मा, केरो कोइ विचाररे ॥ पु० ॥ १३ ॥ जोतिपि जा
 ण कहे जीतशे, जूआ खेली जेहरे ॥ कंचन कोडी त
 णा वरदाता, गुण मणि केरो गेहरे ॥ पु० ॥ १४ ॥
 तेनो जायो कृष्ण कुंवर वर, ते तुम हंता जाणरे ॥ निश्च
 य वात विशेष विचारी, संशय एक न आणरे ॥
 पु० ॥ १५ ॥ एम सुणी जासुसिकारण, नृपना लोक
 फिरंतारे ॥ कंचन जाती त्याग करंता, मिलीयो तंते तं
 तारे ॥ पु० ॥ १६ ॥ चाम तणा चांधामें घाली, हुं
 गरथी नाखंतोरे ॥ गरु गरुतो आवी पड्यो नू उपर, प
 रमेष्टि नाखंतोरे ॥ पु० ॥ १७ ॥ वेगवति राणी सांच
 लीयो, जब ए श्री नवकारोरे ॥ चाथा खोली देखत दी
 ठो, प्यारो प्राण आधारोरे ॥ पु० ॥ १८ ॥ वेगवति
 रोवे प्रनु आगे, प्रनुजी सुसतो होइरे ॥ नारी निहा
 ली नेह धरीने, पूठी नांखे सोइरे ॥ पु० ॥ १९ ॥ तुम
 अपहरी श्रेणी दौघमें, शोधी शोध्ये चरतीरे ॥ मद
 न सुवेगा घरथी तुमने, सुर्पनखा अपहरतीरे ॥ पु० ॥
 २० ॥ सुर्पनखाथी मानस वेगे, लीधो मारण हेतो
 रे ॥ मारी न शक्यो राजग्रहिमें, आयो शुभ संकेतोरे
 ॥ पु० ॥ २१ ॥ ढाल बाविसमी हुं धन प्रनुजी, जे
 तुम सेवा लाधीरे ॥ श्रीगुणसागरसूरि चलो जे, जा
 णे अवसर साधीरे ॥ पु० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ वेगवति साची सती, आवी पीडने काम
 ॥ प्रिती विशेष विच्यारवे, अति सनमानि साम ॥१॥
 गिरि कांठे उद्यानमें, खेल खेलंता जाम ॥ नागपाश
 बांधी थी, दीठी कुमरी ताम ॥ २ ॥ बंधन ढोड्यां
 हाथशुं, सा जाखे सुविच्यार ॥ विद्या सिद्धी माह्यरी,
 ए प्रभु तुम उपगार ॥ ३ ॥

ढाल २३मी ॥ वेधक जग विरला ॥ ए देशी ॥ उप
 गारी राजाहो, थारा अधिक दिवाजा हो ॥ उ० ॥ ए
 टेक ॥ दक्षिण श्रेणि नगर निरुपम, नामे गगन-प्रि
 य वारुहो ॥ विद्युतदंत नरेश्वर निको, गुणमणिनो चं
 डारुहो ॥ उ० ॥ १ ॥ तेनो नंदन वाल सुधाकर, हुं
 बुतास कुमारी हो ॥ विद्या साधत वैरीए मुऊने, वां
 धी बंधन जारीहो ॥ उ० ॥ २ ॥ बंधन ढोड्यां करुणा
 आपी, हुं थाइश तुमारी राणीहो ॥ अमृत गंडी
 खारो पाणि, कोण पीए सुख जाणीहो ॥ उ० ॥ ३ ॥
 विद्या आपुं विविध प्रकारे, अंतर न आपुं कोइ हो
 ॥ वेगवतिने आप पनोति, जाखे प्रितम सोइहो ॥
 उ० ॥ ४ ॥ प्रभु आदेशे वेगवतिने, लेइ निज घर
 आवीहो ॥ विद्या साधन करती बरते, वेगवति सुख
 पाविहो ॥ उ० ॥ ५ ॥ तापस स्थानक पधारयो वनमें,
 अचरिज अधिको पायोहो ॥ नौतम तापस ते सह
 दिसे, एक तदावृत लायोहो ॥ उ० ॥ ६ ॥ सो जांखे
 तुं सांजल स्वामी, वात अचंचा कारिहो ॥ सावरती

नगरीनो नायक, इंद्र तणो अवतारीहो ॥ उ० ॥ ७ ॥
 एणो पुत्र पवित्र पनोतो, तास सुंदरी नारीहो ॥ कुम
 री अमरीने अनुसरती, प्रियंगु सुंदरी प्यारीहो ॥ उ०
 ॥ ८ ॥ स्वयंवर मंडप तेहतणेजी, नूप घणा बोलाव्या
 हो ॥ कुमरीने मन कोइ न मान्यो, ताम घणुं अक
 लायाहो ॥ उ० ॥ ९ ॥ जगडो मच्यो कुमरी पिताशुं,
 दिण पुत्री परणावीहो ॥ कुमरी हठीली अधिक अडी
 ली, समजे नही समजावीहो ॥ उ० ॥ १० ॥ नूप न
 णे हम जोरे वरसां, कुमरी पिता तव कोप्योहो ॥
 युद्ध करवा कारण काठो, सद्रपणाथी रोप्योहो ॥ उ०
 ॥ ११ ॥ कोइ नरपति लढी लढी मूआ, कोइ नाठा
 जुजूआहो ॥ लाज धरी वनवास ग्रहीने, तापस रुपि
 हूआहो ॥ उ० ॥ १२ ॥ ते कुमरीने देखण केरी, य
 दुपतिनी मति जागीहो ॥ नगरी वनमे चाली आयो,
 अत्रयतो अनुरागीहो ॥ उ० ॥ १३ ॥ देवल एक
 जलोठे उत्तम, द्वार जरीत अति वारुहो ॥ पेखी पू
 ठिउं पुरप प्रजाविक, सो नाखे सुविचारुहो ॥ उ० ॥
 ॥ १४ ॥ सकल सिरोमणि शेठ प्रसीद्धो, कामदेवस
 कामहो ॥ तांघर सुंदरी सुंदर नारी, रूपगुण अजि
 रामहो ॥ उ० ॥ १५ ॥ तासपुत्री अठे गुणवंति, वं
 धुमति सुकुमारीहो ॥ जोवन तेन जन मोदन गारी, वा
 ली जाकजमालीहो ॥ उ० ॥ १६ ॥ शेठे पूढ्यो निमत्ति
 कवारु, सुता वर कुण थाइहो ॥ द्वारखोलशे देवल के

रो. सोइ वर सुखदाइहो ॥ ७० ॥ १७ ॥ एम नीसु
 णी मन ख्यालज लाग्यो, देउलमांही जायहो ॥ सर्वा
 वार ए. अर्गला केरो, द्वार खोल्यो रायहो ॥ ३० ॥
 ॥ १८ ॥ देखी प्रचुने देवलमांही, शेठ आश्रय पाइ
 हो ॥ परणावी पुत्री निज हाते, ढील न कीधी कांइहो
 ॥ ३० ॥ १९ ॥ ढाल ए. तेविशमी वरचारु, जोगवे
 जोग उदारुहो ॥ श्री गुणसागर सूरि पयंपे, यादव
 यश विस्तारुहो ॥ ७० ॥ २० ॥

दुहा ॥ अंतेजर परीवारशुं, राजा वनमें जाय ॥
 दिठो प्रचु बाजारमें, नयण रघ्यां लोनाय ॥ १ ॥ लो
 चाया लोचण घणा, देखी कुमरनी शोच ॥ कुमरीने
 संजोगनो, लाग्यो अधिको लोच ॥ २ ॥ शोध करंतां
 सांनल्यो, बंधुमति जरतार ॥ बोलार्वा पूबे तदा, स
 खियणने सुविचार ॥ ३ ॥

ढाल २४ मी ॥ धन धन जंभुस्वामीने ॥ ए देशी
 ॥ बहिन जणे वाइ सुणो, ए वसुदेव कुमार ॥ जोग
 पुरंदर सुंदरुं, कामतणो अवतार ॥ १ ॥ जाग्य प्रव
 ल वसुदेवनो, एतो गुणमणि रयण जंमार ॥ जाग्यवं
 ति जे जामाने, एतो पामे चल जरतार ॥ जा० ॥ २ ॥
 एकांते तव दूतिका, आवी प्रचुजीने पास ॥ कुमरी
 काम समारवा, आप करे अरदास ॥ जा० ॥ ३ ॥ देव
 पधारो मंदिरे, पूरो कुमरीनी आस ॥ हसी रसी रस
 रंगमे, कीजीए जोगविलास ॥ जा० ॥ ४ ॥ जो नवि

मानो वात ए. तो थारो विपरित ॥ प्राण तजशे कुमरी.
 अति दुखदाइ ठे प्रित ॥ जा० ॥ ५ ॥ उत्तर दीधो अ
 वसरे, ज्ञानी दीठो होइ ॥ संतोषी घर मोकली, हरखी
 कुमरी सोइ ॥ जा० ॥ ६ ॥ वडमाता कुमरीतणी, वि
 तरणि अन्निराम ॥ चलण प्रन्न सह चारणी, नागश्री
 तसु नाम ॥ जा० ॥ ७ ॥ सोवंतो नरनिंदमें, देवी की
 यो अपहार ॥ आवी बेठी बागमें, वाणी वदे सुविचा
 र ॥ जा० ॥ ८ ॥ आरति कोइ मत आणजे, हुं था
 री हितकार ॥ चरी सुणावुं आपणी, आलस निंद नि
 वार ॥ जा० ॥ ९ ॥ अमोघ दर्शन नामथी, चंदनपुर
 नो राय ॥ चारुमति पति जाण ए, लोक सहने सुखदा
 य ॥ जा० ॥ १० ॥ चारुचंद्र नामे जलो, नंदन महा सु
 खकंद ॥ राज करे रलीयामणो, ठे सुख कंद निकंद ॥ जा०
 ॥ ११ ॥ अनंगसेनानी सुता, सरुपे अति अन्निधान ॥
 काम पताका प्रगटी, हवी नामनी जीने वान ॥ जा० ॥
 ॥ १२ ॥ काम पताका कामनी, ललित मनोहर गात ॥
 राजा कीधी रागनी, सख मांही दिन जात ॥ जा० ॥
 ॥ १३ ॥ दिन केताने अंतरे. राजा तापस थाय ॥ ग
 र्ज वहे वैरागनी, साथ रही सुख पाय ॥ जा० ॥
 ॥ १४ ॥ तापसी दिन पूरते, प्रसवी पुत्री सार ॥ ऋ
 षिदत्ता अन्निधानथी, वाधे रूप अपार ॥ जा० ॥ १५ ॥
 ए चौबीसमी ढालमें, श्रावकनां व्रत पंच ॥ श्री गुणसा
 गर आदरे, जंग न आणे रंच ॥ जा० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ सावरथी नगरीनो धणी, शीलायुध नरिंद ॥
घोडे खांच्यो आवीयो, तापस वन आनंद ॥ १ ॥ पगे
लागतां तापसे, आदर दीयो अपार ॥ तापस पुत्री
साचवे, विनय तणो आचार ॥ २ ॥ नोजन जक्ति वि-
शेषथी, करती वरते जाम ॥ आ पुण्य मांही उपज्यो,
काम राग अनिराम ॥ ३ ॥

ढाल २५ मी ॥ हुं तुज साथे नही बोलुं ॥ ए दे-
शी ॥ काम राग अठे जग मोटो, जेहथी खांड खोटो-
जी ॥ एकलडे तीहुं जग हरायो, कुण वनो कुण गो-
टोजी ॥ का० ॥ १ ॥ राजानी आतुरता जाणी, ऋ-
पिपुत्री व्रत राखेजी ॥ व्याहतणो विधि साचवी, प्रेम
तणो रस चाखेजी ॥ का० ॥ २ ॥ राजा बोले काडम
मोले, नाम प्रकासे मारोजी ॥ सावरथी नगरीनो न-
यक, ठे मुऊ प्रितम प्यारोजी ॥ का० ॥ ३ ॥ विविध
प्रकारे सुख विलसंता, वारु वचन वदे एवोजी ॥ जो उ-
धान रहेशे माहरे, तो शो उत्तर देवोजी ॥ का० ॥ ४ ॥
राजा निकली गया पिठे, लोक घणा अकुलायाजी ॥
शुद्ध न लाधे तास पुत्री, पुठ्या उत्तर पायाजी ॥ का०
॥ ५ ॥ तापस वन राजा ठे नीसुणी, सामा लोक सि-
धावेजी ॥ राजा सन्मुख देखी आवत, परम महा सु-
ख पावेजी ॥ का० ॥ ६ ॥ तापस पुत्री मातपिताने,
वात जणावी एहोजी ॥ ठानी राखत जायो बेटो, रु-
पकला गुण गेहोजी ॥ का० ॥ ७ ॥ वात सुणीने मा-

ता मइ. सुरगतिनो अवतारोजी ॥ साहू नाग श्राविं
 तरणि, नहीं संदेह लिगारोजी ॥ का० ॥ ८ ॥ श्री जि
 नधर्म अबे जग साचो, जो आराधे कोईजी ॥ मोह
 तणा घल आपणहारो, सुरगति सहेजे होइजी ॥
 का० ॥ ९ ॥ ज्ञान वले में देख्यो पावो, जाग्यो नेह
 घणेरोजी ॥ मातपिताने सुत संघाते, मोही रह्यो मन
 मेरोजी ॥ का० ॥ १० ॥ चाली आव्यां मातपितातो,
 दुखीया दीठा दोइजी ॥ मा पाखे बालक जिम जीवे,
 करे विमासण सोइजी ॥ का० ॥ ११ ॥ बालपणे मा
 ता मरी जाइ, तरुण पणे जो नारीजी ॥ वृद्धपणे सुत
 मरतां नारख्या, ए तिने दुःख जारीजी ॥ का० ॥ १२ ॥
 आप जणावी मातपितानी, आरंति अलगी टालीजी
 ॥ इणपरे आप पंधरावी, बालक लीधो पालीजी ॥
 का० ॥ १३ ॥ इणे पुत्र कही बोलाव्यो, तापस सघ
 ले तामोजी ॥ एहज नाम प्रसिद्धो चाल्यो, लोक व
 चन अचिरामोजी ॥ का० ॥ १४ ॥ मरण समे निज
 मातपिताने, जिनमतशुं स्थिर स्थापीजी ॥ आपणसणने
 आराधन वले, सुरवर पदवी आपीजी ॥ का० ॥ १५ ॥
 तापसणी होइने हुतो, बालक लेइ लारोजी ॥ शिला
 युद्ध तणे घर आवी, सुपण बाल कुमारोजी ॥ का० ॥
 ॥ १६ ॥ राजा साथे वदे मृदुवाणी, ए ल्यो थारो न
 दोजी ॥ अपुत्रियाने नंदन क्यांथी, चांखे ताम नरिं
 दोजी ॥ का० ॥ १७ ॥ मूलथी वार्त सुणावत जाण्यो,

साचो शीयल विचारोजी ॥ बालक लीधो कारज सी
 धो, मान्यो अति उपगारोजी ॥ का० ॥ १८ ॥ इण
 पुत्र क्रीयो वमराजा, राय हुवो व्रत धारीजी ॥ नेमि
 तीर्थकर तीर्थे एतो, वात तणो विस्तारोजी ॥ का०
 ॥ १९ ॥ इण पुत्र तणेवर पुत्री, प्रियंगु सुंदरी बाला
 जी ॥ रुपकला गुण सुंदर साची, स्वामी ते सुखमाला
 जी ॥ का० ॥ २० ॥ तुमसु राग धरे अधिकेरो, सा
 रो एहनो काजजी ॥ जाणी अदत्ता मत खींचावो, में
 दीधी ए आजजी ॥ का० ॥ २१ ॥ ए घरमें हुं हरतां
 फिरतां, महारुं कीधुं चालोजी ॥ राजाजी तो एकम
 नो अति, आण हमारी पालोजी ॥ का० ॥ २२ ॥ का
 मदेवना देवल मांही, प्रित पनोती पोखीजी ॥ करी
 विवाह विनोद करीने, सुंदरीने संतोखीजी ॥ का० ॥
 ॥ २३ ॥ देवल माहि देवि नापित, कीधो लीधो ला
 होजी ॥ राय लिखी वीतरणी विलसीत, प्रगट कीयो
 विवाहोजी ॥ का० ॥ २४ ॥ ए पचविशमी ढाले ना
 खी, जिहां तिहां अधिकाइजी ॥ श्रीगुणसागरसूरि क
 हेजी, पुण्य सदा सुखदाइजी ॥ का० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ एकवार एकलपणे, जागो जोवे जाम ॥ किं
 चित् कुमरी आगले, उनी दीठी ताम ॥ १ ॥ कवण
 अठो तुम कामनी, कहो आपणो नाम ॥ काम किने
 आवीअठो, सोइ प्रकाशो काम ॥ २ ॥

ढाल २६ मी ॥ श्री सिमंदर साहेब

देशी ॥ स्वामी सुणेने सुंदरी जांखे, संप कोइ न राखे
 रे ॥ काज करवा कारण आवी, सोइ कारज दाखे
 रे ॥ स्वा० ॥ १ ॥ गिरि वैताढ्ये नगरी निरोपम, गंध
 स्मृद्धि सोहावेरे ॥ गुणनो सागर अधिक उजागर, रा
 य गंधार कहावेरे ॥ स्वा० ॥ २ ॥ प्रथवी राणी रंजा
 जाणी, कुमरी तेहनी जाइरे ॥ नाम प्रसिद्धि प्रजाव
 ति हुं; सुजनपणे सुखदाइरे ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ मानसवे
 ग तणे घरे गइथी, स्वर्णसुप्रजपुर मांहीरे ॥ मात अं
 गारवति संतीयामें, संती सिरोमणि प्राहिरे ॥ स्वा० ॥
 ॥ ४ ॥ चैगवति निज पुत्री केरी, आश अधिकी आ
 णेरे ॥ में पुठी सा क्यो गइवे, खबर कोइ न जाणेरे
 ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ सखियापणे सोमश्री बोली, माहरे
 काम सिधावीरे ॥ श्री वसुदेव नरेश्वर पासे पिण, पा
 षणि फिरी न आवीरे ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ मानसवेग म
 हा भयमंतो, मुजशुं अडीयो आवेरे ॥ माय दवावे शी
 ल सुधर्मणी, पोइचो वान वीपावेरे ॥ स्वा० ॥ ७ ॥ तुं
 उपगारी सिरोमणि सांची, माहरो कारज सारेरे ॥ सं
 देसो साइ संघाते, कहिता जीव उवारेरे ॥ स्वा० ॥
 ॥ ८ ॥ आश बले में ए दिन लिधा, आगे आशा ठु
 टेरे ॥ ऊरी ऊरी पंजर हुइ, अब मुज हियडो फूटेरे ॥
 स्वा० ॥ ९ ॥ वेगे वार कीजीए माहरी, नहीतर ठो
 डुं प्राणेरे ॥ शीलजंगथी नकें जाणो, प्राण घणा घ
 ट आणेरे ॥ स्वा० ॥ १० ॥ जीवन मरण तणुं शुं

मांहरुं, अबला तो धुर नामोरे ॥ पुरुषपणो तेहनो
 श्यो उप्राजो, जेहथी न सरे कामोरे ॥ स्वा० ॥ ११ ॥
 दिन वचन में एही वीनविठ, जिम जाणो तिम कीजे
 रे ॥ एटलो जाणी जोर अरिनो, क्युंए सुयश न ली
 जेरे ॥ स्वा० ॥ १२ ॥ चालो तो प्रचुने पोंहोचावुं,
 सोमश्रीने पासेरे ॥ चाली कहंता चतुरपणाथी, चाली
 लेइ उल्हासेरे ॥ स्वा० ॥ १३ ॥ स्वामी निरखी सुंद
 री हरखी, आरति कीधी कोणेरें ॥ नारी रुप धरी प्या
 रो पिउडो, पद्मनिशुं सुख माणेरें ॥ स्वा० ॥ १४ ॥
 काम समारी सैद्यर केरो, प्रजावति घर चालीरे ॥ लो
 काचार व्यवहार विशेषे, चित्तमो पिउने आलीरे ॥ स्वा०
 ॥ १५ ॥ दिन केताने अंतरे मानस, वेगे लिखी ए वा
 तोरे ॥ कोपतणे वश कलकलिउ अति, कालो पीलो
 धातोरे ॥ स्वा० ॥ १६ ॥ मांडी समर तणीरे सजाइ,
 शोचन कीधो कोइरे ॥ सिंहतणीपरें सूरपणाथी, आ
 णी अडीयो दोइरे ॥ स्वा० ॥ १७ ॥ जाणी अन्याइ
 ठोडे जाइ, जाइ धर्म सहाइरे ॥ खेचर प्रचुनो पद
 करता, मची अधिक लडाइरे ॥ स्वा० ॥ १८ ॥ तव
 तो वेगवतिनी माइ, जाणी जमाइ प्यारोरे ॥ दिव्य
 तीरना तरकस दोई, दीधो धनुष्य उदारोरे ॥ स्वा० ॥
 ॥ १९ ॥ प्रजापति वर त्रिद्यावारु, प्रजावतिथी पाइरे
 ॥ विद्या बलने चुज बले वली, बांध्यो त्रीयनो जाइरे
 ॥ स्वा० ॥ २० ॥ सासु सामी आवी मांगे, पुत्र जिद्धा

मुऊ दांजेरे ॥ बंधन ठोडी साला साथे, परिघल प्रीति
कीजेरे ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ सोमश्रीने प्रनु पहिरावी,
साथे हुवो खग सोयरे ॥ बेसी विमाने महापुरी आ
या, सासरीया सुख होयरे ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ वीस अ
ने पटमी ए ढाले, दिन जाता न जणाइरे ॥ श्री गुण
सागर सुरि सलुणो, साजनीयो सुख दाइरे ॥ स्वा० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ सुरपक नामे खेचरु, खेचरपणे तिवार ॥
रूप धरी घोडा तणो, कीधो नृप अपहार ॥ १ ॥ उं
चो जातां अंबरे, दीधो मुष्टि प्रहार ॥ गंगाजल मां
ही पड्यो, श्री वसुदेव कुमार ॥ २ ॥ गंगाजलथी नी
कल्यो, तापस वन आवंत ॥ अवसर देखी अति घ
णो, गाढो सुख पावंत ॥ ३ ॥

ढाल २७ मी ॥ वनमालीनी देशी ॥ एक दीठी र
मणी राइरे, सासु धन जाणे कांड ॥ विकले रुपणी दी
सेरे, सा दांत घणेरु पीमे ॥ १ ॥ वख्र विहुणी बा
लीरे, नर हारु धरया विकराली ॥ ए गेली नाम धरं
तीरे, नृप देखीने रंग करंती ॥ २ ॥ तव पूढीयो ता
पस राजारे, ते उत्तर आपे ताजा ॥ ए जरासंधनी जा
इरे, ए केतुमतिरे कहाइ ॥ ३ ॥ जीत शत्रु नरेशर रा
णीरे, ए रूपे रंजा समाणी ॥ ए सर्व सुलक्षणा धा
रीरे, ए मात पितानी प्यारी ॥ ४ ॥ ए कर्म न बूटे
कोइरे, सुंदर दानव होइ ॥ एह अवस्था पामीरे, तव
पुनरपि पूढे स्वामी ॥ ५ ॥ ए वाय तणो ठे जोरोरे,

किणही कीधो नांमो दोरो ॥ जे जीम हशे तिम चासोरे,
 हुं जोशुं एह तमासो ॥ ६ ॥ कोई मत्रवादियो आयो
 रे, ते आपण परे खीजायो ॥ ए तेहनां कीधां कामो
 रे, ए ठे राजसुता अन्निरामो ॥ ७ ॥ ए परवश हुं जा
 मोरे, धूर फेनीयो तेहनो ठामो ॥ ए मारीविदारी दे
 होरे, तस हाडा साथे सनेहो ॥ ८ ॥ तव करुणा नीम
 ति आणीरे, सा कीधी ताम सयाणि ॥ श्री नवकार प
 साइरे, न वांछित काम सराइ ॥ ९ ॥ जम रुपीया ज
 ण ध्यायारे, राजाना रोश जराया ॥ उपकार कोई न
 जाण्योरे, प्रभु राजग्रहि में आयो ॥ १० ॥ पुढंता,
 उत्तर जाखेरे, ते कोई न ठानो राखे ॥ ए केतुमतिने
 वापेरे, वर एक निमित्तिए आपे ॥ ११ ॥ ए पुढ्योथो पे
 हलुं वारुरे, जगजीवन आ सहु मारु ॥ मुळ हता आ
 प्यवता विरेरे, तुं चाख्य जावि जलीपेरे ॥ १२ ॥ तव
 जाणे नर, सहि नाणिरे, कही दासीए, अहिनाणि ॥
 तुम पुत्री सारी कंस्येरे, तस नंदनथी तुम रंस्ये ॥
 ॥ १३ ॥ ते दिनथी नृप आदेशरे, हुशियारीमें सुविशे
 प ॥ वरतता तुं अब लाधोरे, सुर इष्ट जणी आराधो
 ॥ १४ ॥ अब वध जूमीका लेइरे, तुज घाव करेस्यां
 केइ ॥ ए सुंदर काया कापीरे, दिश देवाने बलि आ
 पी ॥ १५ ॥ स्वामीनो काम समारीरे, हम वाहला हो
 स्यां जारी ॥ एह सुणंतां वातोरे, प्रभुनो मन अकुला
 तो ॥ १६ ॥ चिंताएचांप्यो जामोरे, एक खेचर आयो

मुऊ दोजेरे ॥ बंधन ठोडी साला साथे, परिघल प्रीति
कीजेरे ॥ स्वा० ॥ २१ ॥ सोमश्रीने प्रचु पहिरावी,
साथे हुवो खग सोयरे ॥ बेसी विमाने महापुरी आ
या, सासरीया सुख होयरे ॥ स्वा० ॥ २२ ॥ वीस अ
ने पटमी ए ढाले, दिन जाता न जणाइरे ॥ श्री गुण
सागर सुरि सलुणो, साजनीयो सुख दाइरे ॥ स्वा० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ सुरपक नामे खेचरु, खेचरपणे तिवार ॥
रूप धरी घोडा तणो, कीधो नृप अपहार ॥ १ ॥ उं
चो जातां अंबरे, दीधो मुष्टि प्रहार ॥ गंगाजल मां
ही पड्यो, श्री वसुदेव कुमार ॥ २ ॥ गंगाजलथी नी
कल्यो, तापस वन आवंत ॥ अवसर देखी अति घ
णो, गाढो सुख पावंत ॥ ३ ॥

ढाल २७ मी ॥ वनमालीनी देशी ॥ एक दीठी र
मणी राइरे, सासु धन जाणे कांइ ॥ विकल रूपणी दी
सेरे, सा दांत घणेरु पीसे ॥ १ ॥ वस्त्र विहुणी बा
लीरे, नर हारु धरया विकराली ॥ ए गेली नाम धरं
तीरे, नृप देखीने रंग करंती ॥ २ ॥ तव पूगीयो ता
पस राजारे, ते उत्तर आपे ताजा ॥ ए जरासंधनी जा
इरे, ए केतुमातिरे कहाइ ॥ ३ ॥ जीत शत्रु नरेशर रा
णीरे, ए रूपे रंजा समाणी ॥ ए सर्व सुलक्षणा धा
रीरे, ए मात पितानी प्यारी ॥ ४ ॥ ए कर्म न बूटे
कोइरे, सुदर दानव होइ ॥ एह अवस्था पामीरे, तव
पुनरपि पूढे स्वामी ॥ ५ ॥ ए वाय तणो ठे जोरोरे,

किणही कीधो मंमो दोरो ॥ जे जीम हशे तिम चासोरे,
 हुं जोशुं एह तमासो ॥ ६ ॥ कोई मंत्रवादियो आयो
 रे, ते आपण परे खीजायो ॥ ए तेहनां कीधां कामो
 रे, ए वे राजसुता अन्निरामो ॥ ७ ॥ ए परवश हुं जा
 मोरे, धूर फेरीयो तेहनो ठामो ॥ ए मारीविदारी दे
 होरे, तस हाडा साथे सनेहो ॥ ८ ॥ तव करुणा नीम
 ति आणीरे, सा कीधी ताम सयाणि ॥ श्री नवकार प
 साइरे, न वांछित काम सराइ ॥ ९ ॥ नम रुपीया ज
 ण ध्यायारे, राजाना रोश चराया ॥ उपकार कोई न
 जाण्योरे, प्रभु राजग्रहि में आयो ॥ १० ॥ पुबंता
 उत्तर जाखेरे, ते कोई न बनो राखे ॥ ए केतुमतिने
 वापेरे, वर एक निमित्ति ए आपे ॥ ११ ॥ ए पुब्योथो पे
 हलुं वारुरे, जगजीवन आ सहु मारु ॥ मुऊ हता आ
 प्यवता विरेरे, तुं चाख्य चावि जलीपेरे ॥ १२ ॥ तव
 जाणे नर सहि नाणिरे, कही दासीए अहिनाणि ॥
 तुम पुत्री सारी कंस्येरे, तस नंदनथी तुम रंस्ये ॥
 ॥ १३ ॥ ते दिनथी नृप आदेशरे, हुशियारीमें सुविशे
 प ॥ वरतता तुं अब लाधोरे, सुर इष्ट चणी आराधो
 ॥ १४ ॥ अब बंध नूमीका लेइरे, तुज घाव करेस्यां
 केइ ॥ ए सुंदर काया कापीरे, दिश देवाने बलि आ
 पी ॥ १५ ॥ स्वामीनो काम समारीरे, हम वाहला हो
 स्यां चारी ॥ एह सुणंतां वातोरे, प्रभुनो मन अकुला
 तो ॥ १६ ॥ चिंताए चांप्यो जामोरे, एक खेचर आयो

तामो ॥ प्रचुलेइ चाल्यो ढोडाइरे, ते सुनट रह्या मो
 हवाइ ॥ १७ ॥ आकाशे जाता जोइरे, खग साथे पु
 ठे सोइ ॥ तुं कुण अठे सुखकारीरे, कहे वात विशेष
 विचारी ॥ १८ ॥ हुं प्रजावतिनो बाबोरे, माहरो ठे आ
 धिक असावो ॥ मुळ जागीरथी अनीधानोरे, हुं राया
 नो राजानो ॥ १९ ॥ अब पोतिने परणावारे, वैताळ्य
 गिरिरे वसावा ॥ तुळ लेइ जाउंठुं विरारे, तुम साहस
 वंत सधीरा ॥ २० ॥ ए दृष्टीरागनो साजोरे, ठे प्रजा
 वति शुं जाजो ॥ ए सत्ताविशमी ढालोरे, गुणसू
 रि कहे सुविशालो ॥ २१ ॥

दुहा ॥ नूमंमलने परहरी, गावो वीसहजार ॥ उंचो
 जाता अंबरे, दक्षिण श्रेणि उदार ॥ १ ॥ गंधसमृद्धा
 पुरवरां, आइ गया तत्काल ॥ खबर जणावी सादरी,
 सह नणी सुविशाल ॥ २ ॥

ढाल २८ मी ॥ तुं सांजल हो जिनपति ॥ ए दे
 शी ॥ जगं जाचो हो यंदुपति, तंस माथे दिपति रति
 ॥ सुर मानवने माटायंति, अति किरति गावे वति ॥
 ज० ॥ १ ॥ साजेन सनमुख आवीयां, ते प्रचुर्जाने
 मन जावीयां ॥ पुरमाहि सीधाविया, ते परम महा सु
 ख पावियां ॥ ज० ॥ २ ॥ मुहूर्तनो मंडाणोजी, तव
 कीजे कोरुकल्याणोजी ॥ तव मेल्या जोसी जाणोजी,
 दिन साध्यो सार प्रधानोजी ॥ ज० ॥ ३ ॥ प्रजाव
 तिने प्रचु तणो, तव कीधो व्याह सोहामणो ॥ वर

रुडोने रलीआमणो ॥ तव घर घरवार वधामणो ॥
 ज० ॥ ४ ॥ सुख सागरमांही जीलेए, तव तन मन
 शुं अति फूलेए ॥ तव नेम सुरति पूलिए, पावो सध
 लोहि नूलिए ॥ ज० ॥ ५ ॥ सुर्पक आप विगोवतां,
 तव आणी पोहंतो जोवतां ॥ अति निद्रावश होवतां,
 प्रचु लेई चलयो सुखे सोवतां ॥ ज० ॥ ६ ॥ अंबर
 जातां जागीयो, तव काठो दोइ लागीयो ॥ गरदन
 में गडदो वागीयो, तव बैरीनो बल जागीयो ॥ ज० ॥
 ॥ ७ ॥ उंभा पाणिमें पड्यो, जल पयरीने कां अड्यो
 ॥ प्रचु वसति नणि अति दडवड्यो, तव कुंदनपुरी
 आवी चड्यो ॥ ज० ॥ ८ ॥ राजा राज करे नलो, ते
 पद्मप्रभ ते निर्मलो ॥ ते गुण आचारे उजलो, ते तेगने
 त्यागे आगलो ॥ ज० ॥ ९ ॥ पद्मश्री नारी सती, त
 स पुत्री ते गुणवति ॥ सा चाले चाले मलपती, सा
 कोमल वाणी नलपती ॥ ज० ॥ १० ॥ सा राग कला
 ए अति ताणे, अनिमानपणो मनमां आणे ॥ सा
 नली बुराइ न पीवाणे, जग सगलो हि तृण करी जा
 णे ॥ ज० ॥ ११ ॥ इम सुणी आयो चाली, जीती
 ने परणी सा वाली ॥ सा नारी मेली जे टाली, लही
 ए जो जिन आझा पाली ॥ ज० ॥ १२ ॥ रस रंगे
 रमतो संचरे, तव निलकंठजी अपहरे ॥ तव सीख दे
 तां करगरे, प्रचु पनीयो चंपा सरवरे ॥ ज० ॥ १३ ॥
 मंत्रिनी पुत्री परणी, सा कंचन वरणी सुख करणी ॥

सा रूपे रंजा मनहरणी, सा इंद्राणी उपमा धरणी ॥
 ज० ॥ १४ ॥ सुखकारी सुधरे घणी, जाणे सुख पावुं
 एहजणी ॥ पिण जेहनो रखवालो धणी, तिहां कीर्ती
 चले वैरि तणी ॥ ज० ॥ १५ ॥ तव अरि आ खुण
 जाण्यो कीयो, प्रचु जल क्रिडा करतो लीयो ॥ तव
 मुष्टिशुं हणतां हियो, ते अंवरथी नाखी दियो ॥
 ज० ॥ १६ ॥ तव पडीयो गंगाजल मांहि, तव अट
 विमे फीरतो प्राहि ॥ प्रचुवन राजा उठाहि, नगरीए
 आण्यो धरी बाहि ॥ ज० ॥ १७ ॥ कुमरी राज पर
 णावतां, तव गीत घणेश गावतां ॥ तव मंगलाच्यार
 करावतां, तव सुंदरीशुं सुख पावतां ॥ ज० ॥ १८ ॥
 तव नंदन नीके जाइउं, राजाने आणी सुणाइयो ॥
 तव दाने दरिद्र गमाइउं, तेजरथ कुमर मन जाइउं ॥
 ज० ॥ १९ ॥ तव अयवंति सुंदरी करी, तव सुरसे
 न्याशुं वरी ॥ सामा देवी तव आवे खरी, विनति क
 रे करधरी ॥ ज० ॥ २० ॥ बेसी विमान प्रचु आवे,
 अशनीवेगने सोहावे ॥ सेन सकल लेइ आवे, चा
 ली अरिनोपुर पावे ॥ ज० ॥ २१ ॥ अंगारक लढी
 आयो, सुर्पक निलकंठ बोलायो ॥ रणथंज तीहारो पा
 यो, बहुविध युद्ध बणायो ॥ ज० ॥ २३ ॥ विद्याध
 र बहु थाठा, युद्ध करता अति त्राठा ॥ जाए अ
 पुठा नाठा, प्रचुजीशुं अति गाठा ॥ ज० ॥ २३ ॥
 अशनीवेगने राज आप्यो, सह वदीतो स्थिर स्था

प्यो ॥ श्रेणीमांदि मुख्य करी गप्यो, सघलो तेहनो
 दुःख काप्यो ॥ ज० ॥ २४ ॥ निलयशा आवी धरी,
 हाथ जोडी विनति करी ॥ ए दोइ विनावर सहचरी,
 ए सह सबहुं तेरे गुणचरी ॥ ज० ॥ २५ ॥ ए ढाल
 आठावीशमी, शीवपुरी जाशे आतम दमी ॥ ए नारी
 सह सरखी समी, श्री गुणसागर मनसारमी ॥ ज० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ शुद्धि सघली लेइ करी, श्री वसुदेव कुमा
 र ॥ मध्य खंरुमें आवता, सुणीयो एह विचार ॥ १ ॥
 श्री अरिष्ट पुरवर जलो, श्री हरी ब्रह्म नरेश ॥ पट
 राणी पदमावति, पद्मा वास विशेष ॥ २ ॥ कुमरी ना
 मे रोहिणी, अमरीनो सुविलास ॥ नख शिख तांइ शो
 चति, स्वयंवर मंडप तास ॥ ३ ॥ जरासंध सुत बांधवा,
 पांडव कौरव राय ॥ यादव खेचर नृप अवर, मिल्या
 एकठा आय ॥ ४ ॥ वैठा वड वड आसणा, वडा वडा
 नूपाल ॥ वडी वनी शोचा करी, दिसे जाकऊमाल ॥ ५ ॥

ढाल २९ मी ॥ धन प्रनु रामजी, धन्य परिणाम
 जी ॥ ए देशी ॥ कुंवर आयो श्री वसुदेववे ॥ रूप विरुप
 करी कोलिको, जाइ न लहे जेववे ॥ कुं० ॥ १ ॥ रो
 हिणी रंजा सरस विराजे, साजी सवरो वेसवे ॥ मंड
 प आवी जगत सोहावी, मित्र करी सुविशेषवे ॥ कुं०
 ॥ २ ॥ प्रतिहारणि आगे होइ, प्रगट करे नृप नाम
 वे ॥ जरासंध त्रीखंरु नरेश्वर, ए प्रनुजी अनिराम वे
 ॥ कुं० ॥ ३ ॥ अपराजीत बंधन कुंवरजी, कालयवन

कुलमांहिबे ॥ दाता भोक्ता दल दरिआको, नाम धरा
 वत प्राहिबे ॥ कुं० ॥ ४ ॥ पांडव पंच प्रतापवले अ
 ति, कौरवसत ए देखवे ॥ कर्ण कहावे कल्पतरु जे,
 जे ए परतख प्रेखवे ॥ कुं० ॥ ५ ॥ उदधिविजय आ
 दे नव जाइ, अधिकाइमें आणवे ॥ उग्रसेन अलोल
 करंता, यादव राजा जाणवे ॥ कुं० ॥ ६ ॥ खेचर नू
 चर सर्व प्रकारे, आगे एह नीहालवे ॥ कुमरी मुहं म
 चकोडी चाली, हां आंगेरे चालवे ॥ कुं० ॥ ७ ॥ वड वड
 राणा वड वड राजा, परहरीया सब दूरवे ॥ चतुरपणाथी
 चाली आवी, श्री वसुदेव हजूरवे ॥ कुं० ॥ ८ ॥ आप
 वजावे वाजा वारु, सुघमाइनो संचवे ॥ कुमरी देखे रु
 प मूलंगो, नजर नखंचे रंचवे ॥ कुं० ॥ ९ ॥ धौ धौ
 धप पम मुजवर, मांदल शब्द करंतवे ॥ धसी वरमा
 ला रलियात रोहिणी, कुंवर कंठ धरंतवे ॥ कुं० ॥ १० ॥
 आप मने कुमरी तो कीधो, एतो सर्व सयाणवे ॥ म
 र्म अणल हेवे राजा सघला, हुंया अधिक अयाणवे
 ॥ कुं० ॥ ११ ॥ उधंत कुंवर कालयवनजी, कोप व
 शे उचरंतवे ॥ अवर वरानी नाठी पडीथी, एवर न्या
 य वरंतवे ॥ कुं० ॥ १२ ॥ कुमरी चूली हम नहि चू
 ल्या, ल्यो वरमाला विनायवे ॥ काग गले कचननी मा
 ला, एतो चूली न देखायवे ॥ कुं० ॥ १३ ॥ चाकर
 आधी माला मांगे, नृप सुत वचन सुणायवे ॥ कुमर
 फहे किम राज करेठे, करता एहवो न्यायवे ॥ कुं० ॥

॥ १४ ॥ कर्महिनने छेश किहांथी, कांड करन चढा
 यवे ॥ पाणिग्रहणने रजक ए मोठो, अण सरज्यां न
 लहायवे ॥ कुं० ॥ १५ ॥ निर्जठर्या ते जरासंधशुं, बो
 ल्यो चटक लगायवे ॥ ए मातंग अठे मयमंतो, हम
 सरखा शुं थायवे ॥ कुं० ॥ १६ ॥ जरासंध कोपे कल
 कलीयो, वड वमां सुजट सजायवे ॥ हाथी घोडा रथ
 थी उठी, रेणुं रही नच गायवे ॥ कुं० ॥ १७ ॥ श्री
 हरिं ब्रह्म नरेश नाखे, अवसर जाण कहायवे ॥ जो
 तरी रथ कुंमनी वेसारी, अब तो तुं टली जायवे ॥ कुं०
 ॥ १८ ॥ कुंमर कहे सुसराजी एहवो, बोलने फेरी बो
 लवे ॥ एतो संग लाचार हमारी, थां दढता मम डो
 लवे ॥ कुं० ॥ १९ ॥ विद्या बलने मन बले बलीयो,
 बलीया ठे चूज दंडवे ॥ तूण जीम सुजट उजाइ ना
 ख्या, प्रचुनी पवन प्रचंडवे ॥ कुं० ॥ २० ॥ बीजी फो
 ज बनी अति आवी, कुंवर कुलीयो घेरवे ॥ कांड अ
 धरम करो सुर कहितां, लाजी चल्या दल फेरवे ॥ कुं०
 ॥ २१ ॥ संघकेतु चूपाल पधारयो, दल बल सवलो साज
 वे ॥ जदुपति सिंह उठावणी आगे, मृग जेम चाल्या ना
 जवे ॥ कुं० ॥ २२ ॥ महाबल राजा अति बलवंतो, सन्मुख
 आयो चालवे ॥ उगंता रवी आगे, तम जीम, सोपिण
 गयो मुह टालवे ॥ कुं० ॥ २३ ॥ उदधिविजय नृप
 वीडो पायो, ए तुम सरोखो काजवे ॥ जादव जोर
 विशेष जणावत, आवत करत अवाजवे ॥ कुं० ॥ २४ ॥

कुलमांहिबे ॥ दाता नोक्ता दल दरिआको, नाम धरा
 वत प्राहिबे ॥ कुं० ॥ ४ ॥ पांडव पंच प्रतापवले अ
 ति, कौरवसत ए देखवे ॥ कर्ण कंहावे कल्पतरु जे,
 जे ए परतख प्रेखवे ॥ कुं० ॥ ५ ॥ उदधिविजय आ
 दे नव जाइ, अधिकाइमें आणवे ॥ उग्रसेन अलोल
 करंता, यादव राजा जाणवे ॥ कुं० ॥ ६ ॥ खेचर नू
 चर सर्व प्रकारे, आगे एह नीहालबे ॥ कुमरी मुहं म
 चकोडी चाली, हां आंगेरे चालवे ॥ कुं० ॥ ७ ॥ वंड वंड
 राणा वडवड राजा, परहरीया सब दूरवे ॥ चतुरपणाथी
 चाली आवी, श्री वसुदेव हजूरवे ॥ कुं० ॥ ८ ॥ आप
 वजावे बाजा वारु, सुघमाईनो संचवे ॥ कुमरी देखे रु
 प मूलंगो, नजर नखंचे रंचवे ॥ कुं० ॥ ९ ॥ धौ धौ
 धप पम मुजवर, मांदल शब्द करंतवे ॥ धंसी वरमा
 ला रलियात रोहिणी, कुंवर कंठ धरंतवे ॥ कुं० ॥ १० ॥
 आप मने कुमरी तो कीधो, एतो सर्व सयाणवे ॥ म
 र्म अणल हेवे राजा सघला, हुंया अधिक अयाणवे
 ॥ कुं० ॥ ११ ॥ उधंत कुंवर कालयवनजी, कोप व
 शे उचरंतवे ॥ अवर वरानी नाठी पडीथी, ए वर न्या
 य वरंतवे ॥ कुं० ॥ १२ ॥ कुमरी चूली हम नहि चू
 ल्या, ल्यो वरमाल ठिनायबे ॥ काग गले कंचननी मा
 ला, एतो चली न देखायवे ॥ कुं० ॥ १३ ॥ चाकर
 आधी माला मांगे, नृप सुत वचन सुणायवे ॥ कुमर
 फहे किम राज करेठे, करता एहवो न्यायवे ॥ कुं० ॥

॥ १४ ॥ कर्महिनने क्लेश किहांथी, कांड करन चढा
 यवे ॥ पाणिग्रहणने रजक ए मोठी, अण सरज्या न
 लहायवे ॥ कुं० ॥ १५ ॥ निर्जठ्या ते जरासंधशु, बो
 ल्यो चटक लगायवे ॥ ए मातंग अठे मयमंतो, हम
 सरखा शु थायवे ॥ कुं० ॥ १६ ॥ जरासंध कोपे कल
 कलीयो, वड वना सुनट सजायवे ॥ हाथी घोडा रथ
 थी उठी, रेणुं रही नजे ठायवे ॥ कुं० ॥ १७ ॥ श्री
 हरि ब्रह्म नरेश जाखे, अवसर जाण कहायवे ॥ जो
 तरी रथ कुंमनी बेसारी, अब तो तुटली जायवे ॥ कुं०
 ॥ १८ ॥ कुंमर कहे सुसराजी एहवो, बोलन फेरी बो
 लवे ॥ एतो सग लाचार हमारी, थी दृढता मम डो
 लवे ॥ कुं० ॥ १९ ॥ विद्या बलने मन बले बलीयो,
 बलीया ठे नज दंडवे ॥ तूण जीम सुनट उजाई ना
 रूया, प्रभुजी पवन प्रचंडवे ॥ कुं० ॥ २० ॥ बीजी फो
 ज बनी अति आवी, कुंवर कुलीयो घेरवे ॥ कांड अ
 धरम करो सुर कहिता, लाजी चल्या दल फेरवे ॥ कुं०
 ॥ २१ ॥ संघकेतु नृपाल पधारयो, दल बल सबलो साज
 वे ॥ जदुपति सिंह उठावणी आगे, मृग जेम चाल्या जा
 जवे ॥ कुं० ॥ २२ ॥ महाबल राजा अति बलवंतो, सन्मुख
 आयो चालवे ॥ उगंता रवी आगे तम जीम, सोपिण
 गयो मुह टालवे ॥ कुं० ॥ २३ ॥ उदधिविजय नृप
 वीडो पायो, ए तुम सरोखो काजवे ॥ जादव जोर
 विशेष जणावत, आवत करत अवाजवे ॥ कुं० ॥ २४ ॥

आनंददुंदुनी साहमो आयो, हाको हाक होवंतवे ॥
 अचरिज पामी अंवरस्वामी, कौतुक अति जोवंतवे
 ॥ कुं० ॥ २५ ॥ आगे पाव न ठावे कोई, होइ रह्यो ए
 सोचवे ॥ किंज न धसे अरि उपर राजा, लोगा ए
 आलोचवे ॥ कुं० ॥ २६ ॥ सिर लोचने नुज पिण द
 क्षिण, राजाना फूरकंतवे ॥ करत विचारण ए स्थिर
 स्थापी, कोइक इष्ट मिलंतवे ॥ कुं० ॥ २७ ॥ कुमर क
 हे लफवो नहि जुगतो, नृप मुज बाप समानवे ॥ स्व
 अक्षर बाण चलाव्यो आव्यो, नृप आगे अहिनाणवे
 ॥ कुं० ॥ २८ ॥ अक्षर वाच्या लघु चाइना, जीलो
 प्रनु प्रणामवे ॥ बहुतर सहस ए गुण राणी, जाणी
 आज सकामवे ॥ कुं० ॥ २९ ॥ साजन मेले वसीए
 सोतो, वास जलो कहेवायवे ॥ साजन मेला पाखे व
 सवो, जंगल मांही गणायवे ॥ कुं० ॥ ३० ॥ चाइ धाइ
 सन्मुख आयो, कुंवर लाग्यो पायवे ॥ उठाइलियो जे
 अधिकेरे, लीधो कंठे लगायवे ॥ कुं० ॥ ३१ ॥ चाम
 रुधिरने मांस हारथी, नीजी नीतर जाइवे ॥ पंचहि
 पुट नेदाणी जारी, गाढी सीतलताइवे ॥ कुं० ॥ ३२ ॥
 जरासंध नरेश्वर आदे, हरख्या राय अपारवे ॥ धन
 रोहणी कुमरी करमैति, पायो जल नरतारवे ॥ कुं० ॥
 ॥ ३३ ॥ सो वर साने अंतर आयो, ऋद्धि घणोरी पाय
 वे ॥ विद्या विविध प्रकारे लायो, लब्धि वली वर रा
 यवे ॥ कुं० ॥ ३४ ॥ सघली रमणिशुं प्रनु प्रगट्यो,

सौरिपुर आवंतवे ॥ घर, घर मंगलाचार वधाइ,
 साजन सुख पावंतवे ॥ कुं० ॥ ३५ ॥ साहसहु मिलि
 चरणे लाग्या, प्रजु दीधो सनमानवे ॥ रामचंद्र जेम
 गुणनो ग्राहक, नाणे मनमे आनवे ॥ कुं० ॥ ३६ ॥
 गज सायरने चंद्र सिंहवर, देखी सुपना च्यारवे ॥ शु
 च वेलाइ रोहिणी जायो, श्री बलचंद्र कुमारवे ॥ कुं०
 ॥ ३७ ॥ एकुणत्रीशमी ढाल रसाल, उपज्यो पुरुष
 प्रधानवे ॥ गुणसागरे हरि वंश तणेठे, दिन दिन थ
 ढतो वानवे ॥ कुं० ॥ ३८ ॥

चोपाइ ॥ खंड खंड रस ठे नव नवा, सुणता मी
 ठा साकर जेवा ॥ श्री हरिवंश चरित्र जयजयो, प्र
 थम अधिकार ए पुरो थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्र
 बंधे श्री हरिवंश विस्तार वर्णनो नाम प्रथम खंड समाप्त ॥

॥ अथ हरिवंश ढाल सागर ग्रंथस्ये द्वितीय खंड प्रारंभ ॥
 दुहा ॥ श्रीमंधर स्वामी तणा, चरण नमुं चित्त ला
 य ॥ अत्र बीजो अधिकार वर, यः जणतां सुख थाय
 ॥ १ ॥ जुजंगविष्णु नरेंद्रजी, मनमें करे विचार ॥ अ
 व अवसर सजस तणो ॥ तजिए विषय विकार ॥
 ॥ २ ॥ वय पलट्या वाला पणो, वां ठे विविध प्रकार ॥
 विटल विगोवे आपने, न्ह ले शोच लिगार ॥ ३ ॥
 उग्रसेन निज पुत्रने, राजजार आपंत ॥ धर्मघोष मु
 निवर कने, संजम लीयो तुरंत ॥ ४ ॥ संजम पाल्यो

७२
 आनंददुंदुनी साहसो आयो, हाको हाक होवंतवे ॥
 अचरिज पामी अंबरस्वामी, कौतुक अति जोवंतवे
 ॥ कुं० ॥ २५ ॥ आगे पाव न ठावे कोई, होइ रह्यो ए
 सोचवे ॥ किउ न धसे अरि उपर राजा, लोगा ए
 आलोचवे ॥ कुं० ॥ २६ ॥ सिर लोचनने जुज पिण द
 क्षेण, राजाना फूरकंतवे ॥ करत विचारण ए स्थिर
 स्थापी, कीइक इष्ट मिलंतवे ॥ कुं० ॥ २७ ॥ कुमर क
 हे लम्बो नहि जुगतो, नृप मुज बाप समानवे ॥ स्व
 अक्षर बाण चलाव्यो आव्यो, नृप आगे अहिनाणवे
 ॥ कुं० ॥ २८ ॥ अक्षर वाच्या लघु नाइना, जीलो
 प्रभु प्रणामवे ॥ बहुतर सहस ए गुण राणी, जाणी
 आज सकामवे ॥ कुं० ॥ २९ ॥ साजन मेले वसीए
 सोतो, वास नलो कहेवायवे ॥ साजन मेला पाखे व
 सवो, जंगल मांही गणायवे ॥ कुं० ॥ ३० ॥ नाइ धाइ
 सन्मुख आयो, कुंवर लाग्यो पायवे ॥ उठाइलियो जे
 अधिकेरे, लीधो कंठे लगायवे ॥ कुं० ॥ ३१ ॥ चाम
 रुधिरने मांस हारथी, नीजी नीतर जाइवे ॥ पंचहि
 पुट नेदाणी चारी, गाढी सीतलताइवे ॥ कुं० ॥ ३२ ॥
 जरासंध नरेश्वर आदे, हरख्या राय अपारवे ॥ धन
 रोहणी कुमरी करमैति, पायो नल नरतारवे ॥ कुं० ॥
 ॥ ३३ ॥ सो वर साने अंतर आयो, ऋद्धि घणेरी पाय
 वे ॥ विद्या विविध प्रकारे लायो, लब्धि वली वर रा
 यवे ॥ कुं० ॥ ३४ ॥ सघली रमणिशुं प्रभु प्रगढ्यो,

सौरिपुर आवंतवे ॥ घर घर मंगलाचार वधाइ,
 साजन सुख पावतवे ॥ कुं० ॥ ३५ ॥ साहसहु मिलि
 चरणे लाग्या, प्रभु दीधो सनमानवे ॥ रामचंद्र जेम
 गुणनो ग्राहक, नाणे मनमे आनवे ॥ कुं० ॥ ३६ ॥
 गज सायरने चंद्र सिंहवर, देखी सुपना च्यारवे ॥ शु
 च वेलाइ रोहिणी जायो, श्री बलचंद्र कुमारवे ॥ कुं०
 ॥ ३७ ॥ एकुणत्रीशमी ढाल रसाल, उपज्यो पुरुष
 प्रधानवे ॥ गुणसागरे हरि वंश तणेवे, दिन दिन च
 ढतो वानवे ॥ कुं० ॥ ३८ ॥

चोपाइ ॥ खंड खंडारस ठे नव नवा, सुणता मी
 ठा साकर जेवा ॥ श्री हरिवंश चरित्र जयजयो, प्र
 थम अधिकार ए पुरो थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागरे प्र
 बधे श्री हरिवंश विस्तार वर्णनो नाम प्रथम खंड समाप्तो ॥

॥ अथ हरिवंश ढाल सागर ग्रंथस्य द्वितीय खंड प्रारंभ ॥
 दुहा ॥ श्रीमंधर स्वामी तणा, चरण नमुं चित्त ला
 य ॥ अब बीजो अधिकार वर, यः नणतां सुख थाय
 ॥ १ ॥ चुजंगविष्णु नरेंद्रजी, मनमें करे विचार ॥ अ
 व अवसर सजम तणो ॥ तजिए विषय विकार ॥
 ॥ २ ॥ वय पलट्यावाला पणो, वांठे विविध प्रकार ॥
 विटल विगोवे आपने, नह ले शोच लिंगार ॥ ३ ॥
 उग्रसेन निज पुत्रने, राजनार आपंत ॥ धर्मघोष मु
 निवर कने, संजम लीयो तुरंत ॥ ४ ॥ संजम पाल्यो

साचशुं, केवल क्रीधो, प्रकाश ॥ जुजंगविष्णु महा
मुनि, साध्यो मोक्ष निवास ॥५॥ मथुरा पुरी राज करे
चलो, उग्रसेन राजान ॥ न्याय निति गुण धारणो,
शोभा गुण मणि खाण ॥ ६ ॥

ढाल ३० मी ॥ रामको सुजश घणो ॥ ए देशी ॥
राजा गुणवंतो, न्याय धर्म प्रतिपालहो ॥ रा० ॥ गुरु
उ गोत्र गोवलहो ॥ रा० ॥ ए टेक ॥ उग्रसेन राजा
चलोहो, पाले राज उदार ॥ प्रजा तणी प्रतिपालणा
हो, नहि अनित्य लिगारहो ॥ रा० ॥ १ ॥ आप आ
पणो साचवेहो, सहुए कुल आचार ॥ जोर न जस्ती
करी सकेहो, को केहनी कण वारहो ॥ रा० ॥ २ ॥
नाम प्रणामे धारणीहो, पटराणी सुविशाल ॥ पति न
क्ति साची सतीहो, गजगति चाल रसालहो ॥ रा० ॥
॥ ३ ॥ आनन एहु विराजतोहो, वयण सुधारस सा
र ॥ मनसा धर्मज तत्त्वनीहो, रति देवि आकारहो ॥
रा० ॥ ४ ॥ स स्नेहि परीवारशुंहो, देव गुरुधुं प्रेम
॥ पोसा षफिकमणां करेहो, पाले सुधा नेमहो ॥ रा०
॥ ५ ॥ प्रीतमशुं अति प्रीतमीहो, जीव एक तनुदोय
॥ आनंद रंग विनोदमेहो, राजा राणी होयहो ॥
रा० ॥ ६ ॥ तापस एक निदानशुंहो, राणी उर अवतार
॥ उपजावे ते मोहलाहो, पति कालूजानो हारहो ॥
रा० ॥ ७ ॥ मंत्रि बुद्धि विशेषथीहो, डोहलो पूरो हो
य ॥ जयो जलहि प्रवाहितहो, चुंडा सगो नही कोय

हो ॥ रा० ॥ ८ ॥ सौरीपुर व्यवहारीयोहो, शोठ सुन
 द्र उदार ॥ कांसाथी काढी लीयोहो, नामे कंस कुमा
 रहो ॥ रा० ॥ ९ ॥ बालाने विहामणोहो, कंस स्वजा
 वे आप ॥ शंक न माने कोईनीहो, न ठपे तेज प्रता
 पहो ॥ रा० ॥ १० ॥ शोठ कलेस विचारवेहो, कीधो राय
 हजूर ॥ श्रीवसुदेव कुमारनेहो, दिधो जाणी सनूरहो
 ॥ रा० ॥ ११ ॥ पासे रहे वसुदेवनेहो, सारे सेव अ
 पार ॥ कुमर न क्षण अलगो करेहो, विनय वडो सं
 सारहो ॥ रा० ॥ १२ ॥ ब्रह्मद्रथ वारु महाहो, हरिवं
 शी राजान ॥ राणी नामे श्रीमतिहो, जायो पुत्र प्रधा
 नहो ॥ रा० ॥ १३ ॥ जरासंध वड राजविहो, त्रिखं
 ड तणो नृपाल ॥ राजग्रहिमां राजतोहो, पिशुने न
 रानो कालहो ॥ रा० ॥ १४ ॥ अपराजित आदे क
 रीहो, बंधव केरी जोड ॥ कालयवन आदे घणाहो,
 कुमर मूढ मरोहो ॥ रा० ॥ १५ ॥ सिंहस्थ राजा
 बांधीयोहो, राय तणे आदेश ॥ श्री वसुदेव कुमरजी
 हो, सुजश लियो सुविशेषहो ॥ रा० ॥ १६ ॥ करत
 जमाइ आपणोही, हरख्या लोक अशेष ॥ कुमरी जा
 णी कुलक्षणीहो, कीधो कंस नरेशहो ॥ रा० ॥ १७ ॥
 निश्चय लाधो वातनोहो, लोक वचनथी जाम ॥ मा
 स्युं रीस न उपजीहो, ज्ञान विचारत तामहो ॥ रा०
 ॥ १८ ॥ पतित पिताठे गोम्वोहो, माय न गोडी जाय ॥
 गर्न धरेवे पोखवेहो, मा मोठी कहेवायहो ॥ रा० ॥

॥ १९ ॥ मांगी कर मेलावणेहो, मथुराकरण उपाय
 ॥ बाप दियो कठ पिंजरेहो, वयर विलय नविजायहो
 ॥ रा० ॥ २० ॥ असमंजस देखी घणोहो, श्री अ
 तिसुक्त कुंमार ॥ पाले चारित्र सादरोहो, राग न रो
 स लिगारहो ॥ रा० ॥ २१ ॥ कंस वतंसक सारीखो
 हो, वरते आण अखंड ॥ मर्दन मान महावलीहो, पा
 ले राज प्रचंरुहो ॥ रा० ॥ २२ ॥ ढाल जली ए त्रि
 समीहो, निसुणे जे नरनार ॥ गुणसागर गर्जे महाहो,
 अन धनने अधीकारहो ॥ रा० ॥ २३ ॥

१ दुहा ॥ अनिकजस्या जस आगलो, अनंत सेन
 दयाल ॥ अजीत सेन सुहामणो, अनहित रिपु सु
 कुमाल ॥ १ ॥ देवसेन तो देवता, शत्रुसेन अतिधी
 र ॥ उपजशे हरी माहिरे, सामल वरण शरीर ॥ २ ॥
 वीरा वरणे सामला, वीरा शोच निधान ॥ वीरा सघ
 ला सारिखा, वीरा पुरुष प्रधान ॥ ३ ॥ वीरा जोगी
 जमरला, जोगवशे जल जोग ॥ त्यागी तो त्रिजुवन
 सीरे, योगवशे वरयोग ॥ ४ ॥ वीरा साधु सलुणडा,
 जोतां सहस्र अठार ॥ होशे शिवपद साधणां, साचा
 संजम धार ॥ ५ ॥ ए षटहि वीरा तणा, पूर्व जवंतर सार
 ॥ मुळ कहेतां तुमे सांचलो, जविक जनों सुविचार ॥ ६ ॥

ढाल ३१ मी ॥ परजव वात सुणावेरे स्वामी ॥ ए
 देशी ॥ षट जाइना पूर्व जवंतर, देवकी नंदन बरे सु
 हंकर ॥ चरम शरीरी उत्तम प्राणी, नेम जिनेसरजी

नी ए वाणी ॥ प० ॥ १ ॥ मथुरा नामे नगरी बोली,
 जाणी ए इद्रपुरी सम तोली ॥ जानु नामे शेठ बदर,
 कंचन कोडी अठे तसुवार ॥ प० ॥ २ ॥ जमुना नामे
 निरुपम नारी, साहने सुहाणीठे अति प्यारी ॥ पुत्रो
 सात जनी ते माता, जगमांहि ठे अधीक विख्याता ॥
 प० ॥ ३ ॥ सुजानुने जानुकिरति, जानुखेण ए त्रि
 जो विरति ॥ चौथो सूरजने सूरदेवो, ठो सूरदत्त क
 हेवो ॥ प० ॥ ४ ॥ सूरसेन ए साते जाइ, नारी साते
 ए परणाइ ॥ कालिंद्रि तीलकाने कांता, श्री कांता सुं
 दरी अति माता ॥ प० ॥ ५ ॥ द्युति समुद्युति वेसे
 विशाली, चंद्रसुं कांता रुप रसाली ॥ सात सहोदर
 साते नारी, साता माने विविध प्रकारी ॥ प० ॥ ६ ॥
 शेठ अने शेठाणी दिक्का, लेइ पाले सुधी सिक्का ॥
 संधारो करी बोडी प्राणो, ततखिण पास्या अमर वि
 मानो ॥ प० ॥ ७ ॥ पाठे कुंवर कुव्यसने पडीया, ध
 न उजाडीने रडवडीया ॥ आपद चुरथाने अति चां
 गया, तव ते चोरी करवा लाग्या ॥ प० ॥ ८ ॥ उजे
 णी नगरे चाली आया, चोरी करवा काज सीधाया ॥
 लघु जाइने मूकी मसाणे, बिजो चोरीनी मति ठाणे
 ॥ प० ॥ ९ ॥ तिणे अवसर तिहां राजा निको, वृष
 ध्वजराय राया सिर टिको ॥ कमलाराणी मगी कुमरी,
 रुपे रुडी जेहवी अमरी ॥ प० ॥ १० ॥ दृढ मुष्टिने
 सात विवाही. सासरडे आवीरे उमाहि ॥ सासु क्रोध

णी बहु वडवेति, नीत लमाइ सासु सेति ॥ प० ॥ ११ ॥
 सासु हुय थाए वहु आगे, तो वहु सासुने पगे लागे
 ॥ जो सासु अति आप खेंचावे, तो वहु सासुने वश
 नावे ॥ प० ॥ १२ ॥ पापज प्यारो ने धर्म न प्यारो,
 घरमे वरते वहुनो वारो ॥ नारी नेहनो नाथ्यो पिडमो,
 माथी दूर त्रियाथी नैडो ॥ प० ॥ १३ ॥ आयो
 मास वसंत विराजी, खेलण केरो साज सुसाजी ॥ राय
 जमाइ वनमे आवे, खेल करी रलीयायत थावे ॥ प०
 ॥ १४ ॥ पापणी पाप विच्यारे गाढो, विपहर मोटो
 आणी सदाढो ॥ घटमें रांखी केहे विकराला, बहु ला
 वो कुसुमकी माला ॥ प० ॥ १५ ॥ विपहर दउमी सा
 ह्यो हाथो, सा मुर्वाणी मिलियो सहु साथो ॥ मुइ जा
 णी मसाणे मैली, परम महासुख पाणि पेलि ॥ प० ॥
 ॥ १६ ॥ राते घर आयो नरतारो, दुचितो देखि प
 रिवारो ॥ खबर लहि समसाने आवे, एक ऋपि देखी
 सुख पावे ॥ प० ॥ १७ ॥ पगे लागीने उन्नो होइ,
 जाखे आरतिवंतो सोइ ॥ जो हुं मंगी नारी पाउं, तो
 तुम चरणे अति चित लाउं ॥ प० ॥ १८ ॥ आगे
 जाता मंगि पामी, साधु समीपे लायो स्वामी ॥ ऋपि
 तनुवाये फरसी जामो, विपहर विप उत्तरीयो तामो
 ॥ प० ॥ १९ ॥ मंगी सूकी मुनिवर सगे, आपण घर आ
 यो मन रंगे ॥ लेवा महिला साज सुचंगे, आचूपण
 वस्त्र बहु चंगे ॥ प० ॥ २० ॥ एतले वितक वितो के

हंवो, ते सांचलिए जे ठे जेहवो ॥ सूरसेन मसाणे वे
 सायो, ते मंगीनी दृष्टि आयो ॥ प० ॥ २१ ॥ रूप
 घणो ने धोवनवंतो, तरुणी त्रियानो चित्त हरंतो ॥
 मंगी मोहि देखी तासो, पति करवानी मांडी आसो
 ॥ प० ॥ २२ ॥ वनिता वेली सरखी साची, पासे ल
 हे तस साथे राचि ॥ ते शुं मंगी घाले जाखो, सुख
 विलसणानि ठे अचिलापो ॥ प० ॥ २३ ॥ चोर कहे
 तुज पतिथी सकु, मंगी मुह कियुं तव वंकु ॥ पति मा
 री तुज साथे आवु, पिण जो थारी वाचा पाजं ॥ प०
 ॥ २४ ॥ कौतुक जोवा वाचा आलि, मंगी पति तव
 आयो चालि ॥ खांडो मंगीने पकडायो, ऋषि पग पू
 जणने चित्त लायो ॥ प० ॥ २५ ॥ मंगी चोट करंति
 जाणि, मा कहि बोल्यो करुणा आणि, रंडी चंडीरे कु
 लचंडी, शुं चाहे नीजपति शीरखंती ॥ प० ॥ २६ ॥
 प्रितम प्रेम वसे हसी जाखे, ए शुं सा तव उत्तर दा
 खे ॥ जाणे मारी मुज कर कपे, म्यान पड्यो बटकी
 इम जपे ॥ प० ॥ २७ ॥ जुमाने उपजे अति आइ,
 पेळी जिम थड्ढ मूरति लाइ ॥ प्यारि थड्ढ प्रितमने
 जमाइ, तिम मंगीए धान बणाइ ॥ प० ॥ २८ ॥ जा
 इ चोरीनो धन लाया, वाटा साथे ताम कराया ॥ ल
 घु जाइ वाटो नवि इहे, सजस लेवो मनमां वठे ॥ प०
 ॥ २९ ॥ जाइ पूठे ए किण कारण. मंगी घरीत सु
 णायो तारण ॥ हलुकर्मी वैरागे राता, धन सघलो ले

इ वड भ्राता ॥ प० ॥ ३० ॥ घर आवी बहु याने आ
 पी. आपण संजमनी मती थापी ॥ कारण जाणी स
 हु हुए वैरागी, चउदे माणस हुआ त्यागी ॥ प० ॥
 ॥ ३१ ॥ दृढ सुष्टिने मंगी मीलिया, सोले माणस सु
 रगति नलिया ॥ दो सागरनो पालि आयो, स्वर्ग सौ
 धर्मे पुण्य प्रजावो ॥ प० ॥ ३२ ॥ द्वाइ संडे नरत
 वखाणुं, गिरी वैताढ्य दक्षिण दिसी जाणुं ॥ नित्या
 लोक नगरिनो नामो, चित्रचूड राजा अनिरामो ॥
 प० ॥ ३३ ॥ नामे प्रणामे नारि मनोहर, साते सुत
 उपना तस उदर ॥ एक निमतिज मोठो देख्यो. सा
 त जने वैराग्या विशेख्यो ॥ प० ॥ ३४ ॥ संजम पा
 लि सनतकुमारे, देव थया करणि अनुसारे ॥ सागर
 साते आयुज हुवो. वड बंधव उपजीयो जूवो ॥ प०
 ॥ ३५ ॥ कुरु जंगल हथीणापुर केरो, गंगदेव ठे नूप
 चलेरो ॥ नंदजसा राणि मन चावि. षटहि सुत उपजी
 या आवी ॥ प० ॥ ३६ ॥ गंग गंग दत्त गंग सुमित्रो.
 नंद सुनंद नंदिखेण पवित्रो ॥ ए पटहि बंधवनि जो
 रु. मात पिताना पुरे कोड ॥ प० ॥ ३७ ॥ माता पु
 त्रो चारित्र लिधो. मीनप जन्म क्रतारथ किधो ॥ अ
 णसण अवसर सुत मुख जोवे, मात मोह तणे वस
 होवे ॥ प० ॥ ३८ ॥ किधो एह नियाणो माइ. आगे
 होज्यो एह सगाइ ॥ स्वर्ग सातमे तेह सिधाया. सो
 ले सागर आयु लहाया ॥ प० ॥ ३९ ॥ देश मृगा

वइ नामे वारु. नगर दसारण सोने अपारु. देवसे
 न राजा गुण नरीयो, बहु परिवारे अठे परवरियो ॥
 प० ॥ ४० ॥ धन देवि, राणी सुखदाइ, नंदजस्या जी
 व उपजी आइ ॥ देवकि नामे कुमरी जाइ, रूप कला
 गुणनि अधीकाइ ॥ प० ॥ ४१ ॥ उहा पट बंधव लीयो
 अवतारो, किण विध तेतो सुणो अधीकारो ॥ ढाल एक
 त्रिसमी इम जापे, श्री गुणसागर पुन्य प्रकाशे ॥ प० ४२ ॥
 दुहा ॥ कंस प्रशंस करी घणी, श्री वसुदेव नरेश
 ॥ दीधी देवी देवकि, किधो व्याह विशेष ॥ १ ॥ ह
 य गय रथ कचन रयण, घणा तेम पटकुल ॥ आप्या
 वरने दायजे, मणी माणिक बहु मूल ॥ २ ॥ एक स
 हस गोकल वली, नंद गोकूलि साथ ॥ देवक राय पु
 त्री नणि, आपे बहुली आथ ॥ ३ ॥ कंस नंद साथे
 भही, श्री वसुदेव नरिंद ॥ मथुरा नगरी आविया, म
 नमां धरी आणंद ॥ ४ ॥ कंस हिवे तिहां पिण करे,
 सहने जिमणवार ॥ विचमें जे वितक हुवो, ते सु
 णजो सुविचार ॥ ५ ॥
 ढाल ३२ मी ॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥
 एक दिन वेठि गोखमें, जीवजस्या वरनाररे ॥ मुगधा
 माननरी ॥ नणदि, साथ कुतुहलि, साखियनके परी
 चाररे ॥ सु० ॥ १ ॥ करे पवन प्रतिचारणा, आपे के
 इ मुखवासर ॥ सु० ॥ केइ अमृत जलथी नरी, दासी
 उनी पासरे ॥ सु० ॥ २ ॥ केइ विलेपन कर धरी,

कुंकुम गंटे केयरे ॥ मु० ॥ केइ उनी मुख आगले,
 आदरसी कर लेयरे ॥ मु० ॥ ३ ॥ सूरज रथ खेंचि र
 ह्यो, मध्याने आकासरे ॥ मु० ॥ जोवा नृप नारी त
 णा, रूप रंग सुविलासरे ॥ मु० ॥ ४ ॥ एहवे मुनी
 वर मलपतो, ऐमंतो ऋषीराजरे ॥ मु० ॥ उंच नीच
 मज्जम कुले, फिरतो आहारने काजरे ॥ मु० ॥ ५ ॥
 मुह सचकोडी माननी, देखि देवर लाग्यरे ॥ मु० ॥
 एहवा रतन ते जनमीयां, धन्य माता तारो जाग्यरे
 ॥ मु० ॥ ६ ॥ मद बाकि बोले इसु, जीवजस्या त
 जी लाजरे ॥ मु० ॥ जले आव्या ऋषिरायजी, उठ
 वदिन ठे आजरे ॥ मु० ॥ ७ ॥ धन्य घनी धन्य आ
 जनी, मुक्त मन अधीकि प्रीतरे ॥ मु० ॥ आवो देव
 रजी आपणे, मिलीने गाइए गीतरे ॥ मु० ॥ ८ ॥ नि
 सुणि वचन ते मुनिश्वरु, निरखे उंचो ते वाररे ॥ बेठी
 दिठि गोखने, चड बंधवनी नाररे ॥ मु० ॥ ९ ॥ अ
 संमजस देखी थयो, रोपांकुल ऋषिरायरे ॥ मु० ॥ आ
 जो कीमी वापडी, चमी सोनइए जायरे ॥ मु० ॥ १० ॥
 ज्ञानी तव बोले इस्युं, दूर करण अहंकाररे ॥ मु० ॥
 मतकर अंजस कारमा, जानी मुग्ध गिमाररे ॥ मु० ॥
 ॥ ११ ॥ देखी जीवन धन आपणो, तुं मन फूलेवे
 एमरे ॥ मु० ॥ पिण जेम वितिपातने, कुफल आखर
 तेमरे ॥ मु० ॥ १२ ॥ थोडा दिवसने कारणे, ग्रहे
 किस्यो अचिमानरे ॥ मु० ॥ संज्ञा राग तणि परें,

ए सुख जातो जाणरे ॥ मु० ॥ १३ ॥ नणदलनो सुत सा
 तमो, करसे सही संहाररे ॥ मु० ॥ तुज पिताने कंत
 नो, नहि संदेह लिगाररे ॥ मु० ॥ १४ ॥ साधु वचन
 तव सांजलि, जीवजस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मन
 में जय अति उपन्यो, मुज कोप्यो ऋषिरायरे ॥ मु० ॥
 ॥ १५ ॥ आवि कंतने विनवे, साधु कह्यो विरतंतरे ॥
 मु० ॥ नीसुणी कंस मनमें धरे, साधु वचन एकंत
 रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ को नवी जाणे ज्यां लगे, त्यां पही
 लो उपायरे ॥ मु० ॥ साते गर्ज देवकी तणा, मांगी
 स हुं समजायरे ॥ मु० ॥ १७ ॥ मांग्याजो मुज नाप
 से, सात गरज निज तेहरे ॥ मु० ॥ तो प्रतिकार बि
 जो करी, जिम तिम राखीस देहरे ॥ मु० ॥ १८ ॥ इम
 चिंतवी निज चित्तमें, महुआ जनपरें कंसरे ॥ मु० ॥
 आयो घर वसुदेवने, राखेवा नीज वंसरे ॥ मु० ॥
 ॥ १९ ॥ दूर थकी करजोडीने, देखी करतो सेवरे ॥
 मु० ॥ आदर देइ मिली करी, इम बोले वसुदेवरे ॥
 मु० ॥ २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो, ताहरे मन शी
 वातरे ॥ मु० ॥ कहे तिम तुज चिंतत करुं, ए मुज
 वात सोहातरे ॥ मु० ॥ २१ ॥ कंस कहे करजोडने,
 माणस तें मुज किधरे ॥ मु० ॥ जीवजस्या देवरावी
 ने, सुजन पणे जस लीधरे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तिम हि
 वे देवकी पुत्रतां, सात गरज यदूरायरे ॥ मु० ॥ प्रस
 ति मात्र देवरावशो, जिम मुज मन सुख : मु

कुंकुम ढांटे केयरे ॥ मु० ॥ केइ उनी मुख आगले,
 आदरसी कर लेयरे ॥ मु० ॥ ३ ॥ सूरज रथ खेंचि र
 ह्यो, मध्याने आकासरे ॥ मु० ॥ जोवा नृप नारी त
 णा, रूप रंग सुविलासरे ॥ मु० ॥ ४ ॥ एहवे मुनी
 वर मलपतो, ऐमंतो ऋषीराजरे ॥ मु० ॥ उंच नीच
 मज्जम कुले, फिरतो आहारने काजरे ॥ मु० ॥ ५ ॥
 मुह सचकोडी माननी, देखि देवर लाग्यरे ॥ मु० ॥
 एहवा रतन ते जनमीयां, धन्य माता तारो जाग्यरे
 ॥ मु० ॥ ६ ॥ मद गाकि बोले इसु, जीवजस्या त
 जी लाजरे ॥ मु० ॥ जले आव्या ऋषिरायजी, उठ
 व दिन ठे आजरे ॥ मु० ॥ ७ ॥ धन्य घनी धन्य आ
 जनी, मुऊ मन अधीकि प्रीतरे ॥ मु० ॥ आवो देव
 रजी आपणे, मिलीने गाइए गीतरे ॥ मु० ॥ ८ ॥ नि
 सुणि वचन ते मुनिश्वरु, निरखे उंचो ते वाररे ॥ वेठी
 दिठि गोखने, बड बंधवनी नाररे ॥ मु० ॥ ९ ॥ अ
 संमजस देखी थयो, रोपांकुल ऋषिरायरे ॥ मु० ॥ आ
 जो कीकी वापडी, चमी सोनइए जायरे ॥ मु० ॥ १० ॥
 ज्ञानी तव बोले इस्युं, दूर करण अहंकाररे ॥ मु० ॥
 मतकर अंजस कारमा, जानी मुगध गिमाररे ॥ मु० ॥
 ॥ ११ ॥ देखी जोवन धन आपणो, तुं मन फूलेवे
 एमरे ॥ मु० ॥ पिण जेम वितिपातने, कुफल आखर
 तेमरे ॥ मु० ॥ १२ ॥ थोडा दिवसने कारणे, ग्रहे
 किश्यो अजिमानरे ॥ मु० ॥ संज्ञा राग तणि परें,

ए सुख जातो जाणरे ॥ मु० ॥ १३ ॥ नणदलनो सुत सा
 तमो, करसे सही संहाररे ॥ मु० ॥ तुज पिताने कंत
 नो, नहि संदेह लिगाररे ॥ मु० ॥ १४ ॥ साधु वचन
 तव सांजलि, जीवजस्या मद जायरे ॥ मु० ॥ मन
 में जय अति उपन्यो, मुज कोप्यो ऋषिरायरे ॥ मु० ॥
 ॥ १५ ॥ आवि कंतने विनवे, साधु कह्यो विरतंतरे ॥
 मु० ॥ नीसुणी कंस मनमें धरे, साधु वचन एकंत
 रे ॥ मु० ॥ १६ ॥ को नवी जाणे ज्यां लगे, त्यां पही
 लो उपायरे ॥ मु० ॥ साते गर्ज देवकी तणा, मांगी
 स हुं समजायरे ॥ मु० ॥ १७ ॥ मांग्याजो मुज नाप
 से, सात गरज निज तेहरे ॥ मु० ॥ तो प्रतिकार बि
 जो करी, जिम तिम राखीस देहरे ॥ मु० ॥ १८ ॥ इम
 चिंतवी निज चित्तमें, महुआ जनपरें कंसरे ॥ मु० ॥
 आयो घर वसुदेवने, राखेवा नीज वंसरे ॥ मु० ॥
 ॥ १९ ॥ दूर थकी करजोडीने, देखी करतो सेवरे ॥
 मु० ॥ आदर देइ मिली करी, इम बोले वसुदेवरे ॥
 मु० ॥ २० ॥ प्राण थकी मुज वहालो, ताहरे मन शी
 वातरे ॥ मु० ॥ कहे तिम तुज चिंतत करुं, ए मुज
 वात सोहातरे ॥ मु० ॥ २१ ॥ कंस कहे करजोडीने,
 माणस तें मुज किधरे ॥ मु० ॥ जीवजस्या देवरावी
 ने, सुजन पणे जस लीधरे ॥ मु० ॥ २२ ॥ तिम हि
 वे देवकी पुत्रनां, सात गरज यदूरायरे ॥ मु० ॥ प्रसु
 ति मात्र देवरावशो, जिम मुज मन सुख थायरे ॥ मु०

राणी देवकी, चरम शरीरी जीवोरे ॥ केम मरे ते उ
 ठे आवुषे, ए जिन वचन सदिवोरे ॥ जा० ॥ ३ ॥ न
 हील पुरनीरे वासण श्राविका, सुलसा एहवो नामो
 रे ॥ सूर आराध्योरे सुतने कारणे, सुत सहने अजी
 रामोरे ॥ जा० ॥ ४ ॥ सूर जाखेरे पुण्य प्रजाविका, तुं
 मृत वंछा नारोरे ॥ आणि आपुं हुं तुज पारका, देव
 कुमर अनुहारोरे ॥ जा० ॥ ५ ॥ बलतुं वनिता इणी
 परें उचरे, सांजल सुर सुख दायोरे ॥ हुं स्युं जाणुं तुं
 लावे केहना, ते मुऊने न सुहायोरे ॥ जा० ॥ ६ ॥
 कंसरायेरे मारण मांगीया, देवकी तनया नंदोरे ॥ आ
 णी आपीश तुऊने माननी, करीदेणुं आणंदोरे ॥
 जा० ॥ ७ ॥ एक समेरे राणी श्राविका, गर्ज धरे ते
 दोयोरे ॥ सारयो फेरो सुर शक्ति करी, जावीने बल
 जोयोरे ॥ जा० ॥ ८ ॥ इम विजो ने त्रिजो चतुरथो,
 पंचम ठठो तेमोरे ॥ सुलसामंदिर होइ वधामणा, पु
 ण्य तणे बल एमोरे ॥ जा० ॥ ९ ॥ पट सुतनी जोडी
 बिराजती, मातपिता आणंदोरे ॥ बत्रीस बत्रीस नारी
 सुहामणी, परण्या सघला नंदोरे ॥ जा० ॥ १० ॥ द
 स दस वार आवि दायजे, कंचन केरी कोडीरे ॥ नेमजी
 वचने वैरागी थायशे, कामनि कंचन ढोडीरे ॥ जा० ॥
 ११ ॥ करणीने बले केवल पामशे, लेहसे मोहनो
 वासोरे ॥ एहवा मुनिवर केरा होइए, चरण कमलना दा
 सोरे ॥ जा० ॥ १२ ॥ मूवा बालक कंसे पढाडीया.

॥ २३ ॥ सरल चित्त नृप सांचली, कहे कंसने एमरे
 ॥ सु० ॥ अंगीकार, किधो अमे, वयण कह्यो तें तेमरो॥
 सु० ॥ २४ ॥ कंस वात अणजाणतां, कहे नृप वमु
 सुविचाररे ॥ सु० ॥ मुऊ सुत ते सुत ताहरां, इहां अंत
 रमत विचाररे ॥ सु० ॥ २५ ॥ तें जे अम जोडी करी
 रे, तेणे तोमुं अति प्याररे ॥ सु० ॥ तुमनो उणो
 मल हुवे, वालाजी तन आधाररे ॥ सु० ॥ २६ ॥ घ
 णो बोल्हो कारमो, लागे कहे दसाररे ॥ सु० ॥ सात ग
 र्ज देवकीतणा, देवरावे सुविचाररे ॥ सु० ॥ २७ ॥
 ढालनली बत्रीसमी, निपट रसिली, वातरे ॥ सु० ॥
 श्रीगुणसागर एकही, हरीया गीतनी जातरे ॥ सु० ॥ २८ ॥
 दुहा ॥ महापसाउ लही करी, मद पर दुरगमाय ॥
 प्रिती करी वसुदेवशुं, कंस हिवे घर जाय ॥ १ ॥ सु
 णिनी वात सुणी करी, सोचे हिवे दसार ॥ देखो कंस
 हुं बल्यो, बचन ग्रही अविचार ॥ २ ॥ गरज धरे
 जब देवकी, तव तिहां कंसराय ॥ चौकी राखी पा
 खथी, कपटे खेले दाय ॥ ३ ॥
 ढाल ३३ मी ॥ क्रोमल वचनेरे कंत प्रत्ये कहे ॥
 ए देशी ॥ चावी न मिटे, चावियण सांचलो, चाविनो घ
 नजोरोरे ॥ रंचन आधीपागी होइ, सके, सिद्ध करोगो
 सोरोरे ॥ जा० ॥ १ ॥ बांधु, कीयारे, जतन अनेक
 जीः आगे नायो, कोइरे ॥ बांधव, दोइ वावी, मुवा स
 ही, चंपक ग्रहपति, होइरे ॥ जा० ॥ २ ॥ गरज धरेरे

जे घने समारेहो ॥ ह० ॥ ३ ॥ हरी नव नव नाम अ
 रावे, पिण गणतां पार न आवेहो ॥ ह० ॥ हरी सां
 धा जोडा लावे, हरी मांडोमांही नीडावेहो ॥ ह० ॥
 ॥४॥ हरी हेतु हेत जणावे, अणहेतु सार न पावेहो ॥ ह० ॥
 हरी नौतन वस्तु निपावे, हरी निपजी वेग खपावेहो
 ॥ ह० ॥ ५ ॥ हरी रूप निरखन काया, हरी घट घट
 मांही समायाहो ॥ ह० ॥ हरी जिहां जोवुं तिहां तेह
 वो, पिण तेहवानो तेहवोहो ॥ ह० ॥ ६ ॥ हरीब्रह्मा
 व्यास वखाण्यो, किणही तो अंत न जाण्योहो ॥ ह०
 ॥ सो हरी करण उपायां, हरी वसुदेवा घर आयाहो
 ॥ ह० ॥ ७ ॥ हरी उदर देवकी माया, हरी सुपना
 सात देखायाहो ॥ ह० ॥ सिंहणी सुत सिंह सनूरो,
 माय देखी प्राक्रम पुरोहो ॥ ह० ॥ ८ ॥ आनंद अं
 ग अपार, धनधन राणी अवतारहो ॥ ह० ॥ तेज पुं
 ज रवि रूडो, हेतकार महा नही कूफोहो ॥ ह० ॥ ९ ॥
 अग्नी सिखा दिपंती, ते मंगल गुण जीपंतीहो ॥ ह०
 ॥ गज गाजंतो आवे, राणी मन हरख उपावेहो ॥ ह०
 ॥ १० ॥ ध्वज गगने अवलंब्यो दिसे, सुनकारी वि
 स्वा विशेषो ॥ ह० ॥ देव विमाने विराजे, तिहा धप
 मप मांदल वाजेहो ॥ ह० ॥ ११ ॥ पद्म सरोवर पाणी,
 नरीयो अति शोभा वखाणीहो ॥ ह० ॥ ए सुपना
 देखी माइ, पियु पासे वधाइ खाइहो ॥ ह० ॥ १२ ॥
 गर्ज वधंतो जाणी, प्रिय साथे वदे तव राणी हो ॥

रिस तणे वस जोयोरे ॥ तेह तणा फल आगे लाग
 शे, ते सुणज्यो सहु कोयोरे ॥ जा० ॥ १३ ॥ वडा ब
 केरी जगमां जाखए, स्यो जुठो अचिमानोरे ॥ चंद्र त
 णी तत्र लागे चांदणी, जब लग न उगे जाणोरे ॥
 जा० ॥ १४ ॥ मींडक मातो सलपतो फीरे, सर्प न
 जरेथी दुरोरे ॥ हरण हरिलो हरीने आगले, न सके
 आइ हजुरोरे ॥ जा० ॥ १५ ॥ ढाल तेत्रीसमीरे हो
 एहार होवे, न होवे बीजो कोइरे ॥ गुणसागर सम
 जावे वरतए, जले जलाइ होइरे ॥ जा० ॥ १६ ॥

ढुहा ॥ एक उगे एक आथमे, एक हरखे एक सोग ॥
 एक संकुचे एक विकसतां, सहु सरखा नही लोग ॥
 ॥ १ ॥ जे जाखे बालक बतां, जे जाखे अणगार ॥
 जे जाखे वरकामनी, ते निफल न हुवे लिगार ॥ २ ॥
 दुष्ट दैत्य निकंदवा, करवा जग उद्धार ॥ दिष्णुदेव
 शिवमत्तमें, फिर फिर लीए अवतार ॥ ३ ॥

ढाल ३४ मी ॥ बिंदलीनी देशी ॥ हरीके गुण गा
 उ, हरिलीला कहीय सुहावो ॥ हरी रसते अधिक
 सुख पावोहो ॥ ह० ॥ हरी योगीमांहि योगी, हरी
 जोगीमांहि बड जोगीहो ॥ ह० ॥ १ ॥ हरी न्हाना मां
 हे नाहनो, हरी सोठो गगन समानोहो ॥ ह० ॥ हरी
 एकण रुपेही एक, हरी पसरो रूप अनेकहो ॥ ह० ॥
 ॥ २ ॥ हरी आपन बुढो वालो, हरी जग मेलावो
 चालोहो ॥ ह० ॥ हरी लोग लगायोलारे, हरी जां

जे घने समारोहो ॥ ह० ॥ ३ ॥ हरी नव नव नाम ध
 रावे, पिण गणतां पार न आवेहो ॥ ह० ॥ हरी सां
 धा जोडा लावे, हरी मांडोमांही चीडावेहो ॥ ह० ॥
 ॥४॥ हरी हेतु हेत जणावे, अणहेतु सार न पावेहो ॥ ह० ॥
 हरी नौतन वस्तु तिपावे, हरी निपजी वेग खपावेहो
 ॥ ह० ॥ ५ ॥ हरी रूप निरखन काया, हरी घट घट
 मांही समायाहो ॥ ह० ॥ हरी जिहां जोवुं तिहां तेह
 वो, पिण तेहवानो तेहवोहो ॥ ह० ॥ ६ ॥ हरीब्रह्मा
 व्यास वखाण्यो, किणही तो अंत न जाण्योहो ॥ ह०
 ॥ सो हरी करण उपायां, हरी वसुदेवा घर आयाहो
 ॥ ह० ॥ ७ ॥ हरी उदर देवकी माया, हरी सुप्रना
 सात देखायाहो ॥ ह० ॥ सिंहणी सुत सिंह सनूरो,
 माय देखी प्राक्रम पुरोहो ॥ ह० ॥ ८ ॥ आनंद अं
 ग अपार, धनधन राणी अवतारहो ॥ ह० ॥ तेज पुं
 ज रवि रूडो, हेतकार महा नही कूमोहो ॥ ह० ॥ ९ ॥
 अग्नी सिखा दिपंती, ते मंगल गुण जीपंतीहो ॥ ह०
 ॥ गज गाजंतो आवे, राणी मन हरख उपावेहो ॥ ह०
 ॥ १० ॥ ध्वज गगने अवलंब्यो दिसे, सुनकारी विं
 स्वा विशेहो ॥ ह० ॥ देव विमाने विराजे, तिहा धप
 मप मांदल वाजेहो ॥ ह० ॥ ११ ॥ पद्म सरोवर पाणी,
 जरीयो अति शोना वखाणीहो ॥ ह० ॥ ए सुपना
 देखी माइ, पियु पासे वधाइ खाइहो ॥ ह० ॥ १२ ॥
 गर्ज वधंतो जाणी, प्रिय साथे वदे तव राणी हो ॥

ह० ॥ तुम मुज पुत्र भराया, पिण में गाढा दुख पा
 याहो ॥ ह० ॥ १३ ॥ पुत विना जग सुनो, त्रिय जा
 ए जगत अलुणोहो ॥ ह० ॥ पशु पंखीणी धन क
 हीए, जे पुत्र तणो सुख लहिए हो ॥ ह० ॥ १४ ॥
 थारे तो पुत्रा केरी, नही कोइ मणा अनेरीहो ॥ ह०
 ॥ हुं दुखीयारी जुंरुं, विण पुत्र आंशा किम पुरुंहो ॥
 ह० ॥ १५ ॥ जिणे कीधो ए कर्म अपार, तिणे फि
 री करतां सिवारहो ॥ ह० ॥ दूधे दाधा नर जेह, ठा
 शे सि लवे तेहहो ॥ ह० ॥ १६ ॥ ए बालक किमही
 उगारो, इहां रहेशे नाम तुमारोहो ॥ ह० ॥ ए सुपना
 ने अनुसारे, पिउडा तुं क्युं न विच्यारेहो ॥ ह० ॥
 ॥ १७ ॥ नंदतणि जे नारी, ते नाम जसोदा प्यारीहो
 ॥ ह० ॥ ते सहियर ठे मेरी, नपति जुं नारी अनेरी
 हो ॥ ह० ॥ १८ ॥ गर्ज वृद्धि जीम पावे, तिमतिम दो
 हला उपजावेहो ॥ ह० ॥ सिंहा साथ रमीए, माता ह
 स्तीने अति दमिएहो ॥ ह० ॥ १९ ॥ खरुगमांहि मु
 ख जोवे, तिम तिम रलियायत होवेहो ॥ ह० ॥ शत्रु
 शिरे पाद धरेवा, ए माय मनोरथ करेवाहो ॥ ह० ॥
 ॥ २० ॥ गर्ज सातमो जाणि, नृप कंस तणा आगे
 वाणिहो ॥ ह० ॥ रखवालि कारण रहिया, तिहां क
 ष्ट महा दुःख सहियाहो ॥ ह० ॥ २१ ॥ उवेला नवि
 पामि, जिहां कारज सिजे स्वामिहो ॥ ह० ॥ मिनिना
 चांढया सिकां, नवि तुटे जे ठे निकांहो ॥ ह० ॥ २२ ॥

रखवाला सघला सूता, निद्रावसे होए विगुताहो ॥
 ह० ॥ को मति जलफल करजो, सहु सरजासुं अनु
 सरज्योहो ॥ ह० ॥ २३ ॥ कंस हणेवा काजे, एहि
 उतावल साजेहो ॥ ह० ॥ मास घटावे दोइ, तव सा
 त मासनो होइहो ॥ ह० ॥ २४ ॥ शुभ वेला सुत
 जायो, तनु तेजे तिमिर मिटायोहो ॥ ह० ॥ स्वजन
 धरे उलासो, दुर्जन घर पडियो त्रासोहो ॥ ह० ॥ २५ ॥
 कोइ न विलव करायो, तव राणिये राय बुलायो ॥
 ह० ॥ वत्र सुरासुर जाल्यो, तव नृप सुत लेइ चा
 ल्योहो ॥ ह० ॥ २६ ॥ दोइ पासे चामर ढाले, दि
 पकसुं पंथ दिखवालेहो ॥ ह० ॥ सानिधकारी देवा,
 हरजीके सारे सेवाहो ॥ ह० ॥ २७ ॥ दीधा ठे दर
 वाजा, ए आरति अधिकी राजाहो ॥ ह० ॥ हरी पा
 य अंगुठा अमीयां, तव ताला तो ऊड पनियांहो ॥
 ॥ ह० ॥ २८ ॥ उग्रसेन कहे ए कोइ, तुम बंधन ठंडसे
 सोहिहो ॥ ह० ॥ एइ सुणि सुखदाइ, कहे वेगे सिंधा
 वो जाइहो ॥ ह० ॥ २९ ॥ पुर बाहिर चालि आया,
 जमुनामे मारग पायाहो ॥ ह० ॥ सुत जाइ जसोदा
 दिधो, मनवंठित कारज सिंधोहो ॥ ह० ॥ ३० ॥ ज
 सोदा जाइ वाला, नृप लेइ आया ततकालाहो ॥ ह०
 ॥ कर्म जेहनो वलियो, स्यो किजे अमरख अलियो
 हो ॥ ह० ॥ ३१ ॥ नंद घरे आणंदा, तव वाजे मां
 दल ठंदाहो ॥ ह० ॥ गोकलकि नारी हरखी, ते हर

एँ पोढावीयो ॥ मोह गातिहो कोइ मधुरे सादके, हे
त घणो हुलशावीयो ॥ १४ ॥

देवकीरागीत ॥ ऊरमरीयानी देशी ॥ पञ्जणे राणी देव
कीहो, त्रिभुवन सिरटिको ॥ वाइ थारो वालुमीतिको ॥
॥ तुजवड वखत यशोमतिहो, थारे एकीको ॥ सुरनर
ना मन मोहतोहो, प्यारो हमजीको ॥ वा० ॥ १ ॥
अदभूत सुहामणोहो, मदन कीयो फिको ॥ रंग र
मावे गोदभेहो, नाग्य ताहिको ॥ वा० ॥ २ ॥ मान
महा मद मारणोहो, देवि केरीको ॥ कुंवर कनइयो सा
लसेहो, उपज्यो वयरिको ॥ वा० ॥ ३ ॥ आननचंद
विराजतोहो, वालो सब त्रियको ॥ ग्वाल ग्वालणी
चावतोहो, दर्शन जग पियको ॥ वा० ॥ ४ ॥ सजन जन
जननी तणोहो, हार ज्युं गातिको ॥ दुरजन जन अ
सुहामणोहो, घाव ज्युं कांतीको ॥ वा० ॥ ५ ॥ शो
चा गुण विस्तारहो, किरति कांतिको ॥ देवादेवि खें
चराहो, रंगे रातिको ॥ वा० ॥ ६ ॥ दहिअरु दुध ख
वाडजेहो, धेनु मातिको ॥ हम तुम कुल उजवालणो
हो, दिवो वातिको ॥ वा० ॥ ७ ॥ नखसीखताइ स
लुणकोहो, सुखसो नारागीको ॥ जोतां तृपति न पाइ
एहो, धन जीवत माजीको ॥ वा० ॥ ८ ॥ दरस फ
रस कुपंथमेहो, नाह इंद्राणिको ॥ सो खेले तुज आं
गेणेहो, सारंग पाणीको ॥ वा० ॥ ९ ॥ योग ध्यान
ध्यावे अतिहो, सुयश वधारीको ॥ पूत कहावे ताहो

रोहो, अचरिजकारीको ॥ वा० ॥ १० ॥ नाम बल्लभ
जग जाणियोहो, गीरवरधारीको ॥ गुणसागर सुख पा
वहिहो, अमीय आहारीको ॥ वा० ॥ ११ ॥

ढाल तेहिज ॥ जे लेणोहो सो लिजए आजके, ए
ह मनमां निश्च धरे ॥ मन मेलिहो निज सुतने पास
के, राणि आवि नज घरे ॥ १५ ॥ जिण दिनथीहो
गोकुल हरी मातके, गोपूजा व्रत करी गइ ॥ तिण
दिनथीहो सगले जगमांहिके, गोपूजाव्रत तिथि थइ ॥
॥ १६ ॥ इम करताहो वितो एक वरसके, एहवे एक
वितक नयो ॥ सजा सजीहो वैठां कंसरायके, एक
विवुद्ध तव प्रगट थयो ॥ १७ ॥ देइ आदरहो तेड्यो
निज पासके, पूवे ऋषि नाखीत सहि ॥ सो नाखेहो जवि
तव्य जेहके, अन्यथा ते होवे नहि ॥ १८ ॥ नृप ना
खेहो केम जाणुं तेहके, अनुग्रह करी मुऊने कहो ॥
तुमनेहो मिलसे बहु द्रव्यके, मुऊ अरिनो होए निग्र
हो ॥ १९ ॥ निमित्तकहो बोले तव एमके, पुरो ज्ञान
न अर्यासियो ॥ सहि नाणीहो तुऊ देउं वतायके,
जिम तुमने होए विसासियो ॥ २० ॥ तुऊ मासिहो
पूतना ठे दायके, निरस्यंदता चूसी करे ॥ जिम लुते
हो अहि मद्धिका जाणके, प्राण दायना तिम हरे ॥
॥ २१ ॥ तुम शत्रुहो जाणो निःसंदेहके, इम काहि वि
बुद्ध गयो ॥ कसे तेडीहो काहि वैरीनी वातके, मासी
मन उत्कर्ष थयो ॥ २२ ॥ हिवे तिहाकणेहो निज वा

पनो वयरके, लेवाने अती उमही ॥ वसुदेवसुंहो नवि
 लागे जोरके, सबलासुं बल को नही ॥ २३ ॥ इम चिं
 तविहो मनमांहि विचारके, सुरपनखारी दिकरी ॥
 मदमातिहो आणे अहंकारके, संकुनी पूतना खेचरी
 ॥ २४ ॥ कंसे प्रेरीतहो गइ गोकुल माहीके, बालक
 ने मारण जणी ॥ गोवालणीहो संताके निज बालके,
 चीती मन आणी घणी ॥ २५ ॥ नंद सदनहो चा
 ली गइ तेहके, विप खरमी स्तनमे धरी ॥ धवरावती
 हो तव जसोदा देखके, मांगे हरीने जोसे करी ॥ २६ ॥
 अश्रु पूरितहो थइ आप्यो जाणके, हरि मनमांहि
 विचारियो ॥ ए-दिसेहो सहि कोइ विपद्दके, एहयी
 जय अव धारियो ॥ २७ ॥ चूसि लीधोहो रुधिरने
 दूधके, अलि जिम कुसुमनी वासने ॥ थइ निश्वास
 हो फाट्या तस नयणके, हरि गया मातने आसने
 ॥ २८ ॥ बोलाव्योहो नंदने तेणिवारके, आव्यो अ
 ति उतावलो ॥ जसोदाएहो कह्यो सर्व व्रतांतके, नि
 सुणी मनमां खलजल्यो ॥ २९ ॥ हु मुठियोहो मुख क
 हेतो नंदके, कृष्ण जणी खोले धरि ॥ तिहां जोवेहो
 हरिनो ते अंगके, वारमवार हेते करि ॥ ३० ॥ नि
 शा समेहो गोवालिया पासके, प्रेत वने सबने धरयो
 ॥ नंदसहित आव्या निज गेहके, प्रचनपणे सहुए क
 रयो ॥ ३१ ॥ इम बिजीहो कंत पूतना नामके, सां पि
 ण थइ तिणहीजपरे ॥ कंसे जाणीहो मासीनी वा

तके, प्रेत कार्य तेहनां करे ॥ ३२ ॥ गोकुलमाहिहो क
 रे वारमवारके, उदघोसण जाणण नणि ॥ नंदे वरजी
 तहो न करे कोइ वातके, जिम घुक सूर्य तणी ॥ ३३ ॥
 गोवालियाहो पूढ्यो हिवे नंदके, अमे एमरम न जा
 णियो ॥ किम मुइहो साइण सम एहके, एह अचं
 जो आंणियो ॥ ३४ ॥ पाडोसणहो इण गीते जाण
 के, ढाल कहि पेंत्रिसमी ॥ सारंगेहो रागे मन लाय
 के, सूरि गुणसागर मनशुं गमी ॥ ३५ ॥

दुहा ॥ गोप कहे हिवे नंदने, वाल एकेले एण ॥ खे
 चरीया वे मारीया, टाल्यो विघन बलेण ॥ १ ॥ एह
 वात नंद सांजली, दाखे उत्तर तिवार ॥ एहनी खव
 र मुजने नही, मानो प्रपंचाचार ॥ २ ॥ कंस सोचे
 निज हृदयमां, अहो अहो दैव कुलह ॥ मासी मूइ
 वैरीतणो, काइ न थयो प्रतह ॥ ३ ॥ मंत्रीने तेनी
 कहे, शो करवो हिवे उपाय ॥ विण उलख्या पोहोचे
 नही, मारा मननो दाय ॥ ४ ॥ सचिव कहे तुम, बेहे
 नीने, पुत्री हुइ एकंत ॥ ए सर्व प्रत्यह निरखतां,
 मूको एहनो तंत ॥ ५ ॥ नंद घरे आव्यो धसी, वो
 लावी निज नार ॥ करी शिखामण एहवी, मत जा
 जे कोइ ठार ॥ ६ ॥ कृष्ण एकेलो मूकिनें, पडते पि
 ण घृत ठाम ॥ ते अनत्र न जाइवुं, किणहि विजे का
 म ॥ ७ ॥ कान्ह नणी शुनपरे रखे, हिवे जसोदा मा
 य ॥ तोपिण चंचल बल करी, आघो पावो थाय ॥

॥ ८ ॥ तिणसुधी नथी विहतो, दामणिसु हरी तेह ॥
 बांधी उखुलसुं जइ, पाडोसण रही गेह ॥ ९ ॥ वयर
 पितामह सांजली, सुपर्णक सुत तिहां आय ॥ पिठवाडे
 श्री कृष्णने, जमलार्जुन तरु बाय ॥ १० ॥ द्विवे तेणे
 वेहु तरुविचे, हरीने मारण रुप ॥ चांजी ते तरु हरी
 सूर, मारे तेह विरुप ॥ ११ ॥ हरी कुंजपर उखण्या,
 जमलार्जुन तरु जाण ॥ नंद जसोदा गोपने, मुख
 थी ए सुणि घाण ॥ १२ ॥ नद जसोदा आर्वीने, चुज
 सुं नीडे बाल ॥ दामोधर तिण दिन थकी, नाम कहे
 गोपाल ॥ १३ ॥ सिवादेवि सिवकारीया, सुपना दे
 खी उदार ॥ प्रितम पोसे विनवे, स्वामी कहो सुविच्या
 र ॥ १ ॥ नृपति नाखे नामनी, होस्ये कुंवर सार ॥
 तिन नृवन सिर सेहरो, सुरनरको आधार ॥ १२ ॥
 वाय अनुकुल वाइया, हरखित सहु परिवार ॥ श्रा
 वण सुदी पंचमी दिने, जनम्या नेक कुमार ॥ १३ ॥
 ढाल ३६ मी ॥ कोइलो परवत धुंधलोरे लाल ॥
 ए देशी ॥ शुभ वेला सुत जाइयोरे लाल, वरत्यो ज
 य जय कार ॥ सुख दातारो ॥ सुरनर घरहि वधामणीरे
 लाल ॥ हरख्यो सहु संसार ॥ सु० ॥ १ ॥ मेरे मन
 जिनजी वस्यारे ॥ ला० ॥ श्री श्री नेमकुमार ॥ सु० ॥
 मुरति सुरति मोहनीरे ॥ ला० ॥ शोचा गुण चमार
 ॥ सु० ॥ मे० ॥ २ ॥ आवी ठप्पन कुंवारीकारे ॥ ला० ॥ नि
 ज निज करवा काज ॥ सु० ॥ गावे गीत सुहामणा

रे ॥ ला० ॥ सफल गणेशदिन आज ॥ सु० ॥ मे० ॥
 ॥ ३ ॥ चउसठ इंद्र पधारीयारे ॥ ला० ॥ मंदिर गी
 रीने श्रृंग ॥ सु० ॥ जन्म मेहोत्सव करवा नणीरे ॥ ला०
 ॥ आणी अति उबरंग ॥ सु० ॥ मे० ॥ ४ ॥ पंच रू
 प करे नलां रे ॥ ला० ॥ सोहम इंद्र उदार ॥ सु० ॥
 हाथे लिया एक रूपशुरे ॥ ला० ॥ त्रिभुवन तारणहा
 र ॥ सु० ॥ मे० ॥ ५ ॥ विजे, बत्र धरे नलीरे ॥ ला० ॥
 चामर ढाले दोय पास ॥ सु० ॥ वज्र लेइ आगे चले
 रे ॥ ला० ॥ करतो अरिअण नाश ॥ सु० ॥ मे० ॥
 ॥ ६ ॥ न्हावण केरी विधी साचवीरे ॥ ला० ॥ पहि
 रावे शिणगार ॥ सु० ॥ नावे नक्ति घणी करेरे ॥ ला० ॥
 नाटक नृत्य अपार ॥ सु० ॥ मे० ॥ ७ ॥ धौ धौ धपमप
 वाजहिरे ॥ ला० ॥ मांदल नव नव, वंद ॥ सु० ॥ जां
 जर नाद, उपांगसोरे ॥ ला० ॥ होइ रह्यो आनंद ॥
 सु० ॥ मे० ॥ ८ ॥ इंद्राणी नाचे नलीरे लाल, थै थै शब्द उ
 चार ॥ सु० ॥ प्रचू, उपर करे लुंणारे ॥ ला० ॥ जा
 इ हरी वलीहार ॥ सु० ॥ मे० ॥ ९ ॥ माता पासे मे
 लीयारे ॥ ला० ॥ सुर पोहोता निज, ठाम ॥ सु० ॥
 रायें मोहोत्सव, मांडीयारे ॥ ला० ॥ मिलीया साजन आ
 ण ॥ सु० ॥ मे० ॥ १० ॥ यादव जलधर उमह्योरे ॥
 ला० ॥ वरसे कंचन धार ॥ सु० ॥ याचक जन संतो
 खीयारे ॥ ला० ॥ घर, घर मंगल च्यार ॥ सु० ॥ मे०
 ॥ ११ ॥ टोले टोले सामटीरे ॥ ला० ॥ आवे कामनी

चाल ॥ सु० ॥ धवल दिए नृप आंगणरे ॥ ला० ॥
 रमती रंग रसाल ॥ सु० ॥ मे० ॥ १२ ॥ वारसमो
 दिन आइयोरे ॥ ला० ॥ सुतिक कर्म नीवार ॥ सु० ॥
 नाम दियो वर नेमजीरे ॥ ला० ॥ थंनण सहु परीवा
 र ॥ सु० ॥ मे० ॥ १३ ॥ चंदकला जिम वाधतारे ॥
 ला० ॥ देह कला गुण सार ॥ सु० ॥ रूप करे सुर
 तेहवारे ॥ ला० ॥ जेहवा प्रचुने प्यार ॥ सु० ॥ मे० ॥
 १४ ॥ राखण चलण हसतथेरे ॥ ला० ॥ नृत्यने गा
 यन ग्यान ॥ सु० ॥ जलपने जन मन रंजवेरे ॥ ला० ॥
 लाल ने लीलां थान ॥ सु० ॥ मे० ॥ १५ ॥ वनक्रि
 माने कारणेरे ॥ ला० ॥ राजा वनमें जाय ॥ सु० ॥
 अंतेउर परीवारसुरे ॥ ला० ॥ साथे नेम सुहाय ॥
 सु० ॥ मे० ॥ १६ ॥ इण अवसर सोहमजीरे ॥ ला० ॥
 इंद्र अनोपम ज्ञान ॥ सु० ॥ क्रिडारंग विनोदसुरे ॥
 ला० ॥ दिठां श्री जगवान ॥ सु० ॥ मे० ॥ १७ ॥ जेह
 जेहना होय रागीयारे ॥ ला० ॥ तेह तेहनां गुण गा
 य ॥ सु० ॥ अणरागी असुहामणारे ॥ ला० ॥ हुता
 पिण न कहाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ १८ ॥ इंद्र प्रसंसाआ
 करीरे ॥ ला० ॥ जननी करे तेहिवार ॥ सु० ॥ बाल
 पणे बल आगलोरे ॥ ला० ॥ नही बीजो संसार ॥
 सु० ॥ मे० ॥ १९ ॥ एक आमी सहु लोकनोरे ॥ ला०
 ॥ एक आडी जिनराय ॥ सु० ॥ तोहि न होवे ब
 राबरीरे ॥ ला० ॥ जिन बल अधीक कहाय ॥ सु० ॥

मे० ॥ २० ॥ एह वचन सहि नाशक्योरे ॥ ला० ॥
 अमरख आणी अपार ॥ सु० ॥ सुर सुरलोकथी उत
 र्योरे ॥ ला० ॥ आयो विपन मजार ॥ सु० ॥ मे ॥
 ॥ २१ ॥ काका साथ कुतुहलीरे ॥ ला० ॥ होइ रह्या
 जिनराय ॥ सु० ॥ एक खेलावे गोदमेरे ॥ ला० ॥ ए
 कलीए कठ लगाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २२ ॥ एक आं
 गुलीया लेइ फिरेरे ॥ ला० ॥ एक खेलण खेलाय ॥
 सु० ॥ एक नचावे रंगसुरे ॥ ला० ॥ तालि नाद सु
 णाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २३ ॥ घम घम वाजे घुंगरीरे
 ॥ ला० ॥ ठम ठम ठमके चाल ॥ सु० ॥ मेरे ठगन
 भगनारे ॥ ला० ॥ होइ रह्यो अति ख्याल ॥ सु० ॥
 मे० ॥ २४ ॥ कवहु आंख अंजावतोरे ॥ ला० ॥ प
 रहो बटकि जाय ॥ सु० ॥ बोलायो फिर नावहिरे ॥
 ला० ॥ माता पकडे धाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २५ ॥ तव
 प्रभुजी रहे रिसायनेरे ॥ ला० ॥ टवकि गाल कराय
 ॥ सु० ॥ विद्याधर सुर मानविरे ॥ ला० ॥ सबहु रहे
 रीजाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २६ ॥ गगने विलंबि वारांग
 नारे ॥ ला० ॥ मोहनसुं मन मेल ॥ सु० ॥ सूरज र
 थं थंची रह्योरे ॥ ला० ॥ देखि कुमरनी केल ॥ सु० ॥
 मे० ॥ २७ ॥ तृणचरां त्रण ठोडीयारे ॥ ला० ॥ पंखी
 चूग न चुगाय ॥ सु० ॥ जंगम जीव जिके तिकेरे ॥ ला०
 ॥ प्रभुसुं रहे लवलाय ॥ सु० ॥ मे० ॥ २८ ॥ अवगु
 णहारां देवतारे ॥ ला० ॥ गुणतो को न ग्रहाय ॥ सु० ॥

णे अनंग ॥ च० ॥ ए टैक ॥ जीहो हिवें हरी चल
 ता बलदने लाला, पूढ ग्रहे जइ जाम ॥ जीहो कृष्ण
 जोर ते देखीने लाला, अचरिज पामे राम ॥ च० ॥
 ॥ २ ॥ जीहो जिम जिम हरी वाधे तिहां लाला, तिम
 तिम गोपिरे चित ॥ जीहो काम विकार लहे घणो
 लाला, घुमे लागी प्रीत ॥ च० ॥ ३ ॥ जीहो राधा सु
 ता ब्रखुजाननि लाला, कंचन कोमल गात ॥ जीहो रूया
 ल लागी हरी आगले लाला, महि वेचण मीस जात
 ॥ च० ॥ ४ ॥ जीहो रोके तव आडो फिरी लाला,
 मोहन श्री नंदलाल ॥ जीहो हठ नरी हरी आगले
 लाला, बोले राधा बाल ॥ च० ॥ ५ ॥ जीहो हम गो
 पीयनपर दाननी लाला, किण किधीरे आद ॥ जी
 हो आपसमे हरी राधीका लाला, करतां ऊखवख वा
 द ॥ च० ॥ ६ ॥ जीहो आ ब्रजमां बसतां थकां ला
 ला, कदिय न दिधोरे दाण ॥ जीहो कुंवर बाबा नंद
 ना लाला, जात नहि ब्रखुजान ॥ च० ॥ ७ ॥ जीहो
 जावाद्यो हठ किम करो लाला, मुऊ वेचण हजी मा
 ट ॥ जीहो वेला वनमें बहू थइ लाला, माता जोति
 हरो वाट ॥ च० ॥ ८ ॥ जीहो नीत नीत इम हरी रा
 धीका लाला, करे वचन रस केल ॥ जीहो नेह घेलि
 आवे तिहां लाला, काज सकल अवहेल ॥ च० ॥ ९ ॥
 जीहो सोलेसइस्स गोवालाणि लाला, हरीने रंजन का
 ज ॥ जीहो दाखे नव नव चातुरी लाला, हावें चाव करी

लाज ॥ च० ॥ १० ॥ जीहो गोपी हरी पावल
 मिली लाला, घुमर गावरे रास ॥ जीहो लुवधा
 जमरा जीम जमे लाला, कमल तणे नीत
 पास ॥ च० ॥ ११ ॥ जीहो हरीने जोती गो
 पिका लाला, नयण न मिचरे केम ॥ जीहो कृष्ण कृष्ण
 इम बोलवे लाला, हो वनमेले तेम ॥ च० ॥ १२ ॥
 जीहो एकसमे गोपि तिहां लाला, गाय दुहे नूपिठ ॥
 जीहो टलि नजाणे दोहणा लाला, हरीसुं लागी दिठ
 ॥ च० ॥ १३ ॥ जीहो विविध कुसुम गुंथतिके लाला,
 माल करी उतकंठ ॥ जीहो वरमाला पेरे गोपीका लाला,
 घाले हरीने कंठ ॥ च० ॥ १४ ॥ जीहो जिमतिम वि
 ध करी हरीनणि लाला, गोप तणिते नार ॥ जीहो बो
 लावे फरसे मिले लाला, करति काम विकार ॥ च०
 ॥ १५ ॥ जीहो मोरपिठ साथे धरी लाला, हरी गोवाल
 णि साथ ॥ जीहो गावे धूनि पूरेतिके लाला, जाली
 हरखे हाथ ॥ च० ॥ १६ ॥ जीहो निर अथाहे जील
 तो लाला, हंसपरे हरी जाण ॥ जीहो पंकज गोपी मां
 गीया लाला ॥ लिलाए दिए आण ॥ च० ॥ १७ ॥
 जीहो गोवालीया रामने लाला, उलंजे एकवार ॥
 जीहो तुम बंधव अम नेहरे लाला ॥ अण दिठे बहुवा
 र ॥ च० ॥ १८ ॥ जीहो मधुर बजावे वांसली लाला,
 गिरिकडणे आणंद, जीहो घणुं हसावे रामने लाला ॥
 नाचें नव नव वंद ॥ च० ॥ १९ ॥ जीहो गोवालीया साथे

लाला, नाचे कृष्ण कुमार, जीहो- रंगाचार तणी परे
 लाला, तालदिए हलधार ॥ व० ॥ २० ॥ जीहो इम
 रमता हरी रामने लाला, वोल्या वरस इग्धार ॥ जी
 हो गुण सागरसूरि ए कही लाला, ढाल साडत्रिस
 मी सार ॥ चतुर० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ कंसराय मथुरापुरी, सुखमें राज करंत ॥
 बहिन तणे घर आवीयो, कन्धा देखी हसत ॥ १ ॥
 बहिने गर्ज जे सातमो, किम मुऊ मारण हार ॥ के
 ऋपि जाख्यो अन्यथा, के कोइ वात विचार ॥२॥ नि
 मतियाने पूगीयो, ऋपिवर वचन विच्यार ॥ सो जाखे
 नृप नवी मीटे, होण हार विवहार ॥ ३ ॥ नृप जणे
 निमति सुणो, हुं किम जाणुं तास ॥ अण जाण्या अ
 णठलख्या, किम करुं तस नास ॥ ४ ॥ निमति ए स
 ही नाणीका, राय बतावे ताम ॥ केसी हय खर मख वृ
 ष ॥ एहनो फोडण ठाम ॥ ५ ॥ धनुष्य चोहेमे जुज ब
 ले, नाथे कालिनाग ॥ तुम युग हाथी पाटनां, मारी
 मेलावे माग ॥ ६ ॥ मल्ल आखाडे मल्लने, जाली पढा
 ळ्ये जोर ॥ ते तुम वैरी जाणजो, एह हलावी डोर ॥७॥
 कंस नृप अति खलजल्यो, अरिनो सुणी अधीकार ॥
 वृपन मैल्यो मोकलो, पुंठे घणा असवार ॥ ८ ॥

ढाल ३८ मी ॥ मत कोइ रमज्यो हो साजन
 सोगटे ॥ ए देशी ॥ हिवे संजाकाले हो कंसनरिंदनो,
 अरिष्ठबलद बलवंत ॥ चतुरनर ॥ ब्रजरावनमें हो

आवे आकतो, करतो कोप अनंत ॥ च० ॥ १ ॥ सु
 एजो साजन अचरिजनी कथा ॥ ए आंकणी ॥ सिं
 गे उषाडी पठाडे गाधने, नर्दाय कडपपरे ताम ॥ च० ॥
 तिम वली कोप धरी पग पाडले, ठो ने घृपनां ठाम ॥
 च० ॥ सु० ॥ २ ॥ राम सद्धि गोविंद तत्र सांजले,
 कोलहल अति होय ॥ च० ॥ लेइ हथीघार धली ह
 री आवीयो, अरिष्ट बलद तिहां जोय ॥ च० ॥ सु० ॥
 ॥ ३ ॥ वारे सह इहां नंद गोवालीया, नही गो धृतनो
 काम ॥ च० ॥ विनत्रे सह पिण नवी रहे, बरुद बो
 लावे ताम ॥ च० ॥ सु० ॥ ४ ॥ सोपिण आयो हो हरी
 ने उपरे, रिस नरयो विकराल ॥ च० ॥ मारे अपुठो
 हो हरी निज नुज बले, हररुया बालगोपाल ॥ च०
 ॥ सु० ॥ ५ ॥ हरी रमतां वली आयो हो अन्वदा, केसी
 कंस किशोर ॥ च० ॥ मही तल गाजे हो पग खुड ता
 लसुं, हय हितारव जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ ६ ॥ ग्रहतो
 हो दत्त विचाले लोकने, खुरे हणतो गाय ॥ च० ॥ दे
 खिहो सोर मच्यो वन गोकुले, गोधन नाठो जाय ॥
 च० ॥ सु० ॥ ७ ॥ लोक पुकार सुणी हरी आवीयो,
 तुरीने पासे जाय ॥ च० ॥ हरीने हो मारण धायो ह
 यवरु, लोक रहरां अकुलाय ॥ च० ॥ सु० ॥ ८ ॥ ना
 खीहो फाल केसी जव आवीयो, दोड करी हरी आ
 प ॥ च० ॥ मुखशुं हो जाली ताम विदारीयो, टार्यो
 सबल संताप ॥ च० ॥ सु० ॥ ९ ॥ कंस तणा खरमे

ख तिमहिज वली, गोकुलमें समकाल ॥ च० ॥ फि
 रतां वनमें हो हरी द्रष्टे पडे, नाखे ताम उठाल ॥ च०
 ॥ सु० ॥ १० ॥ एक दिन जमुना हो जलमें परिसरे,
 हरि रमे सुविचार ॥ च० ॥ गिटुक ऊठलीने तव प
 ड्यो, कालिंद्रह मजार ॥ च० ॥ सु० ॥ ११ ॥ ते ले
 वाने हरी द्रहांतर गया, सोधी लीयो गयंद ॥ च० ॥
 पिठे फिरतां तव पेखीयो, आघास तेजनो कंद ॥ च०
 ॥ सु० ॥ १२ ॥ चितरे दीठी एक गवाहिका, कौतुक
 अधिको पाम ॥ च० ॥ देइ फलांग माहि गया, निरी
 कृण करे काम ॥ च० ॥ सु० ॥ १३ ॥ आगे जाता पलंग
 पे जीलंता, देखे कालीनाग ॥ च० ॥ सहस्रफणो सु
 तो सुख निंदमें, महीधर विखनो बाग ॥ च० ॥ सु०
 ॥ १४ ॥ करे तिहां नागणी नागपतालनी, नव नव
 जात विनोद ॥ च० ॥ पामी अचरिज ताम हरी चणी,
 बोले वचन सरोद ॥ च० ॥ सु० ॥ १५ ॥

नागणिवाच ॥ कांइ तुं वाट विसारियोरे बाला,
 कांइ तुं मारग चुलियो ॥ कांइ ते तारो कालघटियो,
 जे इणे मारग आवियो ॥ जल कमल ठंडि जायरे
 बाला, स्वाम मोरो जागसे ॥ १ ॥ कानवाच ॥ नहि ते
 वाट विसारियोरे नागण, नहि ते मारग चुलियो ॥ न
 हि ते मारो काल घटियो, हुं एणे मारग आवियो ॥
 जल० ॥ २ ॥ नागणीवाच ॥ किहां तुमारो बेसणोरे बा
 ला, कुण तुमारो गामरे ॥ कुण रायनां चलण चाले,

स्युं ठे तुमारो नामरे ॥ ज० ॥ ३ ॥ कानवाच ॥ मथु
 रां हमारो बेसणोरे नागण, गोकुल हमारो गामरे ॥
 कंमरायना चरण चाले, गोवालीनो माहंरुं नामरे ॥
 ज० ॥ ४ ॥ नागण जगाडो तोरा नाहने, वली केसे
 जे विसासीयो ॥ कसरायथी जुवटे रमतां, नाह तुमा
 रो हारीयोरे ॥ ज० ॥ ५ ॥ नागणी नाग प्रबोधनवा
 च ॥ चरण चोली अंग मोमी, नागणीए नाहो जगा
 वीयो ॥ उठोने बलवंत वेठा थाठ, बालुनो हम घर
 आवीयोरे ॥ जल० ॥ ६ ॥

देशी तेहिज ॥ उठ्यो हो महिधर विप नरे लोच
 ने, कोप धरी ततकाल ॥ च० ॥ आयोहो सन
 मुख हरीने उपरे, रोस नरयो विकराल ॥ च० ॥ सु०
 ॥ १३ ॥ नाथ्यो हो जाली बेल तणीपरें, पाम्यो अधि
 को त्रास ॥ च० ॥ उपरे बेशी हो ह्यपरे वाहियो, जोर
 कीसो हरी पास ॥ च० ॥ स० ॥ १४ ॥ थाको हो नाग
 तजी अनीमानने, प्रणमे प्रनुना पाय ॥ च० ॥ हुं
 तुम पायक लायक साहीवा, मेहेर करो महाराज ॥
 च० ॥ सु० ॥ १५ ॥ हिवे हुं सेवक आजथी ताहरो, न
 भजुं अवर नूपाल ॥ च० ॥ लेइ सतकार आयो ह
 री निज घरे, मिलीयां बालगोपाल ॥ च० ॥ सु० ॥
 ॥ १६ ॥ हिवे वृपनादिक हणीयां सांजली, वयरी जाण
 ण हार ॥ च० ॥ सारंग धनुष्य पूजण थापीयो, परख
 दामें महाराज ॥ च० ॥ सु० ॥ १७ ॥ कंसे करावीहो

तिहां उदगोषणा, जामा कुमरी व्याह ॥ च० ॥ सां
 रंग धनुष्य चढावे, जे जुज तले, परणे तेह उगाह ॥ च०
 ॥ सु० ॥ १८ ॥ एत नीसुणीहो आवे सिहा कण, अ
 लयायी राजान ॥ च० ॥ धनुष्य चगादी पिण को न
 वी सके, सारंग जे अर्जथान ॥ च० ॥ सु० ॥ १९ ॥
 एहणे नंदन श्री वसुदेवनो, गूर सुजट गु ॥ धीर ॥ च०
 ॥ उलाकि रथ उपर बेमाने, अनाधृष्ट वडवीर ॥ च०
 ॥ सु० ॥ २० ॥ मारग जाताहो गोकुल गानमें, वास
 रह्या सुजटेव ॥ च० ॥ मथुरां वाट देखामस तव लि
 या, साथे हरी बलदेव ॥ च० ॥ सु० ॥ २१ ॥ वड उ
 नमे लियो हरी मारग करे, हरख्यो बल महि राण
 ॥ च० ॥ हरी बल देखिहो मन अचरिज लख्यो, रथे
 तेमे राजान ॥ च० ॥ सु० ॥ २२ ॥ अनुक्रमे जनुना
 तट जल उतरी, पइसे मयुरां मांहि ॥ च० ॥ धनुष्य
 सजाइमे आया रंगसु, बेठा धरी उगाहि ॥ च० ॥ सु०
 ॥ २३ ॥ नामाहो हुइ अति अनुरागणि, निरखी हरी
 नुं रूप ॥ च० ॥ सारंग धनुष्य खेचण तव जठिया, हुं
 स धरी वड जूप ॥ च० ॥ सु० ॥ २४ ॥ निरखि धनु
 ष्यहो पाठा उंसरे, महिपति मोठा राय ॥ च० ॥ हो
 इ अपुठाहो नव परणीत परे, उजा मुख ठिपाय ॥
 च० ॥ सु० ॥ २५ ॥ एतले कुमर श्री वसुदेवनो, होइ
 सनध तनु मोर ॥ च० ॥ चडवकी चाल्योहो जय मन
 अवगुणि, चाप अही करे जोर ॥ च० ॥ सु० ॥ २६ ॥

लडथड्यो तामहो होइ अधोमुखे, पडीयो नूमी आ
 य ॥ च० ॥ हांसो करताहो देखि सजा सह, तव उ
 ठो हरी राय ॥ च० ॥ सु० ॥ २७ ॥ मो धर्म फरसे
 हो जीम निज वजने, सारंगपति पिण तेम ॥ च० ॥
 चोहडी धनुष्यने टंकारव कियो, हरी बल अधीको ए
 म ॥ च० ॥ सु० ॥ २८ ॥ लेइ, वरमालाहो हरी कंठे
 धरी, नवल सनेहि नार ॥ च० ॥ ढाल आफ्रिसमी
 गुणसागर कहे, घरे आयो मूरार ॥ च० ॥ सु० ॥ २९ ॥
 दुहा ॥ कंसराय हिवे एकदा, आखाडे मल्ल युद्ध ॥
 करवा कारण तेनिया, राय अनेक विसुध ॥ १ ॥ व
 सुदेवने, तेडीया, सघला आपणा जाय ॥ अक्रुरादिक
 पुत्रसुं, कंस हिवे चित्त लाय ॥ २ ॥ सनमानी बेसा
 डीया, कंसे ते सह कोह ॥ उंचे माचे दिपता, पामे सो
 जा सोह ॥ ३ ॥ मल्ल युद्ध हिवे साजलि, कृष्ण राम
 ने एम ॥ कहे मथुरां जाइए, अचरिज जोवा जेम ॥
 ॥ ४ ॥ मानी वचन बलजद्रजी, एम जसोदा पास ॥
 न्हावण कर अम्हे जावसा, मथुरां चित्त उलास ॥ ५ ॥
 देखि जसोदा मातने, हटक कहे बलदेव ॥ कंस ह
 एयो हरी बंधवा, वात कर सुज टेव ॥ ६ ॥ पाहे लु
 णो स्युं विसरयो, तुजने दासी जाजं ॥ जिन न कि
 यो कारज तुरत, वचन गणयो अम्ह वाडं ॥ ७ ॥ एह
 सुणि हरि कोपीयो, उपजी रीस अपार ॥ बोलाव्यो
 बोले नहि, तव चिते इलधार ॥ ८ ॥

ढाल ३९ मी ॥ मेलि माथे मार ॥ ए देशी ॥ ह
 लधर साहि हाथ, बोलावे नरनाथ ॥ जाइ किम अण
 मणो ए, वचन दयामणो ए ॥ १ ॥ वादल ठायो चं
 द, दुरवल दिसे मंद ॥ तिम तुम मुख इसो ए, क
 हो कारण किस्यो ए ॥ २ ॥ इणवाते गुण गेह, त्रुटो
 दिसे नेह ॥ बंधव तुम तणो ए, साचो मुऊ जणो ए
 ॥ ३ ॥ हरी जाखे इम वाय, तुं मोटो महाराय ॥ हुं
 मन जाणतो ए, हठ नवि ताणतो ए ॥ ४ ॥ पिण तु
 म अधीक गुमान, दिसेबेरे राजन ॥ मुऊ जननी व
 डि ए, कही तुम दासमी ए ॥ ५ ॥ इण वाते तुम ला
 ज, नवि आवि माहाराज ॥ विण वेधे बह्यो ए, अणघ
 टतं कह्यो ए ॥ ६ ॥ पामी अंतर जेय, हसि बोले व
 लदेव, नहि तुम जामनि ए, जसोदा स्वामनि ए ॥
 ॥ ७ ॥ तुमारी देवकि माय, देवक सुता सुखदाय ॥
 वड तुम मावडी ए, वसुधामां वनी ए ॥ ८ ॥ नंद स
 दन सुख हेत, माता धरीय संकेत ॥ मूक्यो तुम ज
 णि ए, आरति मन घणि ए ॥ ९ ॥ पिण न करे तु
 ऊ गोर, कंस तणो जय जोर ॥ तुऊ विरहातुरीए, रहे
 मथुरां पुरी ए ॥ १० ॥ मास मासने ठेह, माता धरि
 मन नेह ॥ आवे विलखती ए, तुम मुख निरखती ए
 ॥ ११ ॥ नंद जसोदा नार, सखीयपणे सुविच्यार ॥
 राखे हेत धरी ए, हेजघणे करीए ॥ १२ ॥ वसुदेव
 आपणो तात, मुऊ मूक्यो विख्यात ॥ कंस कारण प

खे ए, वात न को लखे ए ॥१३॥ बांधव दसे दिसार,
जादवनो परिवार ॥ तुज सीर राजतो ए, जग जस
गाजतो ए ॥ १४ ॥ हुं वड बांधव सार, गुपतपणे सु
विच्यार ॥ रहूं मन नेहथी ए, प्रेम विसेपथी ए ॥
॥ १५ ॥ दासी नणी करी रीस, तिण कारण तुम इ
स ॥ अलेक गुनो कहेए, वड वीरच्यो सहिए ॥१६॥
ढाल नवत्रिसमी सार, पाम्यो नेद मूरार ॥ फिरी पू
ढे इसुंए, गुणसागर कीसुंए ॥ १७ ॥

दुहा ॥ हिवे पूढे बलनद्रने, किम मूक्यो मुज ता
त ॥ कारण विण इहां कणे, तेम नणो सहु वात ॥
॥ १ ॥ बलतुं बलनद्र कहे, वात सविविस्तार ॥ कंसे
तुज बांधव हणया, कोप धरी तिण वार ॥ २ ॥ तात
मात मथुरां रहे, कंस तणे हठ जोर ॥ सोल वरसतो
वही गयां, कोय न आवे नोर ॥ ३ ॥ जरासंधना प
हथी, चसकी न शके कोय ॥ मोटा साथे बांधवी, घ
णी विमासण सोय ॥ ४ ॥ आज कंस वड राजीयो,
पाले राज अखंर ॥ आवीने केइ नम्या, पुहवी पाल
प्रचंड ॥ ५ ॥ वड आपण सुत पापति, वरते ए विर
तंत ॥ तो एम जाणी सींघनो, खाज सीयाल नखंत
॥ ६ ॥ बांधव मरण सुणी करी, कोप्यो कृष्ण मूरार ॥
चरीत करे जे आगले, ते सुणजो सुविच्यार ॥ ७ ॥
ढाल ४० मी ॥ राणापूरो रळीयामणोरे लाल ॥ ए
देशी ॥ आज पवाडो कंसनोरे लाल ॥ इम करी

पण रीसालरे ॥ सोजागी ॥ हरी हलधर बेहु चाली
 यारे ॥ लाल ॥ साथे घणा गोपालरे ॥ सो० ॥ आ०
 ॥ १ ॥ हरी हलधरने कानजीरे ॥ ला० ॥ बेहु गुणे
 अमोळरे ॥ सो० ॥ मथुरां दिसे चालतारे ॥ ला० ॥
 पामे पुरनी पोळरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २ ॥ पद्मोतर चं
 पकं नळारं ॥ ला० ॥ कंस तणा गज दोयरे ॥ सो० ॥
 पुर प्रवेश करता थकारे ॥ ला० ॥ साहमा आव्या
 सोयरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ३ ॥ दांत उखेनी मारीयोरे
 ॥ ला० ॥ हरी पदमोतर तेहरे ॥ सो० ॥ तिम वृलन
 द्रे मारीयोरे ॥ ला० ॥ चंपक गंज तिहां जेहरे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ ४ ॥ राम कृष्ण बेहु देखीनेरे ॥ ला० ॥ कहे
 लोक सहु कोयरे ॥ सो० ॥ अरिष्ट प्रमुखइणे हणयारे
 ॥ ला० ॥ नंदपुत्र ए दोयरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ५ ॥
 लुंटे बाजार दयामणारे ॥ ला० ॥ गोवालीया तेणीवा
 ररे ॥ सो० ॥ वख चुपनने सुखनीरे ॥ ला० ॥ कोइ
 नं वर्जनहाररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ६ ॥ व्यापारी मिली
 एकठारं ॥ ला० ॥ कंस जणी कहे तामरे ॥ सो० ॥
 गोवालीए पुर लुंटीयोरे ॥ ला० ॥ न राखी कोइनी
 मामरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ७ ॥ कंस कहे धीरा रहोरे
 ॥ ला० ॥ आवणयो इण ठामरे ॥ सो० ॥ कुटी क
 रशुं पाधरारे ॥ ला० ॥ पोचामीसाजम धामरे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ ८ ॥ निले पीले फूलडेरं ॥ ला० ॥ कंठ
 हरी वरमालरे ॥ सो० ॥ मळ अखामे आवियारे ॥

ला० ॥ रामकृष्ण रठियालरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ ९ ॥ कं
 स विना परीवारसुरे ॥ ला० ॥ बेसे हरीहलधाररे ॥
 सो० ॥ मोठा एक माचा थकीरे ॥ ला० ॥ सुजट सव
 उत्ताररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १० ॥ राम देखावे कृष्णनेरे
 ॥ ला० ॥ कंस नणी तेवाररे ॥ सो० ॥ समुद्रविजय
 आदे करीरे ॥ ला० ॥ ए आपणडो परिवाररे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ ११ ॥ हिवे तिहां मल्ल कुंजतारे ॥ ला० ॥
 जोवे राणो राणरे ॥ सो० ॥ कंस आदेसे उठियोरे ॥
 ला० ॥ चाणुरमल्ल बलवानरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १२ ॥
 मेहतणी परे गाजतारे ॥ ला० ॥ थापोटे निज हाथरे
 ॥ सो० ॥ उंचे स्वरे इम बोलतारे ॥ ला० ॥ सकल न
 रेसर साथरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १३ ॥ वीर जननी जे
 जाइयारे ॥ ला० ॥ राजपुत्र मठरालरे ॥ सो० ॥ आ
 वि अडो मुज आगलेरे ॥ ला० ॥ अहो मोठा नृपाल
 रे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १४ ॥ अणसहेतो हरी उठियो
 रे ॥ ला० ॥ न्हानो पिण मन मोटरे ॥ सो० ॥ मांचेथी
 आयो उतरारे ॥ ला० ॥ नृजा आप थापोटरे ॥ सो० ॥
 आ० ॥ १५ ॥ कृष्ण थापोटे बाहनेरे ॥ ला० ॥ गयण
 धरा कंपायरे ॥ सो० ॥ देखी गयण घन उमह्योरे ॥
 ला० ॥ अष्टापद अकुलायरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १६ ॥
 दूधमुखे ए बालडोरे ॥ ला० ॥ सेवे सदा वनवासरे ॥
 सो० ॥ तिण बढवो जुगतो नहिरे ॥ ला० ॥ एक हाण
 ने वलि हासरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १७ ॥ मुलकि, दामो

धर बोलीयोरे ॥ ला० ॥ वचन वदे तव गोररे ॥ सो० ॥
 आव्य चाणुर उतावलोरे ॥ ला० ॥ नोउं थारो जोररे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ १८ ॥ नंद गोपनो पुत्रबुरे ॥ ला० ॥ दि
 ध तणी मुज देहरे ॥ सो० ॥ तो हुं हरी गजनी परेरे ॥
 ला० ॥ उतारुं बल एहरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ १९ ॥
 वचन चातुरी कृष्णनीरे ॥ ला० ॥ देखी बीजो मल्लरे
 ॥ सो० ॥ कंस आदेसे उठियोरे ॥ ला० ॥ मूठीक ना
 मे मुगल्लरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २० ॥ उठि बीजा म
 ल्लनेरे ॥ ला० ॥ साथे अमो हलधाररे ॥ सो० ॥ थापटी नु
 ज तिम आवियोरे ॥ ला० ॥ चाणुर हरीनी लाररे ॥
 सो० ॥ आ० ॥ २१ ॥ राम अने मूठीक लडरे ॥
 ला० ॥ तिम हरीने चाणुररे ॥ सो० ॥ विंदावल गज
 नी परेरे ॥ ला० ॥ लाग्या रोस आतुररे ॥ सो० ॥
 आ० ॥ २२ ॥ कंभे धरा पगला तसुरे ॥ ला० ॥ उमे
 रज अतिपूररे ॥ सो० ॥ उठि सजा अलगी थइरे ॥
 ला० ॥ निरखे उजा दूररे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २३ ॥
 केशव मूठे चाणुरनेरे ॥ ला० ॥ नांख्यो धरति उठरे
 ॥ सो० ॥ वज्र जिम सक्रेसनोरे ॥ ला० ॥ पडीयो अ
 हे कण चोठरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २४ ॥ सात धनुष्य
 पाठो पड्योरे ॥ ला० ॥ तिण घाते चाणुररे ॥ सो० ॥
 सासलहि चाणुरनेरे ॥ ला० ॥ कृष्ण हकारे सुररे ॥ सो०
 ॥ आ० ॥ २५ ॥ केम जाली नीज जानसुरे ॥ ला०
 ॥ बांहे सीस न मायरे ॥ सो० ॥ हियडे हणीयो मूठ

सुरे ॥ ला० ॥ किंणी हरी-जोर-खमायरे ॥ सो० ॥
 आ० ॥ २६ ॥ मुहंडे-लोहि नाखतरे ॥ ला० ॥ फा
 टि देखि आंखरे ॥ सो० ॥ प्राण ठांड्यो पापीएरे ॥
 ला० ॥ हरी पिण दिव्यो नाखरे ॥ सो० ॥ आ० ॥
 ॥ २७ ॥ ढाल जली चालिसमीरे ॥ ला० ॥ युद्ध क
 री बहु चातरे ॥ सो० ॥ गुणसागर हिवे कंसनीरे ॥ ला० ॥
 आगे निसुणो वातरे ॥ सो० ॥ आ० ॥ २८ ॥
 दुहा ॥ कंस हिवे जय कोपथी, बोले कंभित देह ॥
 आलसं तजी गोवालीयो, मारो उज्जो एह ॥ १ ॥ जे
 ए ए पापि पोसीया, ते पिण मारो नंद ॥ ग्रंथ, ग्रहो
 सहू तेहनो, काढी घरनो कंद ॥ २ ॥ जीड करे जो वी
 चक्री, तेहने राखण काज ॥ ते हणवो मुऊ आणथी,
 नीश्रे सुतजी लार्ज ॥ ३ ॥
 ढाल ४१मी ॥ नूपति आइ मिल्यां ए देखी ॥ ईम सुणी
 हरी कोपीयोरे, कंस जणी कहे एम ॥ चाणुर मारया
 तु, जीवावरे, मूरख वंठे केम ॥ १ ॥ सो अवसर आ
 य मिल्यो, ऋषिवर नास्थो जेह ॥ सो ॥ ए आंक
 णी ॥ राख्य जीव तुं ताह्यरोरे, जबलग हणुं तुऊ ॥
 पंढी नंद हणवा जायजेरे, देखी पराक्रम मुऊ ॥ सो ॥
 ॥ २ ॥ इम कहि कूदि आवियोरे, मांचापर हरीराय ॥
 कंस पामी जय आकरोरे, नाठो मुख विलखाय ॥
 ॥ सो ॥ ३ ॥ सासजरयो आव्यो धसीरे, अंतेजरमें
 चाल ॥ जीवजस्यां रहि बारणोरे, मान जरी मठरालरे

॥ सो० ॥ ४ ॥ रामे तव मूष्ठीकं चण्डिरे, पोहोचाड्यो ज
 म पास ॥ लोक नाठा सहु वेगलारे, पामीने अति
 त्रास ॥ सो० ॥ ५ ॥ एटले सुन्नट कंसनारे, धाया ले
 इ हथीयार ॥ हरी हलधर हणवा चण्डिरे, सुन्नट मो
 ठा सिरदार ॥ सो० ॥ ६ ॥ इंस एक मांचा तण्डिरे,
 राम लेइ निजदाय ॥ मधुपर मांखिनी परेरे, नासी
 सुन्नट सहु जाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ जिवजस्या आडी
 फिरीरे, बोले गोडी जाल ॥ मांमि अब अलगा रहो
 रे, मामो मिलवो आज ॥ सो० ॥ ८ ॥ इम कहि तल
 पि आवियारे, लाते नांगी किवाड ॥ जाणे कंस दर
 वारमेरे, पडीउ चिंति धाड ॥ सो० ॥ ९ ॥ अंतेउर स
 हू अवगण्डिरे, रोस नरयो हरीराय ॥ केशग्रहि कंस
 रायनेरे, नांख्यो धरणी आय ॥ सो० ॥ १० ॥ मुगट
 पड्यो हार गीर गयोरे, तरवा लाग्या नयण ॥ मरण
 दशा आवि कंसनेरे, कांह वदे इम लया ॥ सो०
 ॥ ११ ॥ जीव तव राखिवा कारणेरे,

जी, जमुनाने तट-जाय ॥ सो० ॥ १५ ॥ कंसनि-मा
 त तिम नारीपूजा, जलतणी अंजली दीध ॥ जीवज
 स्या-निज पति तणोरे, प्रेत कारज नवी कीध ॥ सो०
 ॥ १६ ॥ राम अने-कृष्ण तणोजी, प्रेत कारज करी
 तेम ॥ कारज करी सहु नाहनोरे, कोप धरी कहे एम
 ॥ सो० ॥ १७ ॥ एकतालीसमी ढालनेरे, प्रगढ्यो श्री
 हरी आप ॥ गुणसागर जादव तणोजी, प्रवल पुण्य
 प्रताप ॥ सो० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ सतनामा पुत्री जणी, परणावे त्यां नूप ॥
 उग्रसेन हरी रायने, अचीनव रंजा रूप ॥ १ ॥ नित
 नित नवलां अजर्णा, नित्य नित्य नवला वेश ॥ नित्य
 नित्य नवली रतिकला, करे हरी सुविसेश ॥ २ ॥ सोरिपुर
 आव्या हिवे, जादव सकल विख्यात ॥ श्रोता सांज
 लजो तुने, जीवजरयानी वात ॥ ३ ॥ विलखी जीव
 जस्या हिवे, जरासधने गेहापाहोती परतद्ध चालती,
 अस्त्री रूपे एह ॥ ४ ॥ जरासंध पूढे थके, रोति जपे वा
 त ॥ जादव कुमर हरी हलधरु, करी मुऊ प्रितम घात ॥ ५ ॥

ढाल ४२ मी ॥ सोवन सिघासण रेवति ॥ ए दे
 शी ॥ आसुडाने लुह्या निज हाथसुं, चांपी चांपी हि
 यमाने वाररे ॥ गहेवरयो मन अति वापनो, पूढयो पू
 ढयो सकल विच्याररे ॥ १ ॥ आवीरे पनोति जरासं
 धने, कंतनो करीय संहाररे ॥ वाप तणो करवा जणी,
 बंधव काली कुमाररे ॥ आ० ॥ २ ॥ सोमसजट तव

कल्यो, समुद्रविजे नृप पासरे ॥ कसना मारणहारने.
 कलो शिख दिवो तासरे ॥ आ० ॥ ३ ॥ समुद्र
 जय कहे सोमजी, ए हमकुल शिणगाररे ॥ रामने कृ
 ए दो जाइला, थंनण सह परीवाररे ॥ आ० ॥ ४ ॥
 म तं सीसके धनुष्यने, मुक्य तं मानके वाणरे ॥ धर शी
 आणके टोपने, वहाला जोयठे प्राणरे ॥ आ० ॥ ५ ॥
 त्र तो प्रचु नही स्वामीजी, जो प्रचु तो नहि पुत्ररे
 दोइमें एकज होयशे, तिम करो जीम रहे सुतररे ॥
 आ० ॥ ६ ॥ पुत्र तो आपथी उपजे, प्रचु करे आ
 नो ठेदरे ॥ जड विना जालतो सुकशे, थाशेथाशे वं
 विठेदरे ॥ आ० ॥ ७ ॥ एह सुणी हरी कोपीयो,
 ठियो खडग संचालरे ॥ सोमनो राहु हुं सांमलो, वे
 देउ आमलो टालरे ॥ आ० ॥ ८ ॥ नृप नत्रिज
 विनवे, मारवो नही अवसिठरे ॥ स्वामीने बले व
 ल्यो महा, शेवक होवे अति छिठरे ॥ आ० ॥ ९ ॥
 सोम सुनट तत्र चालीयो, पोहोतो नृपति संगरे ॥ वा
 सुणी अति परजल्यो, अग्नी ज्यं घृत प्रसंगरे ॥
 आ० ॥ १० ॥ समुद्रविजय सह तेडिया, किधो कि
 तो वात विच्याररे ॥ हिवेरे इहां रहेवो नही, रह्या होवे
 प्रसुख अपाररे ॥ आ० ॥ ११ ॥ कोष्ठक एक नीमति
 यो, पूठयो पूठयो यादव नाथरे ॥ किहारि गया हम
 मगरा, बिगडीठे मोटका साथरे ॥ आ० ॥ १२ ॥ सोरे
 कहे नृप सांचलो, आरति कांइ नांठामरे ॥ नृप ह

णी निज जुज बले, त्रिखंड धणी होसे स्वामरे ॥ आ०
 ॥ १३ ॥ नेमने इलधर कृष्णजी, जेहना वंशमां होय
 रे ॥ दैवजो आप कोपे घणु, पोहची शके नही कोय
 रे ॥ आ० ॥ १४ ॥ एह स्थानक तुमे परीहरो, इहां
 सुख नहि लिगाररे ॥ तांत तलाहि जाणके, खाइ खा
 इ गारी गिमाररे ॥ आ० ॥ १५ ॥ पश्चिमदिश तुम्हे
 शीद्वःकरो, सायर तट अजिरामरे ॥ सतनामा सुत
 जनमस्ये, जानु नमरतसु नामरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ ति
 हारे करज्यो तुमे सादरो, वासतणोरे संमाणरे ॥ अन्न
 धन चिरकपुरसुं, पामशो कोड कल्याणरे ॥ आ० ॥
 ॥ १७ ॥ अष्टारेदश कुल कोमस्युं, चालीयो जादवरा
 यरे ॥ मररे व्यापे घणो पाठलो, तेहथी निकल्या जा
 यरे ॥ आ० ॥ १८ ॥ जोमिने मत कोइ जूरज्यो, जो
 मी तजी किम जायरे ॥ जोमीतजी नल जादवा, अ
 वरतणी कुण वातरे ॥ आ० ॥ १९ ॥ नूपति नलीपरे जां
 खही, कोयठे वावनवीररे ॥ जादव साथेरे लागणी, जे
 करे साहसधीररे ॥ आ० ॥ २० ॥ काल कुंवर ग्रहो
 विडलो, हुं जाजं यादवालाररे ॥ जिहांरे जाय तिहा के
 डले, जइ लावुं परीवाररे ॥ आ० ॥ २१ ॥ यवन अ
 नुज राजा पांचसे, हय गय पायक तेमरे ॥ काल को
 प करी धड हड्यो, दडवड्यो जादवा केडरे ॥ आ०
 ॥ २२ ॥ जेहनो पुण्य सखाइयो, तेहना वडं रखवाल
 रे ॥ तिहांरे न चाले बल दैवनो, केतलो ए कुंवर का

लरे ॥ आ० ॥ २३ ॥ लगबग आया ए आसना, त
 व सूरि करेहि विच्याररे ॥ तेम परपंच उठाइयो, का
 ल कियो तव कालरे ॥ आ० ॥ २४ ॥ यवन कुंवर स
 हु राजवी, पाठा वली चालीया तेहरे ॥ नूपती सुख
 दुख पामीयो, वात सुणी धुरेहेहरे ॥ आ० ॥ २५ ॥
 वीर संहारीयो पापाणी, लाग्यो लाग्यो पाप अपारणे
 ॥ बलतीरे जिहां जाइ गाडरी, तिहा तिहां बालण ए
 हाररे ॥ आ० ॥ २६ ॥ जादव विघन सहुए टल्योरे, सहु ट
 ल्यो रुर ततखेवरे ॥ दांन ने पुन्य किया घणा, किधी
 गुरु देवनी शेवरे ॥ आ० ॥ २७ ॥ सल्प प्रीयाणमे
 आवीया, सोरठ देशमजाररे ॥ दूरधी दीठो अति रु
 यमो, विमल पणे गीरनाररे ॥ आ० ॥ २८ ॥ साय
 रने तट आसना, आवीया जादवरायरे ॥ सतनामा
 सुत जनमीया, तिहां कियो कटक पडावरे ॥ आ० ॥
 ॥ २९ ॥ ढाल नली बेतालीसमी, नय हरणी अनी
 रामरे ॥ श्रीगुणसांगर पूरवे, मन तणा वंछित
 कामरे ॥ आवीरे ० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ उदधी विजय परीवारशुं, करेरे मसलत
 ताम ॥ विण सुरवर आराधीया, सरे न मोटो काम ॥
 ॥ १ ॥ जिहां जंबुक वासो वसे, ते तो बहुला ठाम ॥ ते
 तरुवर जग थोमला, जिहां ले गज वीश्राम ॥ २ ॥ त
 प विन सांनिधी नवि करे, देव महा सुखदाय ॥ तप
 विण लब्धि न उपजे, पाप विलय नवि जाय ॥ ३ ॥

दुःकरथि दुःकर महा, जे जगदस काम ॥ ते तप
करी आराधीए, इम चिंते नप ताम ॥ ४ ॥ निम
तिए दिन आपियो, स्नान कियो, बलि कर्म ॥ साधर
पूजा साचवि, साधेवा सुख शर्म ॥ ५ ॥

ढाल ४३ मी ॥ एक दिवस लंकापति ॥ ए देशी
॥ कृष्ण करे उपवासजी, त्रप महा बलासजी, वा
सजी वास करेवा कारणे ए ॥ तिजा दिवनी जावनि,
जाणे के प्रगटि दावनी, स्वामनी जाव ते सुर उवा
रणे ए ॥ १ ॥ हरीके शंख प्रंचायण, दियो रोहिणि
नंदन, नंदन शंख सुघोष सुहामणो ए ॥ वर वल्ल
पहिरामणि, किधी साधरने घणी, अति घणी च
क्ति करी जाखे घणो ए ॥ २ ॥ कहे हूं किम आरा
धियो, तप बले आयो सार्थीयो, मुजने ते दियो
कारज आदेशडो ए ॥ हरी जाखे सुर सांचलो, आ
पो थानक निरमलो, अतिचलो थानक अमारो पड
पडो ए ॥ ३ ॥ सुर सुरपति पासे गयो, सुरपति मन
हरखित थयो, हरखित थयो धनदने कारज सों
प्यो सहु ए ॥ धनद समारे अति चली, पुरी द्वारी
का मन रलि, मन रलि पुगी आस फलि बहु ए ॥
॥ ४ ॥ नव जोयण वीस्तारजी, लांबपणें ते बारजी,
सारजी सुवर्ण कोट बाइ चलि ए ॥ हाथ अठार उंचा
पणे, नव धरणी पायो खणे, पोलापणे हाथ बार
शंगु चलि ए ॥ ५ ॥ रतन तणा वर कांगुरा, देखी

मोहे सुरनरा, किधा एकोठा नवरंग जलकंता ए ॥
 एकसो अडंसठ पोलहो, दिसे सरखि उलहो, उल
 हो सात जोमी ध्वज लहकंता ए ॥ ६ ॥ वृत्तंत्रस
 चउरंसहो, देव करे परसंस हो, किधी मंदिरनि अ
 ति मांणी ए ॥ दस जोमी रत्ने जमी, सहे सबहुं
 तेरे परवडी, वसुदेवना मेहेल तणी शोचा घणी ए ॥
 ७ ॥ मध्य एकविसे जोमियो, थंन हजारे शोचीयो;
 शोचीयो मणि माणीकज लुसीयो ए ॥ धनद करे
 हरी हेतथी, नव नव घाट विशेषी, रंगचुवन करी
 थापीयो ए ॥ ८ ॥ इंद्राणी अनुहारना, सहेस वत्री
 से नारनां, नारनां मेहेल तणि शोचा घणी ए ॥ बां
 ध्या सोवन घाटहो, मांहि हिंडोला खाटहो, विविध प्रकारे
 कोरणीए ॥ ९ ॥ मेहेल सोल हजारहो, उंचीजोमी अठारहो,
 दिपे श्री बलदेवना ए ॥ गोल त्रंस चउकुणिया
 मोल विविध सुहाविया, सुहाविया दस जोमी द
 सारना ए ॥ १० ॥ सजा सुधर्मी मन रलि, किधि
 शोचा जलमलि, कलमलि रामकृष्ण घर आगले
 ए ॥ वना श्री गजराजहो, मद करंत सकाजहो, का
 जहो हाथी साडा पांचसे ए ॥ ११ ॥ मोटा वि
 विध जातहो, मोल जोमीया सातहो, सातहो ब
 प्पन कोरु परिवारने ए ॥ राज भार्गने पासहो, सोव
 न जडीता वासहो, वासहो राध उग्रसेन कारणे
 ए ॥ १२ ॥ घर घर घोना सालहो, उत्तम बाग

विशालहो, विशालहो कल्पवृक्ष घर वारणो ए ॥ वा
 विनो विस्तारहो, नीरपूरीत सारहो, सारहो नारि
 मंजण कारणो ए ॥ १३ ॥ एकखंन द्वारिका कही, त्रिखंन
 सतखंडा लही, गह गह्या साठ कोडी वस्ती खरी
 ए ॥ नाम जुजूआ धारिए, ऋद्धी घणी विस्तारीए, वि
 स्तारीए अन धनसुं मेल्या जरी ए ॥ १४ ॥ दिपंती
 घर उंलहो, बणति बणति पोलहो, पोलथीहो पोलुं
 तो उंचि कहिए ॥ कलम कांति अपारहो, उगंतो
 दिनकारहो, कारहो कांतिकरणे मिलरहिण ॥ १५ ॥ हाट
 तणि वर सोहहो, सोहनो संदोहहो, दोहनहो सोह गुणे
 धन गाजीयो ए ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालहो, तिन लोक र
 सालहो, रसालहो सार सोधीने आपियो ए ॥ १६ ॥
 कुवा वाव सरोवरु, वन वाडी अति मनोहरु, हरी
 पुर हरीपुर सरस कहावियो ए ॥ एसघलो विस्तार ए,
 गढनढ पोल प्राकार ए, वारुहो अहोरात्रि मांहि
 कियोए ॥ १७ ॥ पितांबर अति निर्मलो, नक्षत्रमाला अ
 ति जलो, कौस्तुभहो गरुडध्वज रथ आपियो ए ॥ कौमुदि
 गदावर, सारंग धनुष्य जलां सर, नंदकहो खड्ग मुगुट ह
 रिने दियो ए ॥ १८ ॥ वनमाला मुसल हल, वसन ता
 ल ध्वजरथ जल, हलधरहो पुजो तृण धनुष्य दे
 इ ए ॥ श्रीवा आचरण वेहेरखा, हारसुं कुंडल नवल
 खा, जिनजीनेहो आये नूपण सुर केइ ए ॥ १९ ॥
 गंग तरंग विराजता, वसन समुजल राजता, पुन

रपीहो रतन तेज हार सुंदरुंए ॥ समुद्रविजयने वस्त्र
जी, दिव्य सुररथ शस्त्रजी, खांडुहो चंद्रहास्य नामे
खरुंए ॥ २० ॥ यथा योग्य ते जाणीया, ते सहूए स
नमानीया, मानीयाहो राजा राज कुमार तदाए ॥ इंद्रतणे
आदेसए, ए सघलो विसेपए, किधोहो देव कुवेरे धरी
मुदाए ॥ २१ ॥ राम रथे सिंघारथी, हरीने दारुक
सारथी, परवारथि वेसी रथ उपर जला ए ॥ पेसारे
पुरमां कियो, सहूको मन हरखीत थयो, देखिहो सुं
दर नगरी जलामलाए ॥ २२ ॥ सुरपति साथे मिलि
करता सोहोव्व मन रलि, मन रलि पद्वराव्या द्वा
रामतिंए ॥ रत्न कनक धनधानसुं, वरसावे मन खां
तसुं, खांतसुं त्रण दिवस लगे बतिंए ॥ २३ ॥ नर सु
र असुर विद्याधरु, धनददेव अथेसरु, अथेसरु मंग
ल चार कियां जला ए ॥ किधो नृपपद अजीपेक, ह
री हलधर सुविशेष, तेज पुंज्य गुण आगला ए ॥ २४ ॥
जुचर खेचर राजीया, सेवकरे अति सार्जीया, गाजी
या नगर द्वारकां यदुपति ए ॥ लोक जोगवे जोग ए,
सुपनांतर नहि सोग ए, लोक ने आरति चिंता नहि
रति ए ॥ २५ ॥ आप आपणो आचार, सहू पाले
सुविच्यार, अविच्यारको नसके तिहां करीए ॥ ढाल
ए त्रेंतालिसमी, गुणसागर गुरु मनरमी, मनरमी
कमला, केल करे खरीए ॥ २६ ॥

दुहा ॥ कमला केल करे खरी, कमला हरी अरधंग

॥ कमला सर्व व्यापिरही, तीन लोक परसंग ॥ २ ॥
 कमला ब्राह्मण वाणीया, कमला अवर अशेष ॥ क
 मलापतिना राजमा, कमला तणो विशेष ॥ ३ ॥ यादव
 जगमे ऊगमगे, यादव जोति अपार ॥ यादवपतिनी
 साहेबि, चंद कला विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल ४४ मी ॥ चंदु श्री आदि जीणंद ॥ ए दे
 शी ॥ चंद कला जिम वाधे श्री हरी तेज अपार, का
 रन लोपे सुरनर मानव एक लिंगार ॥ श्री हरी वंस
 वतंस कहंस प्रसंस अनूप, कृष्ण कृपाल के सुरीज
 न दुरीजन सालस रूप ॥ १ ॥ सोमकि सीतल ताइ
 के तेजे, तपत दिणंद, मेरु ज्युं धीर गंजिरके गुणे गिरु
 उ गोविंद ॥ सिंह अविह सुलिहके सुरमें सुर सनूर,
 इद्रकि प्रचुता प्रगटित पूरव पुण्य अंकुर ॥ २ ॥ दा
 ता दिल दरीयाको नाम धरंत अनंत, पिण ए तिनूं
 त्याग तणे मन नेम वसंत ॥ परनारीने हियो ने न दिधी
 वैरीने पूठ, याचकने नाकारो न किधो साहमो ऊठ
 ॥ ३ ॥ सब विधि सुंदर राज करंत, कलेस न कोइ,
 नामे सुजामा नामनी गुण अनिरामा जोइ ॥ चंद
 मुखी अदुखी मखि सुंदर सोहे, मेलि आण अनूप
 के उपमनारे संदेहे ॥ ४ ॥ नेह घणारे घडीयो विधी
 नां घाटसुघाट, अवर सकल त्रिया साथ मथ्यो विधी
 फोगट माट ॥ रूप सोहागणी रागणी राजा राग अ
 सेष, पंचेंद्रि सुख माणत जाणत जन्म विशेष ॥ ५ ॥

एक दिवस नारायण परखदा पूरी जाम, समुद्रविज
 य राजादिक राजा वेठा ताम ॥ गगनथी उतरती
 दीठी एक सतेज, अग्नी पुंज्यको को कहे सूरज तेज
 सहेज ॥ ६ ॥ एटले ते यति नेको आयो जाण्यो
 जेवार, तिम ऋषिश्चर दिठी के नारद नाम उदार ॥
 नारायण पगे लाग्यो के चांग्यो नरम अपार, हरी
 ऋषिश्चरने आप पूढे सुख वारंवार ॥ ७ ॥ नारद ना
 रायणने पूढे प्रित प्रकार, तुम्ह पटराणि सुणि में अ
 मरीनु अवतार ॥ सोहुं देखण चाहं बंधव तुम आदे
 श, कृष्ण कहे धन स्थानक जिहां तुम्हे करौ परवेश
 ॥ ८ ॥ मुनि जाण्योथो नामा नामनि लागशे पाय,
 नाविने वस रहि कबु उपजी इहां आय ॥ देवने दु
 खण दिजे कह्यो नर एक लिंगार, होवणहार होवे स
 हि निश्चे एह विचार ॥ ९ ॥ सतनामा तव आगले
 मांडी दरपण सार, मनगमता रस आण्या तनुपरे
 शिणगार ॥ प्रिति रूपे मोहि सोहि करे हास विलास,
 आप सराहण करति के धरति अंग उलास ॥ १० ॥
 पाठल उजो आइ रह्यो तिहां महा मुनिराय, अंग
 वचुत जटा शिर रुप विरुप देखाय ॥ मुलके मुल
 कि सतनामा नाखे मनसु ताम ॥ एक रूप ए एक
 ए जोजो विधीको काम ॥ ११ ॥ मेरोतो वदन चंद
 के जाणी सुधारस वास, ए कोइ मुखको राहु चंद
 आयो पास ॥ मुह मचक्रोडी ऋषीनी मुनामा किधी हा

स, चाल्यो तव पिबताय नारद मन हुत उदास ॥
 ॥ १२ ॥ वानरडो अति चंचल पिधो मदिरा पान,
 विंबुडे चटकायो के लाग्यो नूत अयान ॥ आगे ना
 रदने हरीनारी खिजायो जोइ, खिजावणना फल
 लागे ते सुणज्यो सोइ ॥ १३ ॥ अणदीवाज्यां जे
 नर नाचे नाच अपार, वाजां वाजे ते नर केमन ना
 चणहार ॥ अण ठेड्योहि अनर्थ कारी नारद होय,
 ठेड्यो क्यु क्युं न करे विमाशी जोय ॥ १४ ॥ ना
 रद चिते काहुं आयो इस घर आज, जे घर मान न
 पाइए के तिहां नही जावानो काज ॥ जइ बेठो कैला
 सगिरे समुदोष प्रणाम, जो ए खुणसु न काहुं तो स्यो
 मुज नारद नाम ॥ १५ ॥ जो अपहार करावुं तो दुः
 ख पावे मित्त, जोरे कलंक चढाउं तो ए चिंता चित्त
 ॥ सति शिरोमणी द्वीज तणे बले साची थाय, आगे
 हि मुज वचन न माने को हरीराय ॥ १६ ॥ इम चिं
 तवता उपजी ए ऋपिने मनमांहि, शोक्य तणो दुःख
 गाढो के नारीने अति प्राही ॥ चमालीसमी ढाल ज
 ली नारद सुविलास, श्रीगुणसागर पुण्य तणे बले
 पूरे आस ॥ १७ ॥

दुहा ॥ दुसमण दाव न चूकही, वैरी न तजे वा
 ण ॥ वैरी वाघथकी बुरो, अरति उपावे आण ॥ १ ॥
 सहु साथे सुख राखीए, सहु साथे समजाव ॥ पूरो प
 डवो दोहिलो, जल अध विचे नाव ॥ २ ॥ नामा नमे

न नाम धरविरे ॥ सो० ॥ २० ॥ अंतर हरखि पूठि
 यो, एहने बहिनड कोइरे ॥ पुंज्य प्रसाद तुम्हारडे,
 बहिन जलैरी होइरे ॥ सो० ॥ २१ ॥ परणावि के कुं
 वारीका, राजा उत्तर दिधोरे ॥ आजलगी तो कुवारी
 का, ऋषिनो कारज सिधोरे ॥ सो० ॥ २२ ॥ ऋषिने
 लागी चटपटी, अंतेउरमें आवेरे ॥ रलियायतमें रु
 खमणी, जुवा आणि वंदावेरे ॥ सो० ॥ २३ ॥ ऋषि
 जी दिधी आशिसका, कृष्ण घरे पटराणिरे ॥ होजे
 प्राग्य विशेषथी, ऊठ नहि अम वाणीरे ॥ सो० ॥ २४ ॥
 नाम सुणी हरजी तणो, रुखमणिनो मन राच्योरे ॥
 गयणागण घन गाजीयो, मोर महितले नाच्योरे ॥ सो०
 ॥ २५ ॥ पिसतालिसमी ढालमें, नारद वंठित फलसेरे ॥
 गुणसागर गुरुइम जणे, रुडे रुढो मिलशेरे ॥ सो० ॥ २६ ॥
 दुहा ॥ रुखमणि चांखे सुण जुवा, किसी कहे ऋ
 षि वात ॥ कवण कृष्ण नरेशरू, कवण पुरी विख्यात
 ॥ १ ॥ कवण संदेसां देसडो, कवण वंस विलास ॥ क
 वण ऋद्धि रुपे कवण, कवण तास परीवार ॥ २ ॥ कवण
 नाम माता पिता, कवण शुं बंधव जोड ॥ बंधवने प
 रसादडे, पोहोचें सघला कोरु ॥ ३ ॥ कवण बहिन सु
 हामणि, विक्रम तणो विच्यार ॥ जुवा जणे ऋषिरा
 यजी, कहो सह विस्तार ॥ ४ ॥ नारद बोल्यो गह ग
 ह्यो, सुणो वडबाइ वात ॥ संचलावुं धुर बेहथी, कृ
 ष्णतणा अवदात ॥ ५ ॥

ढाल ४६ मी ॥ इडर आंबा आंबल्लिरे, इरर
 दाऊम द्राख ॥ ए देशी ॥ द्वारीकां नगरी अति न
 लि हो, द्वारीकां कृष्ण नरेश ॥ द्वारीकां सह
 मन चावति हो, द्वारीकां पुण्य विशेष हो ॥ हरजी
 द्वारीकां केरो राय, जेहनां सेवे सुरनर पाय हो ॥ ह० ॥
 ॥ १ ॥ देश सोरठ देशडो हो, देसांनो शिणगार ॥
 रत्न पांचसुं राजतो हो, शोना अधीक उदार हो
 ॥ ह० ॥ २ ॥ जल तंबोल रेवत चलो हो, द्वारीकां
 अधीक उदार ॥ वंश श्री हरीवंशजी हो, सह वंसा
 शिरदार हो ॥ ह० ॥ ३ ॥ वय जोवन जेहानि अठे
 हो, वंठे जे वर नार ॥ ऋद्धि कुबेर सारखिहो, लाख
 वसे घरवार हो ॥ ह० ॥ ४ ॥ रुप अनूप सुहामणो
 हो, मदन तणो अवतार ॥ दश दशार आदे करी
 हो, यादवनो परीवार हो ॥ ह० ॥ ५ ॥ माता नामे
 देवकि हो, करमेति कहेवाय ॥ बाप चलो वसुदेवजी
 हो, महिमा कह्यो न जाय हो ॥ ह० ॥ ६ ॥ बंधव
 श्री बलदेवजी हो, दिसे केइ हजार ॥ बहिन सुचद्रा
 शोचति हो; अर्जुन तस चरतार हो ॥ ह० ॥ ७ ॥
 विक्रम शक्र तणो वहे हो, जे नहि केहने मान ॥ रिपु
 कुल काल कहावियो हो, गुण मणि केरी खाण हो
 ॥ ह० ॥ ८ ॥ बालपणे उपासीयो हो, गोवरधन गी
 री तेष ॥ दुष्ट व्यंतरी पुतना हो, नाम करी हरी ते
 ण हो ॥ ह० ॥ ९ ॥ जमना जलमें जीलतां हो, ना

काम ॥ १ ॥ राजसजा आयो धसी, कृष्ण दियो वहु
 मान ॥ कुशल वात पूठि खरी, नयण बतावी सान
 ॥ २ ॥ निर्वजन स्थानक जइ, हरी ऋषी वेठा जाम
 ॥ पट पसारि दिखाइयो, नारी रूप चित्राम ॥ ३ ॥ रु
 खमणि रूप विलोकतां, विस्मय पास्यो जूप ॥ नारद
 ने पूठे तदा, कवण नारीनुं रूप ॥ ४ ॥ आप विधा
 ता निरमइ, नारी निरोपम प्रांहि ॥ एहवि हूइ न हू
 वसे, कृष्ण चिंते मनमांहि ॥ ५ ॥

ढाल ४७ मी ॥ ताहरा मेहला उपर मेह, ऊबुके
 विजलिहो लाल ॥ ऊबुके विजलि ॥ ए देशी ॥ गीश्वर
 रुखमणि रूप, निहाले फिरी फिरी होलाल ॥ निहाले फि
 री फिरी ॥ ए कुण नवलि नार, अपठरा किन्नरी होला
 ल ॥ अ० ॥ निरेखि सुंदर अंग, वखाणे तेहनो होला
 ल ॥ व० ॥ फूलया ज्युं सुरंग, चरण तल एहना होलाल
 ॥ च० ॥ १ ॥ मस्तक वेणि शाम के जैसि नागणी हो
 लाल ॥ के० ॥ मुख उदय पूनम चंद, के रूप सोहाग
 णि होलाल ॥ के० ॥ नव पल्लव केसुवान, अधर रंग
 रातडो होलाल ॥ अ० ॥ लहके लोडावे बांहके, सो
 ह्यो जग बापजो होलाल ॥ मो० ॥ २ ॥ कठण कंचु
 कि जाग, निलांबर खेंचियो होलाल ॥ नि० ॥ देइ तं
 बु काम, आवि जग वंचियो होलाल ॥ आ० ॥ जेहवुं
 पोयण पान, उदर तस पातलुं होलाल ॥ उ० ॥ ऊल
 के सोवन वान सोहे जेम लांडलुं होलाल ॥ सो० ॥ ३ ॥

सुंदर कटिनो चाग विराजे लंकथि होलाल ॥ वि० ॥
 मावे करतल माग चलो मध अंकथि होलाल ॥ ज०
 ॥ सुडा चांच समान सोहावे नासीका होलाल ॥ सो०
 ॥ मणि दरपण उपमान कपोले जोमिका होलाल ॥
 क० ॥ ४ ॥ काने कुंडल जोरु सोहे शिणगारथी हो०
 ॥ सो० ॥ रति पतिने घर एहवि न दिठि आकारथी
 होलाल ॥ न० ॥ देखि कृष्ण मुरार थयो मदनांकु
 लो होलाल ॥ थ० ॥ वाध्यो विरह विशेष अलेख उ
 पापलो होलाल ॥ अ० ॥ अहो अहो रूप निहाल च
 तुर गुण धारीका होलाल ॥ च० ॥ ५ ॥ परणिते ए वा
 ल के हजी कुवारिका होलाल ॥ ह० ॥ कवण अठे ए
 जात रहे किहां वली होलाल ॥ र० ॥ नाम कवण कु
 ण तात विचारे महा बलि होलाल ॥ वि० ॥ ६ ॥ क
 हे कहे नारद एह सरुप तुं सादरो होलाल ॥ स० ॥
 मुजुं आणि सनेह मथाइस निरादरो होलाल ॥ म०
 ॥ देश कुंकलपुर तणि महिमा गति होलाल ॥ त० ॥
 राय जीपम घरे पटराणि श्रीमति होलाल ॥ प० ॥ ते
 हनि जाइ नामे रुखमणि गुणवांति होलाल ॥ रु० ॥
 रूपे रंजा समान कहुं उपमा गति होलाल ॥ क० ॥
 जमियो जोषी अपार जीहां रवि संचरे होलाल ॥ जी०
 ॥ विजी कोइ न नाग जे एहनि सरीकरे होलालाजे०
 ॥ ८ ॥ ए परणी के कुवारि हो नारद ते कहो होलाल ॥
 ना० ॥ तुरंत कुमारी मूरारि ए साचुं सरदे होलाल ॥ ए०

मांगी नृप शिसुपालने में ए सुणि खरी होला॥ में०॥
 पिण तुम्ह स्या नूपालने योग्य ए कुमरी होला॥ यो०
 ॥ ९ ॥ नारद रठ लगाइ गयो तव संचरि होला॥ ल
 ग० ॥ मूरनाणोहरी राय सचेत थयो फिरी होला॥ ल
 स० ॥ एहवे कुमरी लेख लिखी जेज्यो जले होला॥ ल
 ॥ लि० ॥ हेत जणवाण काज हरीने आगले होला॥ ह०
 ॥ १० ॥ माथवे सकल उदत चतुरपणे वांचियो हो
 ला॥ च० ॥ पद पद अंग अनंत हरख रोमांचियो
 होला॥ ह० ॥ तुम विरहे मऊ काय रहि ए खलबलि
 होला॥ ॥ र० ॥ जेट देइ महाराय करो हिवे सिय
 लि होला॥ ॥ क० ॥ ११ ॥ वांचि इम विरतत हरी
 मन वेधीयो होला॥ ॥ हं० ॥ नेह निवडने तंत बहु
 मन संधीत होला॥ ॥ वे० ॥ हरी लिखुं सुण वाल,
 करो चिंता किसी होला॥ ॥ क० ॥ करवा तुम सजा
 ल आवि सहु उलसी होला॥ ॥ आ० ॥ १२ ॥ ला
 गी चटपट चित्त चद्धानन लपरे होला॥ ॥ चं० ॥ जीम
 तनु खुत्यो साल कह्यो इम सुनरे होला॥ ॥ क० ॥ हलध
 रे जाणयो एम हरी उदासीयो होला॥ ॥ ह० ॥ मरम
 लाहि सुख हेत वचन प्रकाशीयो होला॥ ॥ व० ॥
 ॥ १३ ॥ रुखमणी लेसुं जाव देसुं शिसुपालने होला
 ल ॥ दे० ॥ हुवो निसुणि वातके सुख गोपालने होला
 ल ॥ के० ॥ जामा थइ निकाम रुखमणिरूपे
 करी होला॥ ॥ रु० ॥ तेल न लागे मीठ खाधो जीणे

घृत वरी होलाल ॥ खा० ॥ १४ ॥ अणदिठा अनुरा
 ग ए उपज्यो अति घणो होलाल ॥ ए० ॥ जो जो
 अति सोजाग के जग रुखमणि तणो होलाल ॥ के०
 ॥ चित्ततो पद्मनि पास वस्यो हरी रायनो होलाल ॥
 व० ॥ श्रवण सुणंत उलहास सकल सुखदायनो होला
 ल ॥ स० ॥ १५ ॥ रुखमणी रुखमणी नाम जपे जी
 हां जापथी होलाल ॥ ज० ॥ तरुफडे तनु अकुलाय
 के मिल्या आपथी होलाल ॥ के० ॥ ढाल चालीसने
 सात जली सरसि तिहां होलाल ॥ ज० ॥ गुणसागर
 वरवाल वेहु मिलशे इहां होलाल ॥ वे० ॥ १६ ॥

। दुहा ॥ एह अवसर शिसुपाल नृप, लभ गणायो
 जोइ ॥ मनगमता कारज जणी, ढिल करे नही कोइ
 ॥ १ ॥ रुडाने चाहे सहु, ए जगनो व्यवहार ॥ पिण
 रुडे रुमो मिले, इहां नही कोइ विच्यार ॥ २ ॥ रुख
 मणि मनमा खलजली, कहे चुवासु जाय ॥ चंदेरी
 पति आवियो, कहांठे जादवराय ॥ ३ ॥ मुऊ मन ए
 निश्रे सहि, वरु तो देवमुगर ॥ कनक कुसमनी उप
 मा, मन माहरा मजार ॥ ४ ॥ चुवा जतीजीसुं कहे,
 चिता मतकर लिगार ॥ आपणा इतने आसना, गरु
 ड तणो असवार ॥ ५ ॥ कुमरी चित चिंता खरी, र
 खे न आवे स्वाम ॥ नयणें आंसुडा जरे, मोह त
 णो ए धाम ॥ ६ ॥

रुखमणीना कागलनी ढाल ॥ तट जमनानोरे अति

रलीयामणोरे ॥ ए देशी ॥ रुखमणीना मनमरि चिंता
 वली उपनीरे, हजीय न आव्यो दिनारे नाथ ॥ आ
 तुर थइ बेठीरे लिखवा लेखनेरे, कुमरी बन हुइरे अ
 नाथ ॥ १ ॥ चंद्रगढ घेरोरे वेलेश-पधारजोरे, करो मु
 ऊ अबलानी सार ॥ हुंतो मांकी बेठीरे आशा तुम
 उपरेरे, अहो प्रचु प्राणनारे आधार ॥ चं० ॥ २ ॥
 नरनिंद्रामां सुतारे आज मुऊ मंदारे रे, दिठो कांइ
 सुपनोरे रसाल ॥ जाण्यु में सांजलीयोरे आव्यो मुऊ
 परणवारे, साथे लेइ वंघवनो परीवार ॥ चं० ॥ ३ ॥
 चौरी विचे बेठारे नाथ माहरा एकठारे, हाथे बाधी
 मींफलनोरे आचार ॥ आकी नजरे जांखरे फिरी फि
 री साहिबोरे, परो करी घुंघटपट उदार ॥ चं० ॥ ४ ॥
 इम सुपनामारे आवे पोहोर माहेरारे, जायते काइ
 मिलवानी आश ॥ पिउजी उवेखिरे अलगा केम रहोरे ॥
 नाखी मुने प्रेमनो पास ॥ चं० ॥ ५ ॥ आज उदयथी
 रे दिवस सातमेरे, शुद्ध अष्टमी अगुवार ॥ जान लेइ
 जोरे रे दावल राजीयोरे, आवशे कांइ नयरी सोजार
 ॥ चं० ॥ ६ ॥ मुऊ अंतरनीरे साहिव माश जाणजोरे,
 तुऊथी कांइ बांध्या ए प्राण ॥ तुम नवि आव्यारे मुऊ
 मरणो सहिरे, जावे एम जाणमजाण ॥ चं० ॥ ७ ॥
 करुणा किजेरे हिवे मुऊ वालहारे, हे जे धरी लिजेरे
 हाथ ॥ ते आपवसुरे किधो जग जोवतारे, तसनाहि
 तुं केहनेरे नाथ ॥ चं० ॥ ८ ॥ आसना अवलंदनरे

एति अवधारजोरे, राची हुं तुमचेरे राग ॥ आपण
 डी करिनेरे राखो दिलजरीरे, आपीजे मुज एह सो
 हाग ॥ चं० ॥ ९ ॥ जाइ रुखनियोरे एहेनी वातमां
 रे, जाणे जेका एह जगदीश ॥ माहरा मनधीरे मंतो
 एम आदरघारे, जीम गौरीधर इश ॥ चंद्र० ॥ १० ॥
 अतरजामीरे दुर दुःख त करेरे, जाणिये आपणी ला
 ज ॥ हिवे गोरी किजेरे निज साचापणेरे, किर्युं घणुं
 गरीव निवाज ॥ चं० ॥ ११ ॥ कागलीयो तो चीनीरे लि
 खतां आंसुएरे, तेहवोज वींठीने दिध ॥ पूरव लिख्याथी
 रे संबध जे ह्योरे, वली मुख बचने इम किध ॥ चं० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ कुमरी काज समारवा, लेख लिखी अनी
 राम ॥ दूत चलाव्यो द्वारीकां, करह चढावी तामा ॥ १ ॥
 ढाल ४८ मी ॥ करहला तुं वेगो चालेरे, तुंने
 चारिश अमृतवेल ॥ क० ॥ तुं जाजे मारग ठेल ॥
 क० ॥ ए आंकणी ॥ शुच सुकने प्रेरयो घणुं, दूत कु
 शल अनिधान ॥ आयो नगरी द्वारीकां हो, देख्यो
 वहु मंडाण ॥ क० ॥ १ ॥ अनुक्रमे आयो चालके,
 देवतणे दरजार ॥ प्रतिहार आगे धरीहो, किधोराय
 जूहार ॥ क० ॥ २ ॥ राजा पूठे कवण तुं, कहे विदेशी
 दूत ॥ वेठो नृप आदेशथी हो, चतुराइ अदजुत ॥
 क० ॥ ३ ॥ रामकृष्णने दूतए, वेठा जइ एकंत ॥ ले
 ख धरयो आगे मुदा हो, वांचे कृष्ण तुरंत ॥ क० ॥
 ॥ ४ ॥ कागल माझ्यो वांचवा, वरणन दिसे कांड ॥

जिहां तिहां ट्यका आसुडा तणा हो, समऊयो मनमा
 मांहि ॥ क० ॥ ५ ॥ आसुमा आदे न लिखी सकिरे,
 माहरे विरहे एम ॥ हुं न गया ए नामनि हो, दिवस
 निगमज्ञे केम ॥ क० ॥ ६ ॥ मुख वचने कहे दूतजी,
 सांजल देव विच्यार ॥ श्री कुंडनपुर राजीयो हो, नी
 घम नाम उदार ॥ क० ॥ ७ ॥ पटराणी तस श्रीमतिहो,
 तस उदरे उतपन्न ॥ सर्व सुलक्षण गुणवंति हो, रुख
 मणि कुमरी रतन ॥ क० ॥ ८ ॥ सुरलोका सोधी घणु, मा
 एल लोक मजार ॥ पाताला पामि नहि हो, रुखम
 णिनि अनुहार ॥ क० ॥ ९ ॥ मांगी नृप शिसुपालने,
 बंधव लहि बहु मान ॥ एतले नारद जांखियो हो,
 वरतो श्री जगवान ॥ क० ॥ १० ॥ माघ शुकल अ
 ष्टमि दिने, लग्न लियो राजान ॥ कांतो थाउ प्रचुवा
 हू हो, कांतो तुटे प्राण ॥ क० ॥ ११ ॥ प्रचुने उ
 पनि सोचना, ए मोटी जंजाल ॥ न गया मरणो रु
 खमणि, गया मरे सीसुपाल ॥ क० ॥ १२ ॥ मार्ग
 न मेले मानविरे, ना नाहीए न्याय ॥ नारी प्रतिज्ञा
 नधि तजेहो, कहो किसी परे थाय ॥ क० ॥ १३ ॥
 कुण्डल कहे तुम्हाहि अगो, अंतरजामी आप ॥ सोइ
 करा जीम एहि मिटेहो, रुखमणीनो संताप ॥ क० ॥ १४ ॥
 सिखे ते तुम्हाहि थकीरे, तुम्ह किहां शिखण जाउ ॥
 सोच्यो सल बेसे नहीहो, एम मतो ठहराउ ॥ क० ॥
 ॥ १५ ॥ हलवरने हरी पूगीयोरे, दुत कहो शुं किध ॥

हरीनो हेत विचारवे हो, हलधर उत्तर दिव ॥ क० ॥
 ॥ १६ ॥ अबला प्राण उगारवा, पुरुष तणो ए धर्म
 ॥ एम विमासी पूगीयो हो, मिलवा केरो मर्म ॥ क० ॥
 ॥ १७ ॥ प्रमोद नाम उद्यानमे, कामदेवनो ठाम ॥
 वृद्ध अशोक सुहामणो हो, उपर ध्वज अनीराम
 ॥ क० ॥ १८ ॥ ए सहि नाणी कर धरीने, गमन जा
 एवा काम ॥ वेग करी पाउ धारजो हो, गुप्तपणे सु
 ए स्वाम ॥ क० ॥ १९ ॥ चतुर शिरोमणी रुखमणि,
 पूजानो मिस ठाण ॥ ओहि थानक चली आवशे हो,
 चोरी सकलके काण ॥ क० ॥ २० ॥ जो प्रचु वयणे
 निरखशे हो, तो होसे सुख प्रित ॥ अण दिठी आ
 तुर थइ हो, करसे अति विप्रीत ॥ क० ॥ २१ ॥ हे
 मे जणावी वात ए, कारज तो प्रचु हाथ ॥ देइ दा
 न नवि सरजे हो, दूत तदा जगनाथ ॥ क० ॥ २२ ॥
 दूत चल्यो ते वेगसु हो, आयो रुखमणी पास ॥ का
 ज सरयो दुःख विसरयो हो, उपज्यो अति उल्लास
 ॥ क० ॥ २३ ॥ हरजी हलधर हरखसुरे, जोतरीया रथ
 द्योय ॥ शस्त्रतणो करी सग्रहो हो, सधनबंध अति
 होय ॥ क० ॥ २४ ॥ चामा जय चारे धरीरे, गुप्तप
 णे निसी प्रांही ॥ चाली आया उतावला हो, कुंमन
 पुर वनमांही ॥ क० ॥ २५ ॥ रथ बोमी हय बाधीयां,
 जोवे रुखमणी वाट ॥ फूल्या अगन मावहि हो, र
 चन करे उचाट ॥ क० ॥ २६ ॥ ए ढाल आठेचालीस

मी, हरी आयो त्रिय हेत ॥ गुणसागर गुरु इम न
णे हो, शुन वंणीत फल देत ॥ क० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ नारद नाम प्रणामथी, नारद सोचन को
इ ॥ साजो जाजन फोडके, फेर घडंतो जोइ ॥ १ ॥
अणमिलते मेलो करे, मिलंते करे किकार ॥ ज्ञान विना
नवि जाणीये, नारद चरित्र अपार ॥ २ ॥ रुखमणी म
न हरी आणीयो, हरी मन रुखमणी नार ॥ चदेरी
पतिसुं जइ, बोल्यो कवण प्रकार ॥ ३ ॥

ढाल ४९ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ हो नारद, चं
देरी पतिसुं कहे, में सुएथो तुमरो विवाह हो ॥ ना० ॥
घर घर रंग वधामणा, तुऊ मन अधीक उगाह हो
॥ ना० ॥ चं० ॥ १ ॥ कलहकारी जनमारणो, मन वच
न योग समपाप हो ॥ ना० ॥ सांधा जोडा मेलवे, करे
अधिक संताप हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ २ ॥ हसी बो
ल्यो सिसुपालजी, स्वामी तुम प्रसाद हो ॥ ना० ॥
रंग व्याह हम ए हुंसे, विजा व्याह सोवाद हो ॥ ना०
॥ चं० ॥ ३ ॥ कवणपुरी किणकी सुता, किस्यो कुमरी
को रुप हो ॥ ना० ॥ कुंनपुर जीपम सुता, रुखमणी
रूप अनूप हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ ४ ॥ कवण लग्न ते
व्याहको, लग्न देखायो राय हो ॥ ना० ॥ ऋषि जां
खे दूपण घणा, इहां उपद्रव थाय हो ॥ ना० ॥ चं०
॥ ५ ॥ इम निसप्रही दरवेसनी, नही ग्रह चित्या काम हो
॥ ना० ॥ प्रिती जणी तुमसुं कहं, हुसीयारीको का

म हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ ६ ॥ एम कही ऋषी पागस्थो,
 रंगमांहि करी नग हो ॥ ना० ॥ जगत मांहि अति परं
 गटो, ए कु सेहेजो अंग हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ ७ ॥
 शिशुपाल हिवे जाननी, करे सजाइ जोर हो ॥ ना० ॥
 वंद टकोरा गडगडे, गुहिर निसाणे घोर हो ॥ ना० ॥
 चं० ॥ ८ ॥ साथे सबला राजवी, जोर जुगति जूंजा
 र हो ॥ ना० ॥ हयगय रथ पयदल तणा, कहेतां ना
 वे पार हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ ९ ॥ को कवाण आगे कि
 यां, तोफारो नहि हो पार ॥ ना० ॥ जूंजाला साथेलिया,
 साथीडा सिरदार हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १० ॥ सलकर
 मिलीउं सामटु, पंचद्वोणी परमाण हो ॥ ना० ॥ हय
 दल पयदल गज घणां, मिलीया आप समान हो ॥ ना०
 ॥ चं० ॥ ११ ॥ सकल सनाह सजी करी, हयगय र
 थ परीवार हो ॥ ना० ॥ राजा रुने रावणे, आयो हो
 इ हुसीयार हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १२ ॥ कुंमनपुर विं
 टी रह्यो, तारा जिम गिरि मेर हो ॥ ना० ॥ अहि जिम
 चंदन तरुवरा, विंटाणा चौफेर हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १३ ॥
 राजाना वेसी गया, दरवाजे दरवान हो ॥ ना० ॥ आवाग
 मन न होइ सके, कुमरी दुःख असमान हो ॥ ना०
 ॥ चं० ॥ १४ ॥ चुवा नलीपरे मेलवे, पूजा तणा प्र
 कार हो ॥ ना० ॥ मंगल गीत सुउंदसुं वाजे नाद
 अपार हो ॥ ना० ॥ चं० ॥ १५ ॥ पांच सात साहे
 लीया, अलबेलीया उदार हो ॥ ना० ॥ चाली जाये

णि कुवरि लेइ सिधावा ॥ सु० ॥ १ ॥ अवर जे सु
 नट अति विकट बल धारके, जोध जे जगतमें रहे
 तदावे ॥ आवियो धावियो वेग करि पाठले, माग
 धारि हम साथ्य आवे ॥ सु० ॥ २ ॥ एम सुणता शिसु
 पाल नृप परजल्यो, अग्नी जाणे घृत होम पायो ॥ सेन
 दल सबल अतिप्रबल प्रतापसु, आप बल प्रबल लेइ
 धायो ॥ सु० ॥ ३ ॥ निषम राय अति लाज पान्यो घ
 णि, रुखभियो कुंवर जिम काल कोप्यो ॥ उठियो ध
 समसी धरणि तव कसमसी, दसमसी आगले आणि
 रोप्यो ॥ सु० ॥ ४ ॥ गडगडे गयंवर हिंसता हयंवर,
 वीर रथ शौन अधकेशो पावे ॥ पायक लायक काज स
 हायक, नायक नव जस काज धावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ ढा
 ल नेजा वरां फरहरे फरहरां, बगतर तोफ तव तेज
 ऊलके ॥ आयुधकारका जे उत्रिस स्वयंवरा, ऊलहले
 खनग अतिसय चलके ॥ सु० ॥ ६ ॥ ढोल निसाण स
 रणाइ वर काहला, जुंऊको राग सिंधु सुणावे, काय
 र थरहरे जीव आशा धरे, परहरी स्वामि परहापुलावे
 ॥ सु० ॥ ७ ॥ रेणु उडी घणी गयण रवि ठाड्यो,
 आपणो पर नवि जाय जाण्यो ॥ देव देवी घणी च
 उसठ जोगणी ॥ अंबरे आप सुख आज मान्यो ॥
 ॥ सु० ॥ ८ ॥ नाचतो नारद फिरत रस रंगमे, अंग
 मे आनंद अधीक पावे ॥ खिणक सिसुपाल नृप खि
 णक हरी हलधरा, बाप म्हारा इम काहि सुणावे ॥

॥ सु० ॥ ९ ॥ उदधी किलोल दल पसरीयो चिहुं दि
 से, रे रे गोपाल किहां जाय जाग्यो ॥ चूप शिसुपाल
 कुवर वर रुखमीयो, इम कहेतो प्रनु पुठे लाग्यो ॥
 सु० ॥ १० ॥ आवतां दल हरि हलधरे रोकिया,
 नदिउना पुर जिम उदधी रोके ॥ फोज बांधी रह्या
 सुजट आंत गहगह्या, पिण कही सिंहने कुण रोके ॥
 सु० ॥ ११ ॥ देखि दल पूर घटिनूर रुखमणि हुइ, आर
 ति उपजि एह अपारो ॥ एह घणो रावणो अधीक
 विहामणो, एह तो बंधव दोइ सारा ॥ सु० ॥ १२ ॥
 कठिन घन लोह तन लोक माहि जण्यो, पिण बहु
 मिले जो लीहाला ॥ गालवे लोहनें एह अचरिज वडो, एम
 जाणी थरहरी एहि वाला ॥ सु० ॥ १३ ॥ कृष्ण बोले हम
 कोण तोले अठे, घणी थोना तणो स्यो पंथारो ॥ रातनो
 संचियो अति घन माचियो, उगंते सूर नासे अंधा
 रो ॥ सु० ॥ १४ ॥ तोइ पिण शंक जाइ नहि रुखम
 णी, मुद्राडि वज्र हरी तामचूरे ॥ करी अति चून पडी
 पुन चिपटि करी, साथीयो हाथ मांहेज पूरे ॥ सु० ॥ १५ ॥
 एक बाणे करी विंधीया तव हरी, ताड साते त्रियाने
 दिखावे ॥ तव अति खलजलि एह अतुलि बलि, मा
 रसे सहि मुऊ बाप जाइ ॥ सु० ॥ १६ ॥ कृष्ण बो
 ल्यो हसी एह चिंता कीसी, ताहरो बाप जाइ नवि
 मारूं ॥ अवगुण सा सहु अवर केति कहूं, वूरो न म
 नावसुं देवि थारूं ॥ सु० ॥ १७ ॥ हलधर इम क

हे कुण मुऊ बळ सहे, पिरा सिसुपाल नृप मारयो न जा
 य ॥ अवरने आगसुं रग रणमें रमु, अति दसुं सा
 हमो तु जेह थाय ॥ सु० ॥ १८ ॥ कहे हरी केसगी
 खांय उचो करी, कुण सिसुपाल सियाल साचो ॥ र
 ण मांहे रोळवु पवन तृण डोलवुं, तो जाणजो पितु
 दुव काचो ॥ सु० ॥ १९ ॥ इम रुखमणि मूकि बेरी
 नणि आविया, दोइ बंधव रण मांहि सनूरा ॥ कृष्ण
 सिसुपाल असराल क्रोधे चढ्या, नटनिड्या आप आप
 मांहि मूरा ॥ सु० ॥ २० ॥ श्री वलदेव ततखिण रण रोसे
 चढ्यो, वरु वडा राय जाइ पुलाणां, सिंहकि दोरु गजरा
 ज गिर गिर परे, आंकतां प्राण बोरे खलाणां ॥ सु० ॥
 ॥ २१ ॥ सेन दळ जंग रणतरंग देखि करी, रुखमीये व
 लनद्रप्रति वाण साध्यो ॥ वज्र काया जाणे बाण लाग्यो
 नहि, नागपासे करी सोइ बांध्यो ॥ सु० ॥ २२ ॥ न
 खशीखे जखडीयो गाढो करी पकडियो, अकडीयो अंग
 मिट गयो दावो ॥ आपि रथमें धरयो वयण इम उचरयो,
 कुल वहु जाइ मांखि उभावो ॥ सु० ॥ २३ ॥ कृष्ण सि
 सुपाल चिरकाल रण साचव्यो, अस्त्र शस्त्राकरी मांहो
 मांहि ॥ जितीयो इस जगदिस जग जल्पना, पुण्य प्र
 सादे जय हवो प्राही ॥ सु० ॥ २४ ॥ दोय वरु विर
 अति धीर गंजिररण करी, रुखमणि तणे पास आया
 ॥ ढाल करुखातनी सुणत सुहामणी, तिस अरु वि
 समी हरप पाया ॥ सु० ॥ २५ ॥ पिसुन मद मान म

देन जगवानजी, साधुपरे त्राण ए ब्रीदनिको ॥ श्री
गुणसगर अत्रीक उजागर, नागर नवलजस सुजस
टिको ॥ सु० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ रुखमणी रिंजी अति घणी, देखी जेठ प
ति काम ॥ एह अदचुत पराक्रमी, अवर पुरुष स्यो
नाम ॥ १ ॥ करजोनीने विनवे, पिउजी केरे पसाय ॥
बंधव बंधज गोडीए, माहरे मन ए चाय ॥ २ ॥ बं
धन ठोज्यो हाथसुं, कृपा करी जगनाथ ॥ सुजन पणे
अति राखज्यो, प्रिती जाव हम साथ ॥ ३ ॥

ढाल ५१ मी ॥ रघुपतिजीत्योरे ॥ ए देशी ॥ य
दुपति जीत्योरे, जीत्यो जीत्यो श्री वसुदेव कुमार ॥
॥ यद० ॥ जीत्यो जीत्यो रुखमणीनो जरतार ॥ य० ॥
जीत्यो जीत्यो बाइ सुजद्रानो वीर ॥ य० ॥ जीत्यो जी
त्यो साहसवंत सधीर ॥ य० ॥ जयजयकार करे घ
णो, आकाशे सुरनार ॥ देइ ददामा जीतनाहो, चा
ल्यो देवमुरार ॥ य० ॥ १ ॥ श्रीगीरनारे अत्रीया,
मनने अति उछाह ॥ आरण कारण साचवियो हो,
किंधो रुखमणी व्याह ॥ य० ॥ २ ॥ व्याह हुउ जेह
थानके, रुखमणी वन तस नाम ॥ संगति मोटा मा
पाता हो, सबहीपरे अजीराम ॥ य० ॥ ३ ॥ खबर हुइ
द्वारामति, परणी आशे नाथ ॥ सजन सुजटजन सानटा
हो, आइ मिल्या सहु साथ ॥ य० ॥ ४ ॥ नगरीनी शोजा
करी, आगी जात अनुप ॥ घरघर वार वधामणा

हो, हरख्या यादव जूप ॥ य० ॥ ५ ॥ कोइ हटालें
 उरडे, कोइ आंगणे अपार ॥ गोखे चमी कोइ गोर
 मीहो, को चातुरी चौवार ॥ य० ॥ ६ ॥ को गलीए को
 चोतरे, चाचर उनी कोइ ॥ लाजन सुसरा जेठकिहो,
 कौतुक मीठो होइ ॥ य० ॥ ७ ॥ बिंद बिंदणी देख
 वा, लालच लागी नार ॥ होइ रही बेफूमताहो, तन
 मन सुधन विसार ॥ य० ॥ ८ ॥ अचरिज किधां ए
 तलां, चुमाबंध उदार ॥ केडे पेहेरयो कटीमेखलाहो,
 माथे करत सिणगार ॥ य० ॥ ९ ॥ कुंकुम लाया लोच
 नां, काजल दियो कपोल ॥ उघाडे माथे फिरेहो, नि
 र्लज्ज थइ निटोल ॥ य० ॥ १० ॥ पुत परायो लेचली,
 आपरो वंतो मेल ॥ अलजा लगे आधी धसेहो, एक
 एकने टेल ॥ य० ॥ ११ ॥ कोइ वधावे फूलडे, कोइ
 हिरालाल, मणी माणिकने मोतीया हो, अद्भुत थाल
 रसाल ॥ य० ॥ १२ ॥ कोइ वदे वरकामनी हो, धन
 रुखमणी अवतार ॥ सब विध सुंदर सामलो हो, जे
 ह पाम्यो जरतार ॥ य० ॥ १३ ॥ अवर अनेरी जा
 मनि हो, जांखे वारंवार ॥ वडवखता श्री कृष्णजी हो,
 पाधि नार उदार ॥ य० ॥ १४ ॥ विविध विनोद वि
 चारनि, वात सुणतां स्वामी ॥ लोहासण कृत मंगले
 हो, मंदिर आया तान ॥ १५ ॥ धन्य धन्य माता दे
 वकि, वर बहु लाग्या पाय ॥ दिये आसिस सहायणि
 हो, फूलि अंग न माय ॥ य० ॥ १६ ॥ मंदिर उंचो

नव खणो, अधीक अनोपम सार ॥ रुखमणिने हरि
 आपियो हो, अन धन जरित अपार ॥ य० ॥ १७ ॥
 हय गय रथ वर वाहणि, आयुध विविध प्रकार ॥ ह
 रि आचुपण अति घणा हो, ते घर मांहि उदार ॥
 य० ॥ १८ ॥ दास अने दासि तणो, बहुलो तस प
 रीवार ॥ स्वामी मयाथी सह हुवे हो, ए सुधो व्यवहारे
 ॥ य० ॥ १९ ॥ स्नान अने नोजनपणे आसन सय
 न विचार ॥ हसन विलोकन चांखणो हो, रुखमणिनो
 अधीकार ॥ य० ॥ २० ॥ मनसाने वाचाये करी, का
 या केरो तेम ॥ खीर नीर जीम मिलि रह्यो हो, श्री
 हरी रुखमणि प्रेम ॥ य० ॥ २१ ॥ दक्षणाश्रेणि जंबु
 पुरी, जात्रु पुत्रि जाण ॥ जंबुवंति रुषि वाक्यथि हो,
 आशि श्री जगवान ॥ य० ॥ २२ ॥ ततद्दण रोमज
 राजियो, सघला नायक जोइ ॥ लखमणा नामे कुंवरी
 हो, परणि श्री हरी सोइ ॥ य० ॥ २३ ॥ राष्ट्रवर्धन
 राधजी, सोरठ केरो इसा ॥ सुसिमां पुत्रि वरि हो, बंधव
 हणी जगदिश ॥ य० ॥ २४ ॥ सिधु देशनो स्वामी
 जी, मेरु चूप वड राय ॥ पुत्रि गौरी गुणजरी हो, गी
 रधरने सुखदाय ॥ य० ॥ २५ ॥ हलधरनो मामो न
 लो, हिणएव नाच नरेशा ॥ पुत्रि तोपद्मावति हो, स्वयं
 वर बरीच विशेष ॥ य० ॥ २६ ॥ देश महा गंधारजी,
 इंद्रगीरी पति तास ॥ पुत्र मारी, पुत्रि वरी हो, गंधा
 री तोल्हास ॥ य० ॥ २७ ॥ ए आठे पटरागणि, ए

आठे समतोल ॥ ए आठे सिव गावनि हो, ए आठे
निरमोल ॥ य० ॥ २८ ॥ ए एकावनयी ढालमे, वंछि
त फलि जगीश ॥ श्री गुणसागर सूरिजी हो, पुण्य क
रो निशदिङ्ग ॥ य० ॥ २९ ॥

चोपाइ ॥ खंड खंड रस ठे नत्र नवा, मुणतां झीठा
साकर जेवा ॥ श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, बीजो
खंड ए पूरो थयो ॥ १ ॥ इति द्विती खंडसमाप्तः ॥

॥ श्री हरी वंस ढालसागर प्रबंधे त्रीतीय खंड प्रारंभः ॥

दुहा ॥ अरि हणवे अरिहंतजी, तास करी परणास
॥ अब त्रिजा अधीकारनो, उद्यम करुं सकाम ॥ १ ॥
रुखमणी रागे राचियो, सुख माने हरी राय ॥ तिम
तिम नामा आवटे, ते दुःख कह्यो न जाय ॥ २ ॥
नारद आवि बोलियो, नामासुं ततलेव ॥ वाको मुख
क्रिया तणो, ए फल जोगव देह ॥ ३ ॥ तिम तिम
सा गाढि वले, आराति घणि मन मांहि ॥ सोदय सा
रु हियडे धब्यो, ते उत्तरे नहि प्रांहि ॥ ४ ॥ उत्तम
उत्तमता नजे, न करे ताणो ताण ॥ रुखमणी हरिसुं
विनवे, नामा आराति जाण ॥ ५ ॥

ढाल ५२ मी ॥ श्री श्री मंदिर साहिव मोरा ॥ ए
देशी ॥ एक दिवस रुखमणी हरि साथे, किजी ए अ
रदासोरे ॥ नामा घर प्रीतम पाव धारो, सहुने पिठ
नि आशोरे ॥ ए० ॥ १ ॥ कृष्ण कहे ए सा अहंकार

णि, तेहथी न लहे मानोरे ॥ ते सोनो सुं करवो सुं
 दरी, जेहथी त्रुटे कानोरे ॥ ए० ॥ २ ॥ रुखमणी वो
 ले अमृत तोले, यद्यपी जो त्रुटे कानोरे ॥ तोपिण सो
 नोकोई न नाखे, ए प्रगट उखाणोरे ॥ ए० ॥ ३ ॥ आ
 पण आदरीयुं केम अलगुं, किधुं जाइ कतोरे ॥ विप
 अने विपधर दुखदाइ, शंकर संग वलंतोरे ॥ ए० ॥
 जोगवणो जग खाटुं खारुं, जेतो लाग्युं लारोरे ॥ उ
 आ आगे नहि नहि नाखे, शिव साता दाताओरे ॥
 ॥ ए० ॥ ५ ॥ नोतन हिरो लाल नगीनो, नोतन नारी
 निरखिरे ॥ जोरे पुरातनने परहराये, तो ए नहि घर
 सरखीरे ॥ ए० ॥ ६ ॥ आग थकि अधिको अति उ
 न्हो, नारीनो निसालोरे ॥ नाह नीपटनी तेह पण त्रि
 य, तजवी नही नीरासोरे ॥ ए० ॥ ७ ॥ वेगे सिधावो
 वार म लावो, पोखो परीघल प्रेमोरे ॥ जो न
 गया तो तुहसुं बोलण, आज थकी मुज ने
 मोरे ॥ ए० ॥ ८ ॥ रुखमणी वचने राय विच्यारी,
 वात सकलहि वारुरे ॥ निर नरेसरे न्हाय क
 हाणां, फेरणहारा सारुरे ॥ ए० ॥ ९ ॥ रुखमणि
 मुखनो सुरजी सुगंधो, लेइ तबोल नरिंदोरे ॥ नामा
 नामनिने घरआयो, नामा मन आणंदोरे ॥ ए० ॥
 ॥ १० ॥ वक्र वचनसुं नामा नाखे, ए तुम्ह जेह न
 होवेरे ॥ जूलें पधारया प्रथविपति तुम्हें, ॥ रुखमणि
 मारग जोवेरे ॥ ११ ॥ कृष्ण कहे हां उ घरनाहि, पि

ए आयो सो आयोरे ॥ नर्मसु गर्भ वचन केलवता,
 जाना अति सुख पायोरे ॥ ए० ॥ १२ ॥ कृष्ण वहे
 झुज निद्रा आवे, एतो मे धूर जाणिरे ॥ सोवा कारण
 ह्म घर आया, उं नव परणित राणिरे ॥ ए० ॥ १३ ॥
 जिम जिम आवो नीत नीत आवो, सुख निद्रा प्रभु
 छिजेरे ॥ ह्मे पुरातन उंतो नोतन, नव नव लाहो
 लिजेरे ॥ ए० ॥ १४ ॥ कृष्ण कहेरे तुं इम शुं बोले,
 नवि घणोरी नारिरे ॥ तु महारे धुरकी पटराणी, आ
 दि लगे सुविचारिरे ॥ ए० ॥ १५ ॥ कपट निंदमें
 प्रचुजी पोढ्यो, अंचल गाठ निहाळीरे ॥ खोलीलियो
 तबोल तेवारे, अमे जुली सा बोलीरे ॥ ए० ॥ १६ ॥ उर
 सीए सूकी चंदन साथे, घसी लियो सतनामारे ॥ क
 रे विलेपन वदन शरीरे, वशीकरण अनीरामारे ॥ ए०
 ॥ १७ ॥ एतले जागी बळ्या जगपति, रे जोली चर
 माणीरे ॥ रुखमणी मुख तंबोल शरीरे, तुं दिसे लप
 टाणीरे ॥ ए० ॥ १८ ॥ हांसो कृष्ण तणो न समावे,
 हाथे वजावे तालीरे ॥ होइ खिसाणी हरी पटराणी,
 बोले उत्तर वालीरे ॥ ए० ॥ १९ ॥ थारो सेहज न ग
 योरे गोवालीया, स्युं वमराय कहायोरे ॥ श्रीती पनो
 ती काजे आज, ए जाणी बुकी तनलायोरे ॥ ए० ॥
 ॥ २० ॥ कृष्ण कहे हां तो तुं साची, पुनरपी जाना
 जाखेरे ॥ रुखमणी मिलवा तणो उमाह्यो, पिउका जो
 दिन दाखेरे ॥ ए० ॥ २१ ॥ नूप जणे हुं तुज न प्रति

ज्युं, के साची के जुठीरे ॥ जुठ कहे जुठाना जाया, जाणी
 के अधिको उठीरे ॥ ए० ॥ २० ॥ मुलकत मुलकत ताम मु-
 रारी, माननीनुं मन मोहेरे ॥ ए नव हीथि रीस करे
 वि, सुंदरी शुं सति सोहेरे ॥ ए० ॥ २३ ॥ सुस करे
 जो बाबाजीका, कपट न करवो कोइरे ॥ खिरनिर जिम
 सांहीमांहे, मिलस्यां बहेनड दोइरे ॥ ए० ॥ २४ ॥ तो
 हुं तुजने रुखमणी मेलुं, जामा कहे ए नीकीरे ॥ खिसा
 णी पिण हुइ अयाणी, न पिवांणी प्रचुकीकिरे ॥
 ॥ ए० ॥ २५ ॥ कृष्ण देव रुखमणी घर आया, जा
 मा पाय लगावारे ॥ कुण उपाय करे करमे तो, लागी
 चात्र सुणावारे ॥ ए० ॥ २६ ॥ स्वेत साटीकारक कां
 चली, नल नुपण पहिरावारे ॥ वृद्ध अशोक तले
 जामा वन, पद्मासन पूरावारे ॥ ए० ॥ २७ ॥ जामा
 शुं जांखे नल जावनि, सही करी रुखमणी मिलसेरे ॥
 कृपानाथ कृपा जो करगे, दूधे साकर नलसेरे ॥ ए०
 ॥ २८ ॥ आप गुल्ममें गुप्तपणे रही, कौतुक जोवे
 जावारे ॥ सतजामा एकाकी रामा, वनमे आवि तामारे
 ॥ ए० ॥ २९ ॥ पद्मसीला उपर सा बइठी, दिठी रूप
 रत्नालीरे ॥ सतजामा जाणी वनदेवी, लागी तनमल
 तालीरे ॥ ए० ॥ ३० ॥ के असरी के किन्नरी सारदा,
 रोहीणी रति जगजाचीरे ॥ कमला नाग तणी वरक
 नरी, सुरपति रमणी साचीरे ॥ ए० ॥ ३१ ॥ कोइ हो
 ज्यो ए देवि परतद्ध, पुण्य जोगे प्रगटाणीरे ॥ से

वा फल देसे हम जांणी, लावी पाती पाणीरे ॥
 ॥ ए० ॥ ॥ ३२ ॥ पूजी प्रणमीने वर मांगे, माधव
 मो वश आवेरे ॥ मात मया करशो परकिजे, रुखम
 णीना मन जावेरे ॥ ए० ॥ ३३ ॥ नाथ्या बेलतणी
 परे चाल्यो, हरी आवे मुऊ पासेरे, तो तुम सेवा
 जाणु साची, उनथी अलगो नासेरे ॥ ए० ॥ ३५ ॥
 एम कही पगे लागी जामा, करती लालच लाखोरे
 ॥ अरधी दोस न देखे कोइ, सहने सुख अजि ला
 खोरे ॥ ए० ॥ ३५ ॥ ए बावनमी ढाले जाख्यो, पगे
 लागण अधिकारोरे ॥ गुणसागर कहे साहीं सोहागण,
 जेहने वश नरथारोरे ॥ ॥ ए० ॥ ३६ ॥

दुहा ॥ जामा नरमपडी घणुं, जांखे वारंवार ॥
 देवि वरदे वेगशुं, रुखमणी आवणहार ॥ १ ॥ आ
 ख नरे आतुर थइ, देवी न आपे वाच ॥ एतले हरी
 परगट थयो, माग माग वर साच ॥ २ ॥

ढाल ५३ मी ॥ सीयल सुर तरुवर सेविए ॥ ए
 देशी ॥ माग्य माग्य वर माननी, अवर न एहवी दे
 वि हो ॥ जो चाहे सुख संपदा, सुधी एहने सेवि हो
 ॥ मा० ॥ १ ॥ हरी हरणाक्षी शुं कहे, तजी विजो जं
 जाल हो ॥ रुखमणी रागे राचतां, सघळी वात रसा
 ल हो ॥ मा० ॥ २ ॥ उठी ततक्षण तारणी, रुठी भार
 एहार हो ॥ अवर न देवी एहवी, जेहवी एह वरनार
 हो ॥ मा० ॥ ३ ॥ क्रोध न किजे, कामनी, क्रोधे होय

विणास हो ॥ क्रोध तजी एधावतां, पूरेम
 भनि आश हो ॥ मा० ॥ ४ ॥ नामाचरी
 बडवमे, उठी अति बरढाय हो ॥ रे रे धूरतसि
 रोमणी, वादे हस्यां शुं थायहो ॥ मा० ॥ ५ ॥ ए पर
 देशण प्राहुणी, सगो न को कहेवाय हो ॥ जो हुं मन
 खेंदी रहु, फाटी हियो मरी जाय हो ॥ ना० ॥ ६ ॥
 ते माटे पगे लागीने, में दियो सनमान हो ॥ नंद नं
 दन तुं मोहशुं, मेलण लागो तान हो ॥ मा० ॥ ७ ॥
 जे नर बाहिर सामला, मनमां मडला सोइ हो ॥ दुमुहा
 माणस माणसा, मांहि गणे नहिकोइहो ॥ मा० ॥ ८ ॥
 उदर वस्यो जव मायने, तबहीथी परपंच हो ॥ उप
 जीयाथी अति घणा, आजलगेउ संच हो ॥ मा० ॥ ९ ॥
 वाध्या जइ घर ग्वावालने, ग्वालतणा गुण जोडहो ॥
 नाच्यो राच्यो रंगशुं, करत कुतुहल कोरुहो ॥ मा० ॥
 ॥ १० ॥ रित न जाणी राजनी, जाणी गाय चराय
 हो ॥ किसो पलेखो किजीए, दैवां अवलो न्याय हो ॥
 मा० ॥ ११ ॥ निपमनि ठोमि हरि, करि घणा संहा
 र हो ॥ जोगीनि वाहे वहि, लागी तो नटलारहो ॥ मा०
 ॥ १२ ॥ जेति मनमा उपजे, तेति मुहंडे मतआण हो
 ॥ लोहिने लफ्फे करी, चंमालि चित आण हो ॥ मा०
 ॥ १३ ॥ कृष्ण कुतुहल केलवि, आयो पुर मजार
 हो ॥ लेहणो लाजे आपणो. ए दोइ बडनार हो ॥ मा०
 ॥ १४ ॥ रुखमणि उठि धसमसि. लागी नामा पाय

हो ॥ नामाये जल जावसुं. लिधी कंठ लगाय हो ॥
 मा० ॥ १५ ॥ कुशल वात पूढि घणि, नामा धरी
 अति प्रेम हो ॥ थारी देवि क्रपा थकि, महारे नित
 हि खेम हो ॥ मा० ॥ १६ ॥ हसी रमी हेत प्यारसुं,
 चालि लहिय पसाया हो ॥ आंवि पाक्यो उपरे, मांहि
 न जाय कसाय हो ॥ मा० ॥ १७ ॥ अवर अनेरी
 वातनो, थोसो धरे गुमान हो ॥ नामाने पगे लागणो,
 साले साल समान हो ॥ मा० ॥ १८ ॥ जलण जलं
 तो जाणिये, जलसुं रहिए लाग हो ॥ जो जल आप
 णहि जले, तो किहां जाय जगाय हो ॥ मा० ॥ १९ ॥
 जो पिउ पाडे आंतरो, लोगासुं स्यो रोस हो ॥ नामा
 मन समजावसि, कर्म आपणो दोश हो ॥ मा० ॥ २० ॥
 ए त्रेपनमी ढालमें, रंग विनोद विलास हो ॥ गुणसा
 गर शुच कर्मथी, पोहोचें मननि आश हो ॥ मा० ॥ २१ ॥

हुहा ॥ रवि उगे शशी आथमे, शशी उगे रात्रे
 तेम ॥ रवि शशी होवे एकठा, एक अकाशे केम ॥ १ ॥
 वासुदेव वसुधा विषे, आण मनावे ताम ॥ प्रतिमल
 मद मारवे, सुजस लहे अजिराम ॥ २ ॥

ढाल ५४ मी ॥ बे बे मुनिवर बोहरण पांगरघारे
 ॥ ए देशी ॥ होवे हो कृष्ण सकल जगनो धणि, जोवो
 हो नवमां प्रतिमल्लने हणिरे ॥ ए आंकणी ॥ पवनद्वी
 पथी आवियारे, वेपारी वड नामोरे ॥ रत्न कांबल रु
 यडारे, मूल घणे अजीरामोरे ॥ हो० ॥ १ ॥ लाज वि

च्यारी अति घणोरे, राजग्रहि आवंतोरे ॥ जीवज,
 रयाने आगलेरे, वस्तु जलि लावंतोरे ॥ हो० ॥ २ ॥
 घटी मोल जब साजलघोरे, विणजारा बोलंतोरे ॥ गो
 की नगरी द्वारिकारे, न्याय हमे मोलंतोरे ॥ हो० ॥ ३ ॥
 चमकि जीवजस्या खरीरे, सुणि नवलो अनीधानोरे
 ॥ कवण देश पुर केवडारे, केहेनि वर्ते आणोरे ॥
 हो० ॥ ४ ॥ सोरठ देश सुहामणोरे, सायरदत नि
 वासोरे ॥ नव बारी नगरी जलीरे, कृष्ण नरेसर ता
 सो रे ॥ हो० ॥ ५ ॥ आदि विगोइ व्यंतरिरे, नाथ्यो
 कालि नागोरे ॥ गोवर्धन गीरि धारीयोरे, जेहनि अ
 विचल पागोरे ॥ हो० ॥ ६ ॥ दांत उखालण गयं
 वरो, मल्ल पढाडण हारोरे ॥ कंस कंद निकंदणोरे, उ
 ग्रसेन आधारोरे ॥ हो० ॥ ७ ॥ चदेरि पति मद मा
 रणोरे, अरि कुल केरो कालोरे ॥ कृष्ण कहावे के हरीरे,
 नामे दुर्जन सालोरे ॥ हो० ॥ ८ ॥ विरुद सुण्यां अ
 ति आकरोरे, अंगुठाथि जालोरे ॥ नथी आवि मस्त
 केरे, आतुर थइ असरालोरे ॥ हो० ॥ ९ ॥ हड्डंचो
 हटा आण केरे, कंत अने जलाचाइरे ॥ विरहे विगो
 हि विलविलेरे, वेदन सहि न जायरे ॥ हो० ॥ १० ॥ य
 दुपतिनी पदमणारे, पोखे पियुसु प्रेमोरे ॥ हुं रंरुपो जो
 गवुरे, अब मुऊ जीवण नेमोरे ॥ हो० ॥ ११ ॥ ज
 रासंध पासे जहरे, पापणि मरणो मांगेरे ॥ कंत अ
 ने भाइ तणोरे, अरि फिरे मुऊ आगेरे ॥ हो० ॥ १२ ॥

चूप चणे मत रोवहिरे, रोसे तुऊ रिपु राणिरे ॥ अरितो
वरतो जीवतोरे, पिण में खबर न जाणिरे ॥ हो० ॥ १३ ॥
स्वामी द्रोहना पातकिरे, रे मंत्रि तु दिसेरे ॥ वयरी किम
बंधवा दियोरे, होठ डसे नृप रीसेरे ॥ हो० ॥ १४ ॥

ढाल तेहीज ॥ रांग कडखो ॥ कोपियो राज
ग्रहि पति राजवि, वयरी निसुणि पुत्रि तणा बोल
जारी ॥ कहे राजा जरासंध सुण पुत्रिका, पूरवु आ
ज आशा तुमारी ॥ को० ॥ १ ॥ मूलथी वंस उनम
लसुं यदु तणो, कोपियो मगधेश कहे एम वाणि ॥
चढतरी वात सेना नणि, आदिसे मंत्र विवारीयो
पिण राय गुमानि ॥ को० ॥ २ ॥ थयो परजात करी
शिणगार शोना धरी, जंजासाले ताम जंजावजावे ॥
राय राणाजीको हाथ लोढो धरे, नाना मोटा कोड रे
ण न पावे ॥ को० ॥ ३ ॥ निसुणि प्रवल दल सबल
जेला हुवा, केरु कशीया तणा देइ तशीया ॥ थापमे
कंध एक एक हयवर तणा, मूठ वल घाल संग्राम
रसिया ॥ को० ॥ ४ ॥ रज चढि गयण रणथंज जि
म उपज्यो, पाखरे रोल घमसाण वाजी ॥ स्वामि त
णि वात अखियात करवा नणि, सुजटानि नयन ब्र
ह्माड लागी ॥ को० ॥ ५ ॥ सब लढि चाल सीशुपा
ल सुगल तिम, सकल सिमाडिया चूप आया ॥ पु
त्र सहदेव आदिक वरा राजवि, शस्त्र ठत्रिस धरी
वेण धाया ॥ को० ॥ ६ ॥ तेम दुर्योधनादिक वडा रा

जवि. राण-राजा नरा उत्तर ढालां ॥ सहस्र गमे ति
 हां नृप आवी मिल्या, केइ गजरथ तुरंगम केइ
 पाला ॥ को० ॥ ७ ॥ चढतवेला मुगट सीसथी गीर
 पड्यो, त्रटकी निज हाथशुं हार जुड्यो ॥ वाम तसु
 आंख फूरके घणुं उपरे, लोक सघला कहे पुण्य खुड्यो
 ॥ को० ॥ ८ ॥ गृध अंबरे फिरे ठिक आगल करे, वा
 यरो ते प्रतिकुल वाजे ॥ बहुल अपसुकन वारी जतो
 राजीयो, खिजतो आपणा बोल काजे ॥ को० ॥ ९ ॥
 पारविण पायदल तुरीय गयंवरतणो, कलकलाट श
 ळे वधीर लोक थायो ॥ अश्व शूरा आहणी सबल
 रज साधणी, छल नणी जाय आकाश ढायो ॥ को०
 ॥ १० ॥ धडहडे धरणीतल सबल सेनाजरे, जलधी
 जल उगले अति जोरे ॥ सघसले पनंग जारे करी
 संकतो, खलजल्या देव कटक घणघोरे ॥ को० ॥ ११ ॥
 मगध देशधीपति मदे नरयो मलपतो, गंध हस्ती चढे
 गर्व गेहलो ॥ सामुहो द्वारकां नगरी सीमा नणी, चाल्यो
 सेन्या लेइ राय वहेलो ॥ को० ॥ १२ ॥ एहवे आवीयो
 नारद मुनी कौतुकी, जरासंधशुं हसी इम जाले आज
 हरी हलधर प्रबल प्रताप धर, नवी चाले एहधी घणुं
 शुं जाखे ॥ को० ॥ १३ ॥ राय सुनट तव कोपी नारद
 नणी, देइ चपेटा चरण लात कुड्यो ॥ फोनी कमंडलु
 कोपिन खेंचो घणो, हा हा नहि नहि करी सांजुड्यो
 ॥ को० ॥ १४ ॥ राग आशा अने सिंधुए ए सुणी, जरा

सिंधु चढतरी वार ए ठामे ॥ जात कमखे कही ढाल
लावण जणि, सुणतां सूरमा सूर पामे ॥ को० ॥ १५ ॥

ढाल तेहीज ॥ राग मूलगो ॥ चंजा वजावी ततखी
णैरे, किधो राय प्रयानोरे ॥ वेलापुगी आण केरे, दूर
गयो सयाणोरे ॥ हो० ॥ १५ ॥ साहण वाहण साम
टोरे, साथे सह राजानोरे ॥ धसमस धाया आवही
रे, दलबलने प्रमाणोरे ॥ हो० ॥ १६ ॥ ए चोपनमी
ढालमेरे, जावी लीधे जातोरे ॥ गुणसागर नवी शुं क
रेरे, होवे होनहाररी वातोरे ॥ १७ ॥

ढुहा ॥ सेन लेह जरासंध ते, आयो रणनी सीम ॥
चक्र व्युह आकारमें, संप साजथी जीम ॥ १ ॥ आ
रा सहस्र कियां नलां, लक्षकर मेली थाट ॥ एक आ
रे राय सहस्रबे, रोके आडा घाट ॥ २ ॥ रथ बे सह
स्र मांहे नला, गज एक सहस्र वखाण ॥ पाच सह
स्र तेजी तपे, पाय सोल प्रमाण ॥ ३ ॥ आठ सह
स्र जोधा नला, सुरामें सीरदार ॥ चक्र मुखे कौरव
घणा, कहेतां नावे पार ॥ ४ ॥ मध्य जाग पोते रहें,
आरा सहस्रने मांहे ॥ बल अरि चाली नवी सके, अ
तुली बलबे त्यांही ॥ ५ ॥ नारद मुनि कोपे चढ्यो,
अवगुणीयो मुऊ आज ॥ गुमानी माने चढ्यो, रा
खी नही मुज लाज ॥ ६ ॥ उत्पत्यो अंवर मारगे, क
लुष नरयो ऋषी ताम ॥ आयो नगरी द्वारीकां, हरी
ने जणावण काम ॥ ७ ॥ तव नारद कृष्णने कहे, आ

व्यो नृप जरासंध ॥ क्रष्णे चंजा वजाडीने, करी क
टकनोबंध ॥ ८ ॥

गाथा ॥ हरी सुतो थइ सधीर, आव्यो जरासिं
धु नडवीर ॥ मुऊ दीठे सही करी मानो, कीम अरी
अणाराखस्ये गानो ॥ १ ॥

ढाल ५५ मी ॥ थारा मेहेला उपर मेह, ऊवुके
वीजली हो लाल ॥ ऊवु० ॥ ए देशो ॥ मिल्या तिहां
दशे दशार, जाणे दुर्धर केशरी हो लाल ॥ जा० ॥
समुद्रविजय अति सूर, समुद्र जीत्यो तनुजे करि हो
लाल ॥ जी० ॥ १ ॥ माहानेमी सत्यनेमी द्रढ, नेमीसुं
नेमी लह्यो हो ॥ ला० ॥ नेमी० ॥ रथनेमी श्री अरि
ष्ट नेमी, जिनवरं जग गुरु ते जयो हो ॥ ला० ॥ जि०
॥ २ ॥ साहाजयने जयशेन गौतम, चित्रा स्वठे
गुणि हो ॥ ला० ॥ चि० ॥ सुकल्क तेजशेन, सूर
मांहि जे शिरोमणि हो ॥ ला० ॥ सु० ॥ ३ ॥ जय
मेघ अने सिवनंद, विश्वकसेनादि बळे पुराहो ॥ ला०
॥ वि० ॥ समुद्र विजयनां ए पुत्र, एकरथी ठे अधी
क सूर हो ॥ ला० ॥ ठे अधिक० ॥ ४ ॥ विजो दशा
र अक्षोभ, आठ पुत्र तेहनां जाणिए हो ॥ ला० ॥
ते० ॥ उद्धव अक्षुभित, वामदेव द्रढव्रत वखाणिए हो
॥ ला० ॥ द्र० ॥ ५ ॥ महो अंनोजलने आगल्ये, नि
धी शब्द जिहारे जोमिए हो ॥ ला० ॥ जिहां० ॥ हो
जी थाए तिहारे त्रिणे ताम, सूत्रने किम अवखोमीए

हो ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ स्तमित त्रिजो दशार, पा
 चते पुत्र तेहने अठे हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ श्रुर्मिमानं
 ने वसुमान, विरपाटल स्थीर युधे गेठे हो ॥ ला० ॥
 यु० ॥ ७ ॥ सागर चौथो दसार, षट् पुत्र तेहना वा
 ल्हेसरि हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ कंपन निःकंप लक्ष्मिवा
 न, श्रीमान युगांतने केशरि हो ॥ ला० ॥ यु० ॥ ८ ॥
 पांचमो दशार हेमवान, त्रण पुत्र तेहनां जाणजो तुमे
 हो ॥ ला० ॥ जा० ॥ विद्युतप्रजने माल्यवान, गंध
 मादन गण्यां अमे हो ॥ ला० ॥ ग० ॥ ९ ॥ अच
 ल ठठो दशार, सात पुत्र तेहनां समजि लिया हो ॥
 ला० ॥ ते० ॥ माहेद्र मलय माहागिरी शैल, नाग बले
 कुल निर्मल किया हो ॥ ला० ॥ कु० ॥ १० ॥ धरण
 नामे सातमो दशार, पंच पुत्र तेहनां पूढयो हो ॥ ला०
 ॥ ते० ॥ विश्वरूप धनजय कर्कड, श्वेतमुख वासुकि
 ए थयो हो ॥ ला० ॥ वा० ॥ ११ ॥ पूरण नामे आठ
 मो दशार, सुत चार तेहने सुंदरुं हो ॥ ला० ॥ ते०
 ॥ कर्मुख कर्कर कःपुरः, कर्धर महाबल नाधरु हो ॥ ला०
 ॥ म० ॥ १२ ॥ नवमो दशार अनीचंद्र, षट् पुत्र ते
 हनां जाणो खरा हो ॥ ला० ॥ ते० ॥ शशि चंद्र चं
 द्राज शशांक, सोम अमृतप्रज सुंदरा हो ॥ ला० ॥
 अमृ० ॥ १३ ॥ दशमो दशार वसुदेव, तेहने तो पुत्र
 वे घणा हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ कुर अंकुर ज्वलनप्र
 ज ॥ अशनीवेग वायुवेग नही मणा हो ॥ ला० ॥ १४ ॥

महेंद्रगती सिद्धार्थ, अभितगती वली सादरयो हो ॥
 ला०॥वली०॥सुदारुक दारुक अनादृष्टी, रेंममुष्टी सिलां
 युद्ध करयो हो ॥ ला० ॥ सिला० ॥ १५ ॥ जरा कु
 मारने वाहलीक, गंधार पिंगल आदे घणा हो ॥ ला०
 ॥ पिंगल० ॥ राम विदुरने शारणं, रोहीणीना पुत्र त्रणे
 ए हो ॥ ला० ॥ पुत्र० ॥ १६ ॥ देवकीनो पुत्र श्रीकृ
 ष्ण, जग विख्यात जाणो जेह हो ॥ ला०॥जाणो० ॥ गुरु
 रवीर कोटीर, अधिक तेजे जाण जो हो ॥ ला० ॥ ते
 जे० ॥ १७ ॥ राम पुत्र नीरुध उल्मुक पीठ, मारुदत्त
 शक्रदमणो हो ॥ ला० ॥ शक्र०॥ कृष्णनो पुत्र एक, चा
 नु जमर आगे सुयो हो ॥ ला० ॥ आगे० ॥ १८ ॥
 धीर गंजीर गोतम, सौधर्मा उदधी वली हो ॥ ला०
 ॥ उद० ॥ धर्माप्रज्ञेन जिन सूर्य, चंद्रमारु कृष्णक आ
 ता मीली हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १९ ॥ उग्रसेन आदि
 नरेस, आदव वंशी ना गण्या हो ॥ ला०॥ वंशी० ॥ अं
 ग जात्र जाणो अनेक, ज्ञानी वीण न जाए गण्यां हो
 ॥ ला० ॥ न जा० ॥ २० ॥ मामाइ फूड्याइ अनेक,
 स्वशुर पद्धनां जाणजो हो ॥ ला०॥ पद्ध०॥ एतो ढाल
 रसाल, उदय करी मनमां आणजो ॥ हो ॥ ला०॥ म०॥ २१ ॥
 दुहा ॥ कोष्ठकेथकी तसु मुहुरते, गरुडध्वज रथारु
 ढ ॥ कृष्ण थया तव दारुके, अश्व ते जोड्यो प्रौढ ॥
 ॥ १ ॥ चतुरंगी सेनातजी, लिया सहु जादव साथ ॥
 शुभ शकुने इशान दिशामां, चाल्या श्री गदुनाथ ॥ २ ॥

जादवने पांशुव तणां, कटक तणो नही पार ॥ चाल
 ता अचलाचले, फूलाचल जाण्या तीणीवार ॥ ३ ॥
 पेंतालीस जोजन अरहा, आवी करघो पडाव ॥ श
 त्रपलि गामनि सिममां, बहुविध करिय वनाव ॥ ४ ॥
 एहवे तिहां कृष्ण सैन्यमां, वैताढ्य वाशि अनेक ॥ वि
 द्याधर आवि नमे, समुद्रविजयने विवेक ॥ ५ ॥ कहे
 स्वामि तुज बांधवे, वसुदेवे धरि नेह ॥ सेवक करि अ
 म थापियां, उपकार किंवा अठेह ॥ ६ ॥ युद्ध समय
 जाणि करि, आव्योबुं तुम पास ॥ सेवक अमने ले
 खवि, काम बतावो खाश ॥ ७ ॥ वचन सुणिने हर
 खियां, समुद्रविजय राजान ॥ नेह नजरे निरखि तदा,
 आपे अति सनमान ॥ ८ ॥ वसुदेवे पिण तव तिहां,
 खेंचरने बहु प्रेम ॥ अति सनमानि राखियां, पूढि कु
 शलने खेम ॥ ९ ॥ विद्याधर कहे रायजि, राम कृष्ण
 समजात ॥ जगमां कोइ लाने नहि, जरासिंधु कुण
 मात ॥ १० ॥ बलि खेचर हरिने कहे, अमने द्यो आ
 देश ॥ वैताढ्य वाशि विद्याधरा, अन्य अठे सुविशेष
 ॥ ११ ॥ जरासिंधुना पदार्थी, तुमने न माने जेहाते
 हने जीतवा कारणे, जाइए अर्भे गुण जेह ॥ १२ ॥

ढाल तथादेशी तेहिजा ॥ सुणी नारद वधण वेधाला,
 वाजे गुहीर त्रंवालु गुंजाला ॥ सिंहनाद हरी तव मूके, स
 ज यादव थडने घूके ॥ १ ॥ दस सेने दसारथ चाल्या,
 जुजूआ नवी रहे खाल्या ॥ उठ कोढ पुत्र परवरीयां,

पेहेरी सनाह खड्ड वेगे धरीया ॥ २ ॥ उग्रसेन कटक
 पोतानो, लेइ चाल्यो देइने तानो ॥ माहसेन राजा यु
 द्ध रागी, बलतेग चीहु खुटवागी ॥ ३ ॥ मांहे पांच
 पांडव वड जोध, रण करतां न आवे बोध ॥ तीम सु
 सरा साला बहु मिलीया, कायराचीत मांही खलजली
 या ॥ ५ ॥ सर्व कटक मिल्युं शुज शुकने कुण चूकेए
 जाणी तकने ॥ रण वाजिज्रजना वाजे, रथ वेठा श्रीकृ
 ष्ण विराजे ॥ ५ ॥ बली निखट कुमर सीरदार, धरघो
 महानेमी सेननो चार ॥ आवी खेंच्या रणने तीर, मे
 रा देइने उतराधीर ॥ ६ ॥ गरुड व्युह आकारे कही
 ए, चंचु अग्रे बलजद्र लहीए ॥ एहवे इंद्रपुरीमें बैठो,
 अवधे सौधमें इद्रे दीठो ॥ ७ ॥ प्रजु युद्ध कार
 ण परवरीया, बालपणे कौतुक रस चरीया ॥ मूक्यो
 सारथी मातुल सार, रथ पोताने तैघार ॥ ९ ॥ उत्री
 से आयुद्ध धरीया, जेट सूकीने संचरीया ॥ कंचन स
 नाह पेहेरी सधणे, चाल्यो सारथी नेमने वधणे ॥
 ॥ १० ॥ प्रजु वेशी रथ सोजाव्यो, सवी जोतां से
 न्यमे लाव्यो ॥ केइ सूर सूजट सज्ज थावे, अष्टापद
 ज्युं उपमा पावे ॥ ११ ॥ मांहे तीम गदानो रसियो,
 परसेन देखीने हसीयो ॥ एम सुजदनी कोडा कोडी, रण
 करवाने होमाहोमी ॥ १२ ॥ समपाधर जोइन चो
 खाल्युं, सेन आप आपणुं बाल्युं ॥ रणथंज ती
 हां आरोप्यो, धज दंडे करी बहु ठप्यो ॥ १३ ॥ वी

र विद्याधर बहु मिलीया, संघवटे सहु आवी नली
 या ॥ कोइ कौतुक जोवा आवे, जट देखीने जय पा
 वे ॥ १४ ॥ गजसुंडे साकलनां खलकां, मोरचा बांधी
 करे बलकां ॥ हयवर पाखरीया पलाणे, जाता बल
 गाड्या जरी बाणे ॥ १५ ॥ वीर रसें चढ्या रजपूत,
 रणखेत मच्यो अदजुत ॥ दल पसरिया चीहुं उर, का
 लीखांस घटा धनघोर ॥ १६ ॥ वरलीए करत जुहा
 रा, बीजली जेम वहे खगधारा ॥ मंकीया अति जो
 ध अखाडा, गीर वीना धन करे रमाडा ॥ १७ ॥
 आव्यो सूर सहो असिधारी, जो हंय होस अपढरा
 नारी ॥ बोले बोल सुजट एम हाडा, एक कायर धरे
 हाथ आका ॥ १८ ॥ जादव सुजट चढ्या रसपूर, करे
 सिधु सेना चकचूर ॥ दल जंग देखीने राय, आव्या
 धसमसत अति धाय ॥ १९ ॥ प्रियंगद धुमकेतु नरिं
 द, जादव सेनने पाडंता मंद ॥ वही एक धारी करपा
 ण, हरी कटकमां पड्युं जंगाण ॥ २० ॥ उढ्यो म
 हानेमी तीणीवार, अनादृष्टी निखट कुमार ॥ चाल्या
 रथ नेही गुणवंत, आवता रीपू दल रोकंत ॥ २१ ॥
 शीसे नरयो रुखमीयो राय, दुर्योधन साथे सहाय ॥
 साते नृप आव्या रण खेत, एक एकने पावल लेत
 ॥ २२ ॥ समकाले साते नृप हांडे, नरसुठी अने सर
 बोडे ॥ महानेमी सुजटने आगे, रुखमीया साथे अ
 ष्यो मध्य जागे ॥ २३ ॥ सणण बाण वहे अति वेगे, वा

गे खमेडाट सुन्न नेतेगे ॥ खलके लोही वहे जीम वारी,
 पनीया ह्य गय पाय पसारी ॥ २४ ॥ योगणी पत्र
 पुरेरे असंखी, त्रपत हुया घणा त्रध पंखी ॥ महाने
 मी तणा तिर वूटे, रुखमीया रथनी साध ववूटे ॥
 ॥ २५ ॥ रुखमीयो ने दुर्योधन नूपाल, कोपे चढीया
 आ असराल ॥ वेणुदाली प्रमुख सरोखी, खटरा
 व आव्या बल पोखी ॥ २६ ॥ महानेमी तणो रथ
 घेरी, आठे राय रह्या चहु फेरी ॥ जाइ सजारो इष्ट
 तुम्हारो, आज आव्यो सही जमवारो ॥ २७ ॥ रेरे
 सोर करे स्यो गिमार, आव्य सनमुख था हुसीयार ॥
 इम कही त्रोडे सरधारा, धनुष आठे तणा तिणीवारा
 ॥ २८ ॥ सक्ति पुरण दाव अरिने, मूके रुखगइयो री
 स नरीने ॥ तरु तड नाद करंत जोर, देखी सुजट
 करे अति सोर ॥ २९ ॥ नांखे शस्त्र घणा सुरवंगा,
 जाणे अग्नी मांहि बले पतंगा ॥ एहवे अशिष्ट नेमो
 सर स्वामी ॥ सूर मातली कहे शिरनामी ॥ ३० ॥ बली
 इंद्र थकी इणे पामी, एह शक्ति महा तप कामी ॥
 पामी प्रचुतणोरे आदेश, सुर सानीध्य करे सुविशे
 प ॥ ३१ ॥ तिणे वज्रशरे अति त्राडी, लेइ शक्ति नणी
 नूए पाडी ॥ जयजयकार करे नरदेव, जादव विघन
 टल्यो ततखेव ॥ ३२ ॥ हुइ सांजने विल्यो संग्राम,
 आव्या आप आपणे मुक्काम ॥ गुणसागर कहे अ
 नीराम, बाल पंचावनमी गुणधाम ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ नित्य प्रते युद्ध होवे घणा, कहेतां नावे पा
 र ॥ जरा मूकी एहवे, ते सुणजो अधीकार ॥ १ ॥
 नालधनुके नवनवी, रजमें ठांयो ज्ञाण ॥ सुरा रणमें
 आथके, रथ जूत्या केकाण ॥ २ ॥ तसलीम करतां
 थकां, एक एक ने ग्रही बाह ॥ जस जगमें करो
 जय करशे जगनाह ॥ ३ ॥ सुकलीनी माता तणा, धा
 व्या हशे जे दूध ॥ ते पग पाठा नही दिए, घणा कि
 याठे युद्ध ॥ ४ ॥ इम हुकाहुक करी रह्यां, जाणे हनु
 संत वीर ॥ जइ आमा रण थंजने, वडा वडा रण धीर
 ॥ ५ ॥ बाणधार वरशे घणी, धरणी न धरे धीर ॥ का
 यर नर ठाना ठपे, साहसीक शाम सधीर ॥ ६ ॥ यु
 द्वारंज थयो घणो, नवीको हारे ताम ॥ एहवे सेना
 नी सिंधु तणो, हिरण्य नाजी अजीराम ॥ ७ ॥ कहे
 एम नीज स्वामी जणी, सुणजो जादव रंक ॥ घो
 आदेश संग्रामनो, टालु एहनो बंक ॥ ८ ॥ राय पसा
 य लेइ करी, रथ वेशी तिणीवार ॥ चढीयो आडंबर
 घणो, दल बलनो नही पार ॥ ९ ॥

ढाल ५६ मी ॥ श्रेणीकराय हुरे अनानी निथं
 थ ॥ ए देशी ॥ सेनानी रोसे भरयो, आवेहि दल ठे
 ल ॥ घसरयो दल सिंधु तणो, जीम साअरनि बेल
 ॥ १ ॥ रंगीला राय आवी मिल्या रणखेत, कांइ पा
 ठीरे पुंठ न देत ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ आरजुन से
 नानी तणो, आवंता ब्रदे तिर ॥ एहवे जीम नूजा

धली, उपाडी गदारे आयो अमीर ॥ रं० ॥ २ ॥ मै
 नानी रथ उपरे, मेली गदा बलपूर ॥ सेनानी पावो
 खरयो, रथ जागीरे हुवो चकचूर ॥ रं० ॥ ३ ॥ आ
 व्यो केसरी जेम गाजतो, नीम उपर धरी छाग ॥
 तिक्कण वाण वरसावतो, कोइ नवीपामेरे रेहवालाग
 ॥ रं० ॥ ४ ॥ जयसेन कुमार माहा बलि, समुद्रविजेनो
 नंद ॥ आवि आमो आंतरयो, खेंचि धनुष्य उजो सो
 नंद ॥ रं० ॥ ५ ॥ गय हसी इम बोलिउ, तुं कां मरे
 जाणेज ॥ इम केहेता तस सारथी, हणियोरे जयसेन
 सुहेज ॥ रं० ॥ ६ ॥ खेंचि वाण अति आकरो, सेना
 नी सरदार ॥ तस सारथी नेदी करी, कांइ मारयोरे
 जयसेन कुमार ॥ रं० ॥ ७ ॥ महाजय आयो वेगसुं,
 बंधव गारयो देख ॥ ते पिण मारयो सेनानीए. देखि
 कोप्योरे अनादृष्टी विशेष ॥ रं० ॥ ८ ॥ हिरणनाची
 राजा तणो, वेदे धनुष मनरंग ॥ नीम अर्जुन याद
 व अवर, कांइ जुजेरे बीजा नृप संग ॥ रं० ॥ ९ ॥
 अनादृष्टीने मारवा, रथथि उतरीउ वेग ॥ होठ पीसे
 रीसे जरयो, हिरणनाचीरे आव्यो धरी तेग ॥ रं० ॥
 ॥ १० ॥ आनदृष्टी पिण रथ थकिरे, उतरीयो ले तर
 वार ॥ आनो खेडो देइने, कांइ वदेरे तसु बहुवार
 ॥ रं० ॥ ११ ॥ आनदृष्टि बल पामीने, लवध लिखि
 करवाल ॥ हिरणनाचीने हणि करी, कांइ नाख्योरे शिर
 उगल ॥ रं० ॥ १२ ॥ अष्ट विस पुत्र रायता, पोहोंचाच्या

परलोक ॥ जीम अर्जन करी आकरी, देखिरे राय हुत्रो
 निशोक ॥ रंग ० ॥ १३ ॥ कुमर वध देखि करी, सेन्या जागी
 ताम ॥ जरासिंधु चित चिंतवी, तिणे अवसर कुलदेवी
 अजिराम ॥ रं० ॥ १४ ॥ जरादेवी कुलमें बनी, समरयां
 आवो आज ॥ अरी अटारो रणमें मिल्यो, कांड रा
 खारे कुननि लाज ॥ रं० ॥ १५ ॥ देवि कोपि ततखि
 णे, आवि यादव सेन ॥ जरा विकुर्वि अति घणि, जाणे
 प्रगट्योरे अचानक पेन ॥ रं० ॥ १६ ॥ उठकोडी उ
 ष्वल करजां, मुख चूवे बहु लाल ॥ मध्य निसाने मुकिने,
 गड देखिरे अंबर ततकाल ॥ रं० ॥ १७ ॥ प्रसरी जरा
 जादव सैनमां, व्याकुल थया नरराय, नेम हरी
 हलधर विना, शेष जरामय सहु थाय ॥ रं० ॥ १८ ॥
 जूरे हलधर एकलो, निसुणि कृष्ण एह वात ॥ सुर
 सुजट विण किन थायशे, उपनोरे सूरि तणो उतपा
 त ॥ रं० ॥ १९ ॥ एहवे मातुल सारथी, प्रचुने क
 हे वारंवार ॥ हणिए प्रति विष्णु आपणे, तो कांड पा
 मेरे हार अपार ॥ रं० ॥ २० ॥ देव वयणे प्रचु इम
 कहे, विष्णु हणे प्रति वीष्ण ॥ ए नित परंपरा ठे नलि,
 होसेरे त्रिखंडार्धीप कृष्ण ॥ रं० ॥ २१ ॥ इम काहि चा
 ल्यो रथ नूतले, करतो नाद गंजीर ॥ द्विरोदधीमां
 जीम नावडि, कांड तरतिरे दिसे तिर ॥ रं० ॥ २२ ॥
 ऊंमा काप्या जोरसुं, विर्य अनंत नगवंत ॥ सिंधु से
 न जागी गयो, जिम सिंह देखिरे अजाना संत ॥ रं०

॥ २३ ॥ कृष्ण पूठे प्रजु नेमने, स्वामी अत किम हा
 य ॥ ठिक आया सुर साहसो, हुश धरीरे जोवे सेवे
 सहु कोय ॥ रं० ॥ २४ ॥ हरी आरति देखि करी, मा
 तुलि कहे इम वात ॥ प्रजु न्हवण जल गंटता, कांड
 रेहेशेरे वक्रनो उपचात ॥ रं० ॥ २५ ॥ प्रजु पूजी प्र
 णमी करी, नवण गंटे तिणीवार ॥ जरा नाठि लोटि
 बठिया, कांड सुरारे सुजट शिरदार ॥ रं० ॥ ३६ ॥
 प्रजु रथ रेणु फरसी जेहने, अंगे अडे तिल मात ॥
 तेहना उपद्रव्य सर्वे टले, अकथ कथानि ठे वात ॥
 ॥ रं० ॥ २७ ॥ ढाल ए षट पचातमी, प्रजु महिमा
 नि वात ॥ ब्रह्मचारी जिन वाविसजो, गुणसागर गु
 ण गात ॥ रं० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ हिवे जरासिंधु आपणा, मंत्रि तेड्यां ताम
 ॥ नामे हांसोहिंशके, उजा करी प्रणाम ॥ १ ॥ याद
 व सेन जिहाअठे, जइ आवो करी गुळ ॥ सेना राह
 मा आवजो, वहिला करजो जूज ॥ २ ॥ नृप जुना
 जाणे सहि, पूरण शाक्रम मोय ॥ समुद्ररायने विनावि,
 वृद्धपणनो राखे तोय ॥ ३ ॥ पशु टोळे गोवालियो,
 आपो मुजने आज ॥ हलधर जुग पांडव वलि, आ
 प्यां सरसे काज ॥ ४ ॥ हांसो आव्यो तिहां थदि,
 प्रणमे समुद्रना पाय ॥ विनंति स्वामी चकनी, करवा
 माडी ठाय ॥ ५ ॥ समुद्रविजय ब्रटकिके, कहे, रे सांन
 ल मंत्रिश ॥ मांगवा कृष्ण तुं आविधीं, हिन वुद्धी

तुऊ इश ॥ ६ ॥ हरी जे कंसने मारीयो, करतो कुल
 में उतपात ॥ उग्रसेनने पांचसें, मारंतो कसा घात
 ॥ ७ ॥ इम निसुणि पाढो वल्यो, वीनव्यो निज नरे
 श ॥ अब केटलवो जलो, जादव जोर विसेष ॥ ८ ॥
 थयो प्रजात उग्यो तपत, कर्ण राजा तेणीवार ॥
 सेनापतीने तेडीने, नांखे वात विचार ॥ ९ ॥ सेना
 सज्ज करो सहु, जासु जादव लार ॥ संग्राम करवा का
 रणे, मत लगवो वार ॥ १० ॥ इम सुणी सेनापती,
 कीधुं कटक तैचार ॥ हय गज रथ पायक घणां, ते क
 हेतां नावे पार ॥ ११ ॥

ढाल ५७ मी ॥ चीत्रोमा राजानी ॥ ए देशी ॥ क
 रण सज्ज थयो हिवे जाम, बढवाने अती अजीराम ॥
 आयो जरासिंधुने आगे, पाए लागीने अनुमति मां
 गे ॥ १ ॥ प्रभु किरपा करो तुमे नाथ, आज जइ दे
 खाडुं हाथ ॥ इम बोले मधुरी वाणी, जरासिंधु कहे
 गुणखाणी ॥ २ ॥ जावो वेगें जतलापो वार, एणमाहि
 रहेंजे, हुशीचार ॥ इम सुणी रागी धनो लज्जां, एहेथो
 सनाह फळोटो तनगां ॥ ३ ॥ करण किरण समळे तेज,
 जग देखतां उपजे हेज ॥ रथे वेठो करवा काज, हा
 थ मुदगल लेई महाराज ॥ ४ ॥ नाग ससरो सानी
 ध्यकारी, आधोरथे वेठो अधीकारी ॥ ओर देव घणा
 तरु लार, करण आव्यो थइ हुशीचार ॥ ५ ॥ गांगेय
 गुरुदो गुणखाणी, करण एण चढ्यो इम जाणी ॥ आ

वी जेरो थयो जमाइ, मुसंडी सल हाथमां लाई ॥
 ॥६॥ रणथंज आवीने रोप्यो, करण जादव उपर को
 प्यो ॥ देखे करण केरी अधीकारी, नाठा सुजट हता
 जे नारी ॥ ७ ॥ ज्ञात पानी आव्या दरी पास, पा
 ए लागीने वचन प्रकाशे ॥ आव्या करणने जीषम
 दोइ, प्रनु अमथी तो काथे न होइ ॥ ८ ॥ निम गदा
 लेठने सनूर, अरजुण उचो बाणावरी सुर ॥ सज थया
 रण रमवाने काज, तव वरजे जुधीउर माहाराज ॥ ९ ॥
 जीषम पितामहने करणणे चाइ, इणथी वढतां न होए
 वडाइ ॥ मारीए मरीए तो नरके जइए, ते माटे सा
 या नवि थइए ॥ १० ॥ तव वसुदेव चढाया आप, द
 सार हाथ गृही रणथाप ॥ उग्रसेन केरी अधीकाइ,
 चाल्या वढवाने दसे चाइ ॥ ११ ॥ हलधर तव हेत
 ज जाणी, कहे तात प्रते एम वाणी ॥ लेणो गदा
 अमारी पास, इणथी वेरी पामशे त्रास ॥ १२ ॥ ग
 दा लेइ प्रनु रणमां आवे, देखी करण प्रते बोलावे ॥
 आवो सामा सुरजनानंद, आपणे लकशुं दोए आनं
 द ॥ १३ ॥ वसुदेव करण ए दोए, वढे हुंश न राखे
 कोए ॥ एकवीजाने करे प्रहार, वढे कोप चड्यां अ
 सराल ॥ १४ ॥ उग्रसेन गांगेयज साथ, कुंजे विजा
 घटा नराथ ॥ उमाया अति दरा रलीया, एकवीजा
 वे मारण धशीया ॥ १५ ॥ जीषम चढमोडे अति चा
 द, करे चोट हुइ हुशीयार ॥ जीषम पितावरीनो वे

टो, जीपम उग्रसेन रायने जेटो ॥ १६ ॥ उग्रसेन त
 एं दल मोके, वली धनुष्य रायनां तोडे ॥ रिसे करे मु
 संदी प्रहार, राय मूरगी पड्यो तेणीवार ॥ १७ ॥ जी
 पम वृद्ध अठे पिण मानो, जीपम रणमां न रहे गानो
 ॥ जीपम चारे हाक वजावे, जीपम सुर सूजट नवी
 सारे ॥ १८ ॥ सारथी जोवे नजर पसारी, राय मूर
 गी पड्यो दुखकारी ॥ हाहा जीपमे अनरथ कीधो, रा
 यने प्रहारज दीधो ॥ १९ ॥ रथवारी बाहेर लीधो, व
 ली जलसिंची सावध कीधो ॥ एग कीधां घणां उपचार.
 राय सुतता थया तेणीवार ॥ २० ॥ करण वसुदेव सं
 ग्राम चार, जोवा देव आव्या तेणीवार ॥ जोवो मा
 एस पिण देव जेवां, सा वढतां दीठां तेवां ॥ २१ ॥
 करण कोष करी करसाइ, अही मुदगर सूके धाइ ॥
 बाणवरी अधीके जोरे, मूके श्रीवसुदेवनी कोरे ॥ २२ ॥
 मुदगर आबंतो दीठो जान, हलधरे गदा दीधी ते
 ताम ॥ गदा उपाडी ते तकि, मुदगरने ते चूण पाडे
 ॥ २३ ॥ वसुदेव फहे सुणराय, कर्ण उचोरे पग ठाय
 ॥ अगन वाण थकी तुजने वारुं, सेन सघलीनुं का
 रज सारुं ॥ २४ ॥ डुंगर उपर देवथी पामी, हाथ ली
 धुं वसुदेव रवाभी ॥ मूके करण राजानी लार, अगन
 जार वहे असराल ॥ २५ ॥ अगन देखीने देवज ख
 शीयां, सह आघा पाठां धशीयां ॥ नाग जेरा हता
 जे देव, सुर नाशी गया ततखेव ॥ २६ ॥ बाण दे

खीने अतिशे नारे. नाग सामो आव्यो तस लारे ॥
 जल लेइने अगन ओलावे, बाण देव ते नाशी जावे
 ॥ २७ ॥ करण बाणावरी केवाए, एथी जोध जीत्यो
 नवि जाए ॥ वली नाग साह्य जो पामी, वढतां कांये
 न राखे खामी ॥ २८ ॥ वसुदेव तणां नट जेह, ते तो
 नासी गया ततखेव ॥ देखी हियडे रह्या विचारी, कर
 ण मोटो ए अधिकारी ॥ २९ ॥ वसुदेव विचारे मन,
 करण मोटो ए राजन ॥ तेज प्रताप करीए पूरो, जो
 ध लफवामा अति सूरु ॥ ३० ॥ जोधे जीत्यो ए नवी
 जाए, वली पातुं पिण न खसाए सापे ग्रही ठठुंदर ते
 ह, ए उखाणु मिलीउ एह ॥ ३१ ॥ एटले नारदऋषीस
 र आवे, वासुदेव प्रते बोलावे ॥ शुं राय जंखाणोटो
 आज, आव्या एण रमवाने काज ॥ ३२ ॥ वसुदेव कहे
 ऋषीदेव, पाए लागीने करी शेव ॥ में नवी दीठो ज
 गतमां कोइ, जेवो करण लडेठे सोइ ॥ ३३ ॥ नारद
 कहे मत विमासो, करण रथे बेठो देव खासो ॥ बाण
 तुमतणा सरवे नांगे ॥ करणरायने एक नवि लागे ॥
 ॥ ३४ ॥ हिवे एहनो उपाव करशुं, राए चिंत्या सज
 ली हरशुं ॥ एम कहिने ऋषीसर जाए, प्रचु देखीने व
 हु सुख पाए ॥ ३५ ॥ मातोली प्रते कहे ऋषीराज,
 चालो संग्राम देखण काज ॥ देवमां पिण एवो न दे
 र्यो, वसुदेव करण लफे ते पेखो ॥ ३६ ॥ एम कहीने
 ऋषी तेमी आवे, वसुदेव तणे रथ बेठावे ॥ नाग देखत

श्रावणे मन्त्र, खड्गनीत अति घणुं तन्न ॥ ३७ ॥ इतो
 अंशुतणो देव मोटो, कदीए नवी थाए खोटो ॥ जो
 जीवित राखवी आशा, तो एथी जावो नाशा ॥ ३८ ॥ देव
 नाशी गयो निज जुवन, सूरज आथम्यो हुवो तम ॥
 देइ राजारथ वाली वरीयां, सज्जन जनमां सहु मिर्ला
 या ॥ ३९ ॥ एतो ढाल जली रसाल ॥ पुण्ये फले म
 नोरथ आल ॥ गुणसागर कहेसार ॥ सत्तावनमी राग
 रसाल ॥ ४० ॥

ढाल ५८ मी ॥ शियल मुंदरमी खरीरे प्यारी, जे
 पाठे नर नारजी ॥ ए देशी ॥ एहवे राजग्रहि पति
 आगे, विजा सुहता संगजी ॥ वचन कहे इम हांसो
 सुहतो, करी आलोच अनंगजी ॥ ए० ॥ १ ॥ पहिलुं
 विण अविमासुं कीधुं, कंस मूवो अकालजी ॥ विण आ
 लोच काया दुख थाये, निश्चे उतर कालजी ॥ ए० ॥
 ॥ २ ॥ अरि सवलो निबलो जो एहवो, लेवो जेहनो
 गुज्जो ॥ ए सवलो गोपाल बले करी, तेशुं इणशुं ऊं
 ऊजी ॥ ३ ॥ सयंवरा मंडप रोहिणी, श्री वसुदेव दसा
 वजी ॥ लऊ नूपति सघला ज्ञान्या, ए आगे तिणवा
 रजी ॥ ४० ॥ ४ ॥ जुवटे जीति कोडी इणे तुऊ, सुता
 जीवाटी ज्ञानीजी ॥ इण अहिनाणे मराव्यो न मूवो,
 ए वसुदेव सजाविजी ॥ ए० ॥ ५ ॥ जीणथी हुआ रा
 म अने हरी, नंदन अति बलवंतजी ॥ ज्याने का
 ये धरत किधी, पुरी द्वारकां कृतजी ॥ ए० ॥ ६ ॥

ए वेहु सबला जाणीने, पांशुव सेवा काजजी ॥ गरव न
 जी गुण मनमें आणी, जोरावर शौर ताजजी ॥ ए०
 ॥७॥ जाणे विजा हरिनेहलधर, महा नेवि नोभट कुधा
 रजी ॥ अथवा जमनेजोर भयंकर, जीम चर्जुन अवता
 रजी ॥ ए० ॥८॥ किस्सुं अनेरा सुजट वखाणे, एकलो ने
 म कुमारजी ॥ लीलाए करी करे जुजावली, धरणे व्या
 कारजी ॥ ए० ॥ ९ ॥ दमघोष अंगज रुकपीयो वेडं,
 तुज कटकमें बल धीरजी; एणे बल दिठो बलचद्र रण
 में, रुखमणीने अपहारजी ॥ ए० ॥ १० ॥ दुर्वोधनने
 सकुनि नरेसर, आपणे कटके एहजी ॥ न गणे केइ सुज
 ट एयारी, सूरवीरमे रेहजी ॥ ए० ११ ॥ अंगाधिपतो ते
 स करण कहीजे, आपणे कटके दुठजी ॥ तेलो दृग्ण कट
 क सागर विच, जेणे सोतु मुठजी ॥ ए० ॥ १२ ॥ जेह
 नि अच्युतादिक सघला, सेव करे सुरनाथजी ॥ गुद्ध ज
 णी कहो कुण सजाइ, श्री नेमीसर साथजी ॥ ए० ॥ १३ ॥
 दिसे गिरधर कटक सनुरो, जोता सघली वालजी ॥ बरे
 जेणे कटके घणो घणो अंतर, जाणे दिनने रागजी ॥ ए०
 ॥ १४ ॥ कृष्णपद्म आदरीने देवी, मारजो तुज रुत का
 लजी ॥ तिणे मरवे प्रतिकुल दिहाडो, दिसे तुज जगाल
 जी ॥ ए० ॥ १५ ॥ तृण तणि परे तुजने गणत, जोराव
 र असमानजी ॥ मथुरावांडी गया द्वारापूरी, धरुपति
 सनमानजी ॥ ए० ॥ १६ ॥ गिरीकंदर वडहे तेसुलो,
 कोइ जगावे सिंहजी, उठलतो बलवंत हिने ते, पदशे

ताहरी लीहजी ॥ ए० ॥ १७ ॥ सांचली वचन कोप्यो नृ
 प बोले, जरासिंधु धरी खेदजी ॥ सहि सुध तुं यादव
 फेर्यो, तिखे देखावे जेदजी ॥ ए० ॥ १८ ॥ शत्रुतणा गु
 ण कहि माने, बिहाफे इण वारजी ॥ पिणरे दुरमति
 सिंह अज्यासु, स्याल तणो फेकारजी ॥ ए० ॥ १९ ॥
 फिट तोने जे रणथी वारे, आव्या रण अधिकारजी ॥
 बालगोपाल गोवाल, तियाने, हुं माघीश करी वारजी
 ॥ ए० ॥ २० ॥ हिवे बोले डंजक मंत्रिसर, गमतो नृप
 ने एमजी ॥ अवसर आव्या रणनो कारज, गंफे द्वा
 व्री केमजी ॥ ए० ॥ २१ ॥ सामेपाइ, रणमें जडतां, म
 रण तिको जस कामजी ॥ जाग्यारो जीवत अकारथ,
 होय न आदर ठामजी ॥ ए० ॥ २२ ॥ चक्रव्युह करी
 निज कटके, हणस्युं ए शत्रु निकजी ॥ चलो कह्यो
 मंत्रिसर मुऊने, तुं मंत्रि निरञ्जिकजी ॥ ए० ॥ २३ ॥ ए
 हवे हिंसक मंजक बेहु सुहतां, बिजा वीरा जानजी ॥
 चक्रव्युह करे नृपने वचनें, रीपु पिण असमानजी ॥
 ए० ॥ २४ ॥ सहस आरानें ठामे सेहेस नृप, तेहनो ब
 हु परीवारजी ॥ एकण राजाने केडें, सेहेस पांच अ
 सवारजी ॥ ए० ॥ २५ ॥ दोय सहस रथ तिमहि गय
 वर, पायक सोल हजारजी ॥ सवा सेहेस उ तटक नृ
 पति, रहे चक्र नीरधारजी ॥ ए० ॥ २६ ॥ पांच सेहेस
 मारगने साथे, तुबि विचे मगधेशजी ॥ रहे तिहां कौ
 रव सो बंधव, नृपने दक्षण देशजी ॥ ए० ॥ २७ ॥ स

कुनि जने सिंधव नृपनो बल, पुंठे रहे गज गाहजी ॥
 मगधेश नृप वामे जागे, आगल गण नर नाहजी ॥
 ए० ॥ २८ ॥ सांधी सांधी रहे तिहां नरपति, कटक
 व्युह पचासजी ॥ विच विचमें रह्यां बीजाहि पिण, पु
 रेवा मननी आशजी ॥ ए० ॥ २९ ॥ जरासींधुए त
 व थाप्यो, सेनाब्धिने ठामजी ॥ दावल राजा दल बले
 बलियो, शिमुपाल इण नामजी ॥ ए० ॥ ३० ॥ सुणतां
 मिठी गोडी रागे, ए सत्ताघनमी ढालजी ॥ गुणसागर
 इणिपरे पनणे, वैधक वचन रसालजी ॥ ए० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ युद्ध करवा बलि सऊ थयां, पांडवादिक
 परीवार ॥ यादव कुमर चढिया जला, सेन विधाध
 र सार ॥ १ ॥ रथ चूरे मुठे करी, हय नाखे परति
 ढ ॥ गज उठाले गयणमे, न्नाजे सुनटां नीड ॥ २ ॥
 युद्ध करतां थाके नहि, चाल्या आगे ताम ॥ मेरा
 उपर जइ अड्या, जरासिंधुने ठाम ॥ ३ ॥ शिसु
 पाल नाठो हिवे, थयो कोलाहल जोर ॥ देखीने जरा
 सिंधुनो, कण्यो कालिज कोर ॥ ४ ॥ ॥

ढाल ५८ मी ॥ घेतन ग्यांन अजुवालिये ॥ ए
 देशी ॥ रोसे करी अति रातडो, राणो जरासिंधु तामरे
 ॥ हुंकारवे करी उठियो, मेरुपरे अनीरामरे ॥ १ ॥ राजंद
 आयो जरासिंधुजी, वाजे न्ना रण तूररे ॥ जेहवि वादल
 नि घनघटा, चाले गगने पूररे ॥ रा० ॥ २ ॥ मेघाडव
 र शिर ऊलकता, पाखरे जमीया हेमरे ॥ पवन पता

का ते फरहरे, उमे वग पंक्ति जेमरे ॥ रा० ॥ ३ ॥
 शीरपर मुगट धरयो वांकडो, आंकडे चीडो सनाहरे
 ॥ केमे कटारो रतन जमयो, आवी बेठो रथे उचाहरे
 ॥ रा० ॥ ४ ॥ हय साजे करी साजतो, पाखरीया घ
 मरोलरे ॥ अपराजीत आदे करी, सूरु सुचटनी को
 डरे ॥ रा० ॥ ५ ॥ सिंहनाद अति मूकतो, घुकतो
 आयो रण शिमरे ॥ जादव पग पाठा खसे, अधिक देखी
 वल इमरे ॥ रा० ॥ ६ ॥ मगध नरिंद इम उचरे,
 इणे कटक उजमालरे ॥ कहे हिंसक मुऊ आगले, कु
 ण सुचट नूजालरे ॥ रा० ॥ ७ ॥ एहवे हिंसक कर
 उंचो करी, देखावे सुण नूपालरे ॥ कपोत घोडा जे
 रथ तणा, ते अनादृष्टी रसालरे ॥ रा० ॥ ८ ॥ नि
 ला अश्वरथी जे हुवे, ते धर्म पुत्र पिडाणरे ॥ धवल अ
 श्वे अर्जुनजी, धनुर विद्यानो जाणरे ॥ रा० ॥ ९ ॥
 निलुतफल अश्व ठे नीमना, उजा कोपे विकरालरे ॥
 सोवन वणो अश्व ठे सहि, समुद्रविजय दयाळरे ॥
 रा० ॥ १० ॥ हंसले घांजे उजा कटकमां, धरुडध्वजे
 गोविंदरे ॥ दाहीण घांजे तिम रामजी, ताल ध्वजे न
 ट चंदरे ॥ रा० ॥ ११ ॥ इम देखावे सुचटने, पार
 विगर अनेकरे ॥ मगधेश सुणी धनुष्य आफले, कोप
 धरी अविदेकरे ॥ रा० ॥ १२ ॥ युवराय मगध नरिंद
 नो, जवन नामे कहायरे ॥ वसुदेव सुत अंकुरादिक
 नणी, हणण काजे धायरे ॥ रा० ॥ १३ ॥ अपरा

जात अन हलधर लक्ष, विंध्याचल गज जेमरे ॥ अ
 नाट्टि सिधुपालजी, शल्यने अर्जुन तेमरे ॥ रा० ॥
 ॥१४॥ रथ साथे रथ आजडे, गज साथे गजराजरे ॥
 पयदल पयदलगु लडे, अश्व अश्वे करी साजरे ॥ रा० ॥
 ॥ १५ ॥ बाण धारा वहे आकरी, मेघपरे असरालरे
 ॥ सहिधर धीर धरे नहि, डोलिया दिगपालरे ॥ रा० ॥
 ॥१६॥ नाचतो नारद इम कहे, रे जरासिंधु चूपालरे ॥
 वाहलो अने वैरी एकठो, दुःकर मिलवो हठालरे ॥
 रा० ॥१७॥ अंकुरादिक हणतां थका, राम सुत सुकुमा
 लरे ॥ स्यर्णी रथ दोडावियो, जवन साथे ततकालरे ॥
 रा० ॥ १८ ॥ बाण वहे अति आकरा, जवन कोप्यो
 तेणी वाररे ॥ चांजियो रथ सारणतणो, मूकी गदा प
 हाररे ॥ रा० ॥ १९ ॥ बेशी सारण रथ दुमरे, रोस
 नरयो असरालरे ॥ खेचि थाणने आहणयो, जवन नृप
 नो चालरे ॥ रा० ॥२०॥ आठ दसार आदिक अवर,
 यादव नृप जट वीचर ॥ विर नृप बहु आहणी, दुर
 नसावे दिचरे ॥ रा० ॥ २१ ॥ तेहवे जरासिंधुना रा
 जवी, नाशिया विलखे वयणरे ॥ जरासिंधुने ततखिणो,
 शरण गया सुख लयणरे ॥ रा० ॥ २२ ॥ पुत्र मरण
 देखी करी, दोजियो तुरत रिसालरे ॥ आनंदादिक
 सुत रामना, दस राखीया रणकालरे ॥ रा० ॥ २३ ॥
 पुत्र वध देखी हरी, फोज चांगी राणरे ॥ मगधेसध्या
 यो सिंहनीपरे, गाय केडे जिम जाणरे ॥ रा० ॥ २४ ॥

सैनानी शिसुपाल हिवे, हसतो जपे वाणर, गोकुल
 न हुवे कान्ह ए, क्कत्रिनोरण जाणरे ॥ रा० ॥ २५ ॥
 कृष्ण कहे हिवे नाशतुं, नाश पवे अयाणरे ॥ रुकमीया
 ने रण तुं मिल्यो, चिंता नावे प्राणरे ॥ रा० ॥ २६ ॥
 मरम वचन शर विंधीयो, धनुष्य ताणी शिसुपालरे ॥
 शर ठेदे हरी रायनो, तेहवे श्री गोपालरे ॥ रा० ॥
 २७ ॥ धनुष्य तेम सनाह रथ, ठेदे हरी ततकालरे ॥
 खड्ग काढीने आहण्यो, सुगट सहित शिसुपालरे ॥
 ॥ रा० ॥ २८ ॥ तेहवे मगधेशराजवी, नाम जरासिं
 धु तामरे ॥ वध देखी शिसुपालनो, कोपियो रिपुने
 कामरे ॥ रा० ॥ २९ ॥ तिज नरपति सुतशुं मीली,
 मामि सबलो जुंजरे ॥ उंचे स्वरे कहे यादवा, कांड म
 रोरे अवूजरे ॥ रा० ॥ ३० ॥ हजी लगे कांड नवी ग
 यो, आपो बेहु गोवालरे ॥ सुखे रहो इम सांजली, या
 दव कोपे करालरे ॥ रा० ॥ ३१ ॥ हणो हणो करता धा
 इया, ठोडतां बहु तिररे ॥ तेहवे मगधनो महिपति,
 युद्ध घोर करे रणधीररे ॥ रा० ॥ ३२ ॥ मागधेश सै
 न्य दीसोदिशे, जांजियो इम प्रतिकुलरे, तिम रहि न
 वी शक्यो कोइ मुखे ॥ वाच मुखे जिम तुलरे ॥ रा० ॥
 ॥ ३३ ॥ जरासिंधु सुत रामने, रोके तिहा अट्टावीसरे ॥
 सुणहत्तरी सुतहि मिली, कृष्णजणी शुं जमीसरे ॥ रा०
 ॥ ३४ ॥ घोर जुंज थयो तिहां, रामदले हिवे खेंचीरे
 अट्टावीस ए कुमारने, पिसे मुसल सींचिरे ॥ रा० ॥ ३५ ॥

मगधेश कहे गोवालिया, तुमहारे मुऊ नंदरे ॥ इम
 कहीने मारी गदा, राम पाडे आक्रंदरे ॥ रा० ॥ ३६ ॥
 गदाघाते लोही वहे, यादव कटके तामरे ॥ हाहारव
 सूरकरे, कहेतां मुख श्रीरामरे ॥ रा० ॥ ३७ ॥ ते
 हवे देखी रामने, कोपियो श्रीगोपालरे ॥ गुणहत्तरी
 ये कुमारने, हणे सबल ततकालरे ॥ रा० ॥ ३८ ॥
 जहासिंधु चित चितवे, मरसे वलिइण ध्यायरे ॥ अ
 र्जुन मारयो शुं होवे, कृष्ण हणु इम धायरे ॥ रा० ॥
 ॥३९॥ कृष्ण हणयो इम कटकमे, पसरी सघले वा
 तरे ॥ तेहवे मातलिने मने, विनति करे विख्यातरे
 ॥ रा० ॥ ४० ॥ साह्यज आपो प्रनु एहने, हरीनो
 संशय जायरे ॥ स्वन्न करे यादव चमुरे, धरणी गग
 न शोनायरे ॥ रा० ॥ ४१ ॥ सूरि गुणसागर एक
 हि, वांदु अष्टावनमी ढालरे ॥ हिवे नवी तुहे
 साजलो, प्रनुलीला गुण मालरे ॥ रा० ॥ ४२ ॥
 तुहा ॥ नेम कथने मातुली हिवे, रथ फेरे रण मां
 ह ॥ तिर वाह सवलि करे, सामी सहेज उगाह ॥ १ ॥
 एकले पिण सामीये, जांज्या लाख नरिंद ॥ जरासिंधुने
 नवि हणयो, हणशे तसु गोविंद ॥ २ ॥ कृष्ण हणे
 प्रति कृष्णने, राखे प्रनुनो मान ॥ रथ स्युं रोक्यां स्वा
 मीये ॥ शत्रु तणा राजान ॥ ३ ॥ ताम बगोहा बुटिया,
 यादव नृप जय गेह ॥ अनुज हणियो पांडवे, लडतां
 रणमें जेह ॥४॥ सुस्व थयो बलदेव पुण, उपाडी निज

रीस ॥ जंग करते आहएयो, रणधारा रापु इस ॥ ५ ॥

ढाल ५९ मी ॥ देखी दुरगंध दरथी, मुह मच-
कोडे माणरे ॥ ए देशी ॥ हिवे मगधेश नरिंदो ए, क
हे सुण गोविंदोए, आनंदो ए ताहरी मायाये घणो ए-
हणियो कंस चुजालो ए, हणियो तिमज कालो ए, ए
जालो ए सघलोवे माया तणो ए ॥ १ ॥ शिखीयो र
ण नाहि ए, ठले सूर कहाहि ए, हिवे बाहिए जो जो
हम खत्रि तणो ए ॥ तुऊ प्राण सेंति ए, ठे माया जे
ति ए सवि तेति ए, तिने मेलुं तुं धणी ए ॥ २ ॥ पु-
त्री तणी वाचा ए, पुराउ मन साचा ए ॥ ते काचा ए
जाण्या मानु गोवालिया ए ॥ हशी माधव इम वो-
लेए, शुं चूपति तुं बोले ए, किण तोले ए साचा
बोल संचालिया ए ॥ ३ ॥ हुंतो माया जालो ए, नहि कूडो
चूपालो ए, संचालो ए थेंतो रजवट आपणीये ॥ आप
ण अधीकाई ए, ते परने न कहाई ए, पिण जा-
इ ए तुं जोजे वडाइ हमतणी ए ॥ ४ ॥ तुऊ आग-
ल ऊपावुं ए, तो हुं कान कहावुं ए, सराहुं ए तुम
पुत्री वातां खरी ए ॥ इम मरमनी वाणी ए ॥ हरी मु-
खथी सहु जाणी ए, सर ताणी ए बहु मुके अती रो-
से करी ए ॥ ५ ॥ बेहु मिली सर गोडे ए, रणने हो-
डा होडे ए, तिमत्रोने एतिरधनुष्य एक एकनां ए ॥
बेहु सबल बिहावे ए, जल रासि खोजावे ए, कंपा-
वे ए गीरी खंचर नामना ए ॥ ६ ॥ देव व्यंतर

बल लेवा ए, उजा आकाशे बलदेवा ए, गयणे दे-
 वा ए जोवा मीलिया कौतकी ए ॥ हरीये तव संजा-
 री ए, ऊऊ मच्यो अति नारी ए, आज अटारीए
 देखी नाठा जोतकी ए ॥ ७ ॥ बेहु सामा रथ फेरे
 ए, फेरंता बल हेरे ए, बहु तेरे ए शस्त्रे ऊऊ करे स-
 हि ए ॥ नृप मागधीने काजे ए, सबलपणे हरी राजे
 ए, शीर ताजे ए कीयो शस्त्र मन उमही ए ॥ ८ ॥ म
 न विलखो अती धावे ए, जरासिंधु रीसावे ए, स
 वाइ ए चक्र संनारे एहवे ए ॥ चक्र हाथे आवे ए,
 मगधेश मन नावे ए, सनावे ए वचन कहे इम तेह
 वे ए ॥ ९ ॥ मथुरा मांहे जारक ए, रहेतो करी घ-
 णी ठारक ए, कंस मारकए आव्योतुं इहां एकलो
 ए ॥ वैर पूर्वनुं मातो ए, तिणे घणी मुज वातो ए,
 रखे जातो ए मार्ग जाणी वेखलो ए ॥ १० ॥ हिंदे न
 मुं कुलआरो ए, करवा टिपणो तारो ए, कहेवुं सा
 रो ए रण साधेठे धइने नलो ए ॥ इम घणुं लउकारी
 ए चक्र नमाडी नारी ए, ननचारी ए नाखे रात्री
 आमलो ए ॥ ११ ॥ खेचर देखि नासे ए, लैना
 जन सह नासे ए, तसु प्रासे ये सूरु पग मांडी
 रह्यो ए ॥ चक्र उपद्रव टाले ए, पांनव ठना निहां
 ले ए, तसु खाले ए शस्त्र तणी धारा कहे ए ॥
 १२ ॥ गयणा गण गाजे ए, चक्र तणे आवाजे ए,
 विराजे ए आवी उंनो हरी आगले ए ॥ पंधव परे

सुहावे ए, देखि हरी मन जावे ए, लेइ वधावे ए च
 क्र जणि मुक्ताफले ए ॥ १३ ॥ यादव कटक तेवारो
 ए, हररूयो सहु संसारो ए, नरनारी ए मिलिओठव
 करे घणो ए ॥ सूर मिलिगुण गावे ए, फूल पगर
 वरसावे ए, जल जावे ए करे महिमा हरजी तणी ए
 ॥ १४ ॥ गगन तले इम वाणी ए, कहे प्रगत्यो गु
 ण खाणी ए, महिराणी ए वासुदेव नवमो सहि ए ॥
 हररूया यादव रायो ए, पड्या निशाणे घाउ ए, म
 नराउ ए जरासिंधु चिंता लहि ए ॥ १५ ॥ हरी क
 हे करो राज ए, में गइ किनी आज ए सुण रा
 ज ए, आण वहे तुहारी ए ॥ हठ अधीक मति
 ताण ए, जीव तणां कल्याण ए, इम वाण एवी
 सुणी कोप्यो प्रतिहरी ए ॥ १६ ॥ रे मूरख स्युं जां
 खेए, अणघटतुं इम जांखे ए, दिन जांखे ए किम
 खत्री रण आवियो ए ॥ पुण्य वित्या इणि वार ए,
 तो कुण राखण हार ए, निरधार ए टेक न मुके
 राजीयो ए ॥ १७ ॥ चक्र मेले हरी रायए, रिपु ज
 णी मन लाय ए, ते जावेए-लेवा शीर वैरीतणो ए ॥
 मोटाने शिर आइ ए, पुण्य खुटा इम ध्याइये, सु
 णो जाइ ये शस्त्र परायो आपणो ए ॥ १८ ॥ चक्र
 आयो जिहां राजा ए, करतो अधिक अवाजा ए,
 तजी माजाये शिर ठेदे मगधेशनो ए ॥ पामी मर
 ण अकाम ए, उपन्यो चोथे ठाम ए, जाणो ताम

ए ध्यान रुद्र नरेशनो ए ॥ १९ ॥ जय जय शब्द
करंत ए, सुरनर मिला हरखंत ए, करतंत ए फूल व
र्षा हरी उपरे ए ॥ यादव कुल विशाल ए, उपना ए
ह नूपाल ए, महिमाल ए जिणे दिठां दिलडुं ठरेए ॥
॥ २० ॥ समुद्रविजे सहु राय ए, करे दिलासा जाय
ए, करे राय ए प्रेत कार्य जरासीधुनो ए ॥ ए गुण
सठमी ढाल ए, हरी हलधर जस माल ए उजाल ए,
गुणसागर गुण एहनो ए ॥ २१ ॥

दुहा ॥ नूप विणास्यो नूजवले, किधो नारे का
म ॥ सुरनर जय जय उचरे, वाजे सुजस ददाम ॥ १ ॥
घर घर बार वधामणा, घर घर मंगल चार ॥ गीत
घणां हरजी तणा, गावे गुणी अपार ॥ २ ॥

ढाल ६० मी ॥ कुमखडानी देशी ॥ रंगीला खेलणा
॥ ए देशी ॥ नरेश्वर जीत्यारे, जीत्यो नल मंडाणा ॥ न० ॥
राय सकल आवी नम्यारे, दिधा बहु सनमान ॥ न० ॥ १ ॥
पूज्यो मातली सारथीरे, स्वर्गे पोहृत्यो जाय ॥ न० ॥
स्वामि प्रशंसा सांजलीरे, सुरपतिने सुख थाय ॥
न० ॥ २ ॥ सहदेवादिक सुत नलारे, राजग्रही था
पंत ॥ न० ॥ महानेमी कुमर नणीरे, सौरीपुर आपंत
॥ न० ॥ ३ ॥ पांडव राय परगडारे, दिधां वळित देस
न० ॥ अवरा सहुने सामीजीरे, आपे देश विशेष ॥
न० ॥ ४ ॥ चक्र वले चित चावगुरे, तीने खंड अ
खंड ॥ न० ॥ साधीने प्रनु आवियारे, कोटी सिलाए प्र

चंड ॥ न० ॥ ५ ॥ उंचि जोजन एकनीरे, लांबी चो
 डी जाण ॥ न० ॥ च्यार आंगुल धरती थकीरे, उपाडी
 बल प्रमाण ॥ न० ॥ ६ ॥ वरस आठ लगे सहीरे,
 करतां दिगजय देख ॥ न० ॥ खेम कुशल घरे आवि
 यारे, तेज प्रताप विशेष ॥ न० ॥ ७ ॥ दंरु सुनंद
 धनुष्य जलोरे, चक्र सुशक्तिसुंचंग ॥ न० ॥ शंख गदा
 हरजी तणारे, साते रत्न शुचंग ॥ न० ॥ ८ ॥ सहस
 सहस वर देवतारे, रत्न तणा रखवाल ॥ न० ॥ ए आठे
 हजारशुरे, सेवीजे गोपाल ॥ न० ॥ ९ ॥ रत्नशुं मा
 ल गदा जळीरे, हलमुसल वर रत्न ॥ न० ॥ हलधरना
 ए जाणीएरे, च्यार रत्न सुयत्न ॥ न० ॥ १० ॥ य
 ळ्ह हजारे शेवीएरे, च्यारे श्री बलदेव ॥ न० ॥ महीय
 ल महीमा महमहेरे, सारे सुरनर शेव ॥ न० ॥ ११ ॥
 हंयवर गयवर रथवरुरे, संख्या लांख बयाल ॥ न० ॥
 पायक पौढ प्रतापशुरे, कोडी कह्या अडताल ॥
 न० ॥ १२ ॥ सोल सहस सोहामणारे, देश महा
 अजीराम ॥ न० ॥ राजाठि पिण तेतलारे, शैबक रूप स
 काम ॥ न० ॥ १३ ॥ सत्यनामाने रुकमणीने, जाबु
 वंती गुण जाण ॥ न० ॥ गौरी गंधारी जळारे, पदमा
 वती प्रधान ॥ न० ॥ १३ ॥ सुसीमा लखमणा कही
 रे, आठे नारी उदार ॥ न० ॥ सोल सहस रमणी तणारे,
 माधवजी चरतार ॥ न० ॥ १५ ॥ बंधुमतीने रेव
 तीरे, सीता सुंदर शोच ॥ न० ॥ घर राजीव लूलेच

नरि, पति शेव्यानो लोच ॥ न० ॥ १६ ॥ ए च्यारे,
 आदे करीरे, रमणी रूप अपार ॥ न० ॥ श्री बलज
 द्रजी तणीरे, नारी आठ हजार ॥ न० ॥ १७ ॥ इंद्र
 तणा सुख जोगवेरे, पूरव पुण्य प्रकार ॥ न० ॥ आ
 नद रंग विनोदमारे, पाले राज मुरार ॥ न० ॥ १८ ॥
 दुर्योधन नामे जलोरे, कुरु जंगलमो राय ॥ न० ॥ दू
 त तेहनो आवीयोरे, लाग्यो हरीजी पाय ॥ न० ॥ १९ ॥
 कागद दुर्योधन तणारे, माहे एह विचार ॥ न० ॥
 म्हारे तुम ठाकर धणीरे, थांसु प्रेम अपार ॥ न० ॥
 ॥ २० ॥ प्रेम वधामण कारणेरे, मुजने उपजी एह ॥
 न० ॥ गोरुना संबंधथीरे, निश्रे किजे नेह ॥ न० ॥
 ॥ २१ ॥ थारे पटराणी तणारे, पूत पनोतो होय ॥ न०
 ॥ मुऊ नारी क्रुमरी जणारे, व्याह करेवो सोय ॥ न० ॥
 ॥ २२ ॥ दैवजोगे एहवो हुवेरे, मुऊ त्रिय जणे कु
 मार ॥ न० ॥ तुम्ह नारीने पुत्रीकारे, तोपिण व्याह
 विचार ॥ न० ॥ २३ ॥ हरी हरखी बोल्यो सहिरे, ए
 चारु विधी वात ॥ न० ॥ दोब घरा वधामणारे, आ
 नंदमे दिन जात ॥ न० ॥ २४ ॥ ए साठमी ढालमेरे
 श्रीहरीजी सुख राज ॥ न० ॥ श्रीगुणसागर सूरिजीरे,
 सबही विधी सुज साज ॥ न० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ दोगंधक सुर निपरे, विलसे जोग अपार ॥
 रुखमणी जरे उपजे, श्री परजुन कुमार ॥ १ ॥ जा
 माने मन जावतो, जानु जलो गुण जाण ॥ एहनो पि

धरे अपार हौ ॥ ज्ञा० ॥ १९ ॥ पुण्य प्रमाणे डोहला,
 गुरु वादे पोशाल हो ॥ ज्ञा० ॥ दान शीयल तप चाव
 ना, चउविह धर्म रसाल हो ॥ ज्ञा० ॥ २० ॥ श्री जि
 न सेवा साचवे, संवर साथे प्रित हो ॥ ज्ञा० ॥ आश्र
 वा अलगी रहे, एतो मोठी रीत हो ॥ ज्ञा० ॥ २१ ॥
 उदर वसंता गर्भ ए, रुखमणी मन उल्हास हो ॥ ज्ञा० ॥
 आरीसा प्रतीविंब ज्यु, पेट न पीडा तास हो ॥ ज्ञा० ॥
 ॥ २२ ॥ गर्भ वधे दीन दीन प्रत्ये, उदर न वाधे रं
 च हो ॥ ज्ञा० ॥ त्रबलि पेटे विलोकतां, शोक लिख्यो
 परपंच हो ॥ ज्ञा० ॥ २३ ॥ एठे जूठा पट पटा, नहि
 गर्भ अहिनाण हो ॥ ज्ञा० ॥ पिण तो माथो मुंफता,
 जास सयल सयाण हो ॥ ज्ञा० ॥ २४ ॥ साचाने सो
 च नहि, जूठा सोच अनेक हो ॥ ज्ञा० ॥ साचा सर
 ल सजावीया, सोच न व्यापे एक हो ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥
 दिन पूरे सुत जनमीयो, शुच वेला शुच वार हो ॥
 ॥ ज्ञा० ॥ रुखमणी अती सुख पाइयो, परीयण हरख
 अपार हो ॥ ज्ञा० ॥ २६ ॥ पुरुष वधात आविया,
 नृपति पासे जाम हो ॥ ज्ञा० ॥ प्रनुजी पोढ्यो पे
 खियो, पग तले बेठा ताम हो ॥ ज्ञा० ॥ २७ ॥ जामाना
 पिण आविया, मोठा पुरुष प्रधान हो ॥ ज्ञा० ॥ शीराणे
 ते जइ कीयो, बेसणनो मंडाण हो ॥ ज्ञा० ॥ जेहना ठा
 कुर जेहवा, तेहवा चाकर होय हो ॥ ज्ञा० ॥ जो नृपति
 जो मानवी, एतो परतद्ध जोय हो ॥ ज्ञा० ॥ २९ ॥

एटले जगपति जागीयो, उठि बेठो होय हो ॥
 जा० ॥ चिरंजीवो कहि बोलिया, रुखमणीना नर सो
 य हो ॥ जा० ॥ ३० ॥ देव वधाइ पाइये, रुखमणी जा
 यो नंद हो ॥ जा० ॥ नंदन निरखण सारीखो, दरशन
 परमानंद हो ॥ जा० ॥ ३१ ॥ राज चिन्ह बाकी करी,
 अवर अनोपम वस्तु हो ॥ जा० ॥ पुत्र वधावैआं नणी,
 आपी राय संमस्तु हो ॥ जा० ॥ ३२ ॥ जाणी संचल पाव
 ले, यांकि ग्रीवे जोय हो ॥ जा० ॥ नामा सुत जाया तणी,
 लीये वधाइ सोइ हो ॥ जा० ॥ ३३ ॥ एतो एकसठमी
 कही, ढाल जलेरी होय हो ॥ जा० ॥ कहे गुणसागर दो
 य घरां, आनंद वरत्यो जोय हो ॥ जा० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ कृष्ण नरेशरं इम नणे, शेवक सुणो वि
 चार ॥ मंत्रीसर बोलाइ ल्यो, वेगे मतलावो वार ॥ १ ॥
 मंत्रीसर आया सहु, नरपति दिये आदेश ॥ पुत्र
 महोत्सव पुर तणी, शोभा करो सुविशेश ॥ २ ॥

ढाल ६२मी ॥ राजा दसरथ दिंपतो ॥ ए देशी ॥ पुत्र
 महोत्सव किनीए, मिलीयो सहु परीवारोरे ॥ रुखमणी
 सतनामा तणे, मंदीर हर्ष अपारोरे ॥ पु० ॥ याचक
 जन जुगतशुं, दिजे वंणीत दानोरे ॥ करुणा जावे कृ
 ष्णजी, मूक्या बंधीवानोरे ॥ पु० ॥ २ ॥ तोरणनी र
 चना नलो, उपर कलस उदारोरे ॥ लहलहति ध्व
 ज अति घणी ॥ दिसे घर घर बारोरे ॥ पु० ॥ ३ ॥
 टोके रचना केलिनी, नारी नणे गुण गाथोरे ॥ आर

ण कारण साचवे, कुंकमनां दिए ठांठोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥
 गुहीर स्वरे तव गौरमी, गावे मगल च्यारोरे ॥ धव
 ल दिए तस आंगणे, वरते जय जय कारोरे ॥ पु० ॥
 ॥ ५ ॥ सहु सुहांगण सामटी, नारी आख्याणो लावे
 रे ॥ दोय घरां अति पूरतो, ते तो आदर पावेरे ॥
 ॥ पु० ॥ ६ ॥ ढोल ददामा दडवडे, सरणाइ मुख का
 रोरे ॥ वाजां वाजे अति घणां, नाचे पात्र अपारोरे
 ॥ पु० ॥ ७ ॥ दिजे सोना सावटुं, वागावेस विशेषोरे ॥
 दिजे हयवर हाथीया, मांही मांही आदेखोरे ॥ पु० ॥
 ॥ ८ ॥ जुवा नतीजी जाणेजी, बेटी वहुने बोलावेरे ॥ रित
 नात अने प्रितशुं, आप आपणी पावेरे ॥ पु० ॥ ९ ॥
 सज्जन सहु संतोपीया, संतोण्यां सहु जाइरे ॥ यथा यो
 ग्य जे जाणीया, दिधी तास वधाइरे ॥ पु० ॥ १० ॥
 पुज्य पुरुप ते पूजीया, सह गुरु सेवा साधीरे ॥ सा
 हामी वडल मन मानीया, कुल देवी आराधीरे ॥ पु० ॥
 ॥ ११ ॥ हुंस मनावी अति घणी, खांति न राखे कां
 इरे ॥ पिण तो, देवां उपहरयां, कोण सके न रहाइरे
 ॥ पु० ॥ १२ ॥ एहवे रंग विनोदमां, करतां कोडी प्रकारोरे
 ॥ पाच दिहना बोलीया, बडीनो अधीकारोरे ॥ पु० ॥ १३ ॥
 बलो भासठमी नली, ढाल कहावे सारोरे ॥ गुणसागर
 कहे सांचलो, केम होवे अपहारोरे ॥ पु० ॥ १४ ॥
 दुहा ॥ रुखमणी नंदन अपहरण, महा वडो दुःख
 जाण ॥ सूर्जे आप आथमी गयो, पसरयो जग तम आ

एँ ॥१॥ जली रीते ए पारको, दुःख देख्यो नवी जायें ॥
होइ तो जलपण करे, नहीतर अलगो थाय ॥ २ ॥

ढाल ६३ मी ॥ कदीए मिलशेरे मुनिवर एहवां
॥ ए देशी ॥ कर्म आगे बेलीयो कोइ नही, राव रं
क एक साथेरे ॥ रुखमणी सुतसुं सुख निद्रां चजे,
किशु करे जगनाथेरे ॥ क० ॥ १ ॥ रमणी रंगेरातीं
ज गावही, गावे गीत उदारोरे ॥ वाजे मांदल धौंधौकां
रशुं, नाचे पात्र अपारोरे ॥ क० ॥ २ ॥ सुजट घणां घं
र पासे मूक्या, रखवालीने काजोरे ॥ विविध प्रकारे
आयुत्र धरिनें, सूर रह्यां सजी साजोरे ॥ क० ॥ ३ ॥
करो हुगीयारी कृष्ण नरेश्वरु, सुख निद्रावसे थाइरे ॥
अन्य कथांतर एतले वितीयो, रुखमणीने दुख दाइरे
॥ क० ॥ ४ ॥ हेमरथ राजा आगे जे हुतो, इंदुप्रजा
तस राणीरे ॥ मधुं राजाए जोर करी छणु, सो राणी घं
रे आणीरे ॥ क० ॥ ५ ॥ मोह वसे सो हेमरथ राजीयो, ता
पसना व्रत धारीरे ॥ सूरगति पदवीं लाधी रुप्रमी,
करणी तो फन कारीरे ॥ क० ॥ ६ ॥ बेशी विमाने सो
सूर एकश, निर्ज लीलाए जायोरे ॥ रुखमणी मंदीर
उपर आवीयो, एतले विमान थंजायोरे ॥ क० ॥ ७ ॥ दे
व विशेषे चिंतातर थयो, किम मुऊ गतीनो चंगोरे ॥
कां को हेठेरे दुखीयो जीवअठे ॥ केको शत्रु विरंगोरे ॥
क० ॥ ८ ॥ केको मित्रज कष्टे पूरीयो, चरम शरीरी दे
होरे ॥ मोटा मुनिवर सुरगती चंगनो, कारण जाख्या

एहोरे ॥ क० ॥ ९ ॥ ज्ञान करी तव देखे देवता, मधु
 राजानो जीवोरे ॥ रुखमणी पासे बालक पेखीयो, जाग्यो
 धेख अतिवोरे ॥ क० ॥ १ ॥ इण पापीडे मदमाते घणुं,
 मुजशुं किधो जारोरे ॥ एहने ते फज आजं देखामुं,
 किया पाप अधोरोरे ॥ क० ॥ ११ ॥ तत्र तो ए नृप
 हुतो समर्थ, हुं असमर्थ ते वारोरे ॥ अंब तो हुंवं सम
 र्थ अति घणुं, ए अरामर्थ अवारोरे ॥ क० ॥
 ॥ १२ ॥ एम जाणीने देवे द्वेषशुं, लियो बाल कुमारोरे
 ॥ रुखमणीनी गर्ती आगेथी ॥ किगहि न जाणी
 सारोरे ॥ क० ॥ १३ ॥ किंउं किजेरे सांजन सुनटमुं, आ
 डंवर उगहोरे ॥ सहं तारागण अंबर देखतां, चद्रयशी
 जे राहुरे ॥ क० ॥ १४ ॥ आशा को केहनी मति करो,
 आशा प्रचुने हाथोरे ॥ रुखमणी सुति कुण मनोरथे,
 जाग्या आथन साथोरे ॥ क० ॥ १५ ॥ सूर आकाशे
 जाइ चिंतवे, कुण कुण जाणह्ये मारुरे ॥ चरम शरी
 री पूरो आउखो, ए जिन वचने वारुरे ॥ क० ॥ १६ ॥
 तद्वक पर्वत खदीराअटवीमे, आयो ते ततकालोरे ॥
 बावन हात मोटी शीला तले, सूर चांप्यो ते बालोरे
 ॥ क० ॥ १७ ॥ निज कृत कर्मनो फल जोगवे, एम
 कहो गयो तेहोरे ॥ पुण्य विशेषे नख शिख लगे सहि,
 आलन आवी देहोरे ॥ क० ॥ १८ ॥ एतो त्रेसठमी
 ढाले जाणीयो, मदन हरण अत्रीकारोरे ॥ श्री गुण
 सागर ए उवदेश अंबे, पुण्य वडो संसारोरे ॥ क० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ पुण्य सवाई जेहनो, तेहनो पूरो आय ॥
 बाल न बाँको करी शके, जइ रुसे जमराय ॥ १ ॥ चा
 वे को चल पण ग्रहो, ग्रहो बुरापण कोय ॥ सरज्याना
 अनुसारथी, नली बुरी जग होय ॥ २ ॥ जात मात ज
 लवाहिया, कस कर्ण नीज माय ॥ पिण ते शुच कर्मा
 थकी, हुआ वडेरा राय ॥ ३ ॥ जीवादे तो सिलातले,
 मारे प्रचु ते जोय ॥ मदन सगरना नंद ज्यु, करता
 करे सो होय ॥ ४ ॥ रूपाचल दक्षण दिशे, मेघकुट पु
 र नाम ॥ जमसंवर राजा नलो, राज करे गुणधाम
 ॥ ५ ॥ तेहने घर नल चामनी, कनकमाला सुकुमाल
 ॥ वेंसी विमाने दंपति आय गया ततकाल ॥ ६ ॥
 बालक मुखने वायरे, उंची नीची थाय ॥ प्रौढि शिला
 ते परगडी, ताम बिलोकी राय ॥ ७ ॥ उपाडी अल
 गी करी, दीठो देव कुमार ॥ सब विध सुंदर मनोहरुं,
 करतो हास्य अपार ॥ ८ ॥

बाल ६४ मी ॥ पवडीयाकी देशी ॥ सो मन मो
 ह्यो मोहना, मोहन रूप रसाल हो ॥ खेंचर खेंचरणी
 सुं कहे, लाल सवे विधी लाल हो ॥ मो० ॥ १ ॥ को
 मल कुतल बाँकमां, शाम महा सुकुमाल हो ॥ आठ
 मकेरो चंदलो, नाल नलो सुविसाल हो ॥ मो० ॥
 ॥ २ ॥ चूह नमरकी उपमा, कर्ण सुवर्णाकार हो ॥
 नयन कमल दल पाखडी, सुक नाशा सुविचार हो ॥
 मो० ॥ ३ ॥ मुख जाणे पूरो शशी, आवे लाल कपो

ल हो ॥ दांत कली दाडम तणी, अधर प्रवाल अमो
 ल हो ॥ मो० ॥ ४ ॥ श्रीवा कंवु सारखी, उनत अस
 उदार हो ॥ कमलनाली उनिहारडे, बाह तणी वि
 स्तार हो ॥ मो० ॥ ५ ॥ उदर अनोपम शोचतो, क
 टि केहरीको लंक हो ॥ जंघा गयवर सुंफसी, तनने
 को न कलंक हो ॥ मो० ॥ ६ ॥ सोवन वान सुहाम
 णो, चंचल पाणी ज्यु पाय हो ॥ कामदेव ए उपज्यो,
 शोचा कहि न जाय हो ॥ मो० ॥ ७ ॥ राता
 सात सुलक्षणा, कर पग लोचन अंत हो ॥ अधर
 होठ नख तालुव, जिहां एतो ए कंत हो ॥ मो० ॥ ८ ॥
 उनत ए खट वे सहि, कक्षा कुख ललाट हो ॥ खांघ
 जाक उंचो हियो, घडीयो देवे सुघाट हो ॥ मो० ॥ ९ ॥
 दिर्घ पंचे देखीए, नयणा सरने बाह हो ॥ नास्या थ
 माने हडवची, लांवि न नमे वाह हो ॥ मो० ॥ १० ॥
 सोदाम पंच प्रशसीए, पर्वांतरने केश हो ॥ नह देह
 द्रशन वली, सुदाम मृदु सुविशेष हो ॥ मो० ॥ ११ ॥
 लघु श्रीवा जंघा जलि, लघुहि पुरुपाकार हो ॥ स्वर
 गंजीर सराहीए, नाजी सत्व सुखकार हो ॥ मो० ॥ १२ ॥
 जाल विशाल वखाणियो, पोहले माये इश हो ॥ पोह
 लि जाती वे घणी, लक्षण ए वत्रिस हो ॥ मो० ॥ १३ ॥
 सर्व गुणाकर साचली, सर्वहि शोच नीध्यान हो ॥
 दैत्य महा रिपुजी तणी, दर्शन अमृत पान हो ॥ मो० ॥
 ॥ १४ ॥ हेज घणे जठाइयो, लीधा कंठ लगाय हो ॥

बहु अने शीर चुंबता, राजा अति सुख थाय हो ॥
 मो० ॥ १५ ॥ राजा राणीसुं कहे, तुज नूठो कीरतार
 हो ॥ सर्व सुलक्षण गुण निलो, दीधो एह कुमार हो
 ॥ मो० ॥ १६ ॥ राणी राजासुं कहे, थारे बहुला पूत
 हो ॥ सघलामें ए नान्हडो, किसो वधे घरमूत हो ॥
 मो० ॥ १७ ॥ राजा सुख तंबोलशुं, तिलक कीयो शिर
 तास हो ॥ युवराजा पद थापियो, राणी जाणी उल्ला
 स हो ॥ मो० ॥ १८ ॥ दुर्जन रुठो रयु करे, जेहना शुभ
 अंकुर हो ॥ मयंगल जिहां जिहां संचरे, तिहां तिहां
 वाधे नूर हो ॥ मो० ॥ १९ ॥ राणी बालक फीलीयो,
 जाणी जाचो रयण हो ॥ प्राण थकी प्यारो खरो, पा
 सी अधीको चयन हो ॥ मो० ॥ २० ॥ राजा मंदिर
 आवीयो, मिलियो सहु परिवार हो ॥ राणी नंदन जा
 इयो, वरत्यो जय जयकार हो ॥ मो० ॥ २१ ॥ महा
 महोत्सव मांडीयो, वाजे ढोल तिसाण हो ॥ मंगल गा
 वे गोरमी, दीजे वरित दान हो ॥ मो० ॥ २२ ॥
 कीधी शोभा पुर तणी, मिलीया सहु साज हो ॥ वं
 दीखाना बोडीया, कीधां सीधां काज हो ॥ मो० ॥
 ॥ २३ ॥ बारसमे दीन थापियो, राजा नाम उदार
 हो ॥ पर दमवनि कारणे, श्रीप्रद्युम्न कुमार हो
 ॥ मो० ॥ २४ ॥ जिम जिम वाधे वधे करी, तिम ति
 म वाधे ऊर हो ॥ हयवर गयवर साहेबी, क
 ण कंचन नरपूर हो ॥ मो० ॥ २५ ॥ कमल कमल

जिम संचरे, जमरो जोगी नाम हो ॥ हाथोहाथे संचरे, तिम ए कुंवर काम हो ॥ मो० ॥ २६ ॥ स्वघर आदर पासीए, एतो सुधी व्रात हो ॥ पिण जे पर घर सादरो, ए अधिकी अखीयात हो ॥ मो० ॥ २७ ॥ ढाल जली चोसठमी, खेचर घर उल्हास हो गुणसागर दिपक जिहां, तिहां तिहां करे प्रकाश हो ॥ मो० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ श्री पद्मिनी हरद्या पिबे, वितक वित्यो जे ह ॥ संक्षेपे तुमे सांजलो, मुज कहेतां जवि तेइ ॥ १ ॥ ततक्षण जागी रुखमणी, बाल न देखे प्रास ॥ हियडे जाल उठी घणी, आवी मूर्छा तास ॥ २ ॥ सचेतन किधी सति, फिरी फिरी मूरबाय ॥ कुमर न सोध्यो पाइयो, करुणापणे विललाय ॥ ३ ॥

ढाल ६५ मी ॥ हरी विण राधा किम रहे ॥ ए देशी ॥ हाताशुं हियडो हणे, कुरलेसा असराल, दिन वचन जाखे घणां, किधुं किस्सुरे दयाल ॥ १ ॥ विलवे राणी रुखमणी ॥ ए आंकणी ॥ रे सुंदर सुकुमाल किहां गयो मुजने तजी, ए दुःख जालकराल ॥ वि० ॥ २ ॥ उंडी उठे कुर करी, वेदन सहिन जाय ॥ जाया नुज सम को नही, जे देख्यां सुख थाय ॥ वि० ॥ ३ ॥ गुडथी मीठी खांड ए, खांडा सु रथी अमृत जलो, पूत न पुगे कोर त पनोतीमां गणे, पूत सपात पूतणी ॥ विण पूताए काम ॥ ॥

नी विण बांधवा, घर सुनो विण पूत ॥ पूत
 पनोता बाहीरो, कुण राखे घर सूत ॥ वि० ॥ ६ ॥
 बहुले मिलीए सांजनै, हेत घणां गुणग्राम ॥ पूत
 पनोता बाहीरो, कण लेवावे नाम ॥ वि० ॥ ७ ॥ ज
 ली सपुंती पंखणी, इंडो पालणहार ॥ चुगन लावे
 रंजी चाचनी, उलीए मुखे पसार ॥ वि० ॥ ८ ॥ हुं
 कां सरजी मनुष्यणी, रे कुंता किरतार ॥ गर्ज सां
 हि गाली नही, आपी आरति अपार ॥ वि० ॥ ९ ॥
 जन्म समे मुइ नही, जोली न पडी तूट ॥ रोग
 तणो कारण लही, न मुइ हियना फूट ॥ वि० ॥ १० ॥
 बाल रंगना स्यालमें, पाती लेवा जात ॥ हुं कानड
 शी एह रुये ॥ मरी जाती विलंलांत ॥ वि० ॥ ११ ॥
 तो कां हुं आवी हरीं घरे, कां पाम्यो बहु मान ॥ सो
 क सालथीं सहेजहि, बूटी जातां प्राण ॥ वि० ॥ १२ ॥
 तो कां सुपना देखियां, कां जांयो वरनंदा ॥ नंद तो
 आनंद करी गयो, किशुं करुं मतिमेंद ॥ वि० ॥ १३ ॥
 कां हुं अर्धीकी बज्रवजी, कां में पाडी होत ॥ सु
 ऊ दुखियारीनां सखी, कोइ न पुंगी कोड ॥ वि० ॥
 ॥ १४ ॥ चहडी तो हुं गीरवरां, नाखितोरे पयाल ॥ आं
 वो वावि आंगणें, तबही लियो उलाल ॥ वि०
 ॥ १५ ॥ रे पापिष्ट अनिष्टतुं, रे द्रुष्टनिठोर ॥ दैव द
 या नहि तऊकने, रांक साथे शो जोर ॥ वि० ॥ १६ ॥
 ज्ञानीथी माहरे, सहु वातां सुविसाल ॥ खार धरी

ठेकी सही, देव मनोरथ माल ॥ वि० ॥ १७ ॥ पुढी
 ठेदन जेदना, में किधी बहुवार ॥ सर फोड्यां द्रह
 सेसव्यां, अणगल निर अपार ॥ वि० ॥ १८ ॥ आ
 ग उरहावी निरशुं, दव दीधां वनतांहे ॥ वाय
 कराव्यां विजणें, मंजाव्यां सढ प्रांहीं ॥ वि० ॥ १९ ॥
 फूलण मसली पावशुं, चांप्या नव अंकुर ॥ फंतनो
 लेगा कांगणें, बेठी होइ सुर ॥ वि० ॥ २० ॥ बेरंद्री
 ना वध किया, मारी जुने लिख ॥ किडी नगरां वाहि
 यां, ते मुऊ लागीं शिख ॥ वि० ॥ २१ ॥ चाणे
 विंठी चांपीया, लोक बताया सांप ॥ माला तोंड्यां चिं
 रुकलां, लाग्या मोटा पाप ॥ वि० ॥ २२ ॥ पशु पं
 खणी मनुष्यणी, बाल विळोहो दिध ॥ उन्हो ज
 ल दर पूरीयां, प्रोढा पातिक किध ॥ वि० ॥ २३ ॥
 मठी जाल पसारीयां, हरण पाड्यां पास ॥ कर्म
 कसाइनां कियां, गो बकरां विपास ॥ वि० ॥ २४ ॥
 मोसामर्भ प्रकाशीयां, जाख्या कंडा अपराध ॥ प
 रने मोड्या करकना, ते में ए फल लौध ॥ वि० ॥ २५ ॥
 चोरी किधी परतणी, लीधा हिरा लाल ॥ लाल निरो
 पन निगम्यो, होई रही बेहाल ॥ वि० ॥ २६ ॥
 साच न राख्यो शिलपुं, जेहथी लहीए लील ॥ ज
 गमांहे अपजम लियो, शेवी शेवी कुशील ॥ वि० ॥
 ॥ २७ ॥ क्षिण लोटे नटे जइ, क्षिणमें चढे चोवारा ॥
 कदीए देखुं मुऊ नान्हडो, प्यारो प्राण आधार ॥

॥ वि० ॥ २८ ॥ रुखमणीने दुखे सह दुखी, कृष्णे सु
 एयो तव सौर ॥ धशी आव्यो उतावलो, ग्रहो ग्रहो
 सुत चोर ॥ वि० ॥ २९ ॥ कृष्ण हिये दुःख संवरी, त्रि
 यसु कहे सुविच्यार ॥ नंदन मीलशे ताहरो, करशुं
 सोइ प्रकार ॥ वि० ॥ ३० ॥ जे पांखरीयां परगडा. शो
 धन काजे सोय ॥ मोकलीया फीरी आवीया, काज
 न सरियो कोय ॥ वि० ॥ ३१ ॥ सुसति किधी सुंदरी,
 वारु वचन कही वाण ॥ एतले चाली आवीयो, ना
 रद पुण्य प्रमाण ॥ वि० ॥ ३२ ॥ ढाल एतो पासठ
 मी, विजोगणीए नाम ॥ गुणसागर-सुन कर्मथी, स
 रसे सघला काम ॥ वि० ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ नारद चांखे सुण सुता, आरती म कर ली
 गार ॥ तेहने आरती शुं करे, जेहनो हरी नरतार
 ॥ १ ॥ जे तुज कुखे उपज्यो, जेहनो माधव तात ॥
 न भरे उठे आउपे, एनिश्चे विधीवात ॥ २ ॥ पूर्व नवा
 तर वैरीए, किधोठे अपहार ॥ दिन थोफे शोधो करी,
 मेलुं आणी कुमार ॥ ३ ॥ जो ए कारज नवी करुं.
 तोशु माहरो नाम ॥ नामाना मन नावतां,
 जाणे सरया सब काम ॥ ४ ॥ ज्ञान विना निश्चे न
 ही, जलफलीयां शुं थाय ॥ श्रीमंधीर स्वामी कने,
 चाली गयो ऋपीराय ॥ ५ ॥ देइ प्रदक्षणा विधी करी,
 प्रनुना प्रणमी पाय ॥ चीड जाणी माणस, तणी, रह्यो.
 तखते तेले जाय ॥ ६ ॥ लघु काया करमें करी, जाणीने

आकार ॥ चक्री चतुराई करी, पुढे सकल विचार ॥७॥
 ढाल ६६ मी ॥ वहेनी जेहनो जेहशुं रंग ॥ ए देशी
 ॥ श्रीमिंधर कहोने एह विचार, स्वामी कहे सुण रा
 जीयारे ॥ चरित तणो नही पार ॥ श्री० ॥ १ ॥ शी
 ल शिरोमणी गुण निलोरे, नारद नाम उदार ॥ जर
 त खेत्रथी आवीयोरे, कांडक पूरणहार ॥ श्री० ॥
 ॥ २ ॥ द्वारामती नगरी जलीरे, कृष्ण नरेशर तास ॥
 पटराणी वर रुखपणीरे, शील तणो सहवास ॥ श्री०
 ॥ ३ ॥ तेहनो नंदन अपहरयोरे, उठी रात्रमजार ॥
 वैरी वैर न विसरेरे, ए जगनो व्यवहार ॥ श्री० ॥४॥
 गाम नगर गीरी कंदरारे, सोधाव्या ते राय ॥ शुद्ध
 न लाधी तेहनीरे, अति दुःख आपे मांय ॥ श्री० ॥५॥
 निश्चे करवा कारणेरे, ए ऋषी आव्यो जोइ ॥ पद
 करे जे जेहनोरे, तेही दुखे दुखियो होइ ॥ श्री० ॥६॥
 पट खंड नायक विनवेरे, स्वामी प्रकासो एह ॥ कुण
 वैरी जेह अपहरयोरे, बाल किहांठे तेह ॥ श्री० ॥७॥
 काल केतले आवशेरे, कुंवर कुल शीणगार ॥ मात पिता
 मन जावसेरे, निसुणे परखदा वार ॥ श्री० ॥ ८ ॥ मा
 त कन्हेथी बालुमोरे, दैते लिधो जाम ॥ तहक पर्व
 त शीला तलेरे, पाम्यो खेचर ताम ॥ श्री० ॥ ९ ॥
 दिन दिन बाधे वये करीरे, चंद कला जिम जोय ॥
 अरि त्रिय मित्रहि गतीयारे, साल सरीखो सोय ॥
 ॥ श्री० ॥ १० ॥ षोडस लान लही जलारे, वारु वि

द्या दोय ॥ मिलशे माय वापनेरे, वरस सोलमे सोय
 ॥ श्री० ॥ ११ ॥ मिलणतणी सहि नाणकारे, जणावी
 ए सार ॥ पान्हो चडशे पदमनीरे, उपजशे अति
 प्यार ॥ श्री० ॥ १२ ॥ होस्ये सुकि वावडीरे, जलशुं
 चरीत अपार ॥ विकशीत पंकज पांखडीरे, नमर
 करे गुंजार ॥ श्री० ॥ १३ ॥ सुका वृद्ध अशोकजीरे,
 फलसे विवोध प्रकार ॥ ऋतु विण फल फूले चरयारे,
 तरुवर अवर अपार ॥ श्री० ॥ १४ ॥ कोइल नाट हू
 कनारे, मोरा केरा नाच ॥ थाशे विविध वधामणारे,
 सुढर मेली साच ॥ श्री० ॥ १५ ॥ मुंगा वचन प्रका
 सशेरे, वांका सरला होय ॥ अंधा लहेस्ये आंखडीरे,
 रुप कुरुपा जोय ॥ श्री० ॥ १६ ॥ इण लक्षणे मा जा
 एसेरे, नंदन आगम चात ॥ सांजल चूप सुलक्षणा
 रे, ययरीना अवदात ॥ श्री० ॥ १७ ॥ देश मगध
 सुहामणारे, सालीसुग्राम प्रधान ॥ सोमदत्त नामे च
 लोरे, ब्राह्मण गुणनो जाण ॥ श्री० ॥ १८ ॥ तस अ
 थेली कामनीरे, नंदनवर अनीधान ॥ अशीचूती
 गुण आगलोरे, वायचूती सुजाण ॥ श्री० ॥ १९ ॥
 श्री नंदावर्धन गुरु जलारे, आया विपन मजार ॥ क
 रवा वाद पधारीयारे, बंधव दोय ते वार ॥ श्री० ॥
 ॥ २० ॥ विच मिल्यो मुनी सत्यकीरे, चाखे वचन वि
 लास ॥ विप्र किहां तुम्हे चालीयारे, करवा वाद उ
 ल्हास ॥ श्री० ॥ २१ ॥ होम किसी हारया तणीरे, विप्र क

हे ल्युं दिख्य ॥ थाप्यो वाद विशेषथीरे, विप्र न माने
 शीख ॥ श्री० ॥ २२ ॥ मुनी जांखे पूगे तुम्हेरे, सश
 य होवे जेह ॥ हमने संशय कोइ नहीरे, तुम्हे पूगे
 संदेह ॥ श्री० ॥ २३ ॥ तुम्हे किहांथी आवीयारे, जां
 खो विप्र विचार ॥ हम आया निज घर थकीरे, ए
 स्यो प्रश्न प्रकार ॥ श्री० ॥ २४ ॥ ए आगम पूठुं न
 हीरे, पूठुं परजव वात ॥ परजव कुण कही सकेरे, होइ
 माणस मात ॥ श्री० ॥ २५ ॥ विप्र सुणो परजव तं
 णोरे, जाखुं एह विचार ॥ इणही ग्रामे विप्र हुतोरे,
 नामे प्रवर उदार ॥ श्री० ॥ २६ ॥ सो खेति करतो
 धणीरे, हल खेडावा जाय ॥ आयो जलहर उमहिरे,
 सो घर मुखो थाय ॥ श्री० ॥ २७ ॥ सात दि
 डाडा वरशीयोरे, जल हलधार अखंड ॥ उवराब्ज्यो
 दिन आठमेरे, व्यापी नूख प्रचंड ॥ श्री० ॥ २८ ॥
 जंबुक युग तिहां आवियारे, खाधी नामी
 तोड ॥ पेट आफरीउ ठोल ज्युरे, चाल्या दशहि
 गोड ॥ श्री० ॥ २९ ॥ सो जंबुक तुम्ह उपनारे,
 नहि संदेह लिगार ॥ प्रत्यय कारण साजल्योरे, आगे
 एह अधीकार ॥ श्री० ॥ ३० ॥ खेत धणी तिहां आ
 वियोरे, खीज्यो देखी जाम ॥ जंबुकनी करी जाथमीरे,
 मैली उपर वान ॥ श्री० ॥ ३१ ॥ जो न पति जो ब्राह्म
 णोरे, जाइ देखो सोय ॥ लोक गया तिहां देखवारे, वी
 अ खीसाणो होय ॥ श्री० ॥ ३२ ॥ ए गसठमी ढाल

मेरे, निर्द्वंद्वण मीथ्यात ॥ गुणसागर आगे कहेरे, ए
तो वारु वात ॥ श्री० ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ मुनी चाखे प्रविशण सुणो, धरी परतीत
अपार ॥ प्रवर विप्रनी आगले, चरित कहुं सुविचार
॥ १ ॥ हिंस्यो कर्म सेमाचरी, काल कियो तिही वार
॥ मोह वशे आवी लियो, नंदन घर अवतार ॥ २ ॥
देखी मंदीर मालिया, जाति समरण लाध ॥ पुत्र पिता
जननि बहु, केम कहु अपराध ॥ ३ ॥ एम जाणी मौ
ने रह्यो, लोगा मुंगो नाम ॥ मुनि चापित साचुं वदे,
आगे उजो ताम ॥ ४ ॥

ढाल ६७ मी ॥ सुग्रीव नगरी सुहामणीजी ॥ ए
दिशी ॥ चक्री चाखे देवशंजी, तेह मुनीवर केम ॥ वो
लाव्यो चाण्या जलीजी, सुणवा लाग्यो प्रेम ॥ १ ॥
जिनेश्वर धन धन थारो ज्ञान ॥ संशय तिमर निवार
वाजी, जाणे उग्यो जाण ॥ जि० ॥ २ ॥ मुंगाशु मुनि
वर कहेजी, ए जगनो व्यवहार ॥ माता जाये दीकरी
जी, पुत्र पिता अवतार ॥ जि० ॥ ३ ॥ वहिन फीरी
होय सोकंडीजी, वंधव वैरी थाय ॥ विज्ञ लहे मुखप
णीजी, मूरख विज्ञ कहाय ॥ जी० ॥ ४ ॥ ठाकर ते चा
कर होवेजी, चाकर ठाकर होय ॥ निर्धन ते धने आ
गलाजी, संधन निर्धन होय ॥ जी० ॥ ५ ॥ ए व्यवहारे
वरततांजी, दोष न एक लिगार ॥ मुंगो चापा वोलि
थोजी, लीधो संजमचार ॥ जी० ॥ ६ ॥ हारया वाद

विशेषथीजी, होई खीसाणा दोई ॥ घर आव्या पिता मा
 यजी, अति खीजाव्या सोई ॥ जी० ॥ ७ ॥ साधु उ
 पद्रव कारणेजी, राति आव्या चाल ॥ यद्दु उपद्रव
 टालियोजी, थंज्या ते ततकाल ॥ जी० ॥ ८ ॥ करु
 णा आणी अति घणीजी, ब्रोडाव्या ते राय ॥ दोई बं
 धव माय बापसुंजी, हर्ष्या समकित पाय ॥ जी० ॥
 ॥ ९ ॥ माय बाप ते मुलगेजी, मारग लाग्या जाण ॥
 देश व्रति होई बांधवाजी, आराधन प्रमाण ॥ जी० ॥
 ॥ १० ॥ पेहेले स्वर्ग सुलक्षणाजी, पंच पल्योपम
 आय ॥ दोई बंधव देवताजी, विलशे पुण्य प्रभाव ॥
 जि० ॥ ११ ॥ नाम अयोध्या वे चलीजी, नगरी अ
 ति अनीराम ॥ जयशत्रु नामे चलोजी, राजा गुणनो
 धाम ॥ जी० ॥ १२ ॥ शेठ सह माहे बडोजी, सागर
 दत्त सुजाण ॥ नारी नामे धारणीजी, पाले अरिहंत
 आण ॥ जी० ॥ १३ ॥ देव चविने उपनाजी, शेठ
 घरे संतान ॥ माणिचद्र मनोहरुजी, पूरणचद्र प्रधा
 न ॥ जी० ॥ १४ ॥ प्रज्ञा बले पढिया घणाजी, जोव
 ननि वय पाय ॥ परणी सुंदर सुंदरीजी, सुखमें सह
 दिन जाय ॥ जी० ॥ १५ ॥ श्री महेंद्र मुनीश्वरुजी, वन
 में आया जाण ॥ राजा शेठ सिधावियाजी, सुणवा
 श्री गुरु वाण ॥ जी० ॥ १६ ॥ वाणी सुणी वैरागी
 याजी, हुवा संजमधार ॥ श्रावकना व्रत आदरेजी,
 तव ते शेठ कुमार ॥ जी० ॥ १७ ॥ काल केतले आ

वीयाजी, साधु दया प्रतीपाल ॥ वंदन जातां वाटनेंजी,
 गिलियो एक चडाल ॥ जी० ॥ १८ ॥ तेहने साथे कुव
 रीजी, दोड साये प्रेम ॥ दुष्ट जातीसुं उपनीजी. हे
 त जणाव्यो केम ॥ जी० ॥ १९ ॥ श्रुने अने चडाल
 नेजी, हेज हिये न समाय ॥ नयण जणावे नेहलोजी.
 अचरिज कह्यो न जाय ॥ जी० ॥ २० ॥ च्यारे आयां
 चालकेजी, श्री मनिवरके पास ॥ संशय हरवा मुनि
 कहेजी, पूर्व जवांतर तास ॥ जी० ॥ २१ ॥ एह थकि
 जवाति सरजी, मात पिता तुह जेह ॥ समकित धर्म
 वीराधीयोजी, तेहनो फल ठे एह ॥ जी० ॥ २२ ॥ ब्रा
 ह्मण जव पहिले हुवोजी, जीतशत्रु राय उदार ॥ ब्रा
 ह्मणी होइ रुखमणजी, राजा कीधो प्यार ॥ जी० ॥ २३ ॥
 वरस सहस सुख जोगवीजी, नरके पोहतो जूप ॥ मृग
 हुइ मानस हुवोजी, हुड गजराज अनूप ॥ जी० ॥ २४ ॥
 जाति समरण ज्ञानसुंजी, अणसण दिवस अदार ॥ सु
 र गतिना सुख जोगवेजी, एह चंडाल विचार ॥
 जी० ॥ २५ ॥ ब्राम्हणी जव जमी स्वाननिजी,
 पामी गती विपरीत ॥ पुरवला संबंधथीजी, मांहो मां
 हे प्रीत ॥ जी० ॥ २६ ॥ समकीत धर्म ग्रहावियो
 जी, श्रावकना व्रत वार ॥ अणसण मास ज्युं एकनो
 जी, आराधी अती सार ॥ जी० ॥ २७ ॥ पहिले सु
 रलोके गयोजी, ते चंडाल ते वार ॥ पंच पल्योपम
 आउखोजी, नित्य जिहां जयकार ॥ जी० ॥ २८ ॥

श्रुति पिण दिन सातनोजी, अणसण पाल्यो जोय ॥
 काल करी नृप कुंवरीजी, तिणाहि नगरी होय ॥ जी०
 ॥ २९ ॥ स्वयंवर मंडप मामीयोजी, आया राय अ
 नेक ॥ देव करे समजावणीजी, कुमरी लहे विवेक ॥
 जी० ॥ ३० ॥ चारित्रं पाली निरमलोजी, पाम्या सु
 र अवतार ॥ एह प्रसंगे चांखीयोजी, काम जणी वि
 स्तार ॥ जी० ॥ ३१ ॥ ए जीव दोई थायस्येजी, वट
 पुर केरा नाथ ॥ कंचनरथने चंद्रप्रजाजी, राजा राणी
 साथ ॥ जी० ॥ ३२ ॥ अणसण आराधी खरोजी,
 बंधव दोयसु जाण ॥ स्वर्ग सुधर्मे देवताजी, पांच प
 ल्योपम मान ॥ जी० ॥ ३३ ॥ ए सडसठमी ढालमेंजी,
 समकीत शुद्धी देख ॥ गुणसागर अराधीयाजी, पा
 मे फल सुं विशेष ॥ जी० ॥ ३४ ॥

दुहा ॥ कुशल घणोळे कोसला, नगरी अति मंदा
 ण ॥ पद्मनाभ जग परगडो ॥ राज करे राजान ॥ १ ॥
 नाम प्रणामे धारणी, तास धारणी नार ॥ शिलवंति
 साची सती, सत्यवंति संसार ॥ २ ॥ सुरलोके सुख
 जोगवी, बंधव दोइ उदार ॥ राणी बरे उपना, युगल
 पणे अवतार ॥ ३ ॥ वडा तणो मधु नाम वर, लघुनो
 कैटन नाम ॥ थापियो महा मोहोचवे, कुमर दोइ सका
 म ॥ ४ ॥ परणावि औवन पणे, मधुने दीधो राज ॥ युव
 राज पदवि लघु जणि, नृप सारया निज काज ॥ ५ ॥
ढाल ६८ मी ॥ शांति जिणंद सोजागी, हुंतो थयो

तुम गुण रागी ॥ ए देशी ॥ राजा राज करंत, युवरी
 जा जयवंत ॥ सूरी चंदनी जोड, पूरे मन केरा कोड
 ॥ १ ॥ सारे परजाना काज, जगमाही जस गाज. श
 त्रु कंद कुदाल, मोटा जेह चूपाल ॥ २ ॥ एक दिन सु
 एयो कोलाहल, नृप पूवे ए स्युं कल कल ॥ प्रतिहारीयो
 चापे, स्वामी देश विणाशे ॥ ३ ॥ जीमसेन नामे चूपाल,
 दुर्ग बले सुविसाल ॥ पशु माणस लेइ जाय, उज्ज
 ड देश ए थाय ॥ ४ ॥ चूपति लाग्यो जइ चाहे, दु
 र्ग तणो बल साहे ॥ फोज फीरी तव आवे, पागे सौ
 र मचावे ॥ ५ ॥ पुर वाहीरथी जे पावे, तेतो लेइ सि
 धावे, तेथी ए सहु लोक, पांवेते प्रचु पोक ॥ ६ ॥ ए
 म सुणता ते राय, देइ ददामे घाव ॥ हयवर गयवर
 गाजी, दलबल अति घणो साजी ॥ ७ ॥ चढीयो वा
 र न लाइ, रेणु रही नज ढाइ ॥ वाटे सूर वधाए ॥
 कायर धूजणी थाए ॥ ८ ॥ आया वटपुर चाली, चा
 वी सके कुण टाली ॥ हेमरथ सामो आयो, राय त
 णे मन चायो ॥ ९ ॥ हेमरथ हाथाशुं खोवे, आपे
 आप विगोवे ॥ नृपने मंदिर लावे, जाणे नारी गमा
 वे ॥ १० ॥ आदर अति घणा किधा, जिमवा वेसण
 दिधा ॥ इंद्रप्रजा पट नारी, साथे कहे अविच्यारी ॥
 ॥ ११ ॥ कामनी चाजग फलीयो, आज दिहाडो ए
 वलीयो ॥ आपण पिरसणो ए किजे, राय तणो मन
 रिजे ॥ १२ ॥ कामनी कंतशुं बोले, नृपनुं कां डमडो

लै ॥ चूप चुयंगम कालो, तेहथी दिजे टालो ॥ १३ ॥
 चटकी बोलीयो इस, मन आणी अति रीस ॥ एवढो
 स्यो अजीमान, तुंतो दासी समान ॥ १४ ॥ राणी
 पीरसवा आवी, रायतणे मन चावी ॥ राजा रीजीयो
 जाणी, उलखीयो मन राणी ॥ १५ ॥ राजा उठी सी
 धायो, तलक्षण मंत्री बुलायो ॥ ए राणी घर लावो,
 हमशुं प्रेम मीलावो ॥ १६ ॥ मंत्री राय संकेत, चा
 ल्या कटक समेत ॥ आई नीमशुं अमीयो, सूर महारण
 लनीयो ॥ १७ ॥ ऊगको अति घणो लाग्यो, चुपति नी
 मजी जाग्यो, बांधीने जव लीधो, कारज रायनो सीधो
 ॥ १८ ॥ राजा पागे एवलोयी, मनमथ चुने ए बली
 यो ॥ तन मन रागसुराच्यो, राणीशुं मन माच्यो ॥
 १९ ॥ ढडा पयाणेए आवे, वटपुर वाट चुलावे ॥
 मंत्री मंत्र उपायो, राय अयोध्याये आयो ॥ २० ॥ ए
 अडसठमी ढाल, जीती आयो चूपाल ॥ श्रीगुणसाग
 र राय, राजाजी वयर वसाय ॥ २१ ॥

दुहा ॥ राय अयोध्या आवीयो, मनमें अति उ
 चाट ॥ खीजी कहे केम चुलीयो, वटपुर केरी वाट ॥ १ ॥
 वाचा पालतुं आपणी, अहो मोटा प्ररधान ॥ सो वाता
 की वात ए, जो चाहे मुऊ प्राण ॥ २ ॥ कलीमल अरती
 असुख अती, सूता निंद म जोय ॥ अन्न न पाणी जा
 वही, सोक्यो जाइ सोध ॥ ३ ॥ रायकुमरी नवयौवनी,
 साथे गमन राजान ॥ इंदुप्रजा राणी ह्वीवे, साले सा

ल समान ॥ ४ ॥ सस्नेहां तो दुख लहे, निस्नेहा सुख
 होय ॥ तिल सरसव जग पिलीए, रेतन पीले कोय ॥
 ॥ ५ ॥ रागे वाह्यो नकले, वैरागी समजाय ॥ चोल
 मजीठा रस लीए, वाकस नवि मिसलाय ॥ ६ ॥

ढाल ६९ मी ॥ नेमीश्वर विनती मानीएजी ॥ ए
 देशी ॥ राजेसर कहीयो मानीएजी, कहे मंत्रीस सुजाण
 ॥ रा० ॥ ए टेक ॥ कुव्यसन केरो सग न किजे, कुविस
 न दुःख दातार-॥ तिण माही ए अति मोहोटो, परत्री
 य केरो प्यार ॥ रा० ॥ १ ॥ विण दोरे ए बंधन क
 हीए, विण व्याधे असमाध ॥ विण काजल ए काली
 सा कहावे, विण मदिरा असमाध ॥ रा० ॥ २ ॥ आं
 ख उनी दो निंद तपोक्षय, द्विण द्विण दाजे देह ॥
 तेहने नित्य चद्र वारमोरे. जेहनो परधर नेह ॥ रा०
 ॥ ३ ॥ वरस सात साढानो जारूयो, थावरनो अति
 लाग ॥ जाव जीव लगे ए अति पीके, पर रमणीनो
 राग ॥ रा० ॥ ४ ॥ जगमाहे अपजसनो पडहो, आ
 पदनोरे सकेत ॥ शिवपुर धारक पाट कहावे, पर र
 मणीनो हेत ॥ रा० ॥ ५ ॥ परनारी मुख जोतां पलटे,
 पलक पलक जेलीवार ॥ तेताहि वर्ष पचेवो, कुची
 नरक मजार ॥ रा० ॥ ६ ॥ पररामासुं राग करता,
 देवा द्रव्य विणास ॥ साधंसा सातमो गांडी अनेरो,
 ठामन दिसे तास ॥ रा० ॥ ७ ॥ राजा जांखे सुण मं
 त्रिश्वर, ए सब साची वात ॥ पिण माहरे मन तो रढ लागी,

कल्प समा दिन जात ॥ रा० ॥ ८ ॥ पंखि पतिने दिवसे
 न सुजे, राते न सुजे काग ॥ मुऊने तो दिन रात न
 सुजे, केहेण तणो नहि लाग ॥ रा० ॥ ९ ॥ ढोल बजावे ढो
 लियारे, पिण वाहरे नवि जाय ॥ हेतवंता तो हेत व
 तावे, जोर न कोइ थाय ॥ रा० ॥ १० ॥ एतले ऋतु राजा
 चलि आयो, नामे वसंत वसंत ॥ वनराजी फल फूल
 वीराजी, लोक हसंत रसंत ॥ रा० ॥ ११ ॥ ठाम ठा
 मना राय बोलाया, खेलणको मीस ठाण ॥ इंद्र प्र
 ञ्जासुं राजा तेड्यो, हेमरथ प्रीत प्रमाण ॥ रा० ॥
 १२ ॥ रमणीए राजा समजाव्यो, ए मुऊ उपर खे
 ल ॥ मधु नृप मांड्यो मूरख प्रिडडा, मकर मकर म
 न मेल ॥ रा० ॥ १३ ॥ रावण पर त्रिधा दोष न जा
 रयो, राम हेम मृग जेम ॥ जोया दूपण राय युधीष्ट
 र, जाणी शक्यो नहि तेम ॥ रा० ॥ १४ ॥ वात अ
 नेक कहि समजावे, राय न माने एक ॥ होण हार
 साथे कुण बलियो, ए नर आण विवेक ॥ रा० ॥ १५ ॥
 राणी लेइ आयो राजा, मधु राजा सुख पाय ॥ खे
 लि वसत ज्युं लोक विसर्ज्या, राणी राखी राय ॥ रा०
 १६ ॥ पटशणी करी थापी सुंदरी, मधु राजा मन
 रंग ॥ सुख माने ते विविध प्रकारे, इंद्र इंद्राणी संग
 ॥ रा० ॥ १७ ॥ हेमरथ राजा वात सुणी जव, विव्हल
 थयो अपार ॥ बलिया साथे जोर न चाले, अइ अइ क
 र्म विचार ॥ रा० ॥ १८ ॥ खिण रोवे खिण जोवे दह दिशि,

खिण आगणे खिण सेज ॥ खिण गोखे चड वारे दे
 खे, फाटे हियडो हेज ॥ रा० ॥ १९ ॥ वल्ल विहुणो वि
 कल रूपे, धुले धूसरी अंग ॥ प्रीया प्रीया मुख अधी
 क पूकारे, सवाहे वात विरंग ॥ रा० ॥ २० ॥ पुरी अ
 ज्योध्या चालि आयो, नर्म पाड्यो नूपाल ॥ नारी नि
 रखणनो अनीलापी, साथे फिरे बहु बाल ॥ रा० ॥ २१ ॥
 सोर सुणंतां गोखे चढिने, नारी निहाल्यो नाथ ॥
 धाय मोकली लीयो बुलाइ, दूर करी सब साथ ॥
 रा० ॥ २२ ॥ कां तु एहवो पूठे पदमनी, पूरव प्रेम प्र
 कार ॥ नारी विठोहो महा दुखदाइ, कवण अठे तुज
 नार ॥ रा० ॥ २३ ॥ तुं प्यारी हुं प्रितम थारो, राख
 ले माहरा प्राण ॥ पहिलि शीख न मानी पापी, जल
 वहि गयो मुलतान ॥ रा० ॥ २४ ॥ जोरे जाके जाण
 लहिने, राजा करशे चांड ॥ चांड पुरुपनुं कोइ न था
 शी, चांड थंड तुं गंरु ॥ रा० ॥ २५ ॥ को हिरा वने मां
 हि कंसारी, षडिया निपट निकाम ॥ बैयर जातिने वा
 हिर हीडी, न लहे एकहि दाम ॥ रा० ॥ २६ ॥ चित
 डा नींतर चिटपट लागी, साल सरिखो बोल ॥ सा
 चो शिल सलुणो जाण्यो, विखीया विख सम तोल ॥
 रा० ॥ २७ ॥ मधु राजा माननीसुं मोह्यो, माने मेरु
 समान ॥ आपणा पौज एतले आयो, मोह तणो अव
 सान ॥ रा० ॥ २८ ॥ परनारी लंपट दृढ बांध्यो, आय्यो
 सजा पास; राजा नाखे वेग विणासो, इहां नही अरदास

रा० ॥ २९ ॥ राणी पूते का मारिजे, स्वामी ए नर आज
 ॥ राजा बोले एणे किधो, मोटो आज अकाज ॥ रा०
 ॥ ३० ॥ ए काडी ए सतरे पातिक, तोले घाली जोय
 ॥ ए कासी परनारी गमननो, पातिक चारी होय ॥
 रा० ॥ ३१ ॥ परनारीना दूपण ए तो, आप तुम्हे
 शुं किध ॥ हुं परनारी किधी प्यारी, जगमें अपजस
 लिध ॥ रा० ॥ ३२ ॥ कहेणी तो जगमांही बहुली, क
 रणी विरला जोय ॥ मोटा चांडा गेत न लागे, रांक ह
 रया सुं होय ॥ रा० ॥ ३३ ॥ एह वचने राजा वरा
 ग्यो, मनमे करे विचार ॥ कुलने एह कलंक चढायो,
 धीग धीग मुऊ अवतार ॥ रा० ॥ ३४ ॥ नवजोवनमें
 वांध्यो जे नर, नृप गेडावे ताम ॥ वोहरो तेकी शीखज
 आपी, ए हम करजे काम ॥ रा० ॥ ३५ ॥ इण अव
 सर मुनिराज पधारया, वोहरण केरे काज ॥ नृप आ
 हार सुजतो दिधो, सफल गणयो दिन आज ॥ रा०
 ॥ ३६ ॥ जेष्ट पुत्र तव पदवी थाप्यो, मधु कैटन नृप
 सोय ॥ सजम लेई स्वर्ग वारमे, देव हुआ ते दोय ॥
 रा० ॥ ३७ ॥ इंद्रप्रजा दिक्ता व्रत पाली, राजा साथे
 सहाय ॥ कनकमाला ए आय उपनी, नेह ळप्यो न र
 हाय ॥ रा० ॥ ३८ ॥ एगुणसत्तरमी ढाल नलेरी, पूर्व न
 वांतर नेद्र ॥ गुणसागर जिनवरने वचने, टलीयो
 संघलो खेद ॥ रा० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मधु नृपतीनो जीव जै, चारित्रने संकेत ॥

स्वर्ग तणा सुख जोगवी, पूर्व पुण्यने हेत ॥ १ ॥ श्री
 परजन कुमारजी, रुखमणी उर उत्पन्न ॥ कृष्ण घरे हरी
 वशमें, माचो पुत्र रतन्न ॥ २ ॥ कैटज सुर सुख जोग
 वी, लेस्ये वर अवतार ॥ जांबुवती उरे सही, होस्ये
 सांब कुमार ॥ ३ ॥ राय हेमरथ नारीनी, आणी अर
 ति अपार ॥ काल करी नवमें नमी, कोप तणे प्रकार
 ॥ ४ ॥ धुमकेतु नामे हुआ, असुरां केरो राय ॥ ते
 ए बालक अपहरयो, वयर विलय नवी जाय ॥ ५ ॥

ढाल ७० मी ॥ राधा लोचन रंगमो ए देशी ॥ जि
 नवाणी श्रवणे सुणी, नवि पास्या प्रतिबोध ललना ॥
 करे आपणमें खामणा, टाले वैर विरोध ललना ॥ १ ॥
 धन श्रीमिंधर स्वामीजी, जे जांजे संदेह ललना ॥ ध
 न चक्री जिणे पुढीयो, पूर्व नवांतर एह ललना ॥ ध० ॥
 ॥ २ ॥ नारद ऋषी करकोसथी, निकलीयो तेहीवार ॥
 ल० ॥ अलजयो आतुर थयो, देखण बाल कुमार ॥
 ल० ॥ ध० ॥ ३ ॥ गीरी वैताढे आवीयो, यमसंवर
 घर जाय ॥ ल० ॥ कनकमालानी नक्तीथी, ऋषी रली
 आयत थाय ॥ ल० ॥ ध० ॥ ४ ॥ गूढ गर्जणी तुं सुणी,
 जायो सुंदर नंद ॥ ल० ॥ ऋषीजी तुम प्रासादथी, नं
 दन आनंद कंद ॥ ल० ॥ ध० ॥ ५ ॥ देखु थारो नानको,
 परखुं लक्षण सार ॥ ल० ॥ ऋषी आगे लोटावीयो
 दिए आशीश तेवार ॥ ल० ॥ ध० ॥ ६ ॥ चिरंजीवो चिं
 रनंदजे, पूरे मातनी आश ॥ ल० ॥ ऋषी आदेशे उ

ठाड़यो, हियडे धरयो उल्हास ॥ ल० ॥ ध० ॥ ७ ॥ मातं
 मुखो अरि सनमुखो, लक्षण गूण गरीठ ॥ ल० ॥ स
 ब विध सुदर देखतां, लोचन अमीय पइठ ॥ ल० ॥ ध०
 ॥ ८ ॥ नारद आव्या द्वारीकां, हरी रुखमणीके पास
 ॥ ल० ॥ जिनवर वचन सुणावीयां, धूरठे हालगे ता
 स ॥ ल० ॥ ध० ॥ ९ ॥ हीरा चुनी लालडा, मोती मा
 णिक जोय ॥ ल० ॥ जिहां जाये तिहां सादरा, तिम
 करमे तो होय ॥ ल० ॥ ध० ॥ १० ॥ हरी रुखमणी आ
 नंदाया, सुणी सुतना अवदात ॥ ल० ॥ परम महो
 सुख पामीयो, आनंदमें दिन जात ॥ ल० ॥ ध० ॥ ११ ॥
 आशा सब जंग वालही, आशा अमर अपार ॥ ल०
 ॥ धर्म कर्म आशा नली, आश मर्वांकी लिंगार ॥ ल०
 ध० ॥ १२ ॥ आशाए धन संपजे, आशाए संतान
 ॥ ल० ॥ आशाए रण जीतिए, आशाए सनमान ॥
 ल० ॥ ध० ॥ १३ ॥ एक न हुती पाधरी, नंदीपेणनी
 नार ॥ ल० ॥ सहे सबहु तेरे परगटी, आशाने अधी
 कार ॥ ल० ॥ ध० ॥ १४ ॥ आशाए हरीचंद्रजी, उ
 ग्रसेन नृप देख ॥ ल० ॥ आपद काढी आकरी, पुन
 रपी राय विशेष ॥ ल० ॥ ध० ॥ १५ ॥ रावण सीता
 अपहरी, पनीयो राम विगोह ॥ ल० ॥ सा जीवी आ
 शा थकी, फिरी पामी अति सोह ॥ ल० ॥ ध० ॥ १६ ॥
 पवनराय घरे अंजना, पतिनो अति अपमान ॥ ल०
 आशाए देवावीयो, आदर मेरु समान ॥ ल० ॥ ध० ॥

॥ १७ ॥ रामचंद्र नल पांशवा, आशा तणे बल जो
 य ॥ ल० ॥ फिरी व्होडावि आपणी, आश करे सो
 होय ॥ ल० ॥ ध० ॥ १८ ॥ वरस जाशे आशा वनी, फल
 शे मननी आश ॥ ल० ॥ आश बले रुखमणी तणो,
 होसे लिल विलास ॥ ल० ॥ ध० ॥ १९ ॥ मंदिर सं
 वर कालने, वाधे बाल कुमार ॥ ल० ॥ हाथोहाथे
 संचरे, उपजावे अति प्यार ॥ ल० ॥ ध० ॥ २० ॥
 जिम जिम वाधे वए करी, तिम तिम वाधे एह ॥
 ल० ॥ ऋद्धी वृद्धी सुख संपदा, अरु वाधे धन नेह
 ॥ ल० ॥ ध० ॥ २१ ॥ प्राण थकी प्यारो घणो, मा
 ताजीने सोइ ॥ ल० ॥ पिता परम सुख दायकुं, परी
 अण प्रितो जोइ ॥ ल० ॥ ध० ॥ २२ ॥ पठीगुणी
 पंमित थयो, निर्मल बुद्धि उदार ॥ ल० ॥ शस्त्र शास्त्र
 आदेकला, व्होत्तरना जणनार ॥ ल० ॥ ध० ॥ २३ ॥
 बालपणो बोली करी, यौवननी वय पाय ॥ ल० ॥ धि
 र विरने साहसिक, सूर शीरे कहेवाय ॥ ल० ॥ ध०
 ॥ २४ ॥ हयगय रथ पायक तणी, सेना सजी अपार
 ॥ ल० ॥ सीमामा सहु साधीया, साध्या जेहे ऊंजार ॥
 ॥ ल० ॥ ध० ॥ २५ ॥ देश जीती घर आवीयो, ला
 वीयो वर वस्त ॥ ल० ॥ नूचर खेचर मानवी, माने
 आण समस्त ॥ ल० ॥ ध० ॥ २६ ॥ ए शीत्तरमी
 ढालमें, आण मनावणनाम ॥ ल० ॥ गुणसागर गुरु
 आपणे, प्रगट थयो जग काम ॥ ल० ॥ ध० ॥ २७ ॥

चोपइ ॥ खंरु खंड रसठे नवनवा, सुणतां मिठी साक
 र जेवा ॥ श्रीहरी वंश चरित्र जय जयो, त्रिजो खं
 रु ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति श्री हरी वंस विस्तार
 प्रबंधे ढाल सागर तृतीय खंरु सनाप्तः ॥

॥ श्री ढालसागर हरीवंस प्रबंध चतुर्थ खंड प्रारंभः ॥

दुहा ॥ कर्म हणी केवल लक्ष्यो, सुगति पहोता स्वा
 मि ॥ त्रिविध त्रिविध त्रिहु कालनां, सिद्ध नमु शिर
 नामि ॥ १ ॥ अब चोथा अधीकारना, भविष्यण सुणो
 सुविचार ॥ गुणवंतानां गुण ए, सांपलतां सुख अपार
 ॥ २ ॥ मात पिता सुख पामियां, देखी कुमरनां काम
 ॥ लोक प्रसिद्धो आपियो, युवराज पद ताम ॥ ३ ॥
 प्रचुर वित्तनुं व्यय करी, संतोख्यो संसार ॥ आचक्र
 जन मुख उच्चरे, मदन सुयश विस्तार ॥ ४ ॥ नूप
 तिने जल जामनी, पंचसया परीवार ॥ नंदन पिण त
 स तेतला, महा कला गुण जाण ॥ ५ ॥ प्रचुता पेखी
 कामनी, दुमनी पडी दुमात ॥ आप आपणा पुत्रसुं,
 एह जणावी वात ॥ ६ ॥ सिंहणी एकज सुत जणी,
 निर्जय थाए अपार ॥ खरी खरी दश पुत्रणी, वहे गा
 रको चार ॥ ७ ॥ मदन बलि महिमा निलो, तुमतो सर्ध
 ला रंक ॥ दिन थोडामां देखज्यो, राजा हुउ निसंक ॥ ८ ॥

ढाल ७१ मी ॥ इण पुर कंवल कोइ न लेशी ॥
 ए देशी ॥ वचन सुणी निज माता केरां, कोपे चमयां

ने पुत्र घणेश ॥ मारा मदनने वार न लावा, तो तुम
 आगे हम फिरी आवा ॥ १ ॥ मदनसुं मांडे प्रिति
 अपार ॥ माहरे तुं ठाकोर अधार ॥ कूड केलवे कप
 टि केतां, सांचलजो मुऊ कहेतां तेतां ॥ २ ॥ भोजन
 आसन शयनमजारी, खान पानमें दिए विष जारी ॥
 असृत होई प्रणभे सोइ, पहंची शके उपावन कोइ ॥ ३ ॥
 डाकणी शाकणी न सके लागी, भूत पिशाचणी जा
 ए जारी ॥ वांको ते फिरी सुधो थाय, दिन दिन महि
 मा अधिक दिशाच ॥ ४ ॥ गिरी वैताव्य गयां एकवार,
 रुहेस शिखरनो चुवन उदार ॥ सहको आवी वेठां जा
 म, वात व्हे आपलमें ताम ॥ ५ ॥ गिरी शिखरे एक
 गोपुर देखि, दण्ड मुखे तव वात विशेखी ॥ जो जाए
 कोइ गोपुर माहि, मन वठित फल पावे सोहि ॥ ६ ॥
 मदन गयां तिहां हाली चाली, जाग्यो देव वजावी
 ताली ॥ मदन साथे कियो संग्राम, हारि दियो सिंघा
 सण ताम ॥ ७ ॥ मंत्र तणो गण दिधो वारू, अवर
 दियो चडार अपारू ॥ गुकट दियो रलाको निको ॥
 आभरण सहितसुं दीधो टीको ॥ ८ ॥ गूफा दुसरी मां
 हि सीधावे, उत्र चलो युग चामर पावे ॥ खड्ग मनो
 हर वस्त्र विशाल, कुसुम वासन अधिक रसालु ॥ ९ ॥
 गूफा तिसरी माहि आवे, नाग सेज वर वेण लहावे
 ॥ पाय पिढ सिंघासण कोमल, वस्त्र विचूपण पावे तो
 जल ॥ १० ॥ मंदिर कारी विद्या विधि, सेन तणी र

खवाली सीधी ॥ ए दोए बिद्या आपी देवा, करजोडी
 ने मागे सेवा ॥ ११ ॥ चउथीवारे सो अवगाहे, ज
 ल वावीने पकीयो हलावे ॥ मकरध्वज वर वारु लहि
 यो, मकरकेतु सो नाम कहियो ॥ १२ ॥ अग्नीकुंरुमां
 हे पग ठावे, वार पंचमीसुं शोचा पावे ॥ कनक व
 स्त्र अग्ने धोवाए, युग्म लह्यां ते पुण्य पसाए ॥ १३ ॥
 मेपाकारे पर्वत दोई, षड्विवार गयो तिहां सोइ ॥ मि
 लतां कोपर साथे खंडे, कुंडल युग्म लहि अती तडे
 ॥ १४ ॥ वार सातमीए सहकार, उपर चढियो मदन
 कुमार ॥ ऊंजोडी फल पाडी नांखे, वानर रूप तदा
 सुर जांखे ॥ १५ ॥ आप जणावी चरणे लागी, वो
 ल्यो देव प्रनु वरुजागी ॥ गगन गतिनी पावडी वि
 शाला, आपे मुकट सुधारस माला ॥ १६ ॥ वार आ
 ठमी कपीठ तणे वन, चाल्यो मदन महा निर्जय म
 न ॥ तरु उपर चढियो ततकाल, गज रूपि सूर अ
 ती विकराल ॥ १७ ॥ युद्ध करी प्रनुने वश होइ, मन
 गमतो वर आपे सोइ ॥ गज रूपी सूर हुं तुं स्वामी,
 समय समरवो अवसर पामी ॥ १८ ॥ नवमी वारे पर
 वत उपर, चाल्यो कामदेव साहस धर ॥ नुजंगासुर
 मेहेला तव जाइ, उठियो करी संग्राम सजाइ ॥ १९ ॥
 जाती जणी दीधो ह्यरत्न, काठो कवच जीवनो यत्न
 ॥ मुद्गीका मन मोहन आपी, चाल्यो तास तिहां थीर
 थापी ॥ २० ॥ दशमी वार सराव मुखे गिरी, हरी

अंगज आयो जिम निज घरी, अंगद कंठीका वर
 लाधी, कंदोरो लायो सूर साधी ॥ २१ ॥ एकादशमी
 वार मनोजव, बराह तणे आकारी गयो तव ॥ धनु
 प्य पुष्प जय पान्यो पूरो, जय नामां वर शंख सनू
 रो ॥ २२ ॥ वारसमी वारे बलवतो, पंकज वनमें जा
 य रमंतो ॥ विद्याधर बांध्यो ठोमावे, कन्या काम ज
 णि परणावे ॥ २३ ॥ विद्या दोइ अनेरी दिधी, इंद्र
 शुं जाल करी प्रसिद्धी ॥ हार हरख शुं आप्यो
 रुडो, मान्यो गुण नवि ए कूडो ॥ २४ ॥ तेरसमि
 वारे अति तंडन, काल वने आयो कुल मंरुन ॥ जी
 त्यो दैत्य न लागी वार, आप्यो कुसम धनुष्य उदार
 ॥ २५ ॥ मदन मोहन तायन सोपण कर, उन्मादन
 ए पंच वाण वर ॥ जन मोहन युवति उन्मादन, मद
 न नाम तिहांथी हरीनंदन ॥ २६ ॥ चउदशमी वारे
 सु उपचारे, नीम गूफा मांहे पाव धारे, उत्र पुष्पको
 फूलकि सेज, आपे असुर धरी अती हेज ॥ २७ ॥
 नाइ मरवा कारण मेल्यो, आपणमें चतुराइ खेल्यो ॥ पु
 ण्य बले रुखमणीको जायो, तिम तिम वधतो जाय
 सवायो ॥ २८ ॥ वने रणे अरीधे रणमांहे, अग्नी नी
 र सागरमें प्राही ॥ सोवन जागत विच विचालो ॥
 पुण्य एक मोटो रखवालो ॥ २९ ॥ एकाहत्तरमी ढाल
 वखाणी, वक्ता श्रोता ने मन मानी ॥ श्री गुणसागर
 पण्य करीजे, मदन कथा मन मांहे धरीजे ॥ ३० ॥

दुहा ॥ लाज देखी नव नव परे, आणे रीस अ
 पार ॥ जोर न चाले जवरसुं, पिण न तजे अविचा
 र ॥ १ ॥ खेदि काढे नित्यको, सूरज जग हितकार ॥
 तिमर न व्याप्या विण रहे, ए दुर्जन अविचार ॥२॥

ढाल ७२ मी ॥ निमजी ज्ञान वरसोनी ॥ ए देशा ॥
 वज्रमुखो कहे जाइजी ॥ मन मोहना ॥ तुम्ह सम अवर
 न कोइ ॥ लाल मन मोहना ॥ जिहां जिहां जाई सं
 चरो ॥ म० ॥ लाज घणेशो होय ॥ ला० ॥ १ ॥ पनरस
 मी वारे हिवे ॥ म० ॥ विपुल वन पाउधार ॥ ला० ॥ ग
 ज जिम आयो गाजतो ॥ म० ॥ तव ते विपन मजार
 ॥ ला० ॥ २ ॥ नाग जयंतक ठे तिहां ॥ म० ॥ वाहनी
 एक विसाल ॥ ला० ॥ तेहने कांठे तरु तले ॥ म० ॥
 पद्म शिला सुवीशाल ॥ ला० ॥ ३ ॥ रुपशुं यौवन गु
 णवंती ॥ म० ॥ पद्मासन आकार ॥ ला० ॥ रूफटीक
 तणी जप मालिका ॥ म० ॥ ध्यावे ध्यान अपार ॥
 ला० ॥ ४ ॥ श्वेत वसन विराजतां ॥ म० ॥ मस्तक
 बुटा केस ॥ ला० ॥ शोभा पोखे सुंदरी ॥ म० ॥ वर्ण
 गौर विशेष ॥ ला० ॥ ५ ॥ चंद्रमुखी मृगलोचनी ॥
 म० ॥ बांकी नमुह कमाण ॥ ला० ॥ तिन लोकनी
 नारीनो ॥ म० ॥ बेठी लेइ गुमान ॥ ला० ॥ ६ ॥ स
 र्व अवेवां सोहनी ॥ म० ॥ रमणी रुप रसाल ॥ ला०
 ॥ मदन तणे मन मोहनी ॥ म० ॥ लागीए ततकाल
 ॥ ला० ॥ ७ ॥ पंच बाण लागी खरां ॥ म० ॥ म

दन थयो बेफाम ॥ ला० ॥ हम न जावा पावही ॥ म०
 ॥ जेसु जीनकी रहाम ॥ ला० ॥ ८ ॥ विवुधवत शक आ
 वीयो ॥ म० ॥ उजो करीय जुहार ॥ ला० ॥ कुवर पू
 ठे देवसु ॥ म० ॥ कुमरीनो सुविचार ॥ ला० ॥ ९ ॥
 देव जणे कुवर सुणो ॥ म० ॥ खेचर प्रजंजन नाम ॥
 ला० ॥ वाग देवी दिपती नली ॥ म० ॥ जाइ कुमरी
 सकाम ॥ ला० ॥ १० ॥ रती नामे गुण आगली ॥ म०
 ॥ नव यौवनमें एह ॥ ला० ॥ कुंअर कहे कष्टे करी ॥
 म० ॥ कां खीजावे देह ॥ ला० ॥ ११ ॥ रायतणे घर
 आवियो ॥ म० ॥ योगी लेवण आहार ॥ ला० ॥ कु
 मरी वर पूगीयो ॥ म० ॥ नांख्यो मदन कुमार ॥ ला० ॥
 ॥ १२ ॥ योग मिले तेहनो किहां ॥ म० ॥ इणही वन
 अर्जीराम ॥ ला० ॥ ते माटे तप ध्यानशुं ॥ म० ॥ ए
 वंठे वर काम ॥ ला० ॥ १३ ॥ लक्षण गुण आकार
 शुं ॥ म० ॥ सो प्रनु तुही सकाज ॥ ला० ॥ कृपा
 करी कन्या तणा ॥ म० ॥ पूरो मनोरथ आज ॥ ला० ॥
 ॥ १४ ॥ पाणी ग्रहण करावीयो ॥ म० ॥ पूग्या मन
 ना कोड ॥ ला० ॥ कामदेव रती कामनी ॥ म० ॥ ए
 दोई अविहंड जोड ॥ ला० ॥ १५ ॥ लान सोलमो
 तीणे वने ॥ म० ॥ सकटा सुरथी होय ॥ ला० ॥ का
 मधेनु पामी नली ॥ म० ॥ पुष्प तणो रथ जोय ॥ ला० ॥
 ॥ १६ ॥ एवं सोलह लानशुं ॥ म० ॥ मदन महा म
 यमंत ॥ ला० ॥ पामी शोना पुण्यथी ॥ म० ॥ पुण्य

बडो एकंत ॥ ला० ॥ १७ ॥ जोतरी रथ पुष्पा तणी
 ॥ म० ॥ काम अने रतीनार ॥ ला० ॥ वेशी आवे
 लिलशुं ॥ म० ॥ माथे बत्र सुधार ॥ ला० ॥ १८ ॥
 चामर ढोले खेचरी ॥ म० ॥ आगे बहु परिवार ॥
 ला० ॥ दीन सुखा चाइ सहु ॥ म० ॥ सेवक रूपी अपा
 र ॥ ला० ॥ १९ ॥ सोले लाने शोचतो ॥ म० ॥ आ
 वे काम कुमार ॥ ला० ॥ नगरी तणी शोचा करी ॥ म०
 ॥ मुख मुख जय जयकार ॥ ला० ॥ २० ॥ कामनी
 कौतकने मिली ॥ म० ॥ तरुणी वुढी वाल ॥ ला० ॥
 रती रतीपतीने देखवा ॥ म० ॥ करे कुतुहल ख्याल
 ॥ ला० ॥ २१ ॥ खबर नही अंबर तणी ॥ म० ॥ था
 नवीपर्यय थाय ॥ ला० ॥ तुट्यो हार न जाणही ॥
 ॥ म० ॥ मोती खीर खीर जाय ॥ ला० ॥ कंकण का
 ने पहेभीयो ॥ म० ॥ गले कटी सूत्र बुदार ॥ ला० ॥
 माथे पहेरी मेखला ॥ म० ॥ कटी पेहेर्यो वरहार ॥
 ला० ॥ २३ ॥ आंखे कुंकुम आंजीयो ॥ म० ॥ काज
 ल लगायो गाल ॥ ला० ॥ आडंबरी अलते करी ॥
 म० ॥ आई तमासे चाल ॥ ला० ॥ २४ ॥ एक नणे
 नल चामनी ॥ म० ॥ ए कर्मे तो कंत ॥ ला० ॥ पा
 सी परतद्ध पद्मनी ॥ म० ॥ रती राणी गुणवंत ॥
 ला० ॥ २५ ॥ एक वदे वनीतावली ॥ म० ॥ ए धन
 नारी बुदार ॥ ला० ॥ सर्व सुलक्षण गुणनिलो ॥
 म० ॥ पामी नल नरतार ॥ ला० ॥ २६ ॥ हयवर ग

यवर वाहनी ॥ म० ॥ लोक तणो नही पार ॥ ला० ॥
 दाने जलहल वरसतो ॥ म० ॥ आया राज दुवार ॥
 ला० ॥ २७ ॥ राय तणे पाय प्रणमीयो ॥ म० ॥ रा
 य दियो बहु मान ॥ ला० ॥ प्रचुता पेखी पुत्रनी ॥
 म० ॥ जाण्यो जन्म प्रमाण ॥ ला० ॥ २८ ॥ मा मि
 लवाने अलजीयो ॥ म० ॥ आवी लागो पाय ॥ ला० ॥
 उठाइ उचो लीयो ॥ म० ॥ चुंढ्यो कंठ लगाय ॥ ला०
 ॥ २९ ॥ विनय करी विधीशु तदा ॥ म० ॥ आगे
 वेठो काम ॥ ला० ॥ वारंवार अवलोकही ॥ म० ॥
 रूप अनोपम ताम ॥ ला० ॥ ३० ॥ कृष्ण श्वेतने रा
 तडां ॥ म० ॥ लोचण निला धाम ॥ ला० ॥ कंबु कं
 ठसुं कोमलुं ॥ म० ॥ चंद्र वदन अनीरामी ॥ ला०
 दंत पंक्ति मुक्तामणि ॥ म० ॥ राति जिहां जास ॥ ला०
 ॥ नाक शिखा दिवा तणी ॥ म० ॥ अधर प्रवाला ता
 स ॥ ला० ॥ ३२ ॥ कोमल कुंतल शामला ॥ म० ॥
 जाडी जंघा जाण ॥ ला० ॥ चूजा ललित लांबि घणी
 ॥ म० ॥ पोहला पाय वखाण ॥ ला० ॥ ३३ ॥ वद्ध
 ह्यल बनतो महा ॥ म० ॥ मेरु नित आकार ॥ ला० ॥
 मृगपतिनी कटि उपमा ॥ म० ॥ वर्णे सुवर्ण अपार
 ॥ ला० ॥ ३४ ॥ माता देखी मनोहरु ॥ म० ॥ सुत
 नी सुंदर शोच ॥ ला० ॥ रमण हसण संभोगनो ॥ म०
 ॥ लाग्यो मनमें लोच ॥ ला० ॥ ३५ ॥ वेधी मनमथ
 बाणसुं ॥ म० ॥ दीन मुखी ततकाल ॥ ला० ॥ पाले

मारी पोयणी ॥ म० ॥ तेहवी थइ सा बाल ॥ ला० ॥
 ॥ ३६ ॥ हाथ कपोला थापियो ॥ म० ॥ आतुर अ
 धीक उदास ॥ ला० ॥ डसक डसक रोवे खरी ॥ म०
 ॥ लांबा लिये निसास ॥ ला० ॥ ३७ ॥ एह विधी
 देखी खेचरी ॥ म० ॥ उठि चल्यो मयण ॥ ला० ॥
 आव्यो मदिर आपणे ॥ म० ॥ मनमांहे सुख चयन ॥
 ला० ॥ ३८ ॥ ए बोहोत्तरमी ढालमें ॥ म० ॥ रति सा
 थे घरवास ॥ ला० ॥ गुणसागर कही को शके ॥ म० ॥
 कोड पवारा तास ॥ ला० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मदन गयो मंदीर चली, माननी मनहि म
 जार ॥ अरति हिलुर बाधी महा, सो जाणे किरतार
 ॥ १ ॥ रूप नहि ए पासठे, हिए विमासी जोय ॥ दिवे
 पने पतंगीयो, शोच करे नहि कोय ॥ २ ॥

ढाल ७३ मी ॥ एकवार घर आवे हो मोहना ॥ ए
 देशी ॥ मोहन नावे जब लगे, तब लगे चयन न होय
 ॥ उन्हालाकी वेलुं ज्युं हो, सुकी जाये सोय ॥ मो० ॥
 ॥ १ ॥ रात न आवे निंदडी, लेता सास उसास ॥ दि
 वस न लागे चूखनी हो, नाही पाणीकी प्यास ॥ मो० ॥
 ॥ २ ॥ सुणि न जावे वातडी, आपणपे न कहाय ॥ उं
 ची नजरे आवलोकवो हो, माथे सोर न थाय ॥ मो० ॥
 ॥ ३ ॥ ए असहणी वेदना, मुऊ किम सहेणी जाय ॥
 सर्व शरीरे साल ज्युं हो, आज घणो अकुलाय ॥ मो०
 ॥ ४ ॥ लाज गइ निर्लज्ज थइ, विविध प्रकारे विकार ॥

॥ वर वद्वोज विलोकहि हो, नहि जंजाइ पार ॥ मो०
 ॥ ५ ॥ आनूपण उतारीया, उचाटे न सुहाय ॥ जाणे
 अहरु काटना हो, सो दुख मांहि गिणाय ॥ मो० ॥
 ॥ ६ ॥ कां सरजी हु कामनी, कां सरज्यो वर रूप ॥
 रूप विरूप हमारडो हो, विण रति कंत अनूप ॥ मो०
 ॥ ७ ॥ मदन ताप तपे खरी, कदली केशो वाय ॥ वा
 वना चदन लेपणो हो, शितलता न लहाय ॥ मो० ॥ ८ ॥
 चंद्र तणे कीरणे करी, हार अने घन सार ॥ तनकी
 तपति मिटे नहि हो, विण श्री काम कुमार ॥ मो० ॥ ९ ॥
 वेद विचक्षण आवियो, देखे नाडी जाम ॥ हाथ न
 आवे रोगहि हो, नृप चिता तुर नाम ॥ मो० ॥ १० ॥
 एक दिवस कंवर जणि, बोले खेंचर राय ॥ भाय दुहे
 लि ताहरी हो, रयणि ठ मासी जाय ॥ मो० ॥ ११ ॥
 तं सुखमें रमतो फिरे, न लहे मानि सार ॥ ठोरुं नीठोरु
 होवे घणा हो, माने आश अपार ॥ मो० ॥ १२ ॥ कुम
 र कहे सुण तातजी, हु नवि जाणुं एह ॥ रोग दुसा
 ध्य जे उपनो हो, माताजीने देह ॥ मो० ॥ १३ ॥ मा
 ता तीरथ सारखी, माता मोटी होय ॥ गर्ज धरे वे पो
 खवे हो, मा सरखी नहि कोय ॥ मो० ॥ १४ ॥ अडस
 ठ तीरथ जे किया, तेतीसे सुर कोरु ॥ सहस आठ्या
 सी मानिया हो, मा मान्या करजोरु ॥ मो० ॥ १५ ॥
 आयो मदन उतावलो, माताजीनी पास ॥ देखी मा
 जिम सांजली हो, आरती मांही उदास ॥ मो० ॥ १६ ॥

उपर पडीयो अडवडी, माय माय पोकार ॥ दे देवां उ
 लंजमो हो, करे किशुं किरतार ॥ मो० ॥ १७ ॥ महा
 रे ए दो आंखडी, ह्यारे अवर न कोय ॥ एम जाणी
 विधीसो करे हो, माय समार्धी होय ॥ मो० ॥ १८ ॥
 डाहापणे नाडी ग्रहे, वैदक सहुनो जाण ॥ विविध प्र
 कारे विचारही हो, रोग तणो प्रमाण ॥ मो० ॥ १९ ॥
 ताव नही सिस को नही, नही त्रिदोपो दोष ॥ काटी
 नही नही कुरु करी हो, कवण रोगनो पोख ॥ मो०
 ॥ २० ॥ रोग न जाणयो जाय ए, वेदन तो असरा
 ल ॥ माय दुखे दुखीयो महा हो, कामदेव नूपाल ॥
 मो० ॥ २१ ॥ एतो तिहुंतरी कही, ढाले सघन स
 नेह ॥ गुणसागर सूरी जोयज्यो हो, विषय विम्वन
 एह ॥ मो० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ लोग सहु अलगां कियां गुलाम अलगा कियां
 ॥ बंडी ठोकरी बांडके, अलगां राख्यां ताम ॥ १ ॥ लाज
 खोली लालच चणी, विकलाइनि वात ॥ करवा लागी
 कामनी, नाम धरावी मात ॥ २ ॥ फिट फिट फिटकार
 तुं, फिटकारो सो वार ॥ विपिया माथे ताहरे, ए तुऊ
 चरित्र अपार ॥ ३ ॥

ढाल ७४ मी ॥ नाथ तेरे साथ चलुंगीरे ॥ ए देशी ॥
 लालन लिल करुंगीरे, आगे नेह धरुंगीरे ॥ तेरे संग रहुं
 गीरे ॥ ला० ॥ १ ॥ पूर्व जवंतर केरो प्यारो, नयणे नेह
 जणायो ॥ थौवन मद मदिरा मतवाली, मन हाथी

विफरायो ॥ ला० ॥ २ ॥ न आले देवाले माले, लारे
 चित्त लगायो ॥ रोम रोमथी जाली सिलगी, युहिमत
 रुन रहायो ॥ ला० ॥ ३ ॥ कांइ सुद्धी न बुद्धि विवु
 ऊ, आंधाहिथी आंधी ॥ जुह कमान गुमान घणोरे,
 रहि नयणा सर सांधी ॥ ला० ॥ ४ ॥ वाप न चाइ
 वेटो जाणे, विरह करालि बालि ॥ आप विगुति जु
 डणी, चहुटे चमी चंफालि ॥ ला० ॥ ५ ॥ न कंटोल
 आले मूके, पासे पड्यो जे पावे ॥ वनिता वेलि विल
 गी आवै, वेगे वार न लावे ॥ ला० ॥ ६ ॥ निरतणी ग
 ति नीची जेहवी, तेहवी ए जग नारी ॥ काम अका
 म करंत न लाजे, आदि लगे अविच्यारी ॥ ला० ॥
 ७ ॥ पंकजणी नारी दो सरखी, अंतर नहिय लि
 गार ॥ हंस नमरने सम करी जाणे, नाणेकिमपि वि
 च्यार ॥ ला० ॥ ८ ॥ अवर रमे अवरासुं चासे, अव
 रा साहसुं जोने ॥ चिंते अवर अवर शीर दूपण, दे
 इ आप विगोवे ॥ ला० ॥ ९ ॥ दिने डर आपे दोरे
 दिठे, राति अहि फण मोडे ॥ उंवर अडवडती अ
 णिआले, डूगर चढवो लोडे ॥ ला० ॥ १० ॥ उंदर
 थी डर माने अधीको, केसरी काने साहे ॥ नारी च
 रीत्र लिखे ब्रह्माजो, चांखे घणेडमाहे ॥ ला० ॥ ११ ॥
 चुलनि रुलनि कुविसन वाटे, सूरि कंता साची ॥ उतो
 सुत उतो पति हणेवा, परतद्ध थइ पै साचि ॥ ला०
 ॥ १२ ॥ काम वाटकमें नारी नायका, ए दल पुंठे ला

ग्या ॥ मारी लीया जे साहमा आया, बूढ्या जे नर
 जाग्या ॥ ला० ॥ १३ ॥ हुतो सुंदरी सामा साची, तुं
 यौवन मदमातो ॥ वय विलसि जे लाहो लिजे, फिरी
 नावे दीन जातो ॥ ला० ॥ १४ ॥ बुढो वयल ने बुढो
 घोडो, बुढो हाथी हासो ॥ बुढो मानव मान न पावे,
 तरुणी साथे तमासो ॥ ला० ॥ १५ ॥ माथो धूपे क
 र कंपावे, मुंहडे लाल खरंति ॥ अति असुहावो नाह अ
 चावो, नारी नेह धरंती ॥ ला० ॥ १६ ॥ विण सरद
 हण वखाण करवो, देवि हाथ गहेवि ॥ बुढापणे तरु
 णी परणवी, ए पर काजे कहेवि ॥ ला० ॥ १७ ॥ मो
 मन हाथी इडाचारि, फीरे महा मतवालो ॥ होइ म
 हावत जोग अकुसे, वहतो पागे वालो ॥ ला० ॥
 ॥ १८ ॥ मुंदि कान मिचि युग लेचन, मुंहडे धीग
 धीग चाषे ॥ रे पापणी गुं पाप प्रकाशे, तुज पापे
 जग नासे ॥ ला० ॥ १९ ॥ हुं तुज नंदनतुं मुज माता,
 इम किम कहेता आवे ॥ यद्यपि मांस नखे नर लप
 ट, हाड गले नरहावे ॥ ला० ॥ २० ॥ खेचरी चाखे
 तुं नहि नंदन, हुं नहि थारी माता ॥ पडीयो पाम्यो
 लेइ उठेरयो, हम तुम्ह विचे विधाता ॥ ला० ॥ २१ ॥
 आपण वावियो ब्रह्म विशेषे, को फल तास न खाय
 ॥ राखी निवाण आपे जल पितां, कहो गुं दूपण
 थाय ॥ ला० ॥ २२ ॥ गोडी विच्यार विच्यार शिरो
 मणी, कथनी दीसे कोडी ॥ मान वोल मुजको तुज

गाथे, जासु काया बोझी ॥ ला० ॥ २३ ॥ वात विरुध
 गो सुद्ध विहुणी, एतो परवश चांखे ॥ पुरुष पनोता
 हाज अकारज, जाणी आपुं राखे ॥ ला० ॥ २४ ॥ उ
 तर आपे मात मयाकर, इम मुऊथी किम वूजे, नि
 ययकी अति निद्य काम ए, कुलवंता नवी सूजे ॥
 ला० ॥ २५ ॥ हाथी वारो वाटे फिरतो, अंकुशर्था फि
 ति आवे ॥ पीहर सासरा केरी लाज, नारी आप रखा
 वे ॥ ला० ॥ २६ ॥ वारूंगवार विच्यार विशेषे, माता
 नी समजावी ॥ वात न माने मयणराय तव, वनमें
 वेठो आवी ॥ ला० ॥ २७ ॥ ढाल चमोत्तरमांही खरी
 र, खेचरणी खलखाती ॥ श्रीगुणसागर मदन उवारी,
 घेण पाणी वही जाती ॥ ला० ॥ २८ ॥

दुहा ॥ उठी एकाकी आवीयो, साथे शील सुल
 जान ॥ कुमर कदर्थन देखीने, मन धरतो शुच ध्या
 न ॥ १ ॥ बाग नगरने वाहीरे, सुतो धरी मन धीर ॥
 कनक माताए शुं कहुं, चित चिंते वडवीर ॥ २ ॥

ढाल ७५ मी ॥ मुनिश्वर माहरे व्रतशुं काम ॥ ए
 देशी ॥ एकाकी उदाशीयोजी, मदन नरेश्वर जाम ॥
 दिठा मुनिवर पांखतीजी, जाइ करे परणाम ॥ १ ॥ मुनि
 वर चांखे एह विच्यार ॥ ए आंकणी ॥ माताने केम उप
 जीजी ॥ सुतसुं काम विकार ॥ मु० ॥ २ ॥ चरित्र सु
 णावी पाठलाजी, ज्ञान तणे वल जोय ॥ इंद्रप्रज्ञानो
 जीवडोजी, कनकमाला ए होय ॥ मु० ॥ ३ ॥ काम

रागनी व्यापनाजी, पोखाणीथी चूर ॥ तेही अच्यसे
 उपनीजी, ए तुऊ साथे चूर ॥ मु० ॥ ४ ॥ काम कहे
 करुणा करोजी, गुण मणीना संदोह ॥ जणणीए किम
 पामीयोजी, मुऊशुं एह विठोह ॥ मु० ॥ ५ ॥ जंबुदीपे जा
 णीएजी, खेत नरत गुण धाम ॥ मगधदेश मांहे न
 लोजी, लक्ष्मीपुर अनीराम ॥ मु० ॥ ६ ॥ सोमशर्मा
 नामे वसेजी, ब्राह्मण विद्या पात्र ॥ कमला कमला
 सारखी जी, नारी मनोहर गात्र ॥ मु० ॥ ७ ॥ पुत्री
 तो लक्ष्मीवतीजी, सा अहंकारणी सोइ ॥ एक दिवस
 ऋषी आवीयाजी, वोहोरण काजे जोय ॥ मु० ॥ ८ ॥ रु
 प निहाले आपणोजी, आरीसामे ते जाम ॥ पागे ऋ
 षी उजो हुवोजी, किधी निंद्या ताम ॥ मु० ॥ ९ ॥ मु
 नी निंद्याना दोपथीजी, लही कोठनो रोग ॥ पामी सा
 दीन सातमेजी, मरण तणो संजोग ॥ मु० ॥ १० ॥
 खरोखरी दुखणी थइजी, मरी सुंकरी होय ॥ कोटवा
 ले वाणे हणीजी, समी कुंकरी जोय ॥ मु० ॥ ११ ॥ अग्नी
 जालमांहे बलीजी, तव धीवरणी थाय ॥ पूर्व पाप प्र
 जावथीजी, देही घणुं गंधाय ॥ मु० ॥ १२ ॥ गंगा पा
 से कुटीकाजी, रहे स्वजनथी दूर ॥ वनफल नखी नी
 ऊर पिएजी, करे उदर नरपूर ॥ मु० ॥ १३ ॥ शित
 काले फिरतो थकोजी, सोइ ऋषीश्वर जाण ॥ ध्यान
 योग्यने ध्यावतोजी, दिठो पुण्य प्रमाण ॥ मु० ॥ १४ ॥
 सा अतिशेवा साचवेजी; शुन कर्माने योग ॥ पूरव न

व समझावायोजी, ज्ञान तणे उपयोग ॥ मु० ॥ १५ ॥ प
 श्वाताप करे घणोजी, मुनी निंद्याना पाप ॥ आलोह
 शुभ्र नावशुंजी, शुद्ध कियो घट आप ॥ मु० ॥ १६ ॥
 समकीर्त धर्म समाचर्योजी, श्रावकना व्रतधार ॥ आ
 वी नगरी कौसलाजी, आतमने हितकार ॥ मु० ॥ १७ ॥
 साधवीथां पासे रहेजी, तप नाना विध किध ॥ राज
 ग्रही आव्या वहीजी, उत्तम संगति लीध ॥ मु० ॥ १८ ॥
 गुफा मांही साधवीजी, बार रही सा बाल ॥ विलुरी वा
 घे घणुंजी, प्राण तज्या ततकाल ॥ मु० ॥ १९ ॥ पही
 ले सुर लोके उपनीजी, भोगवे सुख अपार ॥ नगरी
 कोसवीए थइजी, राय घरे पट नार ॥ मु० ॥ २० ॥
 रामत भिसे हाथे लियांजी, मोरली इंडा जोय ॥ घमी
 सोलने आंतरेजी, आदरीयां फिरी सोय ॥ मु० ॥ २१ ॥
 विमलमती गुरुणी कन्हेजी, राणी संजम लीध ॥ अ
 णसण उत्तम मासनोजी, विणआलोयण किध ॥ मु० ॥
 ॥ २२ ॥ स्वर्ग वारमे सासतीजी, सुरपदना सुख पा
 य ॥ हुइ राणी रुखमणीजी, कामदेव तुह्न भाय ॥ मु०
 ॥ २३ ॥ किधा कर्म न वुटीएजी, वरस सोल लगी दे
 ख ॥ विरह तुह्नारो पामीयोजी, माताए सुविसेप ॥
 मु० ॥ २४ ॥ माता पासे जाइनेजी, लहो विद्या दौय ॥
 प्रज्ञापतीने रोहीणीजी, अती वरदाइ सोय ॥ मु० ॥ २५ ॥
 सीख ऋषी पंच्योत्तरमीजी, ढाल जली कहेवाय ॥ गुणसा
 गर रुखमणी तणोजी, चरीत्र महा सुखदाय ॥ मु० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ मदन कुमर फीरी आवीयो, खेचरणीने सं
ग ॥ विण प्रणाम बेठो सही, साची ते मन रंग ॥१॥
रूपनाथने नाथीयो, ए आयो हम्र पास ॥ वचन वि
शेषे मानशे, दिसेवे जल्हास ॥ २ ॥

ढाल ७६ मी ॥ मन जमरानी देशी ॥ तव बोले
सा सुंदरी, सुण जोग पुरंदर ॥ मान वचन मुज आ
ज, गुण सुण जोग पुरंदर ॥ विविध प्रकारे ताहरा ॥
सु० ॥ सारुं वंठित काज ॥ शु० ॥ १ ॥ प्रज्ञापतिने रो
हिणी ॥ सु० ॥ मोटी विद्या एह ॥ शु० ॥ प्रित रीतशुं
रिंजवी ॥ सु० ॥ आपुं आणी सनेह ॥ शु० ॥ २ ॥ धु
तो धूतेवा जणी ॥ सु० ॥ बोले मीठा बोल ॥ शु० ॥
आज लगी लोप्या नहि ॥ सु० ॥ थारा बोल अमोल
॥ शु० ॥ ३ ॥ हुं तु किंकर ताहरो ॥ सु० ॥ आज्ञाका
री जोय ॥ शु० ॥ धे विद्या परमेश्वरी ॥ सु० ॥ जे ते
नाखी दोय ॥ शु० ॥ ४ ॥ विषया वश आतुर थइ ॥ सु०
॥ धोलो जाण्यो दुध ॥ शु० ॥ दीधी विद्या वीधी क
ही ॥ सु० ॥ होय गइ अति शुभ ॥ शु० ॥ ५ ॥ मत
वालीथी अती घणी ॥ सु० ॥ मतवाली ए जोय ॥ शु०
॥ उतो धन नवि दाखवे ॥ सु० ॥ ए रही विद्या खोय
॥ शु० ॥ ६ ॥ विद्या साधी सऊ करी ॥ सु० ॥ पायो
वहु संतोष ॥ शु० ॥ खेचरणीशुं खरखरा ॥ सु० ॥
बोले वचन सरोप ॥ शु० ॥ ७ ॥ मे नवि दीठो ता
तजी ॥ सु० ॥ नवि दिठि निज मान ॥ शु० ॥ तात

मात तुहि सहि ॥ सु० ॥ मत कहे बीजी वात ॥ शु० ॥
 ॥ ८ ॥ वाचा पाली विशेषी ॥ सु० ॥ जगमें वाचा
 सार ॥ शु० ॥ वाचा विचली जेहनी ॥ सु० ॥ वादी
 गयो अवतार ॥ सु० ॥ ९ ॥ कहे रामजी चरतशुं
 ॥ सु० ॥ बोल न बोले आण ॥ शु० ॥ हिन प्रतिज्ञा
 नो धणी ॥ सु० ॥ तजवो जेम मसाण ॥ शु० ॥ १० ॥
 किवा को निंदा करे ॥ सु० ॥ कोइ करे गुण ग्यान
 ॥ शु० ॥ लक्ष्मी जात फीरी आठ ॥ सु० ॥ न तज्यु
 न्याय निदान ॥ शु० ॥ ११ ॥ पहिलि तो तुं साय
 जी ॥ सु० ॥ पालवाने काज ॥ शु० ॥ विद्या दान त
 णि दाता ॥ सु० ॥ गुरुणि हुइ आज ॥ शु० ॥ १२ ॥
 वज्रपात समानडा ॥ सु० ॥ सांचलि वचन विचार ॥
 शु० ॥ बढि वाघणी बलगवा ॥ सु० ॥ चाल्यो करीध
 जुहार ॥ शु० ॥ १३ ॥ हाथ घसे कूटे हियो ॥ सु० ॥
 शोच करत अपार ॥ शु० ॥ ठग न ठग्यो ठगे हुं ठ
 गी ॥ सु० ॥ विद्या खोइ सार ॥ सु० ॥ १४ ॥ कोइ उ
 पाय केलवी ॥ सु० ॥ लाउं शिख जे वार ॥ शु० ॥
 दुख ज्वाला शिलि करुं ॥ सु० ॥ पामुं चयन ते वार
 ॥ शु० ॥ १५ ॥ आप विलुरि तन घणु ॥ सु० ॥ मां
 के अति तोफान ॥ शु० ॥ रोति न रहे राखता ॥ सु०
 ॥ पूवे तव राजान ॥ शु० ॥ १६ ॥ विलचिवा घणी
 बलबले ॥ सु० ॥ ए तुम सुतना काम ॥ शु० ॥ हो
 य बटाउं आपणा ॥ सु० ॥ तो घरनो स्थो नाम ॥ शु०

॥ १७ ॥ जे निज तें निज जाणीए ॥ सु० ॥ जे पर
 ते पर होय ॥ शु० ॥ मंदिर वसे न प्राहुणे ॥ सु० ॥
 इम चाखे सहु कोय ॥ शु० ॥ १८ ॥ प्रचुजी तुह्य प्रसा
 दथी ॥ सु० ॥ गोत्रजदेव पसाय ॥ शु० ॥ शील न
 चांग्यो मूलथी ॥ सु० ॥ पिण न रह्यो तनुमें काई ॥
 शु० ॥ १९ ॥ द्रीठा लुड कुलंठने ॥ सु० ॥ जो परम
 व पोचाउं ॥ शु० ॥ तो तो जिववो सहि ॥ सु० ॥
 नहितर काठ धखाउं ॥ शु० ॥ २० ॥ आत तपे अति
 आकरी ॥ सु० ॥ अति विना न तपाय ॥ शु० ॥
 सोक्यांना जगडा विपे ॥ सु० ॥ माता जूठी थाय ॥
 शु० ॥ २१ ॥ राजा रीसे परजल्यो ॥ सु० ॥ न
 लह्यो मर्म लिगार ॥ सु० ॥ पुत्राने तेडी कहे ॥ सु० ॥
 मारो मदन कुमार ॥ सु० ॥ २२ ॥ जन अपवाद निवा
 रवा ॥ शु० ॥ गुपत पणे ए काज ॥ सु० ॥ करवो ए
 उतावलो ॥ सु० ॥ दाव लह्यो हम आज ॥ सु० ॥
 ॥ २३ ॥ मदन कुमार आगे करी ॥ सु० ॥ रनान क
 रेवा जाय ॥ सु० ॥ विद्या नेद जणावियो ॥ सु० ॥
 बीजो रूप धराय ॥ सु० ॥ २४ ॥ आपण अलगो ज
 इ रह्यो ॥ सु० ॥ पोते करे सुकुमार ॥ सु० ॥ वृद्ध
 चडि डाकी पळे ॥ सु० ॥ जूले वावि मजार ॥ सु० ॥ २५ ॥
 शिला विकुर्वी मोटकी ॥ सु० ॥ वावि तणे परीमाण ॥ सु० ॥
 उर्द पाव अधोमुखे ॥ सु० ॥ दाख्या तेहि अयाण ॥
 ॥ सु० ॥ २६ ॥ एक न खिल्यो ते गयो ॥ सु० ॥ राजा पासे

पुकारा॥सु०॥ साहण वाहण सामटे ॥सु०॥ राय चढ्यो
 तेहिवार ॥ शु० ॥ २७ ॥ चतुरंगी सेन्या सजी ॥ सु०
 ॥ साहमो काम कुमार ॥ सु० ॥ आयो आडंबर घणे
 ॥ सु० ॥ चांग्यो ज़रम अपार ॥ सु० ॥ २८ ॥ दुर्जय
 मदन विचारीयो ॥ सु० ॥ विद्या मांगे राय ॥ सु० ॥
 नारी कहे लेइ गयो ॥ शु० ॥ राजा तव पिठताय ॥
 शु० ॥ २९ ॥ ए नारी व्यञ्चिचारिणी ॥ सु० ॥ चरित
 करे लख कोड ॥ शु० ॥ फिरी आयो रणचूमीका ॥ शु०
 ॥ पुत्र नम्यो करजोरु ॥ शु० ॥ ३० ॥ जनक जीति ज
 स वंगीए ॥ सु० ॥ सो अपजस अवधार ॥ शु० ॥ ति
 रथ मांहे मानीयो ॥ सु० ॥ जनक वमो संसार ॥ शु०
 ॥ ३१ ॥ वृद्ध विशेषे वाधीयो ॥ सु० ॥ गयो जेदि
 आकाश ॥ शु० ॥ यद्यपी उंची नाशीका ॥ सु० ॥ तो
 ही पिण शीर तले वास ॥ शु० ॥ ३२ ॥ एह विवेक
 विच्यारवे ॥ सु० ॥ कामे तज्यो अनीमान ॥ शु० ॥
 तावेता कंचन तणो ॥ सु० ॥ वेधे वधे घनवान ॥ शु०
 ॥ ३३ ॥ ज्वार साल ने तरु फल्यो ॥ सु० ॥ चडयो
 साजन देख ॥ शु० ॥ सहेजे हिनमणा हुवा ॥ सु० ॥
 मदन तो जाण विशेष ॥ शु० ॥ ३४ ॥ बंधव बंधन
 गोडीया ॥ सु० ॥ मिलीयो बहु परीवार ॥ सु० ॥ घर
 घर रंग वधामणा ॥ सु० ॥ वरत्यो जय जयकार ॥ शु०
 ॥ ३५ ॥ विनय करीने विनवे सु० ॥ तात करो शुवि
 च्यार ॥ शु० ॥ तेग फिरे किम तेहनी ॥ शु० ॥ जेहनी

हिण आचार ॥ शु० ॥ ३६ ॥ साठ अने वली सोलमी
सु० ॥ ढाले शिल वखाण ॥ शु० ॥ गुणसागर उपदे
शीयो ॥ सु० ॥ शिलसु धर्म प्रधान ॥ शु० ॥ ३७ ॥

तुहा ॥ नारदऋषी अवलोकियो, पुत्र पराक्रम को
ड ॥ चाली आयो आशनो, मदन नम्यो करजोड ॥
॥ १ ॥ मदन कहे सुण वापजी, माहरे जग नही काया ॥
माय वाप वयरी थया, कहो किशी गती होय ॥ २ ॥
तुजसम अवर सोनागीयो, को नही जगत मजार ॥
बाप कृष्ण मा रुखमणी, यादवनो परीवार ॥ ३ ॥ हुं
आयो तुज तेडवा, चाल मतलावीश वार, अवसरनो
आगम जलो, जिम जगमें जलधार ॥ ४ ॥ अवसर
आयो पवनसुत, सत्यवंती उबरंग ॥ विसाला पिण अ
वसरे, फरसे लक्ष्मण अंग ॥ ५ ॥ अवसरथी सुग्रीव
नां, रामे समारथा काम ॥ रावण बंधव पासीयो, लं
क पतीनो नाम ॥ ६ ॥ अवसर पांडु पधारिया, कुं
तीका पिण फंद ॥ अवसर पांडव प्रगटीया, करवा
कौरव मंद ॥ ७ ॥ अवसर यादव देखीए, जलो कि
यो उपगार ॥ अवसर चूक्या मानवी, सोच करे अ
पार ॥ ८ ॥ घूलनी पाणी पाइयो, जीवतुडाने जोय ॥
घडा सोरेड्या उपरे, मुआ पढी शुं होय ॥ ९ ॥ चा
मा पुत्रना, व्याहमें तुज माता शिर केस ॥ लिया
सा जीवे नही, तुज मन थाय कलेश ॥ १० ॥

ढाल ७७ मी ॥ आठे लालनी देगी ॥ बोले मदन

कुमार, सुग नारद सुविचार ॥ आठे लाल ॥ माय
 वापने बूजो ए ॥ ते तो गमन कराय ॥ अणपूग्घा
 न जवाय ॥ आठेलाल ॥ आगल पाठु शुक्रो ॥ १ ॥
 मात पिताना पाय, प्रणमे बहुले जाय ॥ आ० ॥ को
 खल वचन प्रकासतो ए ॥ तात खमो अपराध ॥ मे दि
 धो दुख दाह ॥ आ० ॥ दिनपणो अति जापतो ए ॥
 ॥ २ ॥ माता सुण अरदास, हुबुं थारो दास ॥ आ० ॥ आ
 श हनारी पूरवी ए ॥ पडीयो पत्थर मांही ॥ उठायो
 उठाही ॥ आ० ॥ आरती चिता चूरवी ए ॥ ३ ॥ वैरी
 केरे वास, तुह्म पसाइ आश ॥ आ० ॥ पुगी माहश म
 न तणी ए ॥ जाइ जाया आन ॥ करता हरता प्राण
 ॥ आ० ॥ पहंची न शक्यो तुम्ह जणी ए ॥ ४ ॥ हुंतो
 दीन अनाथ, म्हारो कोइ न नाथ ॥ आ० ॥ गगन परु
 तो जिलीयो ए ॥ थारा किधा काज ॥ ए सघला शु
 ज साज ॥ आ० ॥ पाप परानव पिलीयो ए ॥ ५ ॥ जेह
 ने पोढा पाप, प्रगटे आवीयो आप ॥ आ० ॥ माय वि
 वोहो तेहमें ए ॥ चूडा मांही एह ॥ जलपण केरी रेह
 ॥ आ० ॥ तुम्हशी जणणी जेहने ए ॥ ६ ॥ विसारे म
 ती मोय, माय विनवुं तोय ॥ आ० ॥ हियमा नतिर रा
 खवो ए ॥ मुजने बालक जाण, चूंवी मुह शीर पाण
 ॥ आ० ॥ प्रेम अमीरस चाखवो ए ॥ ७ ॥ गती फाटे
 माय, पितापिण इम थाय ॥ आ० ॥ चउधारा आंगु
 वहे ए ॥ विसारयो नवीजाय, राख्यो पिण न रहाय

॥ आ० ॥ जेह लेहणो सोइ लहे ए ॥ ८ ॥ अवर मा
 ताने शीश, नामी लहे आशीश ॥ आ० ॥ कोडी वर
 स चिरंजिवजे ए ॥ जाइ तणो परीवार, स्वामि मदन
 कुमार ॥ आ० ॥ जाइ जणे आनंद जे ए ॥ ९ ॥ सु
 ण मोटा मत्रीश, खामु विशवा वीश ॥ आ० ॥ जे में रो
 स धरावीयो ए ॥ सुनट सहु करजोरु, आपनमे मन
 मोड ॥ आ० ॥ खमज्यो जोर करावीयो ए ॥ १० ॥ जे
 ता वान गुलाम, तेहने पिण सलाम ॥ आ० ॥ उरण हुइ
 ने हालीयो ए ॥ नान्हा मोटा साथ, घाली गलामां
 वाथ ॥ आ० ॥ चित्त चोरीने चालीयो ए ॥ ११ ॥
 मस्तक विण जेम देह, नाक विना मुख एह ॥ आ० ॥
 तारा विण जिम लोयणा ए ॥ पान विना जिम वेल,
 जल विण सरोवर मेल ॥ आ० ॥ लुण विणा जिम जो
 जणो ए ॥ १२ ॥ विद्या विण जिम देवि, हरी विण
 दरिये कहेवी ॥ आ० ॥ देवा विण जिम देहरो ए ॥
 विण श्री काम कुमार, सुना घर दरवार ॥ आ० ॥
 लालन घर शिर सेहरो ए ॥ १३ ॥ बेसी विमाने ता
 म, नारदगुं अजराम ॥ आ० ॥ सुडो जिम उडी ग
 यो ए ॥ हेज हिये न समाय, हिंसै जिम वड गाय
 ॥ आ० ॥ मा मिलवाने अलजीयो ए ॥ १४ ॥ ना
 रद कृतिशुं विमान, तोके लात प्रमाण ॥ आ० ॥
 हास्य हिए न समावही ए ॥ बाबाजीशुं ताम, बो
 ले कुमर काम ॥ आ० ॥ कामे गुं न सोहावइ ए ॥

॥ १५ ॥ हुंतो बुढो देख, तुं तरुणो सुविशेष ॥ आ०
 ॥ किउं न करे मन जावतो ए ॥ रचे विमान रसाल,
 सबहि विधी सु विशाल ॥ आ० ॥ रविमंडल जिम
 आवतो ए ॥ १६ ॥ चाले थोडी चाल, कहे नारद त
 तकाल ॥ आ० ॥ किउं न चले वेगो वहि ए ॥ नारद
 वदन तुरत, तुटेखो परदंत ॥ आ० ॥ वेगे चलायो ति
 म सहिए ॥ १७ ॥ रूपाचल गिरि सोइ, उलंघीया ते
 दोइ ॥ आ० ॥ प्रथवी उपरे आवीया ए ॥ खदिरा अट
 वि जेह, तद्धक परवत तेह ॥ आ० ॥ शिला धान दे
 खाविया ए ॥ १८ ॥ नूमंडलना ख्याल, गिरीं सरी
 ता सुविशाल ॥ आ० ॥ विविध प्रकारे देखतां ए ॥ म
 ध्य देशमें देव, आइ गया ततखेव ॥ आ० ॥ वारु
 वस्तु विशेषता ए ॥ १९ ॥ नारद लायो लाल, एतो
 ढाल रसाल ॥ आ० ॥ जाखी सत्योत्तरमी ए ॥ श्री गु
 णसागर एम, बोले बोल सप्रेम ॥ आ० ॥ मदन कथा
 सुऊ मन रमी ए ॥ २० ॥

दुहा ॥ सेना दिठि सामटी, हय गयनो नहि पार
 ॥ राज कुमार राजा घणा, वाजे वाजां सार ॥ १ ॥
 मदन कहे ऋषि ए किहां, जाइ दल बल पूर ॥ खेच
 रमें नवि पुखीया, एहवा लोक सनूर ॥ २ ॥ ऋषी चां
 खे गजपुर धणी, दुर्योधन नूपाल ॥ चतुरंगी सेन्या
 जली, तेहनि ए सुविशाल ॥ ६ ॥ होड पडी जेही
 कारणे, रुखमणी नामा माहे ॥ उदधी नामे सा कुअ

री, परणवा चालि उठाहे ॥ ४ ॥ जामा घरे दिन वा
रमे, सुतनो थाप्यो नाम ॥ जानु विशेषे जानुने, ते
हसुं व्याहण काम ॥ ५ ॥

ढाल ७८ मी ॥ नणदलनी देशी ॥ कुंमर कहे सु
ण तातजी, नारद ए मुऊ वात ॥ कुंमर ॥ कौतुक क
रतो नहि रहुं, राखे शुं अखियात ॥ कुं० ॥ कौं ॥ १ ॥
रूप धरयो तव निलनो, विरलो वदन विशाल ॥ कुं० ॥
मोटां दांत विहामणा, प्रौढ वणायो जाल ॥ कुं० ॥ कौं
॥ २ ॥ जंडा कुआ सारिखा, गाल डरावण हार ॥ कुं० ॥
डिले वली अति लीलहरी, पिला केश अपार ॥ कुं०
॥ ३ ॥ लोचन दिसे रातमां, दिसे मोटी काय ॥ कुं०
॥ मोटां कर अति दुवला, मोठो पेट कहाय ॥ कुं० ॥
॥ ४ ॥ जाडी जांघ सल घणा, रूपे रूप कुरूप ॥ कुं०
॥ बेठि चिपटी नाशिका, कान विराजे सूप ॥ कुं० ॥ ५ ॥
अंकुश अति आकरां, जांगी केरु देखाय ॥ कुं० ॥ नृ
कुटी जाले नरुनडे, नीलां केरो राय ॥ कुं० ॥ ६ ॥
हाथे तीरने कामठो, थोथां वाण बेच्यार ॥ कुं० ॥ गा
ति वालि गरवसुं, वचन वदे अविचार ॥ कुं० ॥ ७ ॥
मारग रोकाने रह्यो, कोइ न सके जाय ॥ कुं० ॥ कौर
व केलवणी करे, आगे उजा आय ॥ कुं० ॥ ८ ॥ रे जा
इ तुं स्युं कहे, क्युं रोकाने माग ॥ कुं० ॥ सो जांखे तु
ह्म सांजलो, दाण तणो मुऊ लाग ॥ कुं० ॥ ९ ॥ कौर
व बोले नीलडा, बोल विमासी घोल ॥ कुं० ॥ स्युं ह

म चोला वाणीया, आपे दमना खोल ॥ कु० ॥ १० ॥
 कृष्ण कह्यो ठे मुऊ नणी ॥ ह्वारा देश मजार ॥ कु० ॥
 वस्तु नलि ते ताहरी, हुं बु कृष्ण कुमार ॥ कु० ॥ ११ ॥
 तुम्ह सरीखा ठे केटला, कृष्ण तणे घर नंद ॥ कु० ॥
 मुऊ सरीखो तो हुंज तुं, कृष्ण तणे कुल चद ॥ कु० ॥
 ॥ १२ ॥ तु साचोरे तुं साचो. माता जायो रत्न ॥ कु० ॥
 रत्न अतुं चिंतामणी, क्युं न करो तुम्ह यत्न ॥ कु० ॥
 ॥ १३ ॥ यत्न करे सा अति घणं, पूजे स्या तुऊ पाय
 ॥ कु० ॥ ए आवी हाथ विहथमें, जीन किया स्युं था
 य ॥ कु० ॥ १४ ॥ तो हुं जायो कृष्णनो, मारुं थारो
 मान ॥ कु० ॥ ठाकुर करडा चाहीए, ए गो एह मेदान
 ॥ कु० ॥ १५ ॥ तां लगे तेमनी व्यापना, ज्यां लगे
 न उगे सूर ॥ कु० ॥ नाचे कूदे हरणलो, नाथो सिंघ
 हजूर ॥ कु० ॥ १६ ॥ कौरव तुह्य कपटी घणा, कपट
 तणे बल जोय ॥ कु० ॥ नूमी ठंडावी पांडवा. रीस घं
 णी मुऊ सोय ॥ कु० ॥ १७ ॥ उधीन पोधीन थाहरी,
 ऊठो करो गुमान ॥ कु० ॥ वडमाता व्यचिचारणी, था
 रा एह वखाण ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १८ ॥ आंधे जाया आध-
 ला, होइ फिरो तुह्य आप ॥ कु० ॥ मीडु दीठाठे
 घणा, सिल्योन कालो साप ॥ कु० ॥ कौ० ॥ १९ ॥
 यद्यपी वादल ढांकीयो, तेज जणावे ज्ञाण
 ॥ कु० ॥ दिणसी जाणी गोठनी, विच करे प्रधान ॥
 ॥ कु० ॥ २० ॥ ले घोमो ले हाथीयो, जे थारे मन जाव

॥कुं०॥ जेहनी जेहने सुंपतां, रोस किसो तुह्य राय ॥
 ॥कुं०॥२१॥ घोडा हाथी गुं करुं, लेशुं आगी वस्तु
 ॥ कुं० ॥ माहरा मनमें जावती, देखी वस्तु
 समस्त ॥ कुं० ॥ २२ ॥ आगीमें आगी घणी, आगी कु
 मरी जोया ॥ कुं० ॥ सोइ आपो मुऊ नणी, हरी रली
 यायत होय ॥ कुं०॥२३॥ थारे तो ए हांसठे, पिण मा
 हरे ए साच ॥ कुं०॥ तो हुं जायो वापनो, पालुं बोली
 वाच ॥ कुं० ॥ २४ ॥ जिम जिम हठ पोखीयो, पातसा
 हके पास ॥ कुं०॥ तिम हठ पोखु हु घणो, तो देख्यो
 शावास ॥ कुं०॥२५॥ ढाल नली अठोत्तरमी, कौरव
 सुं संवाद ॥ कुं० ॥ गुणसागर. जस पामशे, पूरव पुण्य
 प्रसाद ॥ कुं० ॥ कौं० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ रे रे निर्लज्ज दीठ तुं, चाखे किस्युं गिमार
 ॥ सोड देखी धूर आपणी, किजे पाउपसार ॥ १ ॥
 नान्हे मुहंके मोटीका, बोले बोल न कोय ॥ बोले तो
 पावे सही, गाल चपेटा सोय ॥ २ ॥ हुश करी जे ते
 तली, जे तो पुण्य प्रकाश ॥ आंबो अंबर जइ रह्यो,
 वामन शिफल आश ॥ ३ ॥

ढाल ७९ मीं ॥ नेम आयो सावन मास हो ॥ ए
 देशी ॥ वामन शीफल आश हो, कौरव चांखे तास
 हो, तास नहो चांखे कौरव राजवी ए ॥ जैरव जंपा
 पात हो, करी निज आतमघात हो, घात नहो पावे
 नारी अचीनवी ए ॥ १ ॥ एशुं स्यो ऊखवाद ही,

वाद सहु निस्वाद हो, स्वाद नहो स्वाद न लागे
 को चलो ए ॥ साही नाखो दूर हो, चालो एहने चू
 र हो, चूरनहो चूरी चलयो को मति टलो ए ॥ २ ॥
 एक थो दरवेस हो, मनोरथ सुविशेष हो, शेषनहो
 लाते फूल्यो खापरो ए ॥ हुवे जांगो गेह हो, तेहवो
 दिसे एह हो, एह नहो मारी किजे पाधरो ए ॥ ३ ॥
 दल चाल्यां अजीराम हो, दल रोकायां ताम हो, ता
 मनहो ताम रोक्यां ए दल सहु ए ॥ सुजट मारण
 काज हो, धाया सजी साज हो, साजनहो साज
 सजे ते बहु ए ॥ ४ ॥ कुकुठ सुणी कान हो, सवर
 मिलीया आण हो, आणनहो सवर मिलीया अति घ
 णां ए ॥ विविध आयुधवंत हो, युद्धमें बलवंत हो, वंत
 नहो मान मोमे परतणा ए ॥ ५ ॥ जूमीने गिरी श्रृंग
 हो, वृद्ध उपरी रंग हो, रंगनहो रंगी रमतां देखीए
 ए ॥ कृष्ण अंगज कोडीहो, जड शीरोमणी जोमी हो,
 जोडीनहो होड को न विशेषीए ए ॥ ६ ॥ सुजट ना
 ठा जाय हो, को न साहमा थाय हो, थायनहो सिंध
 साहमां हर्णला ए ॥ उदधी कुमरी लिध हो, चीलनो
 कारज सिध हो, सिधनहो काज अती वाधी कला ए
 ॥ ७ ॥ देखीयो ऋषी राय हो, ए न लीधो जाय हो,
 जायनहो ए न लीधो सुरनरुं ए ॥ लावीयो ततकाल
 हो, साधु पासे वाल हो, वाल नहो कियो रूप पुरंद
 रुं ए ॥ ८ ॥ दूरथी देखंत हो, पृथही गुणवंत हो, वं

तनहो कवण ए सुख कारीका ए कहे नारद ताम
 हो, सुणही कुंवर काम हो, कामनहो ए ॥ वर नगरी
 द्वारीकां ए ॥ ९ ॥ स्वर्ग खंड समान हो, उपमानो
 थान हो, थाननहो एहवो बिजो को नहीं ए ॥ कृष्ण
 राय निवास हो, महा साल आवास हो, वासनहो
 वास रुडोबे सही ए ॥ १० ॥ हेममें पागार हो, तुंग
 न हाथ अठार हो, ठारनहो रत्न मणीमें कांगुरा ए ॥
 देव निर्मात काम हो, स्वर्गपुरी सम ठाम हो, ठामन
 हो पूरीये वरुवमा नरा ए ॥ ११ ॥ वावीको विस्ता
 र हो, नीर पूरीत सार हो, सारनहो नारी मंजन का
 रणे ए ॥ वमा श्री गजराज हो, मद ऊरंत सकाज
 हो, काजनहो मदजले रज वारणे ए ॥ १२ ॥ मेहे
 ल तणी वरओली हो, वणती वणती पोली हो, पो
 लीनहो पोली तो उंची कही ए ॥ सकल कांती अ
 पार हो, उगंतो दिनकार हो, कारनहो कांति किरणे
 मीली रही ए ॥ १३ ॥ हाट घर वर सोह हो, सोह
 नो संदोह हो, दोहनहो सोह गुणे धन जाणीयो ए ॥
 स्वर्ग मृत्यु पाताल हो, तिन लोक रसाल हो, साल
 नहो सार शोधीने आणीयो ए ॥ १४ ॥ पूरी देखण
 जाय हो, साधु आडो थाय हो, थायनहो थाए आ
 डो सादरो ए ॥ यादवनो अति जोर हो, थारो चित्त
 चकोर हो, कोरनहो सोर माचे सखरो ए ॥ १५ ॥
 शहेर मांहि जाय हो, मिलसुं तुमने आय हो, आ

यनहो आवे शं उतावलो ए ॥ पूरीसुं शंकेत हो, मा
 य मिलवाने हेत हो, हेतनहो चित्तमें उमाहलो ए ॥
 ॥१६॥ जाति कौरव काल हो, आवीयो सुकुमाल हो,
 मालनहो ढाल ए एकुणऐशीमी ए ॥ मदन महिमा
 माल हो, सुरजीने सुवीशालहो, सालनहो गुणसागर
 मन सारमी ए ॥ १७ ॥

दुहा ॥ मदन कुमर मन रंगशुं, थंजी गगन वि
 मान ॥ आवे नगरी द्वारिकां, गुप्तपणे गुण जाण ॥
 ॥१॥ धुर आयो चोउगानमें, बंधव नयणे दिठ ॥ सुं
 दरता अविलोकतां, लोयण अमीय पइठ ॥ २ ॥ पूछे
 विद्या सो कहे, जानुं जानुं सम देख ॥ नामा सुत
 आनंदमें, पुण्य प्रताप विशेष ॥ ३ ॥ घोमा खेलावे
 घणां, घोडासुं आति प्रेम ॥ आप जणावुं एहने, मा
 सुख पामे जेम ॥ ४ ॥

ढाल ८० मी ॥ विठियानी देशी ॥ कौतुक केलवे
 घण, तव श्री काम कुमाररे ॥ जाइ ॥ चरित तणो न
 हिं पार ए, कोइ न जाणे साररे ॥ जाइ ॥ कौ० ॥ १ ॥
 लंबोदर काया बनी, चंचल गति विस्ताररे जाइ ॥
 सर्व अवेवां शोचतो, सर्व सुलक्षण धाररे ॥ जा० ॥
 कौ० ॥ २ ॥ ते जंचे स्वर सारिखो, अश्व अनोपम वान
 रे ॥ जा० ॥ विविध प्रकारे श्रृंगारीयो, सोना केरो पला
 णरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ३ ॥ एहवो घोडो कर धरी, सो
 सोदागर थायरे ॥ जा० ॥ पाणि पाव शिर कंपणी, ज्या

की बुढि कायेरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ४ ॥ थल थल करतो
 आवीयो, जानुं कुमरनी पासरे ॥ जा० ॥ अश्व रत्न
 अविलोकतां, पायो अति उल्हासरे ॥ जा० ॥ कौ०
 ॥ ५ ॥ पूढे पंथी कुण तुं, हुं परदेशी स्वामीरे ॥ जा० ॥
 हयवर आयो हिंसतो ॥ देव तुमारे कामरे ॥
 ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ६ ॥ कहे मोलमतिवंत तुं, कंचन
 केरी कोमरे ॥ जा० ॥ परखी आपे आपजो, को नवी
 जाणो खोमरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ७ ॥ आप कुदि घोमे
 चड्यो, चाबक लीधो हाथेरे ॥ जा० ॥ वाहे घोडो वे
 गशुं, अचरिज सघले साथेरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ८ ॥ सरज
 रथ थंजी रह्यो, करे विचारण प्रांहिरे ॥ जा० ॥ कै ए
 हनो के माहरो, नलो किस्यो दोय मांहिरे ॥ जा० ॥
 कौ० ॥ ९ ॥ वक्र अने सम जावशुं, नाचे कूदे सोयरे ॥
 जा० ॥ कुमर न संवाह्यो पडे, ताम विमासण होयरे
 ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १० ॥ उपरणी ने पागनी, बटकी पडी
 ए दोयरे ॥ जा० ॥ पाढे पडियो आपहि, लोगा हां
 सो होयरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ ११ ॥ उठाइ उचो कियो,
 सोदागर त्रासंतरे ॥ जा० ॥ थारा जाया बोकशं, वा
 वा किम जासंतरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १२ ॥ कृष्ण तणे
 घर जाणीए, तुं पाटोधर पूतरे ॥ जा० ॥ जानु जारे
 एहि लक्षणे, किम रहेस्ये घरसंतरे ॥ जा० ॥ कौ०
 ॥ १३ ॥ घोडो राखी नवी शक्यो, तो किम राखीश
 राजरे ॥ जा० ॥ तुह्य स्या पुत्रा कृष्णने, कुलनी न

रहि लाजरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १४ ॥ बुढा बाबा बाज
 ला, जीन करघा स्यो काजरे ॥ जा० ॥ चढि घोडे दे
 खुं सहि, चतुरपणुं तुज आजरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥
 ॥ १५ ॥ घोमे चढीयो जाय जो, वेचणनो स्यो कामरे
 ॥ जा० ॥ कोइ चढावे जोरसुं, देखाउं गति तामरे
 ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १६ ॥ सात पांच नर आवीया,
 उपाड्यो आकाशरे ॥ जा० ॥ पड्यो अपूठो उपरे,
 खोपर दंत विणासरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १७ ॥ बीजी
 वारे इम सही, दाढ्या सुनट अपाररे ॥ जा० ॥ ती
 जीवार चढावतां, चांप्यो जानुं कुमाररे ॥ जा० ॥
 कौ० ॥ १८ ॥ जानुं हिये पग देइने, आपहि चढियो
 जामरे ॥ जा० ॥ लागो अश्व खेलाववा, तरुण तणी
 परे तामरे ॥ जा० ॥ कौ० ॥ १९ ॥ नाचण कूदण
 चालणे, राग वागु अनुमानरे ॥ जा० ॥ राजपुत्र अ
 ति रंजिया, रंज्यो कुंवर जानुरे ॥ जा० ॥ २० ॥ आ
 काशे उंचो जइ, सुगमाइनो संचरे ॥ जा० ॥ देखावि
 आघो गयो, कुमर लिख्यो परपंचरे ॥ जा० ॥ कौ०
 ॥ २१ ॥ एतो ऐशीमी कही, ढाल अनापेम नामरे ॥
 जा० ॥ गुणसागर कामे कियो, नामा सुत गत मा
 मरे ॥ जा० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ आगे जातां अति जलो, दिठो वन सुख
 ठाम ॥ पूठि कर्ण पिसाचिका, नामा वन अनीराम ॥ १ ॥
 घोमा रूपे चारीया, घास अने तरुपान ॥ विध्वंसी घन

बेलडी, कीधो अधीको जान ॥ २ ॥ आगे अपर वि-
 लोकियो, नामा केरो बाग ॥ जगमें तरुवर जेतला,
 तेतानो तिहां लाग ॥ ३ ॥ वानर रूप रतिपति, रिस-
 विशेषे जोय ॥ पान फूल फल तोडीयां, तुंठ कियो व-
 न सोय ॥ ४ ॥ नगरी मांही आवतां. दिठो रथ वर
 एक ॥ आवे चाल्यो सनमुखे. दिसे शोना अनेक ॥ ५ ॥

ढाल ८१ मी ॥ रामचंद्रके बाग चंपो मोरी रह्यो
 री ए देशी ॥ दिसे शोना अनेक, सोवन रत्न विराजे
 ॥ मंगल कुंज विवेक, वारु बाजां वाजे ॥ १ ॥ आरी
 साकी सोह, सोहे ध्वज अचीराम ॥ नारीजण संदो-
 ह, गावे गीत सकाम ॥ २ ॥ पूगी विद्या काम, नाखे
 शयल विच्यारो ॥ कुंजारा घरनुं नाम, परणे हरख
 अपारो ॥ ३ ॥ कुंजारा घर जाय, लावे कुंज उदारुं ॥
 तुऊ माता दुखदाय, नामा शा अहंकारुं ॥ ४ ॥ कि-
 धो रूप विकार, उंट अने खर केरो ॥ जोतरीयां रथ
 नार, खेफे आप घणेरें ॥ ५ ॥ हांशी करे ते नार,
 हाको हाक मचावे ॥ नांजे रीसमजार, सो रथ आप
 पुमावे ॥ ६ ॥ खंडीत किधां कान, पाड्या दांत जी-
 वारे ॥ आयो कोपर जान, फाड्या वस्त्र तेवारे ॥ ७ ॥
 गीतथाने विलाप, करती नारी नाठी ॥ किम राखेवो
 आप, हरीथी हरणी त्राठी ॥ ८ ॥ शेरी शेरी सोइ,
 हिडे आप सुहायो ॥ कामणगारो होइ, सबके मन
 जायो ॥ ९ ॥ किन्नर सुर अवतार, खेचर नृचर रा

जा ॥ लोक कहे सुविच्यार, एहना अधिक दीवाजा
 ॥ १० ॥ के कोइ असुर कुमार, के इंद्र जाल कहावे ॥
 यादवनो परीवार, माहे जय नवि पावे ॥ ११ ॥ कोइ
 होज्यो एह, तुह्मने शिकणवार ॥ बुढा आणी सनेह,
 वरजे वारंवार ॥ १२ ॥ डोकरीने नृप सार, पूढी कां
 इ करेवो ॥ योगीनो व्यापार, काज न कान धरेवो
 ॥ १३ ॥ मदन करे ए काज, किधो रुप अनेरो ॥
 मा मिलवाने आज, आपे हरख घणेरों ॥ १४ ॥ ति
 स एक अने पचास, ए ढाल कहाणी ॥ श्रीगुणसूरी
 जगीश, श्रीहरी नद वखाणी ॥ १५ ॥

दुहा ॥ रूप अनेरो धारीके, चाल्यो जाइ जाम ॥
 दृष्टे आवी वावरी, सबही विधी अचिराम ॥ १ ॥ कं
 चन केरो कामले, पयडीनो मंडाण ॥ पंच वरण रत्ना
 तणो, तेहनो कियो वखाण ॥ २ ॥ रखवाली नारी
 रहे, निर न लीधो जाय ॥ पण जाणी नामा तणो,
 मदन करे उपाय ॥ ३ ॥

ढाल ८२ मी ॥ साधु संगती नित किर्तीए ॥ ए
 देशी ॥ रुप कियो ब्राह्मण केरोरे, श्वेत जनोइ किधी
 साररे हो ॥ वंजणा ॥ धोली धोती पहेरणेरे, फेटानो
 अति विस्तार हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ १ ॥ मस्तके बांध्यो
 फालीयोरे, पवीत्री पावन पहेरायेरे हो ॥ वं० ॥ पगे
 गुजराती खासडारे, वर्ण गुरुनो बिरद धरायेरे हो ॥
 वं० ॥ रु० ॥ २ ॥ उपरणीने ओढवारे, काने सोनानो चा

ररे हो ॥ बं० ॥ आंगुलीयां वर मुद्रडीरे, माथे किधो
 तिलक उदाररे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ ३ ॥ मातो ने अरु
 फांदशुरे, पिली आंख्या जोति अपाररे हो ॥ बं० ॥
 हाथे कमंडलु लाकडीरे, देव ध्वनीनो करे उचाररे हो
 ॥ वं० ॥ ॥ रु० ॥ ४ ॥ गपा दिसे द्वारकारे, गंगा के
 रो माथे मंडरे हो ॥ वं० ॥ मथुरा माल विराजीतारे,
 किरीया कांडे करी प्रचंडरे हो ॥ वं० ॥ ॥ रु० ॥ ५ ॥
 करमें रातो टिपणोरे, वांचे नक्षत्र वार विच्याररे हो
 ॥ वं० ॥ जोशी जोतिप पूरीयोरे, लग्न तणी लहेवेला
 वाररे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ ६ ॥ आशीर्वाद प्रकाशी
 योरे, दाशी दोमी लागी पायरे हो ॥ वं० ॥ कमंजलु
 जल जाचीयोरे, पेट नराइ सुखमें थायरे हो ॥ वं०
 ॥ रु० ॥ ७ ॥ ए जल मंत्री आपीशुरे, मन रलीयायत
 सोइरे हो ॥ वं० ॥ देसे शीधो सामटोरे, तुह्मने पुण्य
 घणोरो होइरे ॥ वं० ॥ रु० ॥ ८ ॥ चेमी चंचल जा
 तनीरे, लाज नही निर्लज्ज अपार हो ॥ वं० ॥ वांज
 ण मांजण आवीयोरे, खेसो धोती मतलावो-वाररे ॥ वं०
 ॥ रु० ॥ ९ ॥ आवी वलगी वानरिरे, सो पूढे ए कुण वि
 च्याररे हो ॥ वं० ॥ गुन्हेगार हमारडोरे, किउन लही जा
 मा की साररे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ १० ॥ जामाढे को नुत
 णीरे, के को देवीनो अवताररे हो ॥ वं० ॥ उरसथकी तुं
 उतरयोरे, जामा कृष्ण तणी पटनाररे हो ॥ वं० ॥ रु०
 ॥ ११ ॥ माता जानु कुमारनीरे, तेहनी वावी विशेषे धाररे

हो ॥ वं० ॥ हम रखवाली आकरीरे, लेण न पावे कोइ
 वाररे हो ॥ वं० ॥ १२ ॥ जामा साथे, नूपतीरे, ए ज
 लमांहे जीले सोइरे हो ॥ वं० ॥ के जामा सुत जानुजी
 रे, अवरने जल न पावे कोइरे हो ॥ वं० ॥ १३ ॥ तु
 ऊ सरिखानी स्युं चालीरे, राव न राणीनो पइसाररे
 हो ॥ वं० ॥ विप्र पधारी वेगसुरे, नहीतर जाणसो
 तुमे साररे हो ॥ वं० ॥ १४ ॥ एह वचन सुणी खी
 जीयोरे, तुं दासी केलणि कोइरे हो ॥ वं० ॥ ब्राह्म
 ण पग रज खेरवेरे, सब जग पावन होइरे हो ॥ वं०
 ॥ १५ ॥ हलवे हलवे चालीयोरे, पोहतो वाव तणा ज
 ल पास हो ॥ वं० ॥ दासडीयां मिली साहीयोरे, कर
 फरस्यां गुण उपज्यो तासरे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ १६ ॥
 गिरी हुइ सामलीरे, सोजा पामी सघली दासरे हो ॥
 वं० ॥ करेहि प्रशंसा सादरीरे, पात्र वडो मुख दे शावा
 सरे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ १७ ॥ बाहिर आर्वा गोरकीरे,
 आपण मांहि निहाले रुपरे हो ॥ वं० ॥ ए मोटो उप
 गारीयोरे, एह पसाइ रुप अनूपरे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ १८ ॥
 जरी कमंलु नीरसुरे, निसरीयो विप्र ते वाररे हो ॥
 वं० ॥ खाली दीठी वावडीरे, दासी सघली लागी ला
 ररे हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ १९ ॥ जल शोसन ऐसी दौयमी
 रे, ढाल वारु विशेष एहरे हो ॥ वं० ॥ श्री गुणसागर
 सूरजीरे, मदन चरीत्रनो नावे जेह हो ॥ वं० ॥ रु० ॥ २० ॥
 दुहा ॥ रिस वसे ते दासमी, नाखे वचन सरोस ॥

अति अट्ट अगाह जल, कां किधो तें सोस ॥ १ ॥
 के माकि के सोहरो, विप्र नहि चंडाल ॥ एहवो काम
 न को करे, जीव दया प्रतीपाल ॥ २ ॥

ढाल ८३ मी ॥ हुं वारी धन्ना ए देशी ॥ बंनणारे ॥ कां
 जल लिधो जाय, बंनणारे हम लागा तुह्य पाय ॥
 बंनणारे जंगम थावर जीव, बंनणारे जल विण कर
 शे रीव ॥ बंनणारे ॥ का० ॥ ए टेक ॥ जल राजा ज
 लदेवतारे, जल सम अवर न कोय ॥ जल जगने जी
 वाडणारे, जल विण तृपति न होय ॥ बं० ॥ का० ॥
 ॥ १ ॥ अन्न विनां आघुसरेरे, जल विण एक लिगार
 ॥ सरे नहि तिहा कारणेरे, जल मोटो संसार ॥ बं० ॥
 का० ॥ २ ॥ अमृत पंच वखाणियारे, जल सब आदि
 सार ॥ घणुं किस्सुं विस्तारवुरे, जलथी जग व्यवहार
 ॥ बं० ॥ का० ॥ ३ ॥ इम बलिहारी ताहरीरे, बाबा सु
 ण अरदास ॥ पाप तणी ठे पाबलीरे, धरी स्वामीनी
 को त्रास ॥ बं० ॥ का० ॥ ४ ॥ चूस्यां करो नगीना
 रहिरे, जाय जिम गजराज ॥ शंक न माने कोइनिरे,
 गाजे जिम धन गाज ॥ बं० ॥ का० ॥ ५ ॥ विविध
 प्रकारे चेष्टारे, करतो जाय उदार ॥ एटले आगे आ
 वियोरे, नामानो बेजाररे ॥ बं० ॥ का० ॥ ६ ॥ हाटानि
 शोना हरेरे, मणि मोतीने रयण ॥ हरे करे अति आ
 करेरे, लोका साथे कुचयनरे ॥ बं० ॥ का० ॥ ७ ॥
 अन्न लुण कपुरसुरे, सुधा विविध प्रकार ॥ शस्त्र व

स्र आदि करीरे, द्रव्यतणो अपहार ॥ वं० ॥ का० ॥
 ॥ ८ ॥ घोमा हाथी वाहिणीरे, जामा जानु नाम ॥
 जे देखे ते अपहरेरे, सोर मचायो स्वाम ॥ वं० ॥ का० ॥ ९ ॥
 सात पांच मिलि सामटिरे, वेगे वेगे सोइ ॥ चोर ह
 मारी चोतरेरे, चोहडे वोए होइ ॥ वं० ॥ का० ॥ १० ॥
 वाहारां साथे बोलिवेरे, पुरुपां जोर न कोइ ॥ कमंडलु
 फोडी दियोरे, जल वहि चाल्यो सोइ ॥ वं० ॥ का० ॥
 ॥ ११ ॥ कांइक जलतो वाविनोरे, कांइक विद्या जोर
 ॥ चोहटो वाह्यो वेगसुरे, माचि रह्यो अति सोर ॥
 वं० ॥ का० ॥ १२ ॥ कोडी कीराणा कापडारे, कोइ
 न लहे पार ॥ वस्तु अमोलीक वाहवेरे, पाम्यो हर्ष
 अपार ॥ वं० ॥ का० ॥ १३ ॥ पाणीपूर पंडुरथीरे,
 दासी गइ ते नास ॥ आपण दृष्टी अगोचरुरे, माने
 मन गाबास ॥ वं० ॥ का० ॥ १४ ॥ एतो त्रयायशीमी
 कहीरे, ढाल विशाल विशेष ॥ गुणसागर चवी सांच
 लोरे, न करो कांइ अदेख ॥ वं० ॥ का० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ तदनंतर किधो चलो, यौवन रुप रसाल ॥
 ब्राह्मण गुणको आगलो, गले तुलसीकी माल ॥ १ ॥
 चर्म शरीरी प्राणीयो, कांठे वेठो आय ॥ मोह वसे मदम
 स्तना, विजानुं शुं जाय ॥ २ ॥

ढाल ८४ मी ॥ कुमखडानी देशी ॥ रंगे रमतो
 राजीयो राजीयो, पेखे पुष्प पडुर ॥ रामा सुत मोह
 ना ॥ पूठे विद्या सो कहे सो कहे, ए सब फूल सनूर ॥

दार ॥ ध्वज तोरण माला जली, पोखे शोभ अपार ॥
 १ ॥ विद्या ज्ञाखेरवानी सुणो, जो तुं दुर्धन साल ॥
 करवुं ते करजे इहां, विजो सहु जंजाल ॥ २ ॥ स्नान
 कियो सरोवर जले, अरु शिर बूटा केस ॥ माथे टि
 को चिरनो, विप्र तणो वर वेश ॥ ३ ॥ वरस चतुरदश
 नो सही, ब्राह्मण बाल कुमार ॥ नाम धरावे वेदीयो,
 गाढो बोलणहार ॥ ४ ॥

ढाल ८५ मी ॥ इम जिन पूजीए ॥ ए देशी ॥ श्री
 हरी राज कुमारजीरे, राचे केली मजार ॥ पेखी पना
 रा पर तणारे, अमरखवंत अपारोरे ॥ १ ॥ आढो वेद
 वो, दरसण मोहन वेलोरे ॥ सुरगुरु जेहवो ॥ ए आंक
 णी ॥ जोजन अर्थे आवियोरे, नामा नामनी पास ॥
 स्वस्ती कही उजो रह्योरे, सा बोले उल्हासोहो ॥ आ०
 ॥ २ ॥ विप्र कहो चाहो किशुरे, माता जोजन आप
 ॥ ऋषा वेदनी व्यापथीरे, आज जीमवुं धापहो ॥ आ०
 ॥ ३ ॥ पहीला ब्राह्मण तेनीयारे, जोजन अर्थे उदार
 ॥ आवी मिल्याढे एकठारे, अगणीत केइ हजारहो ॥
 आ० ॥ ४ ॥ जोजननुं शुं मांगवोरे, कृष्ण बलजा संग
 ॥ हय गय धन कंचन मणीरे, मांग मांग मनरंगहो ॥
 आ० ॥ ५ ॥ विप्र कहे विप्रो सुणोरे, वारु वचन वि
 चार ॥ तुह्य तो विद्या वेचणारे, न लहे पुण्य प्रकार
 हो ॥ आ० ॥ ६ ॥ दान तणा फलठे घणारे, अन्न स
 मो नही कोइ ॥ अवरं त्रपति न उपजेरे, त्रपती अ

न्नीची होइहो ॥ आ० ॥ ७ ॥ अन्न याचना तेहथीरे,
 पहीली किधी एह ॥ मुऊ नुशी जग तुं सहिरे ॥ इहां न
 ही सदेहहो ॥ आ० ॥ ८ ॥ नामा चाखे परीयणोरे,
 नल नोजनसुं आज ॥ विप्र जिमावो वेगशुरे, चूरुच्या
 नोजन काजहो ॥ आ० ॥ ९ ॥ पुनरपी चाखे चाम
 नीरे, सघलामांही जाय ॥ मनगमतो नोजन करोरे,
 त्रपती घणोरी थाय हो ॥ आ० ॥ १० ॥ विप्र माहे
 नवी जिमुरे, एतो विधी वाता हीण ॥ ब्रह्म क्रिया पाले
 नहीरे, पापाचार प्रविणहो ॥ आ० ॥ ११ ॥ सर्व सु
 लक्षणवंत हुरे, विद्यानो नडार ॥ मुऊ नोजन दे साद
 रोरे, लचपच मतकर लिगारहो ॥ आ० ॥ १२ ॥ गौब्राह्म
 णने तिर्थजेरे, मुऊ तृपते तृपताय ॥ पात्र न मुऊ
 सो दुसरोरे, मात विमासे कांड हो ॥ आ० ॥ १३ ॥
 क्रिया द्विण लक्ष कोडीनेरे, नोजन दिधो वादी ॥ क्रि
 यावंत एकही नलोरे, सुणीजे आदी अनादीहो ॥
 आ० ॥ १४ ॥ बैठो सघला आगलेरे, पग धोवाने
 काज ॥ विप्र कहे रोसे नरघोरे, आवेठे शिर खाजहो
 ॥ आ० ॥ १५ ॥ ज्ञान वृध वय वृधजेरे, समजावे प
 रीवार ॥ कलह तणो अवसर नहीरे, मौन तणो आ
 चारहो ॥ आ० ॥ १६ ॥ बइठो पहीले आशणोरे,
 ब्राम्हण आव्या वाजी ॥ चाल्या थानक दुसरेरे, जा
 एयो वृटा चाजीहो ॥ आ० ॥ १७ ॥ तिहां पिण अ
 गतीम आसणोरे, जाइ वेठो सोइ ॥ तवते ब्राम्हण कल

कल्यारे, अजब तमासो होइहो ॥ आ० ॥ १८ ॥
 वेदशास्त्रनां जाण थरे, न लहो वेद विच्यार ॥ हिं
 स्यादिक पातीक करोरे, न तजो क्रोध लीगार हो
 ॥ आ० ॥ १९ ॥ गर्व करो जाति तणोरे, जाति न तारथा
 कोइ ॥ तारे तो करणी करीरे, रीस कीया स्युं होइ
 हो ॥ आ० ॥ २० ॥ पंचायशीमी ढालमेरे, विप्रां की
 धो क्रोध ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, धन तजे अ
 विरोध हो ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ सुधी वात न सरदहे, सुधीसुं नहि रा
 ग ॥ मूरखने उपदेश ते, टाढि उषध लाग ॥ १ ॥
 सहजन फीटे कोइनो, ब्राह्मण जाति विशेष ॥ उ
 ळ्या मारेवा नणी, विप्र कहे मा देख ॥ २ ॥ माय
 कहे हुं शुं करुं, विप्रा साथे न जोर ॥ तुं पिण निचलो
 नवि रहे, ए चंपाणी कोर ॥ ३ ॥ हलकारी विद्या घणुं,
 हल हल थइ अपार ॥ आपणा माहि आंधला, ला
 गा करण प्रहार ॥ ४ ॥

ढाल ८६ मी ॥ वनमालानी देगी ॥ लाग्या ते क
 रण प्रहार, नवि जाणे कोइ विच्यार ॥ आपणा मां
 हि अपार, वलगे ते गहेल गिमार ॥ १ ॥ पहिली तो
 जीन लडाइ, बीजी तो ढिंग बजाइ ॥ तीजी तो ला
 त लगाइ, चउथी तो दांता खाइ ॥ २ ॥ पंचमी वा
 र सुनटाइ, लोटिनी मार मचाइ ॥ ठठे लाकनी उठा
 इ, ते साहमां आवे लाइ ॥ ३ ॥ बावाने वेटो चाइ,

लोपाणी सयल सगाइ ॥ आंधे आंधो पेलाइ, नवि
जाणे आप पराइ ॥ ४ ॥ आचारज उजा थाइ, हल
कार करे आगे आइ ॥ उपाध्याय आप वमाइ, निरखाणी
लघुता पाइ ॥ ५ ॥ जोशी जोतिष वरताइ, न सक्या
ए जाणी वुराइ ॥ जांनि अनीमांनी जाइ, चउवे दुवे
अधीकाइ ॥ ६ ॥ तिरवाडी आवे धाइ, पठीतावे के
स गहाइ ॥ नट मिश्रा एह वताइ, महिमा तो आ
प गमाइ ॥ ७ ॥ महा बलनी एम बलाइ, कुट्या वि
ण जाइ न कांइ ॥ मारंता नूत नमाइ, नटजीए कथा
सुणाइ ॥ ८ ॥ करताने साथे कीजे, तो पुण्य न पाप
गणजे ॥ होथाका लाहो लिजे, उजागर होइ फिरी
जे ॥ ९ ॥ नवलीनो सुंज कहावे, आपणहि आप बंधावे ॥
संकोडो खीज्यो आवे, तो मांस आपणो चावे ॥ १० ॥
ते विप्र लथावथ होवे, तब लोक तमासो जोवे ॥ ते
लाज निकामो खोवे, ते आपे आप विगोवे ॥ ११ ॥ ते
धरति साथर सोवे, मास्या लाता ना रोवे ॥ विण वेल
ण पोलि पोवे, विण लोटि मुहंडो धोवे ॥ १२ ॥ ते
लमता माथा फूटे, ते ठोडान्या नवि बूटे ॥ ते आप
आपमें कूटे, ते मांहोमांहि लूटे ॥ १३ ॥ ते तरुफडता
अति त्राठा, नडनमता साहे चाठा ॥ ते थोथे घावे
घाठा, लमथडिया जाइ नाठा ॥ १४ ॥ ते गाढा होइ
लागा, जब लात धवुका वागा ॥ तेतो उघाडा नागा,
गहेवरीया जाइ चागा ॥ १५ ॥ जे लुंढ पणायी लडी

यां, जे झूडपणे झडझडियां ॥ ते पौरुष पोखे पडीया,
 ते अलगाथी अरुवनीयां ॥ १६ ॥ जे था मुठाला माटी,
 ते पिता उपध वाटी ॥ बल हेते खाता काटी, थर ह
 रीयां लागा साटी ॥ १७ ॥ मोकरडानि कडी जागी,
 ते खिर न मिठि लागी ॥ जब चोट पराई वागी, ला
 डुनि लालच तागी ॥ १८ ॥ जोजन तो बहुला दे
 र्ख्यां, ए जोजन आज विसेर्यां ॥ अवराने लाडु
 खाधां, जामाने गडधां लाधा ॥ १९ ॥ ए चारथ हुं
 चारी, ते दिठो हरि पटनारी ॥ गोमावि अलगा किधां,
 लघु विप्र समिपे लीधां ॥ २० ॥ ए बाशीमी ढाल र
 साली, ए विप्र विनोद विसाली ॥ श्री गुणसागरजी
 जाखी, परजुन चरित्र बे साखी ॥ २१ ॥

दुहा ॥ परीयणशुं जामा कहे, वालिक ब्राह्मण
 एह ॥ जीमावो हम आगले, आणी घणोरो नेह ॥
 ॥ १ ॥ मांडो उंचि मांडणि, उपर थाल विशाल ॥
 विविध प्रकारे पीरसणा, पीरसावो ततकाल ॥ २ ॥

ढाल ८७ मी ॥ गौतमने मेल दियो महाविर ॥
 ए देशी ॥ जामानो जाण्यो करे, आज्ञाकारी सोय ॥
 जगति जलेरी साचवे, राचवे रागण होय ॥ १ ॥ ए
 विप्र हमारे मन वस्यो, एटेक ए विप्र करामतगार ॥ ए
 विप्र तणा गुणसार ॥ ए गणे ढांक्यो रथन ए विप्र,
 देखत हम चयन ॥ ए० ॥ २ ॥ विप्र जणे सुण स्वा
 मनी, पुरो परुतो जाण ॥ बेसावे जिमवा जणी, नहिं

तर जाउं परआन ॥ ए० ॥ ३ ॥ नोजनने व्यवहा
 रना, घाठो नावे ठाम, पहिलो चोकसी किजीए, डम
 कहे त्रिचुवन स्वाम ॥ ए० ॥ ४ ॥ नामा चापे
 शु कहो, एहवि ठठि वात ॥ ए घर दीपे हाथीया,
 माणसनी शिमात ॥ ए० ॥ ५ ॥ पेहेला मेवा पिर
 शीया, पिस्ता द्राख वदाम ॥ चारोली चतुराइशं,
 खांडतली अर्जराम ॥ ए० ॥ ६ ॥ खाजां वाजां सा
 रीखा, लाडुनी बहु जात ॥ घेवर फीणी लापसी. पिर
 से मननी खांत ॥ ए० ॥ ७ ॥ खीर खांड घृत साम
 टां, मांड्यो मोटे मान ॥ वडां विशेषे पिरशीया, विप्र
 तणो हित जाण ॥ ए० ॥ ८ ॥ घोळवमाने धारवनी,
 परी परीघल जाव ॥ सालदोल ने सालणां, पिरसे
 चितने चाव ॥ ए० ॥ ९ ॥ घीनी धार न खेंचइ, दु
 ध दहीने गोल ॥ दाखेंबुहारी रायता, ए अति वस्तु
 अमोल ॥ ए० ॥ १० ॥ नामा चाखे सादरी, अमृ
 त करे आहार ॥ कोइ काणी न राखवी. ए सहु तु
 ज परीवार ॥ ए० ॥ ११ ॥ पिरसतां वेला थइ, जि
 मता वार न कोइ ॥ वैश्वानर मुख मेलहतां, घास
 तणी परे जोइ ॥ ए० ॥ १२ ॥ लावोरे लावो ला
 वो वली, एकज लागी तास ॥ ताम अनेरा पिरस
 णो, पिरसे आपी जल्हास ॥ ए० ॥ १३ ॥ केइ हजारा
 कारणे, अन्न अने पकवान ॥ किधुंथुं ते वावरथुं,
 अचरिज ए असमान ॥ ए० ॥ १४ ॥ पाकाने काचा

करी. थाल नरीने ठेली ॥ पावे कांइ न देखिए, आम
 घडे जल मेली ॥ ए० ॥ १५ ॥ मुग मोठ मक्का घ
 णी, चावलने जव जेह ॥ गिहु, चणा आदी करी,
 खाइ गयो तव तेह ॥ ए० ॥ १६ ॥ हय गय बंट त
 णो सहु, दाणो पिण तेह खाध ॥ आणी उधारो पिर
 शीयो, तृपती तोहिन लाध ॥ ए० ॥ १७ ॥ अग्नी जा
 लमें बालीए, लाकम गाडा लाख ॥ तोपिण ते धापे
 नही, तिम एहनी अग्नीलाख ॥ ए० ॥ १८ ॥ या
 दवनी नारी मेली, करे कुतुहल कोरु ॥ निज निज
 घरथी आणके, पिरसे होडाहोड ॥ ए० ॥ १९ ॥
 कोलाहल माच्यो घणो, मिलीयां लोक तिवार ॥
 तृपती न पावे खायवे, देव तणो अवतार ॥ ए०
 ॥ २० ॥ विप्र भणे सुण नामनी, आपणो बोल्यो
 पाल ॥ कां थाइ अति सुंबडी, अवर किशी दिव
 गाल ॥ ए० ॥ २१ ॥ जानु तणी माता नली, ना
 रायणनी नार ॥ उग्रसेन कुवरी कही, अवसर सहु
 तुळार ॥ ए० ॥ २२ ॥ ऋषणपणो नवी बूजीए, तुळ
 सरखीने देख ॥ लघुजोजी हुं बालुनी, चूरुयो राख्यो
 विशेष ॥ ए० ॥ २३ ॥ ना हुवो आहारजी. ना हुवो उ
 पवास ॥ अधवीचो होइ रह्यो. कारे कियो विश्वास
 ॥ ए० ॥ २४ ॥ निका मंदीर नान्हडा. पावे सघली
 लाज ॥ मोटा घरडर मुखनां, साच मिलीए आज
 ॥ ए० ॥ २५ ॥ पाय पसारण तेतलो. जे तो सोड

पसार ॥ गोटी सोमे सोवतां, लागे थंडी अपार ॥
 ॥ ए० ॥ २६ ॥ पुरो न पडे एकको, तो ए स्यो वि
 स्तार ॥ पेट न दुखे थो खरो, घर सारु व्यवहार ॥
 ॥ ए० ॥ २७ ॥ आडंबर मांहे घणो, न लहे घरनी
 सार ॥ ते तो माणस बावलां, लोक हंसावण हार ॥
 ॥ ए० ॥ २८ ॥ ब्राह्मण सायर अग्नीनो, पुरो पम्बो
 दूर ॥ अन्न अने जल इंधणां, जो दिजे जरपूर ॥
 ॥ ए० ॥ २९ ॥ यद्यपि में किधो घणो, आगे नायो
 सोय ॥ नुस्यो तो अति नडनडे, दोपण एह न को
 इ ॥ ए० ॥ ३० ॥ सत्याशीमी ढालमें, आयो नामा गेह ॥
 श्रीगुणसागर सूरिजी, सा अती आणे नेह ॥ ए० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ कुवजा दाशी ए वली, सरली किधी जा
 म ॥ रूप सोहागण सुंदरी, नामा दिठी ताम ॥ १ ॥
 विरुमय पामी नामनी, जाणी जाय न दास ॥ पूठी
 री तुं कुण ए, सा बोले उल्हास ॥ २ ॥ देव तुम्हारी
 दासडी, कुवज्या हमारो नाम ॥ लघु ब्राम्हण परसा
 दधी, रूप थयो अनीराम ॥ ३ ॥ लालच लागी जा
 मनी, ए अति विधावंत ॥ हाथ ग्रही आघो लीयो,
 जइ वेठा एकंत ॥ ४ ॥

ढाल ८८ मी ॥ संजम लेवा, संचरघोरे, साथे स
 हु परिवार ॥ ए देशी ॥ रहस्यपणे पूठे खरीरे, ज्ञान
 तणो अनुमान ॥ नामा जूलिरे ॥ देव प्रकासो आप
 णोरे, प्रण तणो वे थान ॥ नामा जूलिरे ॥ १ ॥

नूलि चरमें जामनीरे ॥ ए आंकणी ॥ जोसीडो जग
 में वडोरे ॥ नाखे वचन विच्यार ॥ जा० ॥ तत्र मंत्र
 जाणुं घणारे, वस आणुं चरतार ॥ जा० ॥ २ ॥ चं
 द्र सूर्य वरु देवतारे, वश वरतावुं दोइ ॥ जा० ॥ इंद्र
 करु घरे प्राहुणोरे, शेषनाग शुं सोइ ॥ जा० ॥ ३ ॥
 पायाले पसुं सहिरे, आकाशे पिण जाळं ॥ जा० ॥ जग
 त तणा नोवाहरुरे, वेगे करीने थाळं ॥ जा० ॥ ४ ॥
 अणजावंतानो कालबुरे, जावंतानो लाल ॥ जा० ॥ पुढे
 वुं पूढे सहिरे, काज करुं ततकाल ॥ जा० ॥ ५ ॥ ह
 म तुम्ह विच न आंतरोरे, भांतप नाठि दूर ॥ जा० ॥
 तुज गुणोरे बांधीयोरे, बैठो आणी हजूर ॥ जा०
 ॥ ६ ॥ पगे लागी हाहा करेरे, आंसु नांखे नयण
 ॥ जा० ॥ हियो जरयो आवे घणुरे, मनमें अधिक
 कुचयन ॥ जा० ॥ ७ ॥ तुं महारो वालेसरुरे, तुज सम
 अवर न कोइ ॥ जा० ॥ पिता पुत्र जाइ जलोरे, क
 री दे कांडक सोइ ॥ जा० ॥ ८ ॥ साल समाणी
 सालतिरे, सो कहिए निश दिश ॥ जा० ॥ दिन दि
 न आवे शिर चडिरे, ए दुःख विश्वाविस ॥ जा०
 ॥ ९ ॥ साधी त्रिकोटि रोमठेरे, एक एकने एह
 ॥ जा० ॥ अमरख आणी अती घणोरे, पापणी पाणे
 वेह ॥ जा० ॥ १० ॥ आवटणुं अती आकरुरे,
 लोही चढे नहि मंस ॥ जा० ॥ निशदिन लागुं फुरणुरे,
 शातानो नहि आंस ॥ जा० ॥ ११ ॥ हरी वश आ

वे माहरेरे, नवि ले रुखमणी नाम ॥ जा० ॥ दोरो डां
 डो दाखवेरे, देउ मनगमता दाम ॥ जा० ॥ १ ॥ दूध
 जलावणी जतनेरे, नानरने फल जेम ॥ जा० ॥ सिल
 जलावण लंपटारे, एह जलावण तेम ॥ जा० ॥ १३ ॥
 ठगां ठगोरी जामिकारे, आरती मांही एम ॥ जा० ॥
 आप ठगावे ठग कनेरे, अवर न ठगइ केम ॥ जा०
 ॥ १४ ॥ विप्र जणे जामा सुणोरे, जो वीधी कीधी जाय
 ॥ जा० ॥ सहस गुणो आदर लहेरे, रुखमणी पगे ठे
 लाय ॥ जा० ॥ १५ ॥ जेहि कहो सोइ करुरे, न करुं
 शोच लिगार ॥ जा० ॥ लाज हमारी तुह्न जणारे, तुं
 गति मति दातार ॥ जा० ॥ १६ ॥ मुड मुंडाइ मुहं
 मोरे, कालो करिय अपार ॥ जा० ॥ फाटा चुंथा पहे
 रीनेरे, मौन तणो आचार ॥ जा० ॥ १७ ॥ उँ उँ
 अररु वररु रुंठ मुंरुशुरे, अठ्योत्तरसो वार ॥ जा० ॥
 जाप जपंता पामसोरे, रुप अनोपम सार ॥ जा० ॥
 ॥ १८ ॥ इंद्राणी अलगी थकीरे, थारो सहिय उदाश
 ॥ जा० ॥ एवो रूप न माहरोरे, जेहवो जामा पास ॥
 जा० ॥ १९ ॥ देव दुर्लजा थायसोरे, कृष्ण तणी शी
 वात ॥ जा० ॥ रुखमणी तो पासंगमेरे, नहि आवे सु
 ण मात ॥ जा० ॥ २० ॥ जो दुख तो सुख जगतरेरे,
 दुख विण सुख नवि होय ॥ जा० ॥ कान सहे विधाव
 णोरे, कुंमल पेरे सोय ॥ जा० ॥ २१ ॥ जो तरुवर धु
 री ऊडी पडेरे, तो नव कुंपलि लाल ॥ जा० ॥ दिन

थोडामें थायस्येरे, शोचनिक सुविशाल ॥ जा० ॥
 ॥ २२ ॥ डरु डरु डरतां रहेरे, उद्यम नहिय लिंगार ॥
 जा० ॥ आंखी सरीया मानवीरे, काजलनो शिनगार ॥
 जा० ॥ २३ ॥ इम नीसुंणी शा नामनीरे, आतुर थइ
 अपार ॥ जा० ॥ विप्र वचन वाल्हां करिरे, हुइ विप
 रीत ते वार ॥ जा० ॥ २४ ॥ परने चिंते जेह्वरे, तेह
 वुं पावे आप ॥ जा० ॥ एतो परतद्ध देखजोरे, जामा
 लाग्युं पाष ॥ जा० ॥ २५ ॥ वले आपणी आंगशुरे,
 परशुं द्वेपीणी होइ ॥ जा० ॥ शिर मुंडावे आपणोरे, जा
 मनि परे जोइ ॥ जा० ॥ २६ ॥ कीर्धीथी ठाकुर जणि
 रे, अवर परे अरदास ॥ जा० ॥ घोमो फिरी उपर च
 ल्योरे, ते परे हुइ तास ॥ जा० ॥ २७ ॥ फीरी आवं
 आगे जइरे, जापजपे मन सुध ॥ जा० ॥ इम कही आ
 गे चलयोरे, कारज करीय विरुध ॥ जा० ॥ २८ ॥ अ
 ठ्यायसीमी ढालमेंरे, नामानें जरमाय ॥ जा० ॥ श्री ग
 णसागर गुरु कहेरे, मा मिलवाने जाय ॥ जा० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ माता सुखनो आसनो, काम कुमर मन र
 ग ॥ चाल्यो अति उबरंगसुं, आणी हेत अनंग ॥ १ ॥
 काम कुमर आव्यातणी, वेलाने अधिकार ॥ माय मन
 रथ मालनी, ढाल रसाल अपार ॥ २ ॥

ढाल ८९ मी ॥ मेरी सहियां गरिधर आवेगो ।
 ए देशी ॥ मेरी सहियां लालन आवेगो, प्यारो प्राण
 आधार ॥ मेरो मदन कुमार ॥ यादव कुल शिणगार ।

मे०॥ए आंकणी ॥ एह वासर जे गया, माहरे जावे वा
 दी ॥ पेट जरती दिन प्रति, न जिम्यो अन्न सवादी ॥ ज
 न मन जीवी तणीरे, आजहीथी आदी ॥ मे०
 ॥ १ ॥ चामरुपी होइ रहींयां, मिडका जग जोइ ॥ मे
 ह वुठे दैव त्रुठे, मूवा जीवे सोइ ॥ जीव जीवन आ
 वीयाए, एह परे हम होइ ॥ मे० ॥ २ ॥ सुनचीती स
 दा रहती, चेतना सुतनी पास ॥ गाय वनमें जाय हां
 की, चरती फिरत उदास ॥ हिंसंति आवे घणुं, वाढु
 रीया घर जास ॥ मे० ॥ ३ ॥ चक्रवाकी जीम चाहे,
 उगंतो दिनकार ॥ चंदने चाहे चकोरी, बपैयो जलधा
 र ॥ आवनो वन कोकिला, विरहणी जरतार ॥ मे० ॥
 ॥ ४ ॥ कुधावंतो अन्न चाहे, तृपावंतो वारी ॥ स्यैर
 णी स्वठारमेरे, रोगीया उपचारी ॥ तेम ए मन माहरो,
 पुत्रने अधीकारी ॥ मे० ॥ ५ ॥ स्वामी श्रीमंधर वतावी,
 सोइ वेला आज ॥ जलदनीपरी वाट जोतां, मिल्यो ए
 सुज साज ॥ देवगुरु प्रसादथी, सरचा वंणीत काज
 ॥ मे० ॥ ६ ॥ द्यो बुहारो वाट जासो, जली रज बे
 सावी ॥ पंचवर्णा कुसुमकेरो, फूल पगर रचावी ॥ ठा
 म ठामे धूपणा, करो चितने चावी ॥ मे० ॥ ७ ॥ गे
 ह धोलो आज सोलो, दैवनो विवहार ॥ भ्रांती फेरो
 पात्र तेड्यो, पेखवा परीवार ॥ वाजां विविध प्रकार
 नां, बजावो इणीवार ॥ मे० ॥ ८ ॥ नारी आवो
 गित गावो, करो मंगल च्यार ॥ करी वधावो कलस

लावो, सात पांच उदार ॥ दोव अह्मतने दहीं, सज
 ण मेल्यो सार ॥ मे० ॥ ९ ॥ चोक पुरो मती अधु
 रो, रहे एक लिगार ॥ अलग चूरो असुन सघला,
 सजो सुन आचार ॥ वेगे हुवो उतावला, कांइ लगावो
 वार ॥ मे० ॥ १० ॥ थाल रोलां नरी कचोलां, कुंकु
 मा घन सार ॥ रत्न रुडा नही कूमां, हेम रजत अ
 पार ॥ वधावाने कारणे, घणा मोतीना हार ॥ मे०
 ॥ ११ ॥ यत्न करणा असुन हरणा, वाटमे न रहा
 य ॥ रांरु नेसो अंध तेसो, कुंकुठ न कराय ॥ नाक
 चिब्रो चिपडो, बुर मुहोठली जाय ॥ मे० ॥ १२ ॥
 नारी परणी अने उपरणी, साजी उज्वल बेस ॥ गौ
 सवळि कलस संपूर्ण, दधी मधु सुवीशेस ॥ अग्नी ज्वा
 ला दिपती, अपरस उण अशेष ॥ मे० ॥ १३ ॥ र
 थ सजोडो पाट घोडो, हाथीयो सिणगार ॥ पथे रा
 खो सरस जांखो, पित्त वरणी गार ॥ मांजलां मिली
 यां नलां, साधुरोजी धार ॥ मे० ॥ १४ ॥ हंसनी
 परे हालतोरि, चालतो सुंदर इंद्र ॥ नयणे नीरखी हि
 ए हरखी, जाणी तेज जिणंद ॥ साहमो जोशुं घणुं,
 जेम दुतीया चंद्र ॥ मे० ॥ १५ ॥ गोदी करीशुं ही
 ये धरीशुं, चुंवीशुं सोवार ॥ मुह माथो दिन सनाथो,
 जाणीशुं सुविच्यार ॥ विलसशुं मन भोकले, अरथना
 नंडार ॥ मे० ॥ १६ ॥ हाथे फरशी हिण उरशी, शखीशुं
 जाखी ताम ॥ देइ मुखमें कवो सुखमे. जिमो कुंवर का

म ॥ पाननी वीनी करिने, आपीशु आचिराम ॥ मे० ॥
 ॥ १७ ॥ वात सुणशु कुवर केरी, वेह धरी लगी
 जेह ॥ आपणा वितरु विच्यारी, चांखीशु धरी ने
 ह ॥ मनोरथनी माला नली, गुंथी राखी एह ॥
 मे० ॥ १८ ॥ ए नव्यायशीमी नली, ढाल तो सुखकार
 ॥ कहे श्रीगुणसूरि सधली, ढालमें शिरदार ॥ सांचल्यां
 आवी मिले, सकल वंगीत फल सार ॥ मे० ॥ १९ ॥

ढुहा ॥ आगे जातां आवीयो, सुंदर मंदिर ए
 क ॥ हयथट गयथट नरथटां, पूरीत शोच अनेक
 ॥ १ ॥ वली विशेषे पूठतां, विद्या चाखे इश ॥
 ए घर तुह्न माता तणी, जणनी पूरी जगीश ॥ २ ॥
 नित्य महोत्तव नवनवा, दिजे पौली प्रवाय ॥ याचक ज
 य जय उच्चरे, चूरी नणे गुणगाय ॥ ३ ॥

ढाल ९० मी ॥ परम सलुणो साधुजी ॥ ए दे
 शी ॥ मोहन प्यारे चेलणा, चतुराइ दिसेरे ॥ रागे
 राची रुखमणी, मिलवाने मन हिसेरे ॥ मो० ॥ १ ॥
 रूप धर्यो रलीयामणो, ऋपी वालीक रुमेरे ॥ मि
 ठो नीमीत चाखणो, बोले जीम सुमेरे ॥ मो० ॥
 ॥ २ ॥ वेस विराजे साधुनो, महीमा ए अति मोटो
 रे ॥ पूज्य पठे वडी पांगुरी, चलोटो पिण ठोटेरे ॥
 मो० ॥ ३ ॥ खांधे लटके लोवडी, लटकतो चालेरे ॥
 जयणनो गुण राखतो, हलुए हलुए हालेरे ॥ मो० ॥
 ॥ ४ ॥ देह प्रमाणे दिपतो, करमे दंरु धरावेरे ॥ म

नमथ नावे ढूकडो, दरसणने दावेरे ॥ मो० ॥ ५ ॥
 मुहंके दिधी मुहपति, मुनी मयले गात्रीरे ॥ गुण आ
 चारे उजलो, अति चारीत्र पात्रिरे ॥ मो० ॥ ६ ॥ आ
 गो उघो बांहमे, पुंजवाने काजेरे ॥ यत्न करेवे जीव
 नी, संजम गुण गाजेरे ॥ मो० ॥ ७ ॥ रंग रंगीला पा
 तरा, पडीलेहि लिजेरे ॥ एखणा सुधी आहारनी, ग
 वेखणा कीजेरे ॥ मो० ॥ ८ ॥ सुमते सुमतो ठे
 खरो, गुपतिए करी गाढोरे ॥ दर्शण दिठे जेहने,
 चित्त होवे थांढोरे ॥ मो० ॥ ९ ॥ पीहरीयो ठ का
 यनो, व्रत तो चोखा पालेरे ॥ निग्रह इंद्रि पांच
 नो, दुपण सहु टालेरे ॥ मो० ॥ १० ॥ शिल
 धरे नव वामसुं, तस क्रोध न कोइरे, समता रसनो
 सागरु, निरलोची अति होइरे ॥ मो० ॥ ११ ॥ स
 नमुख दीठो आवतो, शा साहमी आवेरे ॥ देइ प्रद
 ह्मणा वंदनां, करती मन सुख पावेरे ॥ मो० ॥ १२ ॥
 लेवा चाली पाटलो, हरी आसणे वेठोरे ॥ रुखमणी
 ना मन नींतरे, अति अचरिज पेठोरे ॥ मो० ॥ १३ ॥
 विनय करीने विनवे, ऋषी उरहा आवेरे ॥ वेसो बी
 जे आसणे, जिम साता पावोरे ॥ मो० ॥ १४ ॥ ते
 धन थानक जाणीए, जिहां ऋषी ले विश्रामोरे ॥ उ
 ठावुंठुं कारणे, तुह्य मति दुःख पामोरे ॥ मो० ॥ १५ ॥
 देवाधीष्टीत एह अठे, हरीके हरिको जायोरे ॥ वेठो
 सुख पावे साहि, अवराने असोहायोरे ॥ मो० ॥ १६ ॥

ऋषि चाखे सुण श्राविका, ए केहि चित्यारे ॥ सपा
 खेलावे मानवी, जाणी अहिमंतारे ॥ मो० ॥ १७ ॥
 लब्धि प्रसादे देवता, हमसुं नवि बोलेरे ॥ ताजु
 घाली डुगरा, कर साथे तोलेरे ॥ मो० ॥ १८ ॥ मेरु
 तणो दाडो करे, धरती उत्राकारेरे ॥ राखे हाथा उ
 परे, सायर जलनी धारेरे ॥ मो० ॥ १९ ॥ तो तुह्म
 साचा स्वामीजी, खमवो ए अपराधारे ॥ दिसोवो तो
 नान्हडा, संजम किम लाधारे ॥ मो० ॥ २० ॥ जुमं
 डल पर जनमीया, प्रथवीपति तातोरे, माता तो म
 हि गडणी, वैरागे वातोरे ॥ मो० ॥ २१ ॥ आज ल
 गी गुरु नेटणा, हमने नवि हुइरे ॥ आपहि आपे जा
 गीया, गति मति जुइरे ॥ मो० ॥ २२ ॥ तिरथवा
 शी बुं सहि, इहां आयो आजारे ॥ वरस सोलनो
 पारणो, करवाने काजारे ॥ मो० ॥ २३ ॥ चाखे रा
 णी लखमणी, ए अधीको केहेवाधारे ॥ उक्कृष्टी अव
 गाहना, वरसी तणो तप थायोरे ॥ मो० ॥ २४ ॥
 अवताई उपवासीयो, माता थान हरासारे ॥ वात व
 डालुं कीजीए, वोहरावणनो कामारे ॥ मो० ॥ २५ ॥
 पट चौरघासीभी जली, ए ढाल कहावीरे ॥ श्री गुणसाग
 र सब लह्यो, माता दरशण पावीरे ॥ मो० ॥ २६ ॥
 दुहा ॥ दरशण पाभी माता तणो, मान्यो सुख
 मननाहि ॥ तेतो जाणे केवलि, के जाणे चित प्रांहि
 ॥ १ ॥ मनहि मील्यो नयणा मीलया, अने मिलियो

वयणां काय ॥ च्यार मिलणमां एकहि, मिलण मिलि
नहि माय ॥ २ ॥

ढाल ९१ मी ॥ साहिव बाहु जिणे सर विनवुं ॥ ए दे
शी ॥ रुखमणी तुंतो साची श्राविका, थारो अति
सोनाग हो ॥ परदेसामें सांचल्यो, देव गुरुसु राग
हो ॥ रु० ॥ १ ॥ क्षुद्र नहि रूपे नलि, सो महा
सुखदाय हो ॥ सत्य वदे डर पापनो, सरलपणे सु
चि काय हो ॥ रु० ॥ २ ॥ स्नेह घणो लज्या घणी,
दया घणी दिल मांहि हो ॥ सम जावी गुन दृष्टणी,
गुणनि रागणी प्रांहि हो ॥ रु० ॥ ३ ॥ धर्म कथक धर्मात
मा, कुल तो उचय विसुध हो ॥ दिव्य दृष्टीए देख
णी. अर्थ लहे अविरोध हो ॥ रु० ॥ ४ ॥ विनयवं
ति गुण जाणती. पर हित करत जगीस हो ॥ लब्धि
लिखी गुण धारणी. एवं ए एकविस हो ॥ रु० ॥ ५ ॥
समकीत गुणने पालवे, थारो निश्चल नाम हो ॥ देव
ने देवी चालवे, धर्मिसुं धर्म प्रमाण हो ॥ रु० ॥ ६ ॥
पर्व तणी आराधना, करती मन उजमाल हो ॥ पो
सा पढिकमणा करे, सब वीधी वात रसाल हो ॥ रु०
॥ ७ ॥ शिलवंति सीता जिसी, जाग्यवंति संसार हो
॥ पंचालिनी उपमा, सत्यवंति वरनार हो ॥ रु० ॥ ८ ॥
साहमी साहमणी साचवे, धर्म थानक पोसाल हो ॥
साधु साधवियां तणी, गोरं जिम संजाल हो ॥ रु०
॥ ९ ॥ दिन प्रत्ये चारी प्रकारनो, दान तणी अधी

कार हो ॥ अण वोहोराव्या आखनी, जीमवा नेम अपार
 हो ॥ रु० ॥ १० ॥ इम सुणी गुण दूरधी, ठोरुतो गुण
 गेह हो ॥ हुं आयो तुह्म आंगणे, आणी धर्म सनेह
 हो ॥ रु० ॥ ११ ॥ सार न पूर्णी एतली, वोहोरो स्वा
 मी आहार हो ॥ अंतराइ कोइ माहरे, के थइ चित
 विसार हो ॥ रु० ॥ १२ ॥ कहे रुखमणी ऋषीजी सु
 णो, आरती वति आज हो ॥ रांधण सींधण वीसरी,
 वीसरीयो सब काज हो ॥ रु० ॥ १३ ॥ एवडीसी आ
 रती अणे, जांखे सयल विचार हो ॥ पुत्र आगम वे
 ला हिवे, ए जिन जाखीत सार हो ॥ रु० ॥ १४ ॥ स
 ही नाणी सघली मिली, सुके वृह्म अशोक हो ॥ फूल
 फले करी गह गह्यो, देखे सघला लोक हो ॥ रु० ॥
 ॥ १५ ॥ मुंगा लाग्या बोलवा, विरुपा अति रुप हो
 ॥ कुवज फिरी सरला थयां, आंधा नयण अनूप हो
 ॥ रु० ॥ १६ ॥ नीर जराणी बावडी, कमले शौच उ
 दार हो ॥ कोयल बोले सुहामणा, मोर करे किंगार
 हो ॥ रु० ॥ १७ ॥ विण ऋतु ऋतुराजीयो, आणी वि
 राज्यो आज हो ॥ जमरा गुंजारव करे, फूल फल्यां
 तरु साज हो ॥ रु० ॥ १८ ॥ माहरो मन पिण उलस्यो,
 पान्हो चढीयो पूर हो ॥ पिण नायो मुज नान्हमो, ए
 मन चित्या चूर हो ॥ रु० ॥ १९ ॥ उतावली एति की
 शी, जे जांस्यो जिनराय हो ॥ पहोर घमीने आंतरे,
 सो तो रहस्ये आय हो ॥ रु० ॥ २० ॥ सा जांखे ऋषी

शिर धूणवे, फीरी फीरी पिठताय ॥ ५ ॥

ढाल ९२ मी ॥ पुण्य तणारे फल मिठारे जाणो
 ॥ ए देशी ॥ फिरी फिरी पिठतावा कगति, वरते
 जामा जामरे माइ ॥ सात पूकार अर्जा आवी,
 सा दुख पावि तांमरे माइ ॥ फि० ॥ १ ॥ तन रां
 जाली पहिरे फाली, वाली जाक जमालीरे माइ ॥
 उवारी मेरे जानु कुमरपर, पूठे कुमर रसालीरे मा
 इ ॥ फि० ॥ २ ॥ तन मन प्यारो नंद हमारो,
 सारो राखे इसरे माइ ॥ जर न चाहुं तुज आरा
 हुं, ए मूको जगीशरे माइ ॥ फि० ॥ ३ ॥ अवर
 सह वातानो सुधो. पिण फिरी नावे केसरे माइ ॥ धु
 रती धूति खरी विगुती, होशे हास्य विशेषरे माइ ॥
 ॥ फि० ॥ ४ ॥ अमरख आणी जामाराणी, ठाणी ए
 अनीमानरे मांइ ॥ रुखमणी चुंमीने अति चुंमी, करशु
 आपसमानरे माइ ॥ फि० ॥ ५ ॥ एमविमाशी बहुली
 दासी, नावी लीधी लाररे माइ ॥ माथे मुंरुण करवा
 चुंरुण, पोखी द्वेप अपाररे माइ ॥ फि० ॥ ६ ॥ मणी
 नो जाजन साथे साजन, वाजानो विस्ताररे माइ ॥
 गावत गीत विशेषे आव्या, रुखमणीने दरवाररे मा
 इ ॥ फि० ॥ ७ ॥ आवत निरख्यो मनसुं पर
 ख्यो, ए जामा परीवाररे माइ ॥ आंसु ढलियां ऋ
 पी अटकलियां, पूठे ताम विच्याररे माइ ॥ फि०
 ॥ ८ ॥ धुरवे हांसुं अति नेहासुं, जांख्यो सह वि६

तंतरे माइ ॥ आयो जायो लोक सुहायो, गीरुवोने गु
 णवंतरे माइ ॥ फि० ॥ ९ ॥ चामा केरां लोक घणेरं,
 केसांकेरे काजरे माइ ॥ आवी मीलियां अति उगलि
 यां, बोले गोडी लाजरे माइ ॥ फि० ॥ १० ॥ ए दुख
 तो जाण्योथो आगे, नारद वचन विचाररे माइ ॥
 ए दिन लीधां काज न सिधां, दिन वदे हरि नाररे
 माइ ॥ फि० ॥ ११ ॥ बोले चेलो पाकी हेलो, माता म
 करे अदेहरे माइ ॥ वेटो करतो सोमे करवो, माणिश
 मन संदेहरे माइ ॥ फि० ॥ १२ ॥ रुखमणीं ठांनी रा
 खी कानी, माया रुखमणी कीधरे माइ ॥ आपण खो
 जो वदन सरोजो, हाथां आरीसो लीधरे माइ ॥ फि०
 ॥ १३ ॥ नारी सुरंगी नूपीत अंगी, हस्त मुखी हुशी
 याररे माइ ॥ आदर देती लोका सेति, वचन वदे सु
 विचाररे माइ ॥ फि० ॥ १४ ॥ लोक प्रवीणा चाखे दीणा,
 माता हमनहि दोषरे माइ ॥ तुह्य हम ठाकुर हमतुम
 चाकर, उसन नरीय कोसरे माइ ॥ फि० ॥ १५ ॥ स्वामनि
 कारज करवो आरज, हम आव्या तुम वाररे माइ ॥
 जानि गले एह वचन कहेतां, साचो देवी विचाररे मा
 इ ॥ फि० ॥ १६ ॥ रुखमणी चाखे रोसन राखे, स्वा
 मीनी केशो कामरे माइ ॥ वेगे किजे जग जस लिजे,
 ए सीर बोल्यो रामरे माइ ॥ फि० ॥ १७ ॥ वचन वि
 चारी हरखी नारी, सारी नारी जावरे माइ ॥ जाजन
 आगे धरती रांगे, चितनो चोखो चावरे माइ ॥ फि०

॥१८॥ अक्षत धूप दहिसु मंगल, किजे विविध प्रकारे
 माइ ॥ अधम तणी अहि नाणी जाणी, ए खांता उपर
 खाररे माइ ॥ फि० ॥ १९ ॥ नावि आवी आप जणा
 वी, कापे केस जे वाररे माइ ॥ कान नाक वेणी आं
 गुलिया, ठेदाइ तेहि वाररे माइ ॥ फि० ॥ २० ॥
 नावीने नारी जन केरी, एह अवस्था होइरे माइ ॥
 आप न देखे हरख विशेषे, चाली जाइ सोइरे माइ
 ॥ फि० ॥ २१ ॥ रुखमणी केरी घणुं घणेरी, करती
 जाइ प्रशंसरे माइ ॥ एहवी मीठी अवर न दीठी, ध
 न एहनो कुल वंसरे माइ ॥ फि० ॥ २२ ॥ देह विप
 र्यय जाणी हसंता, दिठा लोक ते वाररे माइ ॥ हस
 सुंदरता ठे मन हरता, तेहथी हाश प्रकारे माइ ॥
 फि० ॥ २३ ॥ नाचत गावत अति सुख पावत,
 आवत चामा पासरे माइ ॥ एक मुखीए दुखी
 रुखमणी, गुण केरो करे प्रकाशरे माइ ॥ फि० ॥
 ॥ २४ ॥ चडके तडके चामा चामनी, केश न देखे
 एकरे माइ ॥ रेरे द्रोहणी दासडीयो तुह्ये, खाधी लां
 च अनेकरे माइ ॥ फि० ॥ २५ ॥ लांच तणुं पुठेवुं
 पाठे, वेणि नाकने कानरे माइ ॥ आंगुलिया उतरी
 यां दिसे, देह घटायो वानरे माइ ॥ फि० ॥ २६ ॥ च
 मकी चित चींतर अती चतुरा, व्यापि वेदना जामरे
 माइ ॥ ढाकी काया चोर तणि परे, निज निज घर
 गइ तामरे माइ ॥ फि० ॥ २७ ॥ सुसाति करीने स्वा

मनी पूढे, किधो किणे ए कामरे माइ ॥ रुखमणी
 रंच न दोप न दिसे, ए विलसे नृप स्वामरे माइ ॥
 ॥ फि० ॥ २८ ॥ सेवक दुखीए स्वामी लहे दुख, सु
 खी ए सुखीयो होइरे माइ ॥ तेनी प्रधाना आगे जां
 खे, जोर वहे जग जोइरे माइ ॥ फि० ॥ २९ ॥ वेणी
 दंडज नाप्यो आप्यो, ए न वद्यो विपरीतरे माइ ॥
 फिर फिरस्ता रुप अनेका, मुऊने वितक वितरे माइ
 ॥ फि० ॥ ३० ॥ होडे हाम न पुगी कोइ, होमे आया
 हेठरे माइ ॥ हाणी घणीने लोका हांसो, होडे हारी ने
 ठरे माइ ॥ फि० ॥ ३१ ॥ परखदा माहे पधारो प्रनु
 जी, देखावो ए कामरे माइ ॥ शिरे ठाणा नवि जाय
 थाप्या, स्याणि चुंमो नामरे माइ ॥ फि० ॥ ३२ ॥ हरी
 हांसो न मावे हियडे, आप वजावे हाथरे माइ ॥ कोइ
 पलेखो करण न पावे, स्वामीनि सरिखो साथरे माइ
 ॥ फि० ॥ ३३ ॥ कृष्ण कुतुहल करतो जाणी, आवी
 नामा आपरे माइ ॥ केश अपावो कपटी कंता, के
 थाशे संतापरे माइ ॥ फि० ॥ ३४ ॥ थारेही आपे न
 विसरीयुं, वलदेवाशुं वातरे माइ ॥ तुम पुरुपोत्तम
 साखी राखी, इम करे कुण मातरे माइ ॥ फि० ॥ ३५ ॥
 हरीमुं हलधर देइ उलंजो, माथे चहोडी नाररे मा
 इ ॥ सुधी वाते रुकटि करतां, लहिशे नाम गीमाररे
 माइ ॥ फि० ॥ ३६ ॥ कृष्ण कहे सा आप एकेली, ए बहु
 लो परीवाररे माइ ॥ ॥ किम मुंडाइ दादा देखो, ए

स्यो कां व्यवहाररे माइ ॥ फि० ॥३७॥ श्री बलदेव
दिलासा कीधा, जामाने जरपूररे माइ ॥ रुखमणी घ
र लुंटेवा कारण, मोकलिया जड नूररे माइ ॥ फि०
॥ ३८ ॥ ए व्याणुमी ढाल जलेरी, मुंडणको अधीका
ररे माइ ॥ श्री गुणसागर सूरि वखाणे, हरी सुत च
रीत उदाररे माइ ॥ फि० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ तेहज रूप तजी फीर थयो, चेलो पेहेल प्र
माण ॥ चमकी राणी रुखमणी, ए बड गुणनो जाण ॥१॥
विद्याधर माहे वस्यो, विद्या तेह विशेष ॥ रूप करेठे
नव नवा, पिण ए काम नरेश ॥ २ ॥ एहवो अवर न
जगतमें, एहवो अवर न राय ॥ एहवो अवर न जा
इयो, एहवो अवर न थाय ॥ ३ ॥ ए जायो माहरो
सहि, ए सम अवर न कोय ॥ तारा दिश सधली ज
णे, रवि पूरव दिश होय ॥ ४ ॥ केलवतो अतिहि
कला, खिसीन जाये खाप ॥ माय मनोरथ पूरवा, पु
त्र प्रगट कर आप ॥ ५ ॥ कामदेवनी उपमा, रूप अ
नोपम सार ॥ अभ्र संडलथी निकल्यो, सहेस किरण
दिनकार ॥ ६ ॥ सर्व अवेवां शोचतो, सर्व अनूपण
धार ॥ सर्व कला गुण आगलो, दिठो काम कुमार ॥७॥

ढाल ९३ मी ॥ क्युं जाणुं क्युं बनी आवसि ॥ ए
देशी ॥ पगे लाग्यो माता तणे, माता लियो उठाय
हो लाल ॥ आलिंग्यो अलजे घणुं, हेज हिए न समा
य हो ॥ १ ॥ आज जेलो दिन माहरो, दूधे वुठा से

ह हो ॥ ला० ॥ दर्शण दिठो ताहरो, जाग्यो तनमें
 नेह हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २ ॥ बाती आवी गहिवरी,
 आंसु वरसे नयणहो ॥ ला० ॥ माता पुत्र मिली रक्षां,
 उपज्यो अधीको चयन हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ३ ॥ मु
 ह अने माथो घणुं, चुवे वारंवार हो ॥ ला० ॥ हुं वा
 री तुऊ उपरे, तुं मेरो प्राण आधार हो ॥ ला० ॥
 ॥ आ० ॥ ४ ॥ बलहारी सुरति तणी, मुरती मोटी
 सोह हो ॥ ला० ॥ अणियाले लोथणे, माता पनोति
 मोह हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ५ ॥ आवो मिलो साहे
 लनी, देखो मेरो लाल हो ॥ ला० ॥ इंद्र चली घर
 आवियो, सब विध रुप रसाल हो ॥ ला० ॥ आ०
 ॥ ६ ॥ प्रेम गहेली गोरनी, चिगन करे लखकोरु हो
 ला० ॥ घन वुठा जिम मोरडी, नृत्य करे नर जोरु
 हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ७ ॥ दाखा पाहे दैवनी, मी
 ठी अति कहाइ हो ॥ ला० ॥ पाणी पांपण हेठलो, नि
 रखत निठे नांहि हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ ८ ॥ लहेरी
 खारा जल तणी, वररयां पावे वाय हो ॥ ला० ॥ परदे
 शी प्यारो मिले, शितल कहि न जाय हो ॥ ला० ॥
 आ० ॥ ९ ॥ चंदन तो शितल कह्यो, तेहथी चंद
 सुवग हो ॥ ला० ॥ चंदन चंद विचारता, शितल नं
 दन संग हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १० ॥ मिश्री तो मी
 ठी सहि, तेहथी अमृत जोइ हो ॥ ला० ॥ मिश्री अमृ
 त दोयमे, मीठो नंदन होइ हो ॥ ला० ॥ आ० ॥

॥११॥ सोवनो तो सुखदायकं, सोवनाहिथी रयण हो
 ला० ॥ रयण अने सोना थकी, नंदन तो सुख दय
 न हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १२ ॥ न्याराथी न्यारो ख
 रो, सरसाथी अति सर्स हो ॥ ला० ॥ निकार्थी नीको
 घणुं, निको नंदन हर्श हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १३ ॥
 हियो सरोवर सांकडो, उलट जलनो जोर हो ॥ ला० ॥
 लहेर न जाइ जालवी, रहीयो होइ सोर हो ॥ ला०
 ॥ आ० ॥ १४ ॥ सुख मांहे दुख उपनो, माजीना
 मनमांही हो ला० ॥ बालपणो नवी देखीयो, ए दुख
 साले प्रांही हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १५ ॥ गर्ज तणी विधी
 साचवी, उदर वह्यो नव मास हो ॥ ला० ॥ कष्टी महा
 दुखे जनमीयो, किधो परघर वास हो ॥ ला० ॥
 ॥ आ० ॥ १६ ॥ दोप न देणो कोइने, कर्माकेरो दो
 प हो ॥ ला० ॥ जाग्य लिख्यो फल पाइए, मति करवो
 रागने रोसहो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १७ ॥ मदन कहे मा
 जी सुणो, ए दुख माणे कोइ हो ॥ ला० ॥ बालकरुप
 सुहामणुं, करी देखाडुं सोइ हो ॥ ला० ॥ आ० ॥
 ॥ १८ ॥ उंधो सुतो आगले, चिंतवे सा मुह मांहे
 हो ला० ॥ चपल पणे पाज धारतो, उठावे धरी बां
 ही हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ १९ ॥ मुठी बांधी सोह
 तो, मोहतो परीवार हो ॥ ला० ॥ हांशी करे अति
 कलकली, माताने हर्ष अपार हो ॥ ला० ॥ आ० ॥
 ॥ २० ॥ खोले लिधो खांतशुं, धवरावे पयपान हो

ला० ॥ आंखे काजल आंजतां, विच विच मेलेतान
 हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २१ ॥ आपेही लाग्यो उठवा,
 जानुनी गतिकारहो ॥ ला० ॥ पाव नरे गिर गिर प
 ने, माता मोले लार हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २२ ॥ मा
 ताको कर साहीयो, हंस वचाकी चाल हो ॥ ला० ॥
 बोले जापा तोतली, माता पूठे वाल हो ॥ ला० ॥
 ॥ आ० ॥ २३ ॥ जाइ लोटे आंगणे, धूले धूसर गा
 त हो ॥ ला० ॥ मुठी बांधी धूलशुं, कंठे लगावे मात
 हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २४ ॥ माता आपे सुखनी,
 आपी नाखे दूर हो ॥ ला० ॥ ए नही नही ए नही, ए
 उतुं लाव्य हजूर हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २५ ॥ आ
 को मांफी आकरो, रोवा लाग्यो जाम हो ॥ ला० ॥
 बोले माता रुखमणी, ए रहेवादे काम हो ॥
 ॥ ला० ॥ आ० ॥ २६ ॥ तव वय लिधो मूलगो,
 माय नमावे शीस हो ॥ ला० ॥ चिरंजीवे चिर नंद
 जे, माता दिए आशीस हो ॥ ला० ॥ आ० ॥
 ॥ २७ ॥ वारू वात विनोदशु, करती वरते माय
 हो ॥ ला० ॥ वरस सोलनो संचियो, दुख देशांतर
 जाय हो ॥ ला० ॥ आ० ॥ २८ ॥ माय मनोरथ
 गुंथती, सफल थइ ते आज हो ॥ ला० ॥ पूरव पु
 रय प्रसादथी, मिलीया ए सुन साज हो ॥ ला० ॥
 ॥ आ० ॥ २९ ॥ एतो ज्याणुमी कही, ढाल महा
 अजीराम हो ॥ ला० ॥ श्रीगुणसागर सुरिजी, सरियां

वंगीत काम हो ॥ ला० ॥ अ० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ श्रीबलचन्द्र तणा वली, सुजट महा कुं
जार ॥ आवी हुआ एकठा, रुखमणीने दरवार ॥१॥
मदन कहे माता कहो, एते कवण विच्यार ॥ जेतेंत
रुवर वावीया, ते ए फल विस्तार ॥ २ ॥

ढाल ९४ मी ॥ वनमालानी देशी ॥ ते फल ए
विस्तरियांरे, ए जनु आवी परवरीयां ॥ दाशीनी वे
णी वाढीरे, ते नकटी किधी काढी ॥ १ ॥ ते होडे
जामा जाखीरे, हरी हलधर दिधा साखी ॥ सतजामा
जाइ पुकारीरे, तिहांथी जनु आया जारी ॥ २ ॥ मा
चिंता नवी धरणीरे, तुं देखे हमारी करणी ॥ विद्या वा
ह्यण किजेरे, लाकलडी हाथ ग्रहीजे ॥ ३ ॥ पेट व
नो तसु हालेरे, ते हलुंए हलुए चाले ॥ ते खीली रा
ख्यां सघलारे, ते सुजट हुआ अति निबलां ॥ ४ ॥
तव एक मोकलो किधोरे, प्रनु पासे गयो ते शिपो ॥
सुणी बोले श्रीबलदेवारे, ए मंत्र तणा वल लेवा ॥
॥ ५ ॥ ए बहुतो मोहन गारीरे, ए बहुतो आप ठगा
री ॥ ए बहु तो कामण जाणोरे, ए नाये पियु वश
आणे ॥ ६ ॥ शिलो दाहिं दांतज्युं तोडरे. शिलो जल
पर्वत फोडे ॥ ए मोर चवे मुखे मीठोरे, पिण साप गलंतो
दिठो ॥ ७ ॥ वाणी एह वडाकीरे, सापीणथी पिण ए वांकी
॥ आखरनो अधीको आघोरे, जरहो नवी आवे
वाघो ॥ ८ ॥ जे काम करे नही पांखेरे, ते काम समा

रे आंखि ॥ जे कालो क्रोधी विशेषेरे, ते मंत्र बले नि
 चु देखे ॥ ९ ॥ नर खोडे दिवा खटेरे, नर वधन बा
 ध्या तुटे ॥ मंत्र बले बांधी आण्योरे, नवी तुटे ते न
 र तारयो ॥ १० ॥ ए मर्म हमाने लाधोरे, मंत्र बले
 जाणस गाधो ॥ ते साहमो होइने चुकेरे, ते जोर न
 लाइ मूके ॥ ११ ॥ एतो हु जाइने देखेरे, ए मंत्र त
 णो पल पेखु ॥ ए सुतने किरती देवारे, चली आया
 प्रचु ततखेवा ॥ १२ ॥ तव ते ब्राह्मण सोवेरे, दरवाजे
 आडो होवे ॥ बठ कहे हलधारीरे, दिए वाट विशेषे
 विच्यारी ॥ १३ ॥ विप्र कहे सुण स्वामीरे, तुगेए अतर
 जामी ॥ जामानो भोजन खाधोरे, अति होडे ते फल
 लाधो ॥ १४ ॥ प्रचुजी पाठा वलीएरे, गुरु बुद्धी वि
 च्यारी टलीए ॥ रिस वसे सो आंखेरे, मर्जादा न तेहनी
 राखे ॥ १५ ॥ अलगो था घणां खाणारे, मुळ मंदिर
 मांही जाणां ॥ विप्र वाणी एम दाखीरे, न खवाइ जी
 वती माखी ॥ १६ ॥ एह वचने हलधर रिसेरे, पग
 साहीने तस घीसे ॥ पहंता पोले जाइरे, ते काया अधी
 की थाइ ॥ १७ ॥ फिरी पूठे जब दिठोरे, ते ब्राम्हण
 थानक वेठो ॥ मर्म न लिधो कोइरे, अति कालो पि
 लो होइ ॥ १८ ॥ मुळसु इणीपरे मंडेरे, अवरांने ए
 किम ठंडे ॥ ए डाकणी साकणी साचीरे, लही मान म
 हा मद माची ॥ १९ ॥ पुनरपी चाली आवेरे, ते धस
 मस करतो धावे ॥ दिसे रिस अपाररे, तव पूगी मा

य कुमार ॥ २० ॥ मायकहे सुण लालनरे, ए मोटा
 नां मद गालण ॥ ए यादव केरो नायकरे, एह तुम्ह पि
 ता सुखदायक ॥ २१ ॥ श्रीहरीवंशे एहवोरे, को हुठ
 न एठे जेहवो ॥ श्रीबलदेव सुहायोरे, ए तुज उपर
 अब आयो ॥ २२ ॥ तुम्ह जइने पगे लागोरे, तुम्ह
 पाबाही मती जागो ॥ जाणी दीठुं साथेरे, मति
 घालो मुहंडे हाथे ॥ २३ ॥ मदन कहे मा सुणि
 एरे, तेतो परमार्थ ए गुणीए, कालो नाग खेलावोरे,
 तेतो वादी राय कहावे ॥ २४ ॥ युद्ध किस्सुं
 प्रचुने जावोरे, मृगपतिनो अधीके दावे ॥ रण
 चढीयो रोलावोरे, हल मुसल मार मचावे ॥ २५ ॥
 विप्र वेश न ठंडेरे, ते सिंह थइ अति मंके ॥ बाल
 शसी सम दाढोरे, गिरि मेरु सरिखो गाढो ॥ २६ ॥
 कुंकुम केसर बाजेरे, तव मस्तक पुंठ विराजे ॥ सिंह
 नादने करतोरे, ते मंदिरथी निसरतो ॥ २७ ॥ हलवर
 देखी बीमासेरे, चाची मरीए इणे हासे ॥ ए नागी
 नहि घर सरखीरे, में धूर ठेहां लगे परखी ॥ २८ ॥
 उपरणीसुं हाथोरे, वामो विटे नर नाथो ॥ आगे ध
 रीने ठूंक्योरे, ते चोट करंत न चूक्यो ॥ २९ ॥ ते मां
 होमांहि वलगारे, जण जोवे उजा अलगा ॥ तामण
 ताजण करवोरे, उल्हास घणे अनुसरवे ॥ ३० ॥ ते हारयो
 हरीने आगेरे, हलधरजी धरति लागे ॥ मदन गयो
 मा पासेरे, आलिंयो अति उल्हासे ॥ ३१ ॥ पुत्र परा

क्रम दिठारे, माता लोचन अमीय पइठा, हलधर निज
घर आयोरे, सुतने जस कलस चढायो ॥ ३२ ॥ ढा
ल चोराणुंभी वारुरे, मकरध्वज बल विस्तारु ॥ श्री गु
णसागर चापेरे, एतो पूरव पुण्य प्रकाशे ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ माता पूठे कुमरने, किहां अठे ऋषी राय
॥ उदधी कुमरीनि पाखाति, कुमरी कवण कहाय ॥ १ ॥
कुमरी हरण आदे करी, जामा जुंडण अंत ॥ दसहि
बोल सुणाविया, अचरिजकारी संत ॥ २ ॥ कहण सुणन
सरीखा नहि, सुतना चरीत्र अनेक ॥ सुरगुरु तो न
ल वरणवे, में मुख रसना एक ॥ ३ ॥ अवर सकल
विधी साचवी, सुख दुखदाइ दीय ॥ अब मिलो जइ
तातने, तात परम सुख होय ॥ ४ ॥

ढाल ९५ मी ॥ हो नणदल थांको विरो चारित्र
लेइ ॥ ए देशी ॥ हो कुमर, जाई मिलो तुम तातने,
तात वडो संसार हो ॥ कु० ॥ बोले माता रुखमणी,
आणी हेत अपार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १ ॥ जिम सु
ख दिधो मा नणी, तिम सुख द्यो नीज तात हो ॥
कु० ॥ तात तुमारा दर्शणे, तिरस्योथो दिन रात हो
॥ कु० ॥ जा० ॥ २ ॥ स्वर्ग थकी सुख स्वर्गिना, जेह
नो स्वामी तात हो ॥ कु० ॥ पंडीत जननी गोठमी, ति
जो दक्षिण वात हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ३ ॥ कुमर कहे
किहां मिलुं, परखदा मांहि जाय हो ॥ कु० ॥ तात तु
मारो पुत्र वुं, इम तो में न कहाय हो ॥ कु० ॥ जा०

॥ ४ ॥ राजा राणा पूबशे, एकुण ए कुण एह हो ॥ व
 ॥ रुखमणी सुत आइयो, थो परदेशां जेह हो ॥ व
 ॥ जा० ॥ ५ ॥ जले पधारयो वापडो, मावित्रां सु
 काम हो ॥ कु० ॥ रडवन्तोथो पर घरा, जिम ति
 आयो ठाम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ६ ॥ नान्हा मोठा
 कयां, में न खमाइ बोल हो ॥ कु० ॥ हुं निशाण
 जावते, मिलसुं घुडाइ ढोल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ७ ॥
 रु बाबा वड बंधवा, हरी हलधरसुं सोर हो ॥ कु०
 मचाउ अति आकरो, जोउं जादव जोर हो ॥ कु०
 ॥ जा० ॥ ८ ॥ नेमीनाथ ठांडी करी, ठेकीस सहु प
 वार हो ॥ कु० ॥ आप जणावी तातने, करशुं आ
 जुहार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ ९ ॥ वाचा मांगु तुज
 ने, चाल हमारी लार हो ॥ कु० ॥ अण पूढयां आ
 नहि, पतिव्रता आचार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १०
 जाण्युं मति पागे वले, मति समरे उदेश हो ॥ कु
 ॥ कृष्ण तणी ठे पाधरी, मानी वात अशेष हो ॥ कु
 ॥ जा० ॥ ११ ॥ बाहे साहि रुखमणी. परखदा उप
 आय हो ॥ कु० ॥ कीधी पुरुषा पचारणी. सांजल य
 दव राय हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १२ ॥ चो चो जो
 पांरवो, अवरजीको जूंजार हो ॥ कु० ॥ आवी म
 ल्यो उतावला, लागो हमारी लार हो ॥ कु० ॥ जा
 ॥ १३ ॥ चंदेरी पती मारीयो, कीधी अती संग्राम हो
 ॥ कु० ॥ आणी राणी रुखमणी सो अब जाइ नि

काम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १४ ॥ विद्याधरपति न
 दन, हुं एकाकी बाल हो ॥ कु० ॥ लीधा जावे रुखम
 णी, जेहनो हरी रखवाल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १५ ॥
 चोर नहि लपट नहि, नहि नट वीटमें नाम हो ॥ कु० ॥ सा
 हिं रह्योबु सुंदरी, किं न धसे नृप शाम हो ॥ कु०
 ॥ जा० ॥ १६ ॥ स्या तुह्य राणा राजीया, स्यो जीव्यो
 जगते माम हो ॥ कु० ॥ जेहनी लजे नामनी, अवर
 क्रिस्यु करे काम हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १७ ॥ युद्ध
 विना जाउ नहि, सांजलज्यो जे सूर हो ॥ कु० ॥ पा
 ठीहि जव दोडस्ये, तेका कीजे असूर हो ॥ कु० ॥
 ॥ जा० ॥ १८ ॥ एम सुणी यादव सजा, हल हल
 हुइ अपार हो ॥ कु० ॥ संवाह्या चट सामठा, गाढा
 जूजाण हार हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ १९ ॥ मूरवाणो
 हलधर महा, सुणी रुखमणी अपहार हो ॥ कु० ॥ उ
 ठाइ उजो कियो, रातो थयो अपार हो ॥ कु० ॥
 ॥ जा० ॥ २० ॥ भ्रकुटी जाली जमाडतो, करतो कं
 प शरीर हो ॥ कु० ॥ उज्यो अच्युत जनावलो, मेरु त
 णी परे धीर हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २१ ॥ पांडु नंदन
 परवडा, अर्जुन निम कुमार हो ॥ कु० ॥ कवण कवण
 करी कलकले, न लहे निज परिवार हो ॥ कु० ॥
 ॥ जा० ॥ २२ ॥ आप आपणे पारखे, गाजंता नू
 पाल हो ॥ कु० ॥ उग्रसेन आदे करी, अरि कुल केरा
 काल हो ॥ कु० ॥ जा० ॥ २३ ॥ ॥ ए पंचाणुमी ठा

गे धरारीरे, पायाहो धरणीने खोतररे ॥१४॥ नर पाय
 क पालारे, हुशीयार हठालारे, आगेहो होइने हालणा
 रे ॥ दिसे ऊलहलतारे, रीसे कल कल तारे, बलता
 हो पूढे नवालणारे ॥ १५ ॥ रणचूमी आचारे, यहु
 पती रायारे, मांड्याहो लोग लडावणीरे ॥ नाता मु
 नी सगेरे, मेली मनरंगेरे, रंगेहो जग लडावणीरे ॥
 ॥ १६ ॥ हरी साथ सरीखोरे, ए सयल परीखोरे, कि
 धाहो विविध प्रकारशुरे ॥ नर हयवर हाथारे, सा
 थाशुं साथीरे, जुजेहो धर्म विच्यारशुरे ॥ १७ ॥ जल
 ढोल ददामारे, काहला अजीरामारे, नाद नीरुपन जु
 जुतरे ॥ जुंजाज वाजेरे, सरणाइ साजेरे, रागहो जमी
 रो सिंधुतरे ॥१८॥ गोखे चढीयां गोरीरे, देखे चित चो
 रीरे, आगे हो सोहे मारो नाहलोरे ॥ कुलदेवी मनावेरे,
 प्रीजडो जस पावेरे, आज हो एह उमाहलोरे ॥१९॥ सूरु
 अति ऊंजेरे, नर कायर धूजेरे, दीन वचन मुखे जपतारे
 ॥ जोवे देव तमासोरे, आकाशे वासोरे, वासंगीहो थर
 हर कंपतारे ॥२०॥ अतिशे हा आडंवेरे, आचढाघो
 अंवेरे, हाथहो हाथ सुजेनहिरे ॥ नहि वैरविरोधारे,
 हासाक्रत क्रोधारे, मदन विनोदाहो जाणे सहिरे ॥२१॥
 नरु सहु जागेरे, हरी दलने आगेरे, काम करे उठा
 वणीरे ॥ दल देखी खीसंतारे, धाया धसमस्तारे, हल
 धर पांडवपर जणीरे ॥ २२ ॥ ते चोपें चढीयारे, अति
 गाढा लढीयारे, नमीया हो मदन माया करीरे ॥ हरी

आपण आयोरे, सब जोर दिखायोरे, कांइ न चाले
 चिंता खरीरे ॥ २३ ॥ पग आघा ठावेरे, हरी साहमो
 आवेरे, पावे हो मुख हरी देखेरे ॥ हरी लोयण व
 क्कणरे, वर वाह सुलक्कणरे, फूरके हो ते नर पेखेरे
 ॥ २४ ॥ हरी चाखे चाइरे, ते रीस लगाइरे, तोहि तु
 ऊ साथे नेहलोरे ॥ हसी बोले नीकोरे, जायो हरी जी
 कोरे, कुण समो नेहनो जलोरे ॥ २५ ॥ को जोर न
 वालेरे, कां चाखन घालेरे, आपी हो त्रियारूपी ची
 खडीरे ॥ एह वचने कोप्योरे, अति गाढो रोप्योरे, ना
 व हो त्रोडी जिम चिचमीरे ॥ २६ ॥ जेहनो बल आ
 णरे, ते ठेयो चापोरे, ए बलि नाम महा बलिरे ॥ घर
 गा जाउरे, हरी सुखीया थाउरे, नारी हुइ न हुइ
 मन्दिरे ॥ २७ ॥ अंगुठाथी लागीरे, जाइ माथे जा
 ओरे, रोमै हो रोम साली घणीरे ॥ तव कोडी उपा
 णरे, किंधा हरी रायोरे, एक न लागो नंदन जणीरे
 ॥ २८ ॥ शिखात्र बल चांगोरे, हरी बाथा लागोरे, काल
 पी हो थयो कान्हमोरे ॥ माताजी देखेरे, चिंत्या सु
 षेपोरे, मतरे दमे माहारो नान्हडोरे ॥ २९ ॥ बेसे
 ऊ आडोरे, ए दोइ पवानारे, हाणी होवे घर मा
 रेरे ॥ ऋषिरोप विचालोरे, जइ किजे टालोरे, हाथे
 वात ठे ताहेरेरे ॥ ३० ॥ ऋषि विच करावेरे, ऋषी
 ठ हरावेरे, कृष्ण करो किर्युं नंदसुरे ॥ नंदन स
 णयोरे, धसी सामो आयोरे, लाग्यो हो पाव आ

अंबर गान्धीयेरे, नाचे पात्र सुजाण ॥ पु० ॥ १३ ॥
 घर घर गुडी उठलीरे, घर घर मंगल च्यार ॥ घर
 घर होवे बधामणारे, घर घर उठव सार ॥ पु० ॥
 ॥१४॥ पुत्र पिता हत्ती चढीरे, रुखमणी डोले लार ॥
 दस दसारेने हलधरुरे, लोकाको नही पार ॥ पु० ॥
 ॥ १५ ॥ गोखे बैठी गोरमीरे, बहुली दे आशीस ॥
 मात पितानी पूरज्योरे, आशा अधीक जगीस ॥
 ॥ पु० ॥ १६ ॥ धन तुं माता रुखमणीरे, थारे एवो पु
 त्त ॥ घणा किस्सुं करे जाइयारे, कारण कोमीक सुत
 ॥ पु० ॥ १७ ॥ सांजलतां मारग विपेरे, विविध प्र
 कारे बोल ॥ आया रुखमणी मंदिरेरे, वाग्या जंगी
 ढोल ॥ पु० ॥ १८ ॥ मदन महोठव किजतारे, हरखे
 सघला लोक ॥ नामाने जानु तणोरे, चितडो थाय
 सशोक ॥ पु० ॥ १९ ॥ हरी हलधर निज नंदगुरे,
 अवर अनेरा राय ॥ रुखमणी घरे आरोगीयारे, दि
 न केता इम थाय ॥ पु० ॥ २० ॥ दुर्योधन नृप आ
 वीयोरे, हरीसुं करे पुकार ॥ सुऊ पुत्री बहु तुह्य तणी
 रे, किउं न करो प्रजु सार ॥ पु० ॥ २१ ॥ हरी चित
 चिंता आकरीरे, जाणी मदन जेवार ॥ कुमरी आ
 णी आपतारे, हरी हरपत तेवार ॥ पु० ॥ २२ ॥
 दुर्योधनने हरी कहेरे, परणो एही कुमार ॥ पुत्री स
 रखी माहरेरे, लघु आतानी नार ॥ पु० ॥ २३ ॥
 साजन मेलानी नलीरे, सत्याणुमीरे ढाल ॥ श्री

गुणसागरजी कहेरे, नमीए पुण्य त्रिकाल ॥ पु० ॥ २४ ॥
 चौपइ ॥ खंड खंड वाणीठे नवनवी. सुणतां मि
 ठी सांकर जेवी ॥ श्रीहरीवंश चरित्र जयजयो, चो
 थो खंड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्र
 वंधे हरीवंश विस्तारनामा चतुर्थो ऽधिकार समाप्तः ॥

॥ श्री हरीवंश वर्णन ढालसागर पंचमो खंड प्रारंभः ॥

दुहा ॥ आचारज इंद्रि दगे, आचारज ब्रह्मचारि
 ॥ आचारज आपे करे, क्रोधादीक परीहार ॥ १ ॥ आ
 चार्य व्रत आचरे, आचार्य आचार ॥ सुमती गुप्ती
 व्रत पालतां, आचार्य गुणसार ॥ २ ॥ आचार्य आ
 राधतां, आपे वाणी विलास ॥ अब पंचम अधीका
 रनो, पत्रणु पुण्य प्रकाश ॥ ३ ॥ कृष्ण कहे सची
 वा प्रत्ये, मदन कुमरको व्याह ॥ मांड्यो आरुंबर घ
 णे, करी घणो उजाह ॥ ४ ॥ खेचरपतीने खेचरी,
 बीलाव्यो तेहीवार ॥ साथ घणी कन्या तणे, रतीने
 लीधी लार ॥ ५ ॥ आया नगरी द्वारीकां, हरी बल अ
 ने कुमार ॥ साहमा जाइ साचवे, विनय तणो आ
 चार ॥ ६ ॥ रुखमणी खेचरणी मिली, मांहीमांही आ
 नंद ॥ बहीनी प्रसाद तुमारने, ए मुऊ घर आणंद
 ॥ ७ ॥ नूचरणीने खेचरी, देव कुमरी अवतार ॥ स
 रखी वए पचासवर, कन्या मेली उदार ॥ ८ ॥ सग

माने मारा लाल, बारमे स्वर्गे हो, देव विमाने ॥ मा० ॥
 ॥ एकदिन आवे हो, सीमंधर पास ॥ मा० ॥ विधी
 युत वते हो, मन उल्लासे ॥ मा० ॥ १ ॥ पूर्व जवतो
 हो सयल विचारो ॥ मा० ॥ पूढ्या जांखे हो जिनवर
 र सारो ॥ मा० ॥ पुनरपि पूढे हो बंधव माहरो ॥ मा० ॥
 तेहनो किहाठे हो शुभ अवतारो ॥ मा० ॥ २ ॥ तव जिन
 जांखे हो हरी घर सोहे ॥ मा० ॥ सुखमे होसे हो जन मन
 मोहे ॥ मा० ॥ मुऊने मेलो हो जाइशुं होशे ॥ मा० ॥ केत
 ही जांखे हो जिनवर जोशे ॥ मा० ॥ ३ ॥ सुण तुं सुरवर हो
 तुही पिण त्यांही ॥ मा० ॥ हरी घर नंदन हो थालो उवाहा
 ॥ मा० ॥ तव प्रणमीने हो जिनपद आवे ॥ मा० ॥
 हरी समीपे हो सुरवर आवे ॥ मा० ॥ ४ ॥ वान ज
 णावी हो सघली हरीने ॥ मा० ॥ हरीए मांजली हो
 हरख धरीने ॥ मा० ॥ हार सलुणो हो हरीने ॥ मा० ॥
 ॥ ५ ॥ तेम णीजासुर हो नामे प्रसीधो ॥ मा० ॥
 ॥ ५ ॥ विधीतव दाखी हो सुरवर जावे ॥ मा० ॥ ह
 री मन एहेवो हो वितक थावे ॥ मा० ॥ जो ज्ञानाने
 हो ए सुत आवे ॥ मा० ॥ मदन संघाते हो द्वेष मि
 टावे ॥ ६ ॥ ए मर्म हरीनो हो मदने लहीयो ॥ मा० ॥
 ॥ हारनो कारण हो मागुं कहीयो ॥ मा० ॥ अवर न
 चाहु हो नंद अनेरो ॥ मा० ॥ क्रोड सरीखो हो तुही
 जलेरो ॥ मा० ॥ ७ ॥ बाहु बलने हो राम सरीखो ॥ मा० ॥
 लक्ष्मण नीपम हो एह परीखो ॥ मा० ॥ एही माता

एहो एकज जाया ॥ मा० ॥ सिंह सरीखा हो तेज
 सवाया ॥ मा० ॥ ८ ॥ जंबुवती गेहे हो काम कुमारो
 ॥ मा० ॥ जइने दाखे हो हार विचारो ॥ मा० ॥ हरी
 जो आपेहो हार सनूरो ॥ मा० ॥ तो तुम पामो हो
 कुमर सूरु ॥ मा० ॥ ९ ॥ सत्यजामानो हो रुप करी
 ने ॥ मा० ॥ आवी जंबुवती हो पास हरीने ॥ ना० ॥
 वसत रमवा हो वनमे आया ॥ ना० ॥ हार देइनेहो
 बहु सुख पाया ॥ मा० ॥ १० ॥ शिख लेइ राणी हो
 निज पर आइ ॥ मा० ॥ बेरी केरोहो वास दुखदाइ
 ॥ मा० ॥ गाफील खावे हो मार ए जावो ॥ मा० ॥
 जामानी परे हो लहे पठतावो ॥ मा० ॥ ११ ॥ पद्म
 प्रतापे हो इम सुख थावे ॥ मा० ॥ सपरख्यो वायस
 हो फल उंच पावे ॥ मा० ॥ निपखो माणस हो घणुं
 शीदाय ॥ मा० ॥ सिंह सरीखो हो फल नही पाय
 ॥ मा० ॥ १२ ॥ आश धरीने हो हिवे सतजामा ॥ मा०
 ॥ हरी समीपे हो आवी शामा ॥ मा० ॥ पिण अण
 सरज्यो हो पामे किहांशुं ॥ मा० ॥ ऊलफल किजे हो
 पुण्यविनाशुं ॥ मा० ॥ १३ ॥ लुणी लेइ गइ हो प्रथम
 नारी ॥ मा० ॥ पेटनर पिवो हो तकज सारी ॥ मा०
 ॥ दैव संघाते हो जोर न चाले ॥ मा० ॥ एहवी वा
 तज हो हरी मन साले ॥ मा० ॥ १४ ॥ हार अनेरो
 हो हरीए आणी ॥ मा० ॥ दिए जामाने हो हरखी
 राणी ॥ मा० ॥ जंबुवती उरे हो सो देव आयो ॥ मा० ॥

नामाराणी हो अन्य ते पायो ॥ मा० ॥ १५ ॥ शु
 च तीथी वारे हो कुमर जायो ॥ मा० ॥ जंबुवतीने हो
 हरख सवायो ॥ मा० ॥ रूपे दिपे हो जोगपुरंदर ॥
 ॥ मा० ॥ लक्षणे शोने हो सर्व सुहंकर ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ तिणही वेला हो तिणही गामे ॥ मा० ॥
 सारथीने घरे हो पदम नामे ॥ मा० ॥ मंत्रिनी नारी
 हो तेणे पिण जायो ॥ मा० ॥ बुद्धिसेन नामे हो सु
 त सुहायो ॥ मा० ॥ १७ ॥ सेनापती हरीनो हो त
 सघर पुतर ॥ मा० ॥ जनम्यो जयसेन हो नामे उ
 तर ॥ मा० ॥ ए च्यारे कुमर हो निका कहीए ॥ मा०
 ॥ एक समाना हो जनम्या लहीए ॥ मा० ॥ १८ ॥
 वधान आवे हो हरीने आगे ॥ मा० ॥ दानज आ
 पे हो तेहने रागे ॥ मा० ॥ घर घर मंगल हो सो
 हव गावे ॥ मा० ॥ सांव कुमरजी हो नाम सुहावे ॥
 ॥ मा० ॥ १९ ॥ नामा जायो हो कुमर जीरु ॥ मा०
 ॥ नामे सुजानु हो अधिक अधीरु ॥ मा० ॥ दोइ
 घर थावे हो महोत्तव हेजे ॥ मा० ॥ दिन दिन चंद
 ज्युं हो चडता तेजे ॥ मा० ॥ २० ॥ सांव सुजानु
 हो जनम वखाण्यां ॥ मा० ॥ जाइ जाइसुं हो प्रेम
 प्रमाण्या ॥ मा० ॥ कहे गुणसागर हो श्रोता सुणजो
 ॥ मा० ॥ ढाल नवाणुमी हो वचने थुणजो ॥ मा० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ रूप कला गुण आगला, चंद वर्षा शुच
 नयन ॥ कुमर दोइ देखता, लोक लहे अति चयन ॥

॥ १ ॥ यादव नारी कर कमल, कुंवर जमर सुजाण
 ॥ केलि करे मन जावती, प्यारा प्राण समान ॥ २ ॥
 वारु वसन विराजता, वारु नूपण धार ॥ वारु चाल
 मरालनी, वारु सुख दातार ॥ ३ ॥ सांब पढायो रतिपति,
 तिमहि जानु सुजानु ॥ परम मनोहर गुण नीला, लाल
 न लीला थानुं ॥ ४ ॥

ढाल १०० मी ॥ पांचमी वाडे परमेसरु, वखाणी
 वारु ॥ ए देशी ॥ लालन लीला थान. बोले आढे ब
 चन ॥ माननी मन मोहवा, मोहनी तो अचन ॥ १ ॥
 हमारे लालनां, लिलावंत कुमार ॥ जांबुवति नामा
 जणे, प्यारे प्राण आधार ॥ २ ॥ खेलंता अती खांत
 सुं, मित्राके परीवार ॥ परखदा मांहे आविया, करण
 तात जुहार ॥ ३ ॥ सांब वेठो काम पे, जानु पे सुजानु ॥
 रुपे रंजे राजवी, सोहाके निधानुं ॥ ४ ॥ जूवे ख्याल
 हो वही, पांडवा बलदेव ॥ कुंवर दोय खेलाववा, मां
 डीया ततखेव ॥ ५ ॥ कोडी कंचन हारीयो, ताम सु
 जानु कुमार ॥ पहीली जीत सांबकी, मदन केरे उप
 कार ॥ ६ ॥ कुकड युद्धे जितीयो, कंचन कोडी दोय
 ॥ ज्याकी पुंठे कामवे, जाती क्युं नवी होय ॥ ७ ॥ सु
 वर्ण सर्व तामही, काम दियो वाटी ॥ जूवा मीठी हा
 रहे, आपे लुटे आठी ॥ ८ ॥ च्यार कोकी हेमनी, जी
 तीयो फल हीड ॥ वार नाही देतही, काम दोय को
 डी ॥ ९ ॥ आठ कोडी वरतुरे, हारे हारी सोल ॥ ति

जानुथी कटी जइ अडरे, नाणे कोइ गुमानरे ॥ सा०
 ॥ २ ॥ केरि थकी हियडे चढिरे, हियडाथी गले जामरे ॥
 परम, महा दुख आवहीरे, अकुलाइ जन तामरे ॥ सा०
 ॥ ३ ॥ मुलाजा मोटा तणारे, तोहि न लोड्या जातरे ॥
 ॥ नाके चढ्यो दुख दुःसमोरे, लोक तदा विल लातरे ॥
 ॥ सा० ॥ ४ ॥ वारु नखे जो काकडीरे, बोलावा लुटत
 रे ॥ कुण आगे पूकारीएरे. माता गोरु कुंटतरे ॥ सा०
 ॥ ५ ॥ पीहरीयो परजा तणोरे, राजाजीनो नामोरे ॥
 आप अन्याय जो आचरेरे, केम वसे ते गामोरे ॥
 सा० ॥ ६ ॥ प्रचुजी तो जाखी घणीरे, सा ने पति जे
 एकरे ॥ बालिक वाला बाजलारे, एक सरीखी टेकरे ॥
 सा० ॥ ७ ॥ सुंदरीने समजाववारे, साम करे उपायरे
 ॥ पूरवलि मन सांजलिरे, घावक जाणे घायरे ॥ सा०
 ॥ ८ ॥ जांबुवति आहिरणीरे, आपण हरी आहिररे ॥
 दहि वेचणने आवीयारे, खेले जिहां कुंवर धीररे ॥ सा०
 ॥ ९ ॥ सामा वरसां सोलनिरे, सामी वरस सो दाखरे
 ॥ सामा रुपे रुअडीरे, देखी करे अजीलापरे ॥ सा०
 ॥ १० ॥ मांस अहारा लंपटारे, सरीखो होइ सजावरे ॥
 उमासे उ रुपसुरे, राखे चितनो चावरे ॥ सा० ॥ ११ ॥
 सांब कहे आहिरणीरे, आपण उरहि आवरे ॥ वेचाउ
 महि ताहरोरे, अधीको लाज अपाररे ॥ सा० ॥ १२ ॥
 कंत कहे कुंवर सुणोरे आगे कोइ न कामरे ॥ लाजे
 धाया वापजीरे, आज रहे जो मामरे ॥ सा० ॥ १३ ॥

लाते मारयो तव डोकरोरे, साहि बाला हाथरे ॥ खा
 चि चाल्यो जितरेरे, प्रगट थयो जग नाथरे ॥ सा० ॥
 ॥ १४ ॥ पापी टल्य माता थकिरे, एम कही हरी रा
 थरे ॥ जांबुवति प्रगट करीरे, ज्ञांजी गयो धरी लाजरे
 ॥ सा० ॥ १५ ॥ हरीणाक्षीसुं हरी कहेरे, दिठा सुतना
 कामरे ॥ माता मयंगल मारणोरे, हरी सामीनी अची
 रामरे ॥ सा० ॥ १६ ॥ जे न टले संबंधथीरे, अवरं
 केम टलंतरे ॥ अचख नखे जे मानविरे, ते क्युं नख
 न नखंतरे ॥ सा० ॥ १७ ॥ हाथ ठुरीने लाकरीरे, वु
 टी घमृतो आपरे ॥ आयो परखदामे चलिरे, पुठे श्रीह
 री बापरे ॥ सा० ॥ १८ ॥ कुंवर एशुं किजीएरे, प्रजु
 ए खुटी थायरे ॥ वात कहेजे कालनीरे, ए तस मुहमें
 देवायरे ॥ सा० ॥ १९ ॥ रे रे ध्रीठ शिरोमणीरे, रे रे
 कर्म कुपातरे ॥ करणी कहेणी ताहरीरे, सारखी देखां
 तरे ॥ सा० ॥ २० ॥ देश निकालो कियोरे, जाजे अ
 लगो अपाररे ॥ क्रोधे पूरयो कान्हजी, न करे सोच
 लिगाररे ॥ सा० ॥ २१ ॥ राजा एहवा चाहीएरे, न्या
 य धर्म प्रतिपालरे ॥ वेटा उपर वाहणीरे, खेमावे नू
 पालरे ॥ सा० ॥ २२ ॥ काम कहे सुण तातजीरे, ए
 मुज वाइलो विररे ॥ कदिए आवे पगे लागवारे, सा
 हसवंत सधीररे ॥ सा० ॥ २३ ॥ केशव कोप वशे क
 हेरे, जानु कुमरनी मायरे ॥ वेसाडी नल हाथणीरे,
 लावे तवही अवायरे ॥ सा० ॥ २४ ॥ चमते पाणी पे

सवारे, ताम समे अरदासरे ॥ उखध आदी तावनरे,
 ए तिनु विपनाशरे ॥ सा० ॥ २५ ॥ विडोही तव पा
 ननोरे, लेइ चाल्यो सोइरे ॥ अति ताणयो त्रुटे सहीरे,
 अति मथ्यो विख होइरे ॥ सा० ॥ २६ ॥ पग प्रणमी
 जणणी तणारे, नामा वनमां जायरे ॥ विद्याने बले वा
 हलोरे, कन्या रूप करायरे ॥ सा० ॥ २७ ॥ वारु वेश
 विराजतिरे, जोवनवंति नाररे ॥ रूप कला गुण आंग
 लिरे, दिसंती जाक जमालरे ॥ सा० ॥ २८ ॥ एकोत
 र सोमी ढालमेरे, सांव कुंवरभुं रोसरे ॥ श्री गुणसा
 गर सूरिजीरे, उसन चरि ए कासरे ॥ सा० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ नामा आवी वागमें, देखी कन्या रूप ॥
 मोर्ही मनमें माननी, पूढे सकल सरूप ॥ १ ॥ ए वन
 मांहे एकली, कांइ फिरे सुकुमाल ॥ देखाती सुंदर म
 हा, वलतो उत्तर वाल ॥ २ ॥

ढाल १०२ मी ॥ हरीयामन लागो ॥ ए देशी ॥
 नामा ठग लागो, ठग लागो ठगवा जणी ॥ तोहि
 चरम न जांगोहो ॥ जा० ॥ १ ॥ साधु केवल वाटडी,
 ठगने वाट पचास हो ॥ जा० ॥ उ रोकवे शेरडी, उफा
 डे आकाश हो ॥ जा० ॥ २ ॥ उघाडो तनु साधुनो,
 मुलतानी तीर हो ॥ जा० ॥ जालवी सवीए केट
 लां, नांखे विंधी शरीर हो ॥ जा० ॥ ३ ॥ ठगड दे
 हि आकरी, साधु कहावे काठ हो ॥ जा० ॥ मांही
 ही फोले घणुं, ए जग प्रगट्यो पाठ हो ॥ जा० ॥ ४ ॥

विठुनो विष पुंढे, अहि विष दाढे जोय हो ॥ जा०
 ॥ ठगनो विष हियके वसे, चतुर विचारो कोइहो ॥ जा०
 ॥ ५ ॥ ठग मुखे मीठा सही, मांहि अधीक कठोर हो
 ॥ जा० ॥ पंक्तिजननो पारीखो, जेइवो पाको बोर हो
 ॥ जा० ॥ ६ ॥ कोटी प्रकारे ठग तणी, न मीटे सहज
 सनाव हो ॥ जा० ॥ आंवा जांवु उपरे, राता मांहि क
 साव हो ॥ जा० ॥ ७ ॥ कुमरी जणे जामा जणी, वारु व
 चन विशाल हो ॥ जा० ॥ हुं पुत्री राजा तणी, बाधी ज
 इ मोसाल हो ॥ जा० ॥ ८ ॥ व्याह जोग जाणी करी,
 बाप हमारो आय हो ॥ जा० ॥ बेसारी सुखपालमें,
 लेइ चाल्या माय हो ॥ जा० ॥ ९ ॥ आवी वस्थो ए
 वागमे, सुता सघला लोक हो ॥ जा० ॥ मुऊने नावे
 निंदनी, मामी तणो वियोग हो ॥ जा० ॥ १० ॥ हुं
 तव हेठी उतरी, दूर रह्यो सुखपाल हो ॥ जा० ॥ प्रो
 हर पाठे सोवती, ठोडी गयो नृपाल हो ॥ जा० ॥ ११ ॥
 जागी जोयुं दहदिसे, चाली गयो ते साथ हो ॥ जा०
 ॥ युथ भ्रष्ट जिम हरणली, फिरती फिरुं अनाथ हो
 ॥ जा० ॥ १२ ॥ जो तुं पुत्र सुनानुसुं, पुत्री वंढे
 व्याह हो ॥ जा० ॥ घर पधरावजे माहरे, आणी अ
 ति उवाह हो ॥ जा० ॥ १३ ॥ सा जांखे सुण स्वासी
 नी, उखाणो जगमांहीहो ॥ जा० ॥ मुरांकां मिठा नही,
 लापशीयांथी प्रांही हो ॥ जा० ॥ १४ ॥ हरी सुत
 जायो ताहरो, थाए मुऊ जरथार हो ॥ जा० ॥ तो तो

तुठो जाणीए, आपणपे किरतार हो ॥ जा० ॥ १५ ॥
 वरण विचारयो दूधनो, सघलो धोलो होय हो ॥ जा०
 ॥ आक अने सुरजी तणो, अंतर न कियो कोयहो
 ॥ जा० ॥ १६ ॥ न करी एह विच्यारणा, नही घरें
 जोगी जात हो ॥ जा० ॥ मुसो घाल्या पाखमें, हंस नी
 पखो थात हो ॥ जा० ॥ १७ ॥ सिंह प्रते जंबुक कहे,
 कानहयो होइ हो ॥ जा० ॥ केम फिरी खर आवही, ते
 म ए नामा जोइ हो ॥ जा० ॥ १८ ॥ आप चढी वर
 हाथणी, आगे साब बेसार हो जा० ॥ लेइ आवी
 निज घरे, माटीपणो अवधार हो ॥ जा० ॥ १९ ॥
 न्हावण धोवण नोजने, आसन शयन विचार हो
 ॥ जा० ॥ ससुखा अति साचवे, स्वार्थीयो संसार हो
 ॥ जा० ॥ २० ॥ समय विच्यारे आपणो, सयण स
 याणा जेह हो ॥ जा० ॥ श्री हरीचंद्र नरिंद्र ज्युं, मर
 द कहावे तेह हो ॥ जा० ॥ २१ ॥ विमो तेरसोमी
 ढालमें, नामा सांव कुमार हो ॥ जा० ॥ श्री गुणसा
 गर सूरिजी, करे विनोद अपार हो ॥ जा० ॥ २२ ॥
 दुहा ॥ श्रीवसंत ऋतुराजीयो, आयो करीय मंडाण
 ॥ कामदेवनो मीत्र ए, वरतावे जग आण ॥ १ ॥ मो
 रा आंवा अति जला, केसु कुसम सम वान ॥ मधु
 कर गुंजारव करे, कोइल शब्द प्रधान ॥ २ ॥ मलि
 याचलना वायरा, वाजे अति सुखकार ॥ दुखियाने
 दुखदायकु, सुखिया सुख दातार ॥ ३ ॥

ढाल १०३ मी ॥ कंत तमाकु परिहरो, ए देशी ॥
 कुमर सुजानु जाणीए, खेलण काज वसंत ॥ मोरा ला
 ल ॥ साये मित्र मनोहरु, वनमें जाइ रमंत ॥ मो० ॥
 ॥ १ ॥ कुमर सुजानु जाणीए ॥ ए आंकणी ॥ हिंसो
 ले अति हिंचती, गाती गीत सुधग ॥ मो० ॥ नारी
 नीरोपम निरखतां, उपज्यो अंग अनंग ॥ मो० ॥
 ॥ कु० ॥ २ ॥ चुह कमाने संधीया, तिखां लोचन
 वाण ॥ मो० ॥ नारी आहिडे नीकली, नाखे विधी प्रा
 ण ॥ मो० ॥ कु० ॥ ३ ॥ महियलरुपे मांडीयो, मोहनी
 मोटो फंद ॥ मो० ॥ कामी मृग आवी पडे, थाई गति
 मतिमंद ॥ मो० ॥ कु० ॥ ४ ॥ दाढ गलावे आवली, ला
 ख गलावे आग ॥ मो० ॥ शिल गलावे सुंदरी, रागी
 राचे राग ॥ मो० ॥ कु० ॥ ५ ॥ मुरठाणो धरणी प
 छ्यो, मंत्री करी उपचार ॥ मो० ॥ उठाइ घर आणी
 यो, माता ते जाणी विच्यार ॥ मो० ॥ कु० ॥ ६ ॥
 कन्या मेली निनाणु ए, सामी ए धुर आण ॥ मो० ॥
 जामा कुमर सुजानुनो, व्याह तशी विधी ठाण ॥
 ॥ मो० ॥ कु० ॥ ७ ॥ नाखे कुमरी मूलगी, जामासुं आण
 द ॥ मो० ॥ करशुं कर कर उपरे, तो वरशुं तुज नंद ॥ मो०
 ॥ कु० ॥ ८ ॥ वाला वात विशेषी, नाखे जामा सा
 थ ॥ मो० ॥ मूऊ परणवे परणी सहु, परणेवि नहीना
 थ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ९ ॥ जामा मान्या बोलना, स्यो
 बहुलो विस्तार ॥ मो० ॥ नारी कही पण पानही, पुरुष

कह्या शिरदार ॥ मो० ॥ कु० ॥ १० ॥ चोरी मांही
 साहीयो, वरनो दक्षण हाथ ॥ मो० ॥ वासां करशुं दा
 बीयो, देखे सघळो साथ ॥ मो० ॥ कु० ॥ ११ ॥ क
 न्या निनाणुं तणी, दक्षण करशुं खाण ॥ मो० ॥ साही
 ने विधी साचवी, ते सघली वश आण ॥ मो० ॥
 ॥ कु० ॥ १२ ॥ शयन घरे श्री सांबजी, भृकुटी चो
 हडी कपाल ॥ मो० ॥ विहाव्यो कुंवर खरो, नाशी गयो
 ततकाल ॥ मो० ॥ कु० ॥ १३ ॥ सांसन्नरघो आयो
 सहि, नामा जननी पास ॥ मो० ॥ कंठ लगाई पूगी
 यो, जाणी अधीको त्रास ॥ मो० ॥ कु० ॥ १४ ॥ मुज
 ने मारे मायजी, जाइ सांब सनूर ॥ मो० ॥ सांब कीहारे
 डरपणो, आवी चाली हजूर ॥ मो० ॥ कु० ॥ १५ ॥
 पगे लागी उजो रह्यो, कडुआणा अति नयण ॥ मो० ॥
 अकुलाणी आतुर थइ, बोले काठा वयण ॥ मो० ॥
 ॥ कु० ॥ १६ ॥ धूरत धीठ शिरोमणी, जिहां तिहां दुखदा
 य ॥ मो० ॥ क्यु आयो अण तेडीयो, नामा नूरक खाय
 ॥ मो० ॥ कु० ॥ १७ ॥ सांब कहे तें आणीयो, स
 कल लोकनी साख ॥ मो० ॥ बेसारी वड हाथणी, मा
 ता फूट मतनाख ॥ मो० ॥ कु० ॥ १८ ॥ जणे सुनामा
 कामनी, होइ खीसाणी आप ॥ मो० ॥ हाथ कमाया
 कामनो, सोचनको संताप ॥ मो० ॥ कु० ॥ १९ ॥ ठग
 माता ठगतातजी, जाइपिण ठग जास ॥ मो० ॥ आप
 ठगारो, जगतनो हुं कीम पहुंचुं तास ॥ मो० ॥ कु० ॥ २० ॥

हेमागद पुत्री जली. सूहीरणी तस नाम ॥ मो० ॥
 एवं सांब कुमर घरे. रमणी शत अचिराम ॥ मो०
 कु० ॥ २१ ॥ चरणकमल निजतातनां, प्रणमी जाखे
 वात ॥ मो० ॥ कामकला सुविचारतां, हरी हांसो न स
 मात ॥ मो० ॥ कु० ॥ २२ ॥ कन्या सोहि सुचानुने, प
 रणावी सुखकार ॥ मो० ॥ मनमान्या सुख जोगवे, सांब
 सुचानु कुमार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २३ ॥ सांब कहे वसुदे
 वसुं, बाबाजी अवधार ॥ मो० ॥ थें परदेशां आथमी,
 पामी नारसु नार ॥ मो० ॥ कु० ॥ २४ ॥ सब विध सुं
 दर सुंदरी, घर बेठाही देख ॥ मो० ॥ तात प्रसाद तु
 ह्यारडे, में पामी सुविशेष ॥ मो० ॥ कु० ॥ २५ ॥ बेटा
 जी तुह्य तो वजा, जोता सब परिवार ॥ मो० ॥ तुम
 सम अवर न उपनो, ह्यारा वंश मजार ॥ मो० ॥ कु०
 ॥ २६ ॥ तिमोत्तर सोमी ढालमें, जावुवंति उच्चाह ॥ मो०
 ॥ श्री गुणसागरजी कहे, होवे मदन विदरची व्याह
 ॥ मो० ॥ कु० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ एक दिवस चिंता वसी, रुखमणीने मन
 एह ॥ विदरची कुमरी जली, रुप कला गुण रेह ॥
 ॥ १ ॥ जो घर आवे कामने, तो पूगे मन आश ॥
 सहि करी जाणुं सखी, पूरो पुण्य प्रकाश ॥ २ ॥
 ढाल १०४ मी ॥ आज जलो दिन माहरो ॥ ए देशी
 ॥ विदरचीसुं मन वरघो, जूया जलेरो जाव हो ला
 ल ॥ वहु करवाने कारणे, चित्तने लाग्यो चाव हो ॥

ला० ॥ वि० ॥ १ ॥ दूत अनोपम मोकल्यो, रुकमीया
 राजा पास हो ॥ ला० ॥ पुत्री दे मुऊ पुत्रने, धुर आ
 शीष प्रकाश हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ २ ॥ रुकमीयो रीसे
 रातडो, बोले अति अविचार हो ॥ ला० ॥ आगे अ
 मरख अति घणो, मारो ठे हरी कार हो ॥ ला० ॥
 वि० ॥ ३ ॥ ए कुमरी उत्तम खरी, वहिन कुमर घटि
 वंस हो ॥ ला० ॥ जो वर वर लहेशे नहीं, अण पर
 एया परसंस हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ४ ॥ हरी धरथी चं
 डालने, घरे दिधां अति सोह हो ॥ ला० ॥ नाते घा
 ठां जेहने, उपावे अंदोह हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ५ ॥
 दूत तणे मुख सांजली, ए अविचारी वात हो ॥ ला० ॥
 पिठतावो करती घणो, दुचिंती रुखमणी मात हो ॥
 ला० ॥ वि० ॥ ६ ॥ मर्म लहि माता तणो, कामने सों
 व कुमार हो ॥ ला० ॥ रुप करी चंडालनो, कुंरुनपर
 आवत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ७ ॥ रुप कला करी सो
 हतो, गावे गीत रसाल हो ॥ ला० ॥ विण रखाव उ
 पांगसुं, वाजे मांदल ताल हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ ८ ॥
 सुर गायननी उपमा, जेद संगीतनो जाण हो ॥ ला० ॥
 ॥ स्वर मंडलसुं साचवे, राग तणा मंडाण हो ॥ ला० ॥
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ ग्राम तिन स्वर सातसुं, मुर्बना एकवि
 स हो ॥ ला० ॥ गुणपचासा तानसुं, जाणपणाना इ
 श हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १० ॥ रुप तिहां गुण नवि
 हुवे, सुगुण तिहां नहि रुप हो ॥ ला० ॥ रुप अने

एण एकठां, पूरव पुण्य अनुप हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
 ११ ॥ मोह्यां राणा राजीयां, मोह्या वाल गोपाल
 ॥ ला० ॥ मोहि रमणि अती घणी, खग मृग अति सु
 लास हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १२ ॥ गगन गति सुर
 नवी, थंजी आप विमान हो ॥ ला० ॥ नाद सुणेवा
 ळरणे, मोहि रह्यां धरी ध्यान हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
 १३ ॥ नादे मोह्या हरणाला, प्राण तजे ततकाल हो
 ला० ॥ साप ढिढर माहि पडे, सहिरो लघु लाल हो
 ला० ॥ वि० ॥ १४ ॥ नादे स्वर गइयो, स्वांग विरुप
 रंत हो ॥ ला० ॥ नारी आगे नाचियो, थेइ थेइ थेइ
 रंत हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १५ ॥ राधावलन राचियो,
 जग मांहि अचन हो ॥ ला० ॥ राणी रुखमणी
 प्रागले, कीधो नाटारंज हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १६ ॥
 नादे ब्रह्मा चउमुखो, रस मोखरनो मुहहो ॥ ला० ॥
 गेदि नास्यो नारदे ॥ देइ तिखा नुह हो ॥ ला० ॥ वि० ॥
 १७ ॥ वेद थकी ए पंचमो, नाद कह्यो उपवेद हो
 ला० ॥ प्रिती उपावण सादरो, नाद रहे सर्व देख हो
 ला० ॥ वि० ॥ १८ ॥ दुखीयाना दुख अपहरे, सु
 खीयाने सुखकार हो ॥ ला० ॥ श्रवण ऋदय हारी ख
 रो, मनमथ दूत उदार हो ॥ ला० ॥ वि० ॥ १९ ॥ ना
 री जननो वाल हो, नाद निरोपम नाम हो ॥ ला० ॥
 चतुरा चित्तनो पारीखो, नाद महा अजिराम हो ॥
 ला० ॥ वि० ॥ २० ॥ विदरजी नृप कुवरी, बेठी राजा

मारघा भाय रीसाय हो ॥ला०वि०॥ ४० ॥ चत्रोतर
सोमी ढालमें, वैदरजीनी प्रेम हो ॥ला० ॥ गुणसागर
परजुनसुं, नंग जडाणो हेम हो ॥ला० ॥वि० ॥ ४१ ॥

दुहा ॥ मदन गयो मंदिर चली, निशजर सोवे सोय
॥ निंद गइ प्रनु निरखतां, मन रलीयायत होय ॥ १ ॥
लेख लेखी सुविशेषथी, दिधो कुमरे जाम ॥ रुखम
णी नामे वांचतां, पामी अचरिज ताम ॥ २ ॥ पूठे प
दमनी प्रेमशुं, देव प्रकाशो नाम ॥ थारा मननो जा
वतो, हुंतुं कुमर काम ॥ ३ ॥

ढाल १०५ मी ॥ हंसलानी देशी ॥ जाग्य वडो
प्रनु पाइयो ॥ एटेर ॥ ए वरहे श्री काम कुमारके, पु
रंदरहे केरो अवतारके ॥ हुंतुं हे वरुवखती नारके, प्र
संशाहे लेशुं संसारके ॥ जा० ॥ १ ॥ जे मन मा
ने आपणो, करवोहे सोइ जरतारके ॥ नारी जमारो
नाहशुं, जरवोहे ए जग व्यवहारके ॥ जा० ॥ २ ॥ पि
तांबर पहिरयो जलो, कंकणहे बांध्यो वर हाथके ॥ वे
ला साधी वेगशुं, कुंवर रहे कुंवरीने साथके ॥ जा०
॥ ३ ॥ आरण कारण साचवी, तव किधो हे विवाह
उल्हासके ॥ रात बशी उठी गयो, आयो हे बंधवनी
पासके ॥ जा० ॥ ४ ॥ पश्चिम राते सोवती, कुम
री हे निद्रावश थायके ॥ दिन उग्यां आवे सही, दा
तप हे लेइने धायके ॥ जा० ॥ ५ ॥ दिठी कुमरी
निदमें, कंकण हे बांध्यो सुविशेषके ॥ कोरी सामी पहे

रणे, ए नीको हे परणेतरे वेसके ॥ जा० ॥ ६ ॥ सां
 स नरी पाठी वली, लावी हे राणीने रायके ॥ परत
 क चरीत्र देखावतां, आपणपेहे उशींगण थायके ॥
 जा० ॥ ७ ॥ रायनणे राणी सुणो, ए कारीज हे विपरी
 त जोयके ॥ कुलने लंठन लावीयो, ए बेटी हे नही वे
 रण होयके ॥ जा० ॥ ८ ॥ जलहर जग जीवाडणो, जा
 इ हे विद्युत गुण खाणके ॥ वंसदेव तस मांही ए, उ
 पजी हे विपवेली आणके ॥ जा० ॥ ९ ॥ हुं चूक्यो वा
 चा सही, पापणी हे पुत्रीने हेतके ॥ हिवे उरण थाय
 सुं, एहने हो डुंवमाने देतके ॥ जा० ॥ १० ॥ फाटो
 दुध न राखणो, विणठो हे माणसनों त्यागके ॥ करवो
 ठे सुण सुंदरी, सगपण हे करवो नहि लागके ॥ जा०
 ॥ ११ ॥ अंगुठो सापे मस्यो, ठेदे हे शाणा नर जेह
 के ॥ राख्यो खोवे देहने, तेहवी हे कुमरी ठेहके ॥ जा०
 ॥ १२ ॥ राजा तेझी मांगणे, दिधी हे कुमरी तेहि वा
 रके ॥ पाले वाचा आपणी, न कीयो हे नृप सोव ली
 गार के ॥ जा० ॥ १३ ॥ खरी ए आपी रीस वसे, जे
 शीर हे आवंत कलंकके ॥ सतवति सीता सती, रघु
 पती हे सा तजीय निशंकके ॥ जा० ॥ १४ ॥ डुंव क
 हे हुं न्युं करु, नरवि हे हमहिने नेठके ॥ राजसुता सु
 क मालिका, करवी हे एहनी अती वेठके ॥ जा० ॥
 ॥ १५ ॥ लोकोमें अवहेलणा, मनमे हे तस हरख अपा
 रके ॥ मन मान्यो पति पाइयो, लोटे हो लाने संसारके

॥ जा० ॥ १६ ॥ सांब कहे सुण जाइजी, आपणपेहे दे
 खावा आजके ॥ देव चुवन समरावियो, निंद्या हे सारे
 सब काजके ॥ जा० ॥ १७ ॥ धों धों मांदल वाजहि,
 नाचे हे तिहां पात्र अनेकके ॥ मंगल गावे गोरडी, वरते
 हे विवाह तरा अनेकके ॥ जा० ॥ १८ ॥ रोस गयो राजा
 तणो, किजे हे पठतावो एम के ॥ ढाढीने गाढी करी,
 दिजे हे विद्वरजी केमके ॥ जा० ॥ १९ ॥ आंत तप
 अती आकरी, गाढी हे मनमांही कुचयनके ॥ अग्नी
 तणा संजोगथी, जाठी हे जीम चुबे नयनके ॥ जा०
 ॥ २० ॥ मावीता ठोरु तणा, अवगुण हे सासेवा प्रां
 हिके ॥ कुमारीका सुत जाइयो, कुंति हे नृप काढी नाहि
 के ॥ जा० ॥ २१ ॥ काठ जल बोले नहि, आपण हे
 उपायो जाणके ॥ वनवानल जल वालणो, सायर हो
 न उल्हावे प्राणके ॥ जा० ॥ २२ ॥ क्रोध वसे सुऊ आं
 धलो, कीधो हे कार्य विपरीतके ॥ न कुच वातने कारणे,
 तोषी हे पुत्रि स्युं श्रीतके ॥ जा० ॥ २३ ॥ सोइ दान
 श्रवणे सुणी, चमकियो हे रुकमीयो रायके ॥ खबर क
 री जणाविथा, एतो कोइ हे हरी सुत कहिवाय के ॥
 जा० ॥ २४ ॥ बूटी चाले आवियो, मिलिया हे जाणे
 जां धायके ॥ हेज हिए न समावहिं, लीधो हे कंठ ल
 गायके ॥ जा० ॥ २५ ॥ काम सांब कुमर चला, आ
 ण्या हे निज घर उठाह के ॥ आनंद रंग वधामणां,
 सासु हे मन उपज्यो उगहके ॥ जा० ॥ २६ ॥ दिधो

अधीको दायजो, दिधां हो साथे परीवारके ॥ देइ द
 ढामां जीतनां, चाल्यो हे श्री काम तिणवारके ॥ चा०
 ॥ २७ ॥ आव्यां नगरी द्वारिकां, हरख्यो हे श्री कृष्ण
 नरेजके ॥ हरखी माता रुखमणी, हरख्यो हे परीवार
 अशेषके ॥ चा० ॥ २८ ॥ जे जे चिंत्या बोलमा, ते तेहे
 चडीया परीमाणके ॥ बहुअर सासुप्रीतडी, माने हे सु
 ख भेरु समानके ॥ चा० ॥ २९ ॥ सांवअने परजुनजी,
 तनसु हे जुदा मन एकके ॥ जोडी नल कुबेर तणी,
 राखे हे हठ न तजे टेकके ॥ चा० ॥ ३० ॥ अनिरुद्धादिक
 कामने, नंदन हे गुणवंता सोइके ॥ तस संख्या सुत
 सबने, साखा हे विस्तरती जायके ॥ चा० ॥ ३१ ॥ पच
 मोत्तर सोमी ढालमे, वैदरजी हे केशो विवाहके ॥ श्री गुण
 सागर सूरिजी, लिजे हे शुन कर्मा लाहके ॥ चा० ॥ ३२ ॥
 चौपइ ॥ खंड खंड रसठे नव नवा, सुणतां मीठा ले
 लमीरस जेवा ॥ श्री हरीवश चरित्र जय जयो, पंचम
 खंड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढालसागर प्रबंधे हरी
 वश विरतार नामा पांचगो खंड समाप्तः ॥

॥ अथश्री ढालसागर प्रबंध हरीवंस वर्णन ॥

॥ ठडो खंड प्रारंभ ॥

दुहा ॥ गुण पणविसे परीया, सुंदरने सुकुमाल ॥
 एहवा उपाध्याय तणां, प्रणमी चरण त्रिकाल ॥ १ ॥
 वर ठठा अधीकारनो, विस्तरिये विस्तार ॥ पंचालि

प्रगाटि खरी, सती शिरोमणी सार ॥ २ ॥ ठो ज्ञा
 ता अंग ठे, तिहां ठे बहु विस्तार ॥ चारूयो वीर जि
 णंदजी, गणधर सजा मजार ॥ ३ ॥ नागसीरी हुति
 ब्राह्मणी, कडवो तुंबो दिध ॥ मास खमएने पारणे, मु
 निवर हत्या लीध ॥ ४ ॥ करतां करमज सोहिलां, नो
 गवतां जंजाल ॥ नागसीरी जीम मति करो, फोगट
 पातिक जाल ॥ ५ ॥ जमती चूर जवंतरे, चंपा नगरी
 तेह ॥ जद्रा उरे उपनी, सागरदत्तने गेह ॥ ६ ॥

ढाल १०६ मी ॥ जीहो मथुरा नगरीनो राजीयो ॥
 ए देशी ॥ जीहो नरकादिक दुख जोगवि ॥ लाला० ॥
 परवश कर कर रीव ॥ जीहो जद्रा घर आवी अवतस्थो
 ॥ ला० ॥ नागसीरीनो जीव ॥ १ ॥ चतुर नर जो जो
 कर्म विपाक ॥ ए आंकणी ॥ जीहो करम करे सो रा
 क ॥ च० ॥ १ ॥ जीहो अनुक्रमे जाइ दारीका ॥ ला०
 ॥ सुंदर रूप रसाल ॥ जीहो जणी गुणी चोसट कला
 ॥ ला० ॥ चाले राज मराल ॥ च० ॥ जो० ॥ २ ॥ जी
 हो वेपारी विजो वसे ॥ ला० ॥ तिहां वली जिणदत्त
 शेठ, जिहो धनपती सघलाठे घणां ॥ ला० ॥ सघला
 जेहने हेठ ॥ च० ॥ जो० ॥ ३ ॥ जीहो तस घर घर
 णी जली ॥ ला० ॥ सागर नामे पुत्त, जीहो रुपवंत स
 हुने गमे ॥ ला० ॥ राखे घरनो सुत ॥ च० ॥ जो० ॥
 ॥ ४ ॥ जीहो एक दिवस सागर फिरे ॥ ला० ॥ नगर
 कुतुहल काज, जीहो रमलीकरे सुकमालीका ॥ ला० ॥

घर उंवर कुल लाज ॥ च० ॥ जो० ॥ ५ ॥ जीहो सा
 गर रुपे मोहीयो ॥ ला० ॥ घर आव्यो दिलगीर, जी
 हो मातपिता पूठे तिहां ॥ ला० ॥ नंदन कोइ अधि
 र ॥ च० ॥ जो० ॥ ६ ॥ जीहो पुत्र कहे तुमे सांजलो
 ॥ ला० ॥ जो मुऊ वांगे खेम, जीहो सागरदत्तनी नं
 दर्ना ॥ ला० ॥ परणावो मुऊ प्रेम ॥ च० ॥ जो० ॥ ७ ॥
 जीहो वात सुणी शेठ हरखीयो ॥ ला० ॥ साजन ली
 धा साथ, जीहो सागरदत्त घरे आवीयो ॥ ला० ॥ बे
 उ मिल्या देइ हाथ ॥ च० ॥ जो० ॥ ८ ॥ जीहो शेठ
 कहे किण कारणे ॥ ला० ॥ आया मुऊ घरवार, जीहो
 तुऊ पुत्री मुऊ पुत्रने ॥ ला० ॥ दिजे एह विचार ॥
 च० ॥ जो० ॥ ९ ॥ जीहो शेठ कहे मुऊ अंगजा ॥ ला० ॥
 जिवन प्राण समान, जिहोगेह जमाइ जो रहे ॥ ला०
 ॥ तो आवो करी जान ॥ च० ॥ जो० ॥ १० ॥ जीहो
 इम सांजली विलखो थयो ॥ ला० ॥ शेठ गयो निज
 ठाम, जीहो सागर पूठे वापने ॥ ला० ॥ वात कही ति
 णे ताम ॥ च० ॥ जो० ॥ ११ ॥ जीहो सागर आदर
 करी कहे ॥ ला० ॥ जीवन प्राण समान, जीहो गेह
 जमाइ जोरहु ॥ ला० ॥ वंठित भोग रसाल ॥ च० ॥
 जो० ॥ १२ ॥ जीहो जिनदत्त सागरने कहे ॥ ला० ॥
 चित्त मत करो चित्त, जीहो जान सजी तिहां आवीया
 ॥ ला० ॥ जिम तिम राखे प्रित ॥ च० ॥ जो० ॥ १३ ॥
 जीहो हथमेलो सागर अहे ॥ ला० ॥ शेठ सुतानो हा

थ, जीहो चोचर सरीखो आकरो ॥ ला० ॥ चिते न
 जुड्यो साथ ॥ च० ॥ जो० ॥ १४ ॥ जीहो अनुक्रमे
 परणयो प्रेमशुं ॥ ला० ॥ सागर करत विचार, जीहो
 नामे ए सुकुमालीका ॥ ला० ॥ परणामे अशीधार ॥
 च० ॥ जो० ॥ १५ ॥ जीहो सांज समे एक मेहेलमा ॥
 ला० ॥ सुता स्त्री चरतार, जीहो अंग लमावे अंगसुं
 ॥ ला० ॥ जेह विषय अंगार ॥ च० ॥ जो० ॥ १६ ॥
 जीहो कर्मनीकांचीत जेहने ॥ ला० ॥ ते केम पामे चो
 ग, जीहो बडोत्तरसोढाले गुणसागर कहे ॥ ला० ॥
 तोही न समजे लोग ॥ च० ॥ जो० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ जिमतिम करम न किजीए, किजीए चित्त वि
 च्यार ॥ धर्म करो निज हितचणी, जिम पामो अवपार ॥
 ॥१॥ मन चंग देखी वालम तणो, चमकी नारी तेवार
 ॥ असमंजस ए स्युं करे, कोइक खरो विचार ॥ २ ॥

ढाल १०७ मी ॥ हींढोला खाटे त्रण कडा ॥ एदे
 शी ॥ रथ असवारी समारथी ॥ साहीब मोरा ॥ कि
 धां दिधां दान हो ॥ सागरदत्त ग्रह उतर्या ॥ सा० ॥
 हरख्या सहु साजन हो ॥ १ ॥ कर्म अजब गति, वां
 धो विविध मति ॥ उदय आवे अति आकरां ॥ सा०
 ॥ कर्म करे सो होय हो ॥ ए आकणी ॥ सागर वली
 सुकुमालिका ॥ सा० ॥ वेठा जइ एकांतहो ॥ पिण च
 तुराइ नीज नाहनी ॥ सा० ॥ चंचल चित नीरखंत
 ह्यो ॥ क० ॥ २ ॥ रंग हतो जे परणता ॥ सा० ॥ ते

रंग नहि खेलत हो ॥ ए रंगमे ते रंगमे ॥ सा० ॥ अं
 तर अनत अनंत हो ॥ क० ॥ ३ ॥ प्रतिवंता गुण
 राखवा ॥ सा० ॥ आवी करे मनोहार हो ॥ अग फर
 स अति आकरो ॥ सा० ॥ केस सहे नरथार हो ॥
 ॥ क० ॥ ४ ॥ जीम अहि चंडे काचली ॥ सा० ॥
 उठ्यो नारी उवेख हो, रे प्रिउ पूठे प्रेमदा ॥ सा० ॥
 उठोगे कुण विशेष हो ॥ क० ॥ ५ ॥ कहे पिउ देह
 चिंता नणी ॥ सा० ॥ जाइसंग्रह अनुखंग हो, नारी
 पिण जारी नरी ॥ सा० ॥ जाणी कपट थइ संग हो ॥
 ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रिउ वारे पिण नवी रहे ॥ सा० ॥ नव
 लिंगत कोइ नेह हो, सागरनो दाव फाव्यो नही
 ॥ सा० ॥ आव्यो करी सुची देह हो ॥ क० ॥ ७ ॥ उ
 यल शक्यो नही ठेतरी ॥ सा० ॥ नेह गहेली नार हो,
 जोरे कर ग्रही कंतनो ॥ सा० ॥ आय्यो गेह मजार
 हो ॥ क० ॥ ८ ॥ सेजे बेसारयो हेजथी ॥ सा० ॥ मां
 की घणी मनुहार हो, खिण खिणमे इम किम करो
 ॥ सा० ॥ कहोने प्राण आधार हो ॥ क० ॥ ९ ॥ मां
 र्यो प्रथम समागमे ॥ सा० ॥ कपट नीहेजा कंत हो,
 किम रुडशे इणे लक्षणे ॥ सा० ॥ प्रिती रिती मतीवंत
 हो ॥ क० ॥ १० ॥ प्रथमज कलवमें मद्धिका ॥ सा० ॥
 र्यो तेह मांही रवाद हो, स्वांमी अबला उपरे
 ॥ सा० ॥ एवढो स्यो उनमाद हो ॥ क० ॥ ११ ॥
 पहेली रामतमें प्रचु ॥ सा० ॥ काढी वेठा वेस हो,

आगल कीम निरवाहस्यो ॥ सा० ॥ मुऊथी एह विशेष
 प हो ॥ क० ॥ १२ ॥ महील कहील कारी इसा
 ॥ सा० ॥ टहीलनि करण हार हो, तोपिण मन माने
 नही ॥ सा० ॥ अहो यौवन शिणगार हो ॥ क० ॥
 ॥ १३ ॥ हुं तुम पगनी पानही ॥ सा० ॥ तुमे मुऊ शीरना
 मोरु हो, गोद बिठाइ पाए पडुं ॥ सा० ॥ किम रह्यां मु
 ह मचकोड हो ॥ क० ॥ १४ ॥ तुम सुसरे नवी दु
 हव्या ॥ सा० ॥ लहेणे देणे लिगार हो, लालच हुवे को
 इ वातनी ॥ सा० ॥ कहो सुखे न करो विच्यार हो ॥
 ॥ क० ॥ १५ ॥ होवे जमाइ लाडको ॥ सा० ॥ जिमरु
 शे तिम रंग हो, पिण विण स्वार्थ रुसणुं ॥ सा० ॥ ते
 तो बालीक ढंग हो ॥ क० ॥ १६ ॥ इम कही खीण
 विसमी ॥ सा० ॥ चतुरानन चीत चाव हो, निद्रावश
 हुइजिके ॥ सा० ॥ सागर लीधो दाव हो ॥ क० ॥
 ॥ १७ ॥ वार उघाडी नाशीगयो ॥ सा० ॥ सुती मु
 की नार हो, एहवी में जाणी नही ॥ सा० ॥ धाग एह
 नो अवतार हो ॥ क० ॥ १८ ॥ सतोत्तर सोमी ढालमें
 ॥ सा० ॥ कीजे क्रोड विशेष हो, गुणसागर ए नवी
 सीटे ॥ सा० ॥ जे विधी लिखीया लेख हो ॥ क० ॥ १९ ॥
 दुहा ॥ जागी तव सुकमालीका, पती नवि देखे पा
 स ॥ गद गद कंठ रुदन करे, नाह कीहां गयो नाश
 ॥ १ ॥ जारी लेइ दाशी तिहां, आवे मनने रंग ॥
 विलखी शेठ सुता घणी, दाशी देखी विरंग ॥ २ ॥

दाशी जाखे स्वामिनी, आमण दुसणी कांड ॥ पहीले,
 देन खटपट किशी, गुण अवगुण न जणाइ ॥ ३ ॥
 सुती गोडीने गयो, सागरदत्त घर आप ॥ दाशी शे
 डाणीने कहे, एह जमाइ पाप ॥ ४ ॥ सागरदत्त री
 से नरयो, जीनदत्तने घर जाय ॥ उलंना दे शेठने,
 निज अंगज तुम नाय ॥ ५ ॥ तेडी सुतने हडकीयो,
 तें कीयो ए अकाज ॥ शेठ सुता परणी करी, गोडी
 कीम निजलाज ॥ ६ ॥ पुत्र कहे सुण तातजी, जाउ
 नही तस पास ॥ जोगी जंगम व्रत ग्रह, मत कर
 अवर विखास ॥ ७ ॥ शेठ सुणी ए वातडी, गोडी आ
 पण कान ॥ आवी बेटोने कहे, पूर्व करम नीदान ॥ ८ ॥

ढाल १०८ मी ॥ मुनिवर ढूढणा ॥ ए देशी ॥ अ
 न्य दिवस घरनो धणीरे हां, सागरदत्त सुजाण ॥ क
 र्म विटवणा ॥ उंचो वड्डो महीलमारि हां, देखे नग
 र मंजाण ॥ क० ॥ १ ॥ नूखे जांगो दुवलारि हां, शे
 ठे दीठो रंक ॥ क० ॥ हाथे जांगो ठिकरोरे हां, मांगे
 चीक नीशंक ॥ क० ॥ २ ॥ जिण जिणाट माखी क
 रेरे हां, जे लाजे ते खाय ॥ क० ॥ फाटां त्रुटां लुग
 मारे हां, केने नावे दाय ॥ क० ॥ ३ ॥ शेठे तेडावी
 तेहनेरे हां, दीधुं आदरमान ॥ क० ॥ मोदक दीधां
 मोकलारे हां, उपर उनु धान ॥ क० ॥ ४ ॥ नाइ तेडी
 मरदन कीयारे हां, स्नानकराव्यो तास ॥ क० ॥ आ
 नरण पहीराव्यां नलारे हां, तन हुवो तेज प्रकाश

॥ क० ॥ ५ ॥ शेठे आडंबर करीरे हां परणावी ति
 ज धीय ॥ क० ॥ सुखरा वाघा घर दियारे हां, सुख
 जोगवे चिरंजीय ॥ क० ॥ ६ ॥ हरख्यो जीखारी घ
 णुरे हां, जाग्यो जाग अनंग ॥ क० ॥ कीहां शेठघ
 र पामीयोरे हां, जीहां सुख नवरंग ॥ क० ॥ ७ ॥
 मीठा जोजन जिमवारे हां, सासु सुसरा मान ॥ क० ॥
 शेठ सुता सुकमालीकारे हां, लाधुं रुप निधान ॥ क०
 ॥ ८ ॥ रात समे बेहु जणारे हां, सुवा मंदीर जाय ॥
 क० ॥ जिण वेला कर फरशीउरे हा, अगन समो दु
 खदाय ॥ क० ॥ ९ ॥ नाठो दुनक तिहां थकीरे हां,
 लेइ निज समुदाय ॥ क० ॥ साप कांचली जीम त
 जीरे हां, टलीय अलाय बलाय ॥ क० ॥ १० ॥ शे
 ठाणी नीज नंदनीरे हां, दिठी वदन विलाय ॥ क० ॥
 माता पूढे शुं थयोरे हां, रुदन करे रुसकाय ॥ क० ॥
 ॥ ११ ॥ जननी जाखे मुण सुतारे हां, मत मन आ
 णे शोक ॥ क० ॥ सुखदुख लिखीया नवी टलेरे हा,
 हससे दुर्जन लोक ॥ क० ॥ १२ ॥ चिंता तजी नजी
 धीरमारे हां, घरबेठी दे दान ॥ क० ॥ अंतराय मीट
 शेसही रेहां, सुख पामीश असमान ॥ क० ॥ १३ ॥
 शेठ सुणी आवी कहेरे हां, बेटी मतकर अंदोह ॥ क० ॥
 पूर्व कर्म उदय थकीरे हां, पतीसुं थाए वीगोह ॥
 क० ॥ १४ ॥ जे घर आवे ते वहीरे हां, जाचक
 आश करेह ॥ क० ॥ तेहने मुहमांग्यो दीएरे हा, ना

कारो न करेह ॥ क० ॥ १५ ॥ वोहोरण आवे साध
 वीरे हां, गइ गुराणी पास ॥ क० ॥ वगीकरण विधी
 पूठतारे हां, बोले सा उल्हास ॥ क० ॥ १६ ॥ मंत्र
 तत्रने जंत्रडारे हां, औपध मूर्ती तेम ॥ क० ॥ कामण
 मोहण जिनमतिरे हा, करण करावण नेम ॥ क० ॥
 ॥ १७ ॥ लीधो चारित्र सादरारे हां, करती तप उ
 पवास ॥ क० ॥ मारगथी बाहिर पडीरे हां, लेवंति व
 नवास ॥ क० ॥ १८ ॥ कांडकरे व्रत आदरधारे हां,
 जो न तजे सकल्प ॥ क० ॥ पग पग सिदाये घणारे
 हां, वदे दुःख अनल्प ॥ क० ॥ १९ ॥ आलो गोलो
 चीतसुरे हां, लागे अपर खीरंत ॥ क० ॥ रागीनी म
 न राचणारे हां, वैरागी वीरचंत ॥ क० ॥ २० ॥
 वनवासे दूषण घणारे हां, रागी नरने होय ॥ क० ॥
 घरवासे वैरागीयारे हां, दोष न लागे कोय ॥ क० ॥
 ॥ २१ ॥ वस्तु अपूरव ठे घणीरे हां, आवा दाडम
 द्राख ॥ क० ॥ खाता मन पाठो पडेरे हा, अणखाया
 अचीलाख ॥ क० ॥ २२ ॥ मोहपै साची मोटकीरे
 हां, वसुधामें विख्यात ॥ क० ॥ हाथी उडे वायरेरे
 हां, मांस मांस कुण मात ॥ क० ॥ २३ ॥ अठोत्तर सो
 मी ढालगेरे हां, किउं किउं न करे कर्म ॥ क० ॥ तुट
 वो नहि जीवनेरे हां, एक विना जिन धर्म ॥ क० ॥ २४ ॥
 दुहा ॥ ललितादिक गोठिल नसे, पांच पुरुष ध
 नवंत ॥ राजा माने अती घणु, जोगी नमर रमंत ॥

॥ १ ॥ रथ वेशी वेशा सहित, आया वन पंडूर ॥ वेश्या रथथी उतरी, वेठी आसन पूर ॥ २ ॥ पाचे गोठिल सेवका, मिल दिधो आदेश ॥ जोजन करज्यो जातिशुं, जीम खुशी हुवे वेश ॥ ३ ॥

ढाल १०९ मी ॥ मोरा साहिव हो श्री सितलनाथके ॥ ए देशी ॥ एक गोठील हो घणुं चतुरसुजाणके, वेश्या आगल आइत ॥ रंगे राती हो मेन्दी लेइ हाथके, पग मंरुण मन जाइयो ॥ १ ॥ धन्य वेश्या हो सुहागण नारके, स्युं कीधे इण नातरे ॥ पांच गोठिल हो सेवे चित लायके, पग एक कोइ नचातरे ॥ २ ॥ तिणे मांरुयो हो पग रुमी जातके, वेल फूल मन लाइने ॥ कर कोमल हो रंग्या वेउ रंगके, मधुर स्वर गुण गाइने ॥ ३ ॥ एक लायक हो सुंदर नर आयके, माथे उत्र धरे तसे ॥ आपे उजो हो करी सेवा सारके, वेश्या मुख देखी हसे ॥ ४ ॥ जोवन नर हो एक मोहन वेलके, तेल सुगंध शीशी लिए ॥ वेश्या शिर हो घाले तेल फूलेलके, चोटो गुंथे द्रढ हिए ॥ ५ ॥ नवरंगी हो सारंगी पागके, एक गणिका खोले लिए ॥ एक विंजे हो चाभर चित लायके, कर सेती बीडा दीए ॥ ६ ॥ जो नडके हो तडके दे गालके, फिर नचाव नको करे ॥ जे मांगे हो हासे करी लाखके, ते हाजर आणी धरे ॥ ७ ॥ ए पाचे हो नर मिठा बोलके, गणिकासुं मुसके हसे ॥ घर घरणी हो गोमी ते

मूढके, निश वेश्या मंदिर बसे ॥ ८ ॥ हिवे साधवी
 हौ देखी ते इमके, चिते चित धन्य ए सहि ॥ हुंतो प
 रणी हो कोइ पाप संजोग के, मुने पतिये मानी न
 हीं ॥ ९ ॥ एक ए पिण हो अर्जीमानणी नारके, सि
 हासन उपर चढी ॥ पांचे नर हो करे जीजीकारके,
 देइ जवाप न हठ चढी ॥ १० ॥ जीम लीं वु हो देखी
 गले दाढके, तिम अजा मन टलवले ॥ भोगवता हो
 मिठा नर पाचके, संजम व्रतथी खलजले ॥ ११ ॥
 जो तपनो हो कोइ फलठे साचके, तो पिण हुं पूरव
 चवे ॥ एहणी परे होजो जरतारके, तप संजम न
 ला हुवे ॥ १२ ॥ आतापना हो कीधी बहु चांतिके,
 आइ गुराणी पाये नमे ॥ व्रत पाली हो सुधो आचार
 के, जिम तिम दिन दिन निगमे ॥ १३ ॥ हिवे चेली हो
 गुरुणी सुं रीसके, गुरुणीसु नवि मीले ॥ मन माने हो जी
 हा तिहां जाइके, जोली जीण तीणसु मिले ॥ १४ ॥
 हाथ धोवे हो मुख धोवे पायके, माथो धोवे मन र
 ली ॥ अंग धोवे हो दिनमें दस वारके, धोवे साडी
 निरमली ॥ १५ ॥ निसवासरहो गुरुणी स्युं धेखके,
 खटपट निपट निर्लज बली, शेठ बेटी हो जाणयो
 रवाद् न कोइके, गुरणीथी अलगी टली ॥ १६ ॥
 पाडी हारक हो मोटी धर्म सालके, बेठी तिहां सुक
 मालिका ॥ आप वांटे हो रहि अटक न कांइके, जा
 प जपे जप मालिका ॥ १७ ॥ पांमोशण हो आवे को

इ नारके, तिण आगल, सुख दुख कहे ॥ विजे
कोइ नही हो आल जंजालके, आप वसे सुखणी
रहे ॥ १८ ॥ पकीकमणो हो जो आवे दायके, तो
किण वेला आदरे ॥ किण वेला हो विकथा करे च्या
रके, हारे वस परमादने ॥ १९ ॥ व्रत पाल्या हो
तिणे वरस अनेकके, ठेहडे आलोया नही ॥ कर्म
वांध्या हो बुटे नही जीवके, कोड जतन करे कोस
ही ॥ २० ॥ हिवे साधवी हो आउखो पालके, विजे
सुर लोके अवतरी ॥ पल्योपम हो नव आउ प्रमा
णके, सुरगणीका थइ सुख वरी ॥ २१ ॥ हिवे तिहां
थी हो चवी साधवी जीवके, सुन करमें किहां अवत
री ॥ ते सुणजो हो संबंघ विचारके, सुणतां मन आ
णंद धरी ॥ २२ ॥ ढाल नव सोमी हो तप कीधां
जीणके, ते तो निश्चे सुख लहे ॥ जिनशासन हो
माहे धर्म अमुलके, गुणसागर साचो कहे ॥ २३ ॥

दुहा ॥ देश मांहे ठे दिपतो, सजल देश पचा
ल ॥ कंपीलपुर नामे नगर, न पडे कदिय दुकाल ॥
॥ १ ॥ उंचो कोट त्रिकोट जीम, परदल जंजणहार ॥
दरवाजा च्यारे जला, लाग्या माल अपार ॥ २ ॥
लिखमीधर व्यवहारीयां, वसे सदा सुख वास ॥ शंठ
सेनापती मंत्रवि, घर घर लील विलास ॥ ३ ॥

ढाल ११०-मी ॥ नमो नमो अरणक महा मुनि
॥ ए देशी ॥ राजा राज्य करे तिहां, द्रुपद नामे रा

जानरे ॥ तेज प्रताप दिवस मणी, साचा जेहने सा
 जनरे ॥ १ ॥ पुण्य थकी सुख संपजे, पुण्य वजा
 मसारेरे ॥ पुण्य करो तुमे प्राणीया, जीम पामों ज
 व पारेरे ॥ पु० ॥ २ ॥ सीयल गुणे सीता सति, चु
 लणी तल पटराणीरे ॥ रुपे रंजा सारखी, बोले को
 कील वाणीरे ॥ पु० ॥ ३ ॥ तस कुखे आवी अवत
 री, सुन्न वेला अध रातोरे ॥ जोग सखर नलो चद्र
 मा, माता हरख न मातोरे ॥ पु० ॥ ४ ॥ पुरे मासे दि
 न नले, राणीए जाइ वेटिरे ॥ रुप अनोपम मनो
 हरु, गुणमणी माणीक पेटीरे ॥ पु० ॥ ५ ॥ मा
 त पीता हरखीत थया, द्रोपदी दीधुं नामरे ॥ दिन
 दिन वाधे नृप सुता, चपक जिम गीरी ठामरे ॥
 ॥ पु० ॥ ६ ॥ चंपक वरणी सुंदरी, दिपे अधीके वा
 नरे ॥ गंगा गीरी अवतरी, रंजाने अनुमानरे ॥
 ॥ पु० ॥ ७ ॥ चंद्रमुखी, मृगलोचनी, राज हंस ग
 ति चालेरे ॥ राजकुमर हुलती रमे, मातपिता जन
 पालेरे ॥ पु० ॥ ८ ॥ चौसठ महिलानी कला, नणी
 गुणी चतुराइरे ॥ तप किधा जनमंतरे, तिण नख शी
 ख अधीकाइरे ॥ पु० ॥ ९ ॥ एक दिन राणी मनर
 ली, कुमरीने शिणगारीरे ॥ नूपण पहीराव्यां नला, ज
 नमन मोहन गारीरे ॥ पु० ॥ १० ॥ सखीय साहेली
 परवरी, रमऊम करती रंगेरे ॥ करी जुहार पिता न
 णी, वेठी उग्रंगरे ॥ पु० ॥ ११ ॥ नृप दिठी नीज

अंगना, रूपे रती गुणखाणीरे ॥ नणे ते जाणी न
 रती. अमृत वाणी सुहाणीरे ॥ पु० ॥ १२ ॥ राजा
 मनमांही चिंतवे, केहने ए परणावुरे ॥ सरीखे सरीखे
 जो मीले, तो चिहुंमे अस पावुरे ॥ पु० ॥ १३ ॥ कुल
 आचार सुघर नलो, सासु सुसरो साररे ॥ घर लख
 मी किर्ती घणी, सुलक्षण वर शीरदाररे ॥ पु० ॥ १४ ॥
 एतला गुण जोइ करी, वेटि दिजे वापरे ॥ पाठल चाग्य
 लिख्यो लहे, लोकनको सतापरे ॥ पु० ॥ १५ ॥ जात पुत्री
 सुखमां रहो, चिंता को मति करीशरे ॥ परणावीश मन
 मानीयो, जे जग मोटो इशरे ॥ पु० ॥ १६ ॥ एकसो
 दसमी ढालमें, पूढ्या जाण सुजाणरे ॥ गुणसागर कहे
 पुण्यथी, चढशे वात प्रमाणरे ॥ पु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ वलि पूढ्या वरु चागीया, गढ गंजणाहि चा
 ल ॥ एहवा जसु पासे रहे, कोइ न करे टंकाल ॥ १ ॥
 सवंधरा मंडप रंगसुं, मांड्यो अधिक मंडाण ॥ कुमरी
 लाडकी द्रोपदी, वांढा चढे प्रमाण ॥ २ ॥ चोकस वात
 वणाइने, जोशी तुरत तेडाय ॥ मास लगन शुभ दिन
 घडी, जोवो जोतिष राय ॥ ३ ॥ जोशी जोयो जुग
 तिसुं, पोष मास शुदि त्रीज ॥ गोधुलिक चोखो अ
 ठे, वरस मांही एहिज ॥ ४ ॥ सुणी राजा मन रंजी
 यो, जोशीने घे दान ॥ कुसम माला घाली गले, दि
 धो आदरमाम ॥ ५ ॥ आप नूप परधान गुं, वेठा करे
 विचार ॥ सजा विच सिंहासने, पासे सहु परिवार ॥ ६ ॥

ढाल १११ मी ॥ विनीपण वात विच्यारो एह ॥
 ए देशी ॥ सोनांनी ठीडका जळिरे, कागल रंग रंगे
 ल ॥ मंत्रिसर लिखजो जळोरे, रखे करो कांड डिलरे ॥
 ॥१॥ मानव मानो नृपति आण ॥ स्वामि जगती सुख
 पामशोरे, लहस्यो कौड कल्याणरे ॥ मा० ॥ ए आंक
 णी ॥ मंत्रिसर कागल लिख्योरे, बहु घन जंज उप
 मान ॥ अक्षर लिखिया परवभारे, वांचत हुइ आसा
 नरे ॥ मा० ॥ २ ॥ दूत तेडावी राजवीरे, कागद दिधो
 हाथ ॥ प्रथम तुं जाजे द्वारकारे, जिहां राजा हरी ना
 थरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ पग ऊटकी पगे लागजेरे, श्रीप
 तिने कहेजे जुहार ॥ कागल देइ विनवेरे, हरखति हो
 य मुराररे ॥ मा० ॥ ४ ॥ समुद्रविजे नृप सारीखारे,
 नमीजे दसे दसार ॥ अतुलिवल बलनद्रजीरे, केहे
 जे तास जुहाररे ॥ मा० ॥ ५ ॥ राज पधारो हित धरी
 रे, मतकरो डिल लिगार ॥ द्रुपद सुता ठे द्रोपदिरे, वि
 वाहनो अधीकाररे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इम कही दूत चा
 लियोरे, हय गय रथ नर वृंद ॥ अनुक्रमे आयो द्वा
 रीकारे, जिहां ठे नृप मुकुंदरे ॥ मा० ॥ ७ ॥ बाग विचे
 करो दियोरे, नोजन करी बहु जात ॥ वागो सखर
 वणाइयोरे, सुंदर तनु शोचंतरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ लायक
 पायक परीवरयोरे, आडंबर करी दूत, राजसजा ते
 आवियोरे. वेठा नर रजपूतरे ॥ मा० ॥ ९ ॥ पगे ला
 गी कागद दियोरे, मुख वचन गुन वाण ॥ कुशल

खेम पूगी वल्लिरे, राजेसर कल्याणरे ॥ मा० ॥ १० ॥
 मधुसुदन मन हरखियोरे, वांची कागल तेह ॥ कं
 पिलपुर जावा जणीरे, जाग्यो अधीक सनेह ॥ मा०
 ॥ ११ ॥ सुणजो सहको यादवारे, सुणजो दसे दसार ॥
 सोल सहस जूपति सुणारे, करज्यो एक विच्यारे
 ॥ मा० ॥ १२ ॥ मान्यो वचन सह मिलिरे, श्रीपति
 नो हितकार ॥ आदरशुं जोजन दियोरे, दूतने कृ
 पण सुराररे ॥ मा० ॥ १३ ॥ कृष्ण सीख ले चालि
 योरे, दूत प्रमोद अपार ॥ बाण मांहि जिहां उतरयो
 रे, करी सजाइ साररे ॥ मा० ॥ १४ ॥ कटक शुचट
 साथे घणारे, चाल्यो तिहांथी दूत ॥ मारग आवे जो
 वतोरे, जिहां अचरिज अदचूतरे ॥ मा० ॥ १५ ॥
 गाम नगरपुर लांघतोरे, करतो विचे मुकाम ॥ आनं
 द सेति आवियोरे, जीहां कंपिलपुर गामरे ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ सूरज उगे आवियोरे, दूत ते राजदुवार ॥
 सजा मिलि सहको जुड्यारे, किधो जुगति जुहाररे
 ॥ मा० ॥ १७ ॥ दूत कहे करजोडनेरे, मानी वात
 सुरार ॥ जाग्य वडो ठे राजलोरे, होसे जय जय का
 ररे ॥ मा० ॥ १८ ॥ सहको रलियायत थ्यारे, चढशे
 वात प्रमाण ॥ इग्यार सोमी ढालमेरे, होसे कोड क
 ल्याणरे ॥ मा० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ निसुणी दूत वचनथी, अति हरख्यो रा
 जान ॥ इण कारजथी माहरोरे, होशे जस परधान ॥

॥ १ ॥ सनमान्यो ते दूतने, राजा अधिक सनेह ॥
आपी पाठी आगन्या, दूत गयो निज गेह ॥ २ ॥

ढाल ११२ मी ॥ लावल दे मात मलार ॥ ए दे
शी ॥ हिवे द्रुपद नामे राय, दूजो दूत बोलाय ॥ आ
ज हो वात प्रकाशे निज निज मन तणी ए ॥ हथी
णापुर तुं जाय, जिहां वसे पंडुराय ॥ आज हो पांच-
पुत्रशुं सुख लीला घणीजी ॥ १ ॥ बुद्धिष्टर जेठी जा
ण, नीमसेन वीजो वखाण ॥ आज हो अरजुन त्री
जो नंदन तेहनेजी ॥ नकुल चोयो सोय, राहदव पां
चमो जोय, आज हो माहोमाहे प्रीती अधिकी जेह
नेजी ॥ २ ॥ वली तस राजमजार, दुर्योधन हितकार
॥ आज हो गांगेय त्रिदुर आदी ते सवेजी ॥ सकल व
डा वड वीर, तेहने कहे जे धीर, आज हो कृष्ण परे
जइ सहुने विनवेजी ॥ ३ ॥ दूत हथीणापुर आय, मि
लि विनवीया राय ॥ आज हो वेगे पधारो तेडो तुम
जणीजी ॥ दूत प्रत्ये देइ मान, वरुा सरव राजान ॥
आ० ॥ केसरीये वाधे करी जोजा घणीजी ॥ ४ ॥ त
दनंतर वलि राय, त्रीजो दूत बोलाय ॥ आज हो च
पापुर नगरी जाजे तुं सहीजी ॥ करण तिहां राजान,
दिपे करण समान ॥ आ० ॥ अंग नराधीप जणी के
हेजे वहीजी ॥ ५ ॥ शल्य अने नंदी राय, आदे सह
समुदाय ॥ आ० ॥ वेगेरे पधारो राय मया करीजी ॥
ते पिण सांजलि वाय, देइ निशाणे घाय ॥ आ० ॥

कंपीलपुर जावा उठरंग मन धरीजी ॥ ६ ॥ हिवे चो
 थो दूत चलाय, हियमे हरख न माय ॥ आ० ॥ वेगे
 मनावो सोयंपुर पतिजी, दमगोप सुत शीसुपाल ॥
 पांचसें जाइ रसाल, आज हो शिस नमावी कीधी
 विनतीजी ॥ ७ ॥ पांचमो दूत पठाय, हर्थाशिस न
 गरे आय ॥ आज हो दमदत्त राजा राज करे जी
 हांजी ॥ विनवीयो जइ राय, द्रुपद वचन सुणाय ॥
 आ० ॥ वेगे पधारो मन हरखे तिहांजी ॥ ८ ॥ हिवे
 ठो दूत तेडाय, द्रुपदराय बोलाय, आज हो मथुरा
 नगरी जणी सोतो मोकलेजी ॥ श्रीधर नामे राय, वे
 ठोवे सुखदाय, आज हो लेख वांचीने कहे आव्या
 जलेजी ॥ ९ ॥ सातमो दूत सुण वाण, करे हुकम
 प्रमाण ॥ आ० ॥ आणंदे राजग्रहपुर आवीयोजी ॥
 सहदेव नामे राय ॥ प्रणमी तेहना पाय ॥ आ० ॥
 स्वामी वचन सहु संजलावीयोजी ॥ १० ॥ तोते रा
 य बोलाय, आठमो दूत चलाय ॥ आ० ॥ कुंणपुर
 नगरी रायरुपी प्रतेजी ॥ बोले मधुरी वाण, करजे
 जइने जाण ॥ आ० ॥ वेलो तुं वलजे करजे मुऊ फ
 तेजी ॥ ११ ॥ नवमा दूत शुं वात, जातुं नगर वैरा
 ट ॥ आ० ॥ राय वैराटने जइ एम जांखजेजी ॥ सत
 जाइशुं आज ॥ विनती करी महाराज ॥ आ० ॥ रा
 य कीचकने हेत बहु दाखजेजी ॥ १२ ॥ राय पुत्री
 गुण गेह, परणे अधिक सनेह ॥ आ० ॥ वेगे पधारो

नूपती एम कह्योजी ॥ तेणे तिमज किध, आगन्या
 पाठी दिध ॥ आ० ॥ सांजली राय सुख अधिको ल
 ह्योजी ॥ १३ ॥ नव देश नोतरया राय, दसमो दूत
 चलाय ॥ आ० ॥ द्रुपद राजानी निज खांते करीजी ॥
 जाजे देसादेश, लघु वडा नरेश ॥ आ० ॥ वात प्र
 कासे शिघ्र हेत धरीजी ॥ १४ ॥ हिवे सकल राजान
 सांजली द्रुपद वाण ॥ आ० ॥ कंपीलपुर आवण अति
 उमह्याजी ॥ ढाल वारोत्तरसोमि एह, सुणता पामे नेह
 ॥ आ० ॥ सूरि गुणसागर साजन सुख लह्याजी ॥ १५ ॥

दुहा ॥ सजा सुधरमी कृष्णजी, वेठा वलचद्र पा
 स ॥ कोष्टिक जोशी तेडीने, पूठे मुहुरत तास ॥ १ ॥
 तिणे दान तिथी अटकली, जोग जुगती गुण जाण ॥
 सनमुख सारो चंद्रमा, राजन शास्त्र प्रमाण ॥ २ ॥
 यादव चाद्रव मेह जिम, जूडीया बपनही कोरु ॥ वा
 त सुणी विवाहनी, हरख्या होडा होरु ॥ ३ ॥ कृष्ण
 कहे सहू सांजलो, मतकरो कोइ विलंब ॥ करी सजाइ
 आवज्यो, पर्जुन कुमर अरु संव ॥ ४ ॥ वात थापी ते
 उठिया, पोहता निज निज गेह ॥ घर जाइ मंजन
 करे, जिणथी दिपे देह ॥ ५ ॥

ढाल ११३ मी ॥ ठठी वाडे ठेल ठबीलो ॥ ए
 देशी ॥ कीधा सोल श्रृंगार ॥ राजेंदा ॥ द्वारावती नगरी
 धणीए ॥ आया रुखमणी पास ॥ रा० ॥ जिणसुं प्रित
 अठे घणी ए ॥ १ ॥ रुखमणी अधिक सनेह ॥ रा० ॥

राज मया करो मोक्षणी ए, बेसो आसन एह रा०
 हूं दाशी प्रचु तुम तणी ए ॥ २ ॥ रुखमणी कृष्ण न
 रिंद रा० ॥ आसन बेठां एकठां ए, रामत करवां रं
 ग रा० ॥ रतन जडीत जलां सोगठां ए ॥ ३ ॥ ले
 इ आरीसो हाथ रा० ॥ मुख दुति देखे कानजी ए,
 रुखमणी राणी हेज रा० ॥ दिपे दुति अचीरामजी
 ए ॥ ४ ॥ श्रीपती सामल मेह रा० ॥ रुखमणी वनी
 चुकामणी ए, आनरण रतण जडाव रा० ॥ इंद्र ध
 नुप दुती निरजणी ए ॥ ५ ॥ रुखमणी पूठे वात
 रा० ॥ राज चढाउ सांजल्या ए, जूपती मिलीया जो
 र रा० ॥ हथ गय पायक खलजल्या ए ॥ ६ ॥ कृ
 ष्ण कहे सुण नार रा० ॥ कंपीलपुर अमे जाइसां ए,
 दुपद सुता विवाह रा० ॥ देखी तमासो आइसां ए
 ॥ ७ ॥ रुखमणी बोले बोल रा० ॥ प्रीतम गमन म
 ति करो ए, तुम विण घडीय ठमास रा० ॥ वाले
 सर कुरुणा करो ए ॥ ८ ॥ वासर वरस विहाय रा०
 ॥ तुम विण साहीव किम रहूं ए, शोक तणो जंजा
 ल रा० ॥ सुख दुख किण आगल कहूं ए ॥ ९ ॥
 कृष्ण कहे मे बोल रा० ॥ बोल्यो ते सही पालवो
 ए, उत्तम अविचल वाच रा० ॥ अपजस दूरे टाल
 वो ए ॥ १० ॥ रुखमणी जांखे एम ॥ रा० ॥ वालम
 वेला पधारजो ए, मत मूको विसार रा० ॥ मुने नाह
 संजारजो ए ॥ ११ ॥ रुखमणी दिधी शिख रा० ॥

कृष्ण सनामांहि आवीथा ए, जुडीया यदु राजान
 रा० ॥ बदीजन जस गाइया ए ॥ १२ ॥ शीणगा
 रथा गजराज रा० ॥ मखमल जुल सुहामणी ए,
 घटा घुवरमाल रा० ॥ गले कंचन मणी मेखला ए
 ॥ १३ ॥ शिस शिंदुर बणाय रा० ॥ काने बेउ चामर
 ढले ए, ऐरावण अवतार रा० ॥ ढलकति ढाल नली
 बनी ए ॥ १४ ॥ कृष्ण चढ्या गजराज रा० ॥ मरुत
 क बत्र रतने जरुयां ए, चामर विंके च्यार रा० ॥
 नगर लोक जोवा चरुया ए ॥ १५ ॥ चंचल चप
 ल तुरंग रा० ॥ निला पिला हंसला ए, शिणगारथा
 बहु मूल रा० ॥ आपसी न सके वांसलां ए ॥ १६ ॥
 शतारथ चोसाल रा० ॥ नवल तुरंगम जोतरथा ए,
 चिहुं दिश घटा चार रा० ॥ जाणो गगनथी उतरथा
 ए ॥ १७ ॥ लायक पायक कोड रा० ॥ हरखित साथ
 उंचा घणा ए, सुंदर वेश बणाव रा० ॥ चाकर चतु
 र सुहामणा ए ॥ १८ ॥ चतुरंगी सेन्या साथ रा० ॥
 द्वारामतिथी चालिया ए, वाग्या नवल नीशाण रा० ॥
 असवारे असी जालीया ए ॥ १९ ॥ बलनद्र कृष्णजी
 जोड रा० ॥ दसे दसार पासे रह्या ए, सोल सहस
 राजान रा० ॥ सहुको आव्या गहगह्या ए ॥ २० ॥
 संब परजून कुमार ॥ रा० ॥ केसरीए वाघे चला ए,
 मोटा मोती कांति ॥ रा० ॥ रुप कला गुण आगला
 ए ॥ २१ ॥ गणिका रुप रसाल ॥ रा० ॥ अनंगेसना

नामे वडी ए, लाखा गमे साथ ॥ रा० ॥ नारी चतुर
 रूपे वनी ए ॥ २२ ॥ दल वादल मंगण ॥ रा० ॥
 तंबु ताण्या वागमे ए ॥ डेरा हुवा नजीक ॥ रा० ॥ कृ
 ष्ण पधारया रंगमे ए ॥ २३ ॥ ऋद्धीवंत जसवंत ॥ रा०
 ॥ ठडीदार आगल वडे ए ॥ सोनागी शिरदार ॥ रा०
 ॥ एकसो तेरमी ढाले गुणसागर कहे ए ॥ २४ ॥

दुहा ॥ नोवत वाजे वागमें, सरणाइ बहु ज्ञात ॥
 घडीयाले वाजे घडी, खलकखडी मन खांत ॥ १ ॥ मुजरो
 करे दरवारथी, सहु कोइ नरराय ॥ शिख लेइ केशव
 तणी, निज निज थानक जाय ॥ २ ॥ कृष्ण पधारया मही
 लमें, नवरंग जीहां चित ठाम ॥ सुख सेजा वेठा सुखे,
 पासे वेठा राम ॥ ३ ॥ वात करे दरवारनी, मारग कु
 च मुकाम ॥ बार कोस वांधी मजल, पग पग जल
 तृण ठाम ॥ ४ ॥ सूधो मारग अटकल्यो, वांकी टाली
 वाट ॥ कोमी सुजट इण कटकमें, घोटक कुंजर घा
 ट ॥ ५ ॥ द्वारामति नगरी थकी, आया सघला लो
 क ॥ जंट बलद वेसरनरी, नार रस त्रिज थोक ॥ ६ ॥
 वासर पांचमुं कामठे, सुणोलोक धरी राग ॥ पान फू
 ल मत तोमज्यो, ए मुज मोहन वाग ॥ ७ ॥

ढाल ११४ मी ॥ जुमखडानी देशी, ॥ जांबु लिंबु
 आंबली, आंबा दाफम द्राख ॥ रंगीला मोहना ॥ जं
 वीरा रायण जली, नवरंगी नवलाख ॥ रं० ॥ १ ॥ वि
 जोरांने करमदा, नारेली तरवुज ॥ रं० ॥ सुफ सखर

खारेकी खरी, खुरसाणी खरबुज ॥ रं० ॥ २ ॥ उंबर
 पिपर लिवडां, लुवजूव वरु बोर ॥ रं० ॥ पान विमी
 वारी जली, वेठा मोर चकोर ॥ रं० ॥ ३ ॥ माली मा
 लनी मनरली, पान फूल फल सार ॥ रं० ॥ वेचण
 आवे पोलमें, लेज्यो वचन विच्यार ॥ रं० ॥ ४ ॥ कु
 ण आपणो कुण पारको, गुनही ने दे मार ॥ रं० ॥ कृ
 ण आणठे आकरी, कोइ न लोपे कार ॥ रं० ॥ ५ ॥
 धान मूल वेपारमें, मत को करो अन्याय ॥ रं० ॥ नि
 तीरी पंथ चालतां, सहको लागे पाय ॥ रं० ॥ ६ ॥ कौ
 तुक जोवण कौतुकी, कुण कुण आव्या लोक ॥ रं० ॥
 शुरवीर के साहसी, हरखे आया लोक ॥ रं० ॥ ७ ॥
 डेरां तिहांथी उपड्या, गुमीयां गुहीर निशाण ॥ रं० ॥
 कटक विकट चिहुं दिश वहे, धूल चढी असमान ॥
 रं० ॥ ८ ॥ आगल क्रिधां हाथीयां, मदमाता ऊंजार
 ॥ रं० ॥ घोडा जोल्या जोरमें, हिंसे सहस प्रकार ॥
 रं० ॥ ९ ॥ नवरंग नेजा फरहरे, विचविच तुंब अवाज
 ॥ रं० ॥ धौं धौं धौं शब्द सुणी, चोर चरु जाय चांज
 ॥ रं० ॥ १० ॥ गाम नगर पुर पाटणे, श्रीपती करे
 मुकाम रं० ॥ मोटा ठोटा राजवी, शेव करे शिरनाम
 ॥ रं० ॥ ११ ॥ दही दूध घृत नरी घमा, पान फूल फ
 ल नेद ॥ रं० ॥ घोरा घोला जोमले, आगल चेटे ने
 ट ॥ रं० ॥ १२ ॥ जलथल वन गीरी लंबतां, आया
 देश पंचाल ॥ रं० ॥ जिणी दिशे गंगा वहे, जाणे बाल

गोपाल ॥ रं० १३ ॥ साल चणा गहुं घणां, उडद मसु
 र अपार ॥ रं० ॥ गुंदरी घणी शेलडी, मणीका द्रा
 ख अपार ॥ रं० ॥ १४ ॥ ठाम ठाम मेवा घणा, ध
 रती जोवा लाग ॥ रं० ॥ पग पग पाणी मोकला, व
 न वाडीना वाग ॥ रं० ॥ १५ ॥ देश शिम सरशी स
 ही, देखी कृष्ण नरेश ॥ रं० ॥ ए मोटोठे राजवी, जे
 हनो एहवो देश ॥ रं० ॥ १६ ॥ हरी नांखे चूती सुणो,
 दिठा देश अनेक ॥ रं० ॥ पिण ए देश समो तुमे,
 दीठो तुमे कोइ एक ॥ रं० ॥ १७ ॥ हिवे कंपिलपुरनो धणी,
 दुपद नामे चुप ॥ रं० ॥ कृष्ण सामागस सांजली,
 करे सजाइ अनूप ॥ रं० ॥ १८ ॥ तेड्या मोटा वागी
 या, ज्यारो मोटो जाग्य ॥ रं० ॥ वागा पहिरया नव
 नवा, शिर सारंगी पाग ॥ रं० ॥ १९ ॥ सुंदर कुंजर
 सऊ किया, घोडा कचन साज ॥ रं० ॥ घोडो बहिल रथ
 जोतरया, मिलिया सुजट समाज ॥ रं० ॥ २० ॥ एक
 सो चउदमी ढालमे, गुणसागर सुखकार ॥ रं० ॥ सुखिया
 जिहां तिहां सुख लहे, आदरमान अपार ॥ रं० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ घुरया ददामा तलदणो, वली वागी कर
 ताल ॥ नवरंग नेजा फरहरे, चतुरंग सैन्य विसाल
 ॥ १ ॥ सोहव नारी कलस चरी, करे सोल शिणगार
 ॥ दरवाजे उजी रही, जान हुवे पेसार ॥ २ ॥ सबल
 सजाइ सऊ करी, चढीयो नगरी राय ॥ बंदिजन ज
 य जयकरे, माधव सनमुख जाय ॥ ३ ॥ गजथी रा

जा उतरी, लागे श्रीपति पाय ॥ आदर देइ कृष्ण
जी, मिलिया वेणु बगय ॥ ४ ॥ हरी पूठे राजा सु
णो, कुशल खेम आणंद ॥ राजपाट चढती कला, देश
न केइ दंड ॥ ५ ॥ राय प्रसाद सदा कुशल, वली विशेषे
आज ॥ क्रिपा करी पवारीया, राज वधारी लाज ॥ ६ ॥

ढाल ११५ मी ॥ नणदलनी देगी ॥ नयन सख
न सेति कहे, श्रीपति कटक सुकाम हो ॥ सुंदर ॥ रा
जा वे मिलिया तिहां, तरुवर सितल ठाम हो ॥ सु०
॥ १ ॥ नूपति जेट जली करे, द्रुपद नाम सुजाण हो
॥ सु० ॥ साजन सगपण राखवा, कोनी करे कुरवाण
हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २ ॥ गजवाजी रथ पालखी, जेट करी
मन कोड हो ॥ सु० ॥ पगे लागी विनती करे, लेता
कोइ न खोरु हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ३ ॥ श्रीपति
राख्यो नेटणो, अवसर लागे मीठ हो ॥ सु० ॥ द्रुपद
कहे प्रचु ताहरो, दरशण दिठो निठ हो ॥ सु० ॥ नू०
॥ ४ ॥ इण अवसर तिहां पुरी सरे, मिलिया नगरी
ना लोक हो ॥ सु० ॥ आवे कृष्ण नरेसरु, अचरिज
जोवा जोग हो ॥ सु० ॥ नू० ५ ॥ साथे कुणकुण वागी
या, कुणकुण सिरदार हो ॥ सु० ॥ जोमी जमर कुमर
तिहां, कुणकुण दसे दसार हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ६ ॥ मयमंता
हार्थीनी घटा, हयवर पार न कोड हो ॥ सु० ॥ रथ पा
यक वर पालखी, दिठा आणंद होय हो ॥ सु० ॥ नू० ॥
॥ ७ ॥ नगर सहोबव नृप करे, आमंवर असमान हो ॥

सु० ॥ जादव जेधे जग घटा, गणिका गावे गान हो
 ॥ सु० ॥ नू० ॥ ८ ॥ पूरण कलस शिर पदमनी, सनमुख
 आवे तेह हो ॥ सु० ॥ पइसारे नृप मांजीउ, नकी
 जुकी धरी नहे हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ९ ॥ दरवार वार व
 णाइउ, सबल किथो विटकाव हो ॥ सु० ॥ पंच वर्ण
 फूठ विखेरिया, बहु परिमल महकाव हो ॥ सु० ॥ नू०
 ॥ १० ॥ विविध विनोद नीहालता, जोता अचरिज
 कोड हो ॥ सु० ॥ उंचे नवलखा मालियां, आवी र
 ह्यां मन कोड हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ ११ ॥ हिवे कंपीलपुरनो
 धणी, जलीजली जेट अणाय हो ॥ सु० ॥ कमलापति
 आगल धरे, जिण दिठे सुख थाय हो ॥ सु० ॥ नू० ॥
 ॥ १२ ॥ मेवा देश परदेशना, साकर काजू सार हो ॥
 सु० ॥ कला कुंद अति उजला, कोला पाक अपार
 हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १३ ॥ साकर वाणी जतनसुं, पा
 णी जरी जरी कुंज हो ॥ सु० ॥ कुसमपुर फणस ज
 लि, सितल मधुर सुरजहो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १४ ॥ एवा
 शितल जल पीए, मधुर मीठाइ खाय हो ॥ सु० ॥
 जोजन सरस कियां पढी, मारग श्रम मीट जाय हो
 ॥ सु० ॥ नू० ॥ १५ ॥ पंडु राजा पिण आवियो, पांच
 पुत्र वली साथ हो ॥ सु० ॥ विदुर करण गांगेयशुं,
 दुर्योधन नर नाथ हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १६ ॥ राज प्र
 ही नगरी धणी, श्री सहदेव नरिंद हो ॥ सु० ॥ आडं
 करी आविया, मयमंत साथ गयंद हो ॥ सु० ॥

॥ नू० ॥ १७ ॥ चंपा नगरीनो धणी, कृष्ण महिपति
 सिंह हो ॥ सु० ॥ सल्य नूप दलवल सहित, आयो
 अकल अवीह हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ १८ ॥ गंधारादि
 नूपती, शकुनी नामे अति सुर हो ॥ सु० ॥ कंपीलपु
 र आयो तुरत, गज घट घणे पंडुर हो ॥ सु० ॥ नू०
 ॥ १९ ॥ दमघोष सुत दलपती, जाणे वाल गोपाल
 हो ॥ सु० ॥ नगरी चंदेरीनो धणी, आयो नृप गिशु
 पाल हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २० ॥ कुंफन नगरीनो राजी
 यो, रुकमी नृप कुल चंदहो ॥ सु० ॥ वारनलाइ आव
 ता, साथे शेवक व्रंद हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २१ ॥ वय
 राट नगरिनो धणी, किचक नाम नरेश हो ॥ सु० ॥
 सो नाइशु आवीयो, किधो नगर प्रवेश हो ॥ सु०
 ॥ नू० ॥ २२ ॥ मथुरा नगरी अधीपती, श्रीधर नाम नरिंद
 हो ॥ सु० ॥ आयो मृगपती साहसी, मन धरतो
 आणंद हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २३ ॥ मालव देश तणो
 धणी, वयरीसाल नरेशहो ॥ सु० ॥ आयो धायो धसम
 शी, जिहांवे द्रुपद देश हो ॥ सु० ॥ २४ ॥ एम गामा
 गर नगरथी, आया मोटा नूप हो ॥ सु० ॥ कंपील
 पुर डेरा दिया, दिपे तेज अनूप हो ॥ सु० ॥ नू० ॥
 ॥ २५ ॥ द्रुपद महीपति आणीया, करी उंठव पुरमां
 हीहो ॥ सु० ॥ सहुने सरिखा राखीया, सऊ थयो न
 गर अगाह हो ॥ सु० ॥ नू० ॥ २६ ॥ मोटा मंदिर
 मालीयां, धवल उंचा आवास हो ॥ सु० ॥ नामांकित

हुता जिके, सहुने दिध विमास हो ॥ सुं० ॥ जू० ॥
 ॥ २७ ॥ जुडीया चुपती जलजला, हुता जे चउसा
 ल हो ॥ सुं० ॥ द्रुपद ते संतोखीया, जिमाड्या सुवि
 शाल हो ॥ सुं० ॥ जू० ॥ २८ ॥ निज निज आवासे
 रह्या, सघला राजा जाण हो ॥ सुं० ॥ गित गान क
 रे रंगशुं, पामे कोड कल्याण हो ॥ सुं० ॥ जू० ॥ २९ ॥
 रामत राता राजवी, नाटक गित विनोद हो ॥ सुं० ॥
 सुख शेती बेठा सही, मन धरता प्रमोद ॥ सुं० ॥
 जू० ॥ ३० ॥ ढाल सो पन्नरमी जली, मिलिया राय
 सुजाण हो ॥ सुं० ॥ गुणसागर हिवे सांजलो, विवाह
 नो मंडाण हो ॥ सुं० ॥ जू० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ द्रुपद राजा आपणा, तेक्या शेवक कोड ॥
 सयंवरा मंडप मांडीयो, मनथी आलस ठोड ॥ १ ॥
 गगा जल निरमल वहे, ठाम मोकली जाण ॥ तास
 तिरघ रतिसमी, करी तिहां सखर मंजाण ॥ २ ॥ मं
 डप बायो मोकलो, कंचन मुक्ताफल रयण ॥ शोचा
 वेवीध प्रकारनी, देखत आनंद नयन ॥ ३ ॥ फूल
 प्रगर सुहामणां, धुप घटी मेहकंत ॥ तोरणनी रचना
 रची, देखी जन हरखंत ॥ ४ ॥ लगन तणो दिन आ
 गीयो, हेम सिंहासन राय ॥ बेठा सघला आयने, वि
 वेध शोचा लाय ॥ ५ ॥ सघला मांही शोचतो, रा
 जा पंडु जोय ॥ पुत्र पांच महावली, गंजी न सके
 कोय ॥ ६ ॥ हिवे मंजन करी द्रुपदी, देव जुहारण जा

य ॥ केसर चदन कुमुमले, ध्रुपदीप समुदाय ॥ ७ ॥
 करी पूजा कामदेवनी, चांखे द्रौपदी नार ॥ देव दया
 करी मुजने, जलो देजो नरतार ॥ ८ ॥

ढाल ११६ मी ॥ अलबेलानी देशी ॥ नवयौवन
 रूपे रुखरीरे लाल, हरखीत वदन उमाय ॥ रायजा
 दिरे ॥ करी उलग पाठी बलीरे लाल, आवी जिहां
 नीज माच ॥ रा० ॥ १ ॥ सीलवंती नली द्रौपदीरे ला
 ल ॥ ए आंरणी ॥ आनूपण अंग लुहणारे लाल, अ
 रगजो अंग लगाय ॥ रा० ॥ कोरजमल पहिरावीयो
 रे लाल, केसर रंगी पाय ॥ रा० ॥ सी० ॥ २ ॥ वेणी
 दंरु जमावचारे ॥ ला० ॥ सोहे मूल अमूल ॥ रा० ॥
 माये सोहे राखरीरे ॥ ला० ॥ रतन जडीत शीश फू
 ल ॥ रा० ॥ सी० ॥ ३ ॥ काने कुंडल ऊलकंतारे ॥ ला० ॥
 चंद सूरज अनकार ॥ रा० ॥ कर कंकण वर विठियारे
 ॥ ला० ॥ नक वेसर शिणगार ॥ रा० ॥ सी० ॥ ४ ॥ नयन
 कमल दल सारिखारे ॥ ला० ॥ अंजन रेख वणाय ॥
 रा० ॥ दस अंगुलि ए मुद्रडीरे ॥ ला० ॥ निलवट तिलक
 सोहाय ॥ रा० ॥ सी० ॥ ५ ॥ रंग रंगीला सोहतारे ॥
 ला० ॥ उठण जीणा चिर ॥ रा० ॥ कर पग मांढयां
 मांढणारे ॥ ला० ॥ कान राखी नखशिर ॥ रा० ॥ सी०
 ॥ ६ ॥ जंघ कमल लता जीसारे ॥ ला० ॥ सोहे रा
 जकुमार ॥ रा० ॥ गंगा गौरी सारखीरे ॥ ला० ॥ रति
 रंजा अवतार ॥ रा० ॥ सी० ॥ ७ ॥ घोट वहिल आ

णी जलारे ॥ ला० ॥ घुन्नर माल वणाय ॥ रा० ॥ स
 खी साहेली कुलरीरे ॥ ला० ॥ लागी जननी पाय ॥
 रा० ॥ सी० ॥ ८ ॥ मन मान्यो वर तुं लहिरे ॥ ला० ॥
 जननी दिये आशिप ॥ रा० ॥ रथ बेठी आणंदमुंरे
 ॥ ला० ॥ तुठो मुळ जगदिश ॥ रा० ॥ सी० ॥ ९ ॥
 चाइ साथे सारथीरे ॥ ला० ॥ शुनट लिया शिरदार
 ॥ रा० ॥ रथ रखवाली ते करेरे ॥ ला० ॥ रतन जत
 न अधीकार ॥ रा० ॥ सी० ॥ १० ॥ सावधान जोतां
 थकारे ॥ ला० ॥ कर जाली तरवार ॥ रा० ॥ कुशल
 खेमशुं आवीघारे ॥ ला० ॥ हरखी राजकुमार ॥ रा०
 ॥ सी० ॥ ११ ॥ मंडप मांही पेसतारे ॥ ला० ॥ दि
 ठा श्रीपति राम ॥ रा० ॥ बिजा पिण दिठा घणारे ॥
 ला० ॥ सहुने करे प्ररणाम ॥ रा० ॥ सी० ॥ १२ ॥ चं
 पक पांडल मालतीरे ॥ ला० ॥ फूल दडो लेइ हाथ
 ॥ रा० ॥ परीमल बहुलो महमहेरे ॥ ला० ॥ सकल साहेली
 साथ ॥ रा० ॥ सी० ॥ १३ ॥ हाथे दरपण जालीघारे
 ॥ ला० ॥ निर्मल दिसे रुप ॥ रा० ॥ मणी माणीक
 मुठे जळ्योरे ॥ ला० ॥ तिण मांही देखे चुप ॥ रा०
 ॥ सी० ॥ १४ ॥ नाम ठाम कुल जातशुरे ॥ ला० ॥
 सूरवीर उदार ॥ रा० ॥ मात तात वांधव सहीरे ॥ ला०
 ॥ राजऋद्धी जंडार ॥ रा० ॥ सी० ॥ १५ ॥ चापा
 जाणे जूजुरे ॥ ला० ॥ दाशी चतुरसुजाण ॥ रा० ॥
 कुमरी साथे संचरेरे ॥ ला० ॥ देखाडे राघ राणो ॥

रा०॥ सी०॥ १६॥ चित्रधारणी शीखवेरे ॥ ला० ॥
 ती मती मंदाचार ॥ रा० ॥ गुणासागर सूरी ए कहीरे
 ला०॥ ढाल सोलोत्तर सोमी सार ॥ रा०॥ सी०॥ १७॥
 दुहा ॥ सशी वयणी मृग लोयणी, रुदय कोमल
 ॥ त ॥ कोकिल कंठी हंसगती, अमृत वचन सोहात
 १ ॥ राजकुमरी राजी घणी, दिठा बहु राजान ॥
 डप विच आणी हिवे, हाथणी जेम आलान ॥ २ ॥
 णीयाणी मन उलखे, रुचंता बोले बोल ॥ एहवी
 णे आठे, विनती करे नीटोल ॥ ३ ॥ एक नारी
 पती घणां, सहको देखणहार ॥ हिमकर, देखी
 रोवरे, विकस्ये कुमुद हजार ॥ ४ ॥

ढाल ११७ मी ॥ निंदरडी नाहो निवारीए ॥ ए दे
 ॥ जिहां वेठाठे कृष्णजी, तिहां आवी हे सखी
 जकुमारके ॥ आरीसो आगे धरी, देखके हे जला
 ज कुमारके ॥ १ ॥ सखीय कहे सुण स्वामिणी,
 न थीर करीहे निज नयन निहालके ॥ जे मन माने
 हरे, लेहने कंठेहे नाखे फूलानी मालके ॥ स० ॥
 २॥ ए अवसर पाम्यो जलो, मत चूकेहे सखी हीए
 च्यारके ॥ द्वारामती नगरी धणी, एतो सनसुख
 वेठा कृष्ण मुरारके ॥ स० ॥ ३ ॥ सोलसहेस नृप
 न प्रते, जसु शेवाहे सारे करजोडके ॥ सोलासहस
 णी घरे, मन मोहनहे सुदंर नही खोडके ॥ स०॥ ४॥
 न खंनो राजीयो, नर सवलाहे माने जसुआण

के ॥ स० ॥ १४ ॥ हंस गमनी इम संचरे, हिवे ति
 हांथीहे आणी उमंग संचके ॥ उलट घट मांही घणो,
 हठ राणीहे देखी पांढव पंचके ॥ स० ॥ १५ ॥ देश
 वास दाशी कहे, रूप जोवन हे पांचे जोधारके ॥
 वरमाला घाली गले, में वरीयाहे पच पांढव चरतार
 के ॥ स० ॥ १६ ॥ जय जय शब्द हुवो तिहां, हरी
 हरख्यो हे जादव राजानके ॥ डुपद नृप मन रंजीयो,
 जस शोना हे गुळ होशे जीहांनके ॥ स० ॥ १७ ॥
 मगल नाद सुहाभणा, शंख वाजे हो घणां ढोल नि
 ज्ञानके ॥ सवरा मंडपथी चल्यां, कमलापति हे नृपती
 राया राणके ॥ स० ॥ १८ ॥ ढाल सतरे सोमी नळी, गु
 णसागर हे अधीक रसालके ॥ पुरये सहु वंठित फले,
 जग मांही हे होसे जस विसालके ॥ स० १९ ॥

ढुहा ॥ पांचे पांढव द्रोपदी, रथ बेशी तिणवार
 ॥ जाइ साथे वागीया, आवी निज दरवार ॥ १ ॥
 आरीम कारीम सहु किया, मंजन करी मन रंग ॥
 चवंरि विच वेठा चतुर, पांचे पांढव चग ॥ २ ॥ राज
 कुमरी शिणगार करी, आपि सहियर साहि ॥ अमी
 य सल्लुणे लोयणे, बेठि चोरी माहि ॥ ३ ॥

ढाल ११८ मी ॥ सोहलानी देशी ॥ सुहव सुहव
 गावे सखरो सुहलोजी, सुणता श्रवण सुहाय ॥ सर
 खी सरखी जोनी एहनीजी, रोहिणी जिम द्विजराज ॥
 सु० ॥ १ ॥ कुमर कुमर अमर रुपे रुयडाजी, पांचे पंडू

कुमार ॥ अपठर अपठर सरखी द्रोपदीजी, परणी प्रेम
 अपार ॥ सु० ॥ २ ॥ याचक याचक दिधी दहणाजी, सुजस
 थयो संसार ॥ अवसर अवसर दान सुहामणाजी, वुठो
 जिम जलधार ॥ सु० ॥ ३ ॥ कींचित कींचित कामणी
 तिण समेजी, हरखाणी हरी हास ॥ सहियर सहियर
 दिठो न सांजल्योजी, पांच पुरुपनो वास ॥ सु० ॥ ४ ॥
 माननी माननी हिवे मन मोकलेजी, वरसे वर दस
 बार ॥ द्रुपदा द्रुपदा जो ए आदर्याजी, वर कुण नी
 वारण हार ॥ सु० ॥ ५ ॥ उत्तर उत्तर आपे महिला
 माननीजी, गरव मकरे हे गिमार ॥ मुनिवर मुनिवर चा
 रण गुण कल्याजी, सतियामें शीरदार ॥ सु० ॥ ६ ॥
 उत्तम उत्तम पात्र संतोखीयाजी, दिधां अढलक दान ॥
 सुकृत सुकृत कीधा एणे कुमरीजी, तिण पामी जग
 मान ॥ सु० ॥ ७ ॥ द्रुपद द्रुपद नृपति कनकनाजी, कर
 मुकावण कोड ॥ माणीक माणीक मणि मोति घणांजी,
 हय गय रथ अठ जोरु ॥ सु० ॥ ८ ॥ दासी दासी जू
 जूआ देशनीजी, सखरो वेश वणाय ॥ कोकिल को
 किल सरखी बोलणीजी, जाणे मनरो जाव ॥ सु० ॥
 ९ ॥ आभ्रण आभ्रण मुगट जडावराजी, कुंडल मो
 ती माल ॥ वाटकि वाटकि नव नव काटकीजी, हाट
 कना पण थाल ॥ सु० ॥ १० ॥ दिविय दिविय पाटण
 निपनीजी जारी सखरे घाट ॥ चामर चामर ठत्र सु
 हामणाजी, चद्रासन जल माट ॥ सु० ॥ ११ ॥ पंच रंग

पंच रंग ढाल्या, ढोलियाजी, पगे पुतली जाण ॥ कोमल
 कोमल माखण सारखी सेजमीजी, रेशम वणिघो वाण
 ॥ सु० ॥ १२ ॥ पटकुल पटकुल हय रथ हार्थीजी, उंशीसां
 अर्जीराम ॥ नलनला नलनला वागा आपीयाजी, दि
 धा वली आठ गाम ॥ सु० ॥ १३ ॥ आप्या आप्या हय
 रथ हार्थीयाजी, संतोप्या सहु तेम ॥ एकसो एकसो
 अढारमी ढालेजी, गुणसागर कहे एम ॥ सु० ॥ १४ ॥

दुहा ॥ हिवे द्रोपदी पंचालीपती, धरणीधरने नेट
 ॥ आपे गजवाजी प्रमुख, दिधे जस होय नेट ॥ १ ॥
 जे पिण विजा राजवी, आया हुता साथ ॥ तेने सहु
 संतोपिया, मोकल करी निज हाथ ॥ २ ॥ कमलाप
 ति सेना सजी, दिध ददामां चोट ॥ राजा सहुको
 चालिया, कोइ नहि मन खोट ॥ ३ ॥ तिण वेळा आ
 ढो फिरी, आयो बहु परीवार ॥ पांडू महिपति विन
 वे, मुणजो कृष्ण मुरार ॥ ४ ॥ कृपा करो मुज उपरे,
 मानो वचन विमास ॥ हथीणापुर पावन करो, मुऊ मन
 पूरो आश ॥ ५ ॥ संघलि मानी कृष्णजी, प्रिती नली
 ते वात ॥ विजे पिण मिलि करी, कीधो हरी संघात ॥ ६ ॥

ढाल ११९ मी ॥ रसियानी देशी ॥ कटक ते कं
 पीलपुरथी चालियो, डेरा बाहिर दीध सलुणी ॥ धज
 स ददामा हो वाजे अति नला, द्रुपद नृप जस लीध
 ॥ स० ॥ १ ॥ चुलणी राणी हो कुमरी नणी कहे, वे
 टी सुण एक शीख ॥ स० ॥ सासु सुसरानो माने क

ह्यो, विण कहे मतचरे शिख ॥ स० ॥ चु० ॥ २ ॥ प्रि
 य पहिली माचाथी उठजे. आलस नाणे अंग ॥ स०
 ॥ धणीय जिमाडी हो तुं जिमजे पढी, मतकरे निच प्र
 संग ॥ स० ॥ चु० ॥ ३ ॥ आख्या विहुमां जिम अत
 र किस्यो, तिम पांचे चरतार ॥ स० ॥ सरीखा गि
 णजे मत अंतर करे, तुऊ सरण्या किरतार ॥ स०
 ॥ चु० ॥ ४ ॥ अरीहंत देव सुगुरु शेवा करे, जि
 न धर्म धरजे चित ॥ सु० ॥ मुखथी मत चांखे वच
 न अजाणतो, जाप जपे धरी प्रित ॥ स० ॥ चु० ॥
 ॥ ५ ॥ निंदा मत करे हो वेटी पारकी, मतकरे मन अ
 चीमान ॥ स० ॥ अवगुण ढांकी गुण प्रगट करे,
 तप करी मतकरे निदान ॥ स० ॥ चु० ॥ ६ ॥ समकी
 त सुधो मनमांही धरे, जिम पामीश शिववास ॥
 ॥ स० ॥ निज परजन सेती मिलती रहे, बोले व
 चन विमास ॥ स० ॥ चु० ॥ ७ ॥ सुधा साध न
 णी आदर करे, देजे अढलक दान ॥ स० ॥ असन
 पान खादम सादिम नला, सुख पामी असमान ॥
 ॥ स० ॥ चु० ॥ ८ ॥ कोह्यो कांचो कडुओ आकरो, नि
 रस लुखो अन्न ॥ स० ॥ पड्यो रड्यो पसुपंखी चाखीयो,
 मत देजे कोइ वन्न ॥ स० ॥ चु० ॥ ९ ॥ रात उघाडो र
 ह्यो जे सुखडो, विणठो नावे काम ॥ स० ॥ स्वादहिन
 मत देजो साधुने, जोजे ठाम कुठाम ॥ स० ॥ चु० ॥ १० ॥
 पाती नेद मतकरजे जिमण समे, मरम मत बोले मूल

॥स०॥ अंतराय मत करजे धर्मनी, राजमत देखे चून
 ॥स०॥ चु०॥ ११॥ मात तात निज आत सचारजे, म
 करे चित्त अदोह ॥ स०॥ कुशल खेमरो कागल मोक
 ले, धरजो प्रियसु मोह ॥ स० ॥ चु० ॥ १२ ॥ रुदन
 करे नृप कुमरी चालता, आंसु लहे मात ॥ स० ॥
 बेटी गुण पेटी तुं माहरी, संचारीस दीन रात ॥ स०
 चु० ॥ १३ ॥ मिलणो सुख विठडणो दोहिलो, मात
 पिता करे विलाप ॥ स० ॥ फिर मिलणो जो पुण्य घ
 णो हुवे, तो दुणो सुख थाय ॥ स० ॥ चु० ॥ १४ ॥
 जिम तिम शिख करी माता कहे, बेटी थाय असूर
 स० ॥ जाइ साथे आवे ताहरे, हथीणापुरठे दूर ॥
 स० ॥ चु० ॥ १५ ॥ माताने पगे लागी द्रोपदी, रथे
 वेठी तिणवार ॥ स० ॥ तिहांथी राणी आमण दुमणी,
 आवे महील मजार ॥ स० ॥ चु० ॥ १६ ॥ नयन
 करे जिम जल धर उमीयो, पामे रती न लिंगार
 ॥स०॥ खिण खिण माही बेटी सांजरे, विरह बुरो सं
 सार ॥ स० ॥ चु० ॥ १७ ॥ दाशी दास मिलीने विन
 वे, राणी सोग नीवार ॥ स० ॥ कुमरी वेगे तुम घर
 आवशे, दिन दस जिम तिम सार ॥ स० ॥ चु० ॥
 ॥१८॥ राणी ठाम करी मन आपणो, बड्ठी पिण दि
 लगीर ॥ स० ॥ सां माजी माजी कहती मुज द्रोपदी,
 मात कहे कुण वीर ॥ स० चु० ॥ १९ ॥ हथीणापुर्
 चणी सहु राजवी, चाल्या सेन्या लेय ॥ स० ॥ पाय

लागी द्रोपदा हिवे कृष्णने, कुमरीने शिख देय ॥ स० ॥
 चु० ॥ २० ॥ पंडु महीपती, सेती हली मिली, सगप
 ए राखण सच ॥ स० ॥ द्रुपद राजा निज पुर आवी
 यो, मिलीने पांश्व पंच ॥ स० ॥ चु० ॥ २१ ॥ गजपुर
 नगर सिणगारयो चिहु दिशे, मिलीया लोक अपार
 ॥ स० ॥ उन्नी टोले टोले गोरडी, गावे मंगल च्यार ॥
 स० ॥ चु० ॥ २२ ॥ उठव मोहठव विविध प्रकारशुं,
 जोतां अचरिज कोरु ॥ स० ॥ अनुक्रमे आया निज
 महीलमां, पंडू सूतनी जोरु ॥ स० ॥ चु० ॥ २३ ॥ पं
 डू नृपती सहु राजा नणी, संतोखी सुखदाय ॥ स०
 ॥ करी विविध प्रकारे पेरामणी, निज कुल शोच च
 ळाय ॥ स० ॥ चु० ॥ २४ ॥ विनय करी पगे लागी
 द्रोपदी, सहुने दिधी शीख ॥ स० ॥ नृपति पोहोता नि
 ज निज स्थानके, मारग खाता इख ॥ स० ॥ चु० ॥
 ॥ २५ ॥ कुंति मन हरखीत हुइ घणी, लागी बहुअर
 पाय ॥ स० ॥ पुत्रवांति होजे तुं बहु, ए आशीप सो
 हाय ॥ स० ॥ चु० ॥ २६ ॥ नीत नीत नवला रंग वधाम
 णां, नव नव मंगल माल ॥ स० ॥ गुणसागर सूरि पुण्ये
 लह्यो, एनुणविस सोमी ढाल ॥ स० ॥ चु० ॥ २७ ॥
 चोपइ ॥ खंड खंड रस ठे नव नवो, सुणतां सीठां
 साकर जेवो ॥ श्री हरी वंश चरित्र जय जयो, ठठो
 खंरु ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति श्री साळसागरे श्री
 हुरीवंश चरित्र वर्णनो नाम शष्ठमो खंड समाप्तः ॥

अथ ढालसागर श्री हरिवंश चरित्र सातमो खंड प्रारंभः

दुहा ॥ साधु नमु सुरतरु समा, वंछित फल दा
 तार ॥ अब सप्तम अधीकारनो, नविक सुणो विस्तार ॥ १ ॥ जग्गी श्री मणिचूडनि, खेचर कियो अपहार ॥ अर्जुन हुवा वाहरु, वेहुडावि तिणवार ॥ २ ॥ शु
 रवीर गुण आगलो, पारथ प्रबल प्रताप ॥ देखी पांडू
 प्रथविपती, विरूमय पाम्यो आप ॥ ३ ॥ धर्म नंद
 धरमात्मा, नृप पदवि थापंत ॥ सकल घरानि साहि
 वी, आपण पे पामत ॥ ४ ॥ अंबर जिय दिनकर क
 री, ध्वज करी देखल जेम ॥ युद्धिष्ठिर राजा करी, प्रथ
 वी शौची तेम ॥ ५ ॥

ढाल १२० मी ॥ हमीरानी देशी ॥ प्रथवी रसवंती
 खरी, तरुवर अधिक फलतारे ॥ दूध घणो सुरची त
 णो, मांग्या घन वरसंतारे ॥ १ ॥ धरम राजा जग जा
 ण ए ॥ ए आंकणी ॥ लाज घणो व्यापारमें, चाकर
 बहुला आसारे ॥ जीहुकने जीह्या घणी, न रहे को
 इ निरासारे ॥ ध० ॥ २ ॥ पुत्रवंती तो कामनी, सुहा
 गण सोजागोरे ॥ जोर जलाइ आदरे, घर घर दिजे
 तागोरे ॥ ध० ॥ ३ ॥ बेटा माने वापने, पूजे मायना
 पायोरे ॥ गुरुने माने चेल्या, वरते निरतो न्यायोरे
 ॥ ध० ॥ ४ ॥ इति अनिति नको तिहां, अवर नको
 विपरितोरे ॥ बहु जगती सासु तणी, सोक्या माहि
 श्रीतोरे ॥ ध० ॥ ५ ॥ पाप हणवे हिंसका, कुठ शिलने

जंगरे ॥ चित्तह हरवे चोरटा, परीग्रह पुण्य प्रसंगेरे
 ॥ ध० ॥ ६ ॥ क्रोधी कापण कर्मने, मानी मोडण मो
 होरे ॥ माया शीवने साधवे, लोनी गुण संदोहोरे ॥
 ॥ ध० ॥ ७ ॥ वृद्धी करवा देवले, के सुनीवर के हाथे
 रे ॥ दंड देखाइ वे सहि, दंड न लोगा साथोरे ॥ ध०
 ॥ ८ ॥ ठात्र पात्र तामणो, अवर न ताडन जीडोरे ॥
 बंधन वेणी कंचुकी, अवर न बंधन पिडोरे ॥ ध० ॥
 ॥ ९ ॥ थाक चडे करतां क्रिया, अवर न थाक प्रका
 शोरे ॥ कलह तो करणी तणो, अवर नहि कलिका
 शोरे ॥ ध० ॥ १० ॥ सुकृतनो लंपट पणो, अवर न
 लंपट कोइरे ॥ अशुच तणो अणजाणवो, अवर अ
 जाण मत जोइरे ॥ ध० ॥ ११ ॥ पासो तो दिसे घरु,
 अवर न कोइ पासेरे ॥ सुखम आरो आवियो, सर्व वि
 धी सुखवासेरे ॥ ध० ॥ १२ ॥ नीम आदे चारे चढ्या,
 हयवर गयवर गाजोरे ॥ पायक परिग्रह सामटो, दुर्ज
 न पाया लाजोरे ॥ ध० ॥ १३ ॥ आण मनावी आपणी,
 असमान मावण नामोरे ॥ प्रथवी पांरुव रायनी, दि
 न दिन प्रते अनिरामोरे ॥ ध० ॥ १४ ॥ धन कण कंच
 न कोसजी, हिरा लाल प्रवालारे ॥ मणी माणीक मो
 ती घणा, मेल्यो माल रसालारे ॥ ध० ॥ १५ ॥ एहि
 हेते विचारवे, वहिन सुन्नद्रा नामोरे ॥ परणावी अती
 नेहथी, अर्जुनने अनीरामोरे ॥ ध० ॥ १६ ॥ बंधु समा
 समा, पायक समा सकाजोरे ॥ मित्र समा जाइ

समा, सुखमे पाले राजोरे ॥ ध० ॥ १७ ॥ विद्याधर
मणीचूडजी, पाले मित्राचारोरे ॥ सजा सुधर्मा सार
खी, सजा समरावे सारोरे ॥ ध० १८ ॥ मणी थंज
मुहामणा, सोवन जांतिसु चंगोरे ॥ चंद्रोदय चतुरा
इए, दिसे सोह सुचंगोरे ॥ ध० ॥ १९ ॥ विविध प्र
कारे पूतली, विविध जातीको कामोरे ॥ विविध प्रका
रं कोरणी, विविध जाति चित्रामोरे ॥ ध० ॥ २० ॥
सिंघासण मांमयो जलो, बेसाडी तिहां रायोरे ॥ पूजा
प्रणमी जावशुं, खेचर उरण थायोरे ॥ ध० ॥ २१ ॥
हरी हलधर बोलाविद्या, मोठा दसहि दसारोरे ॥ द्रु
पद प्रमुख वमा राजीया, आया नूप उदारोरे ॥ ध०
॥ २२ ॥ वेठा जचे आसणे, राजा राजकुमारोरे ॥ रूप
अने प्रतीरूपशुं, पामे शोजा अपारोरे ॥ ध० ॥ २३ ॥
एतले तेडो आवीयो, दुर्योधन नूपालोरे ॥ जादव पां
डव पेखीया, वेठा जाक ऊमालोरे ॥ ध० ॥ २४ ॥
आवे वसन संवाहतो, मणी आंगणे जल जाणोरे ॥
कृद्यो रूफाटिक उपरे, अंबरनि मति आणोरे ॥ ध०
॥ २५ ॥ नडक मारयो चीतसुं, प्रतिरूपामें जायोरे ॥
करे जुहार युक्तिशु हांशी हिये न समायोरे ॥ ध०
॥ २६ ॥ दुर्योधन खिज्यो घणुं, पांमव कटक विचारिरे ॥
रिस वीसारी सहु जणि, मिलिया बांह पसारोरे ॥ ध०
॥ २७ ॥ उठव कीधी अति घणो, विलरयां बहुलां वि
तोरे ॥ रंग वध्यो राजा नणी, धन दिन एह पवितोरे

॥ ध० ॥२८ ॥ हरि हलधर आदे करी, साजन मांहि
 सनेहोरे ॥ दुर्योधन सनमानीयो, पोहता निज निज
 गेहोरे ॥ ध० ॥२९ ॥ बीसोत्तर सोमी ढालमें, प्रिती त
 णो अधीकारोरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, धर्म सदा
 जयकारोरे ॥ ध० ॥ ३० ॥

दुहा ॥ दुर्योधन कहे तातसुं, मुख मिठा चित्त
 कूड ॥ पांढव कपटी परगडा, रण कायर घर सूर ॥
 ॥ १ ॥ यादव जोर विचारवे, मनसे आणी गुमान ॥
 मुऊसु हशिया हांसते, साले साल समान ॥ २ ॥
 जिणशुं तेष प्रकारशुं, को करी दाय उपाव ॥ जोमी
 ठंकावुं पांडवा, तो हुं राया राव ॥ ३ ॥ इम विचार
 करतां थका, जाइ संघला ताम ॥ एहवे तिहां कण
 आवीयो, मामो शकुनी नाम ॥ ४ ॥

ढाल १२१ मी ॥ हुं तुम साथे न बोलुं ऋपञ्जरी
 ॥ ए देशी ॥ ताम दुर्योधन राय बोलावे, मामाने हेत
 आणीजी ॥ मुख नीसासो मूकी चांखे, वैरी तणो व
 ल जाणीजी ॥ १ ॥ मननो मैलो अधिक कुशेलो, कौ
 रव कपटी पूरोजी ॥ धन जन वाह तणे बले बलीयो,
 ठलबल करवा सूरोजी ॥ म० ॥ २ ॥ पांडव सचानी
 शोचा देखी, मुऊ हुवे दुःख अपारोजी ॥ वली पांडव
 ने पंचाली हंशीया, कियो अंध तणो कुमारोजी
 ॥ म० ॥ ३ ॥ शकुनी कहे पहेलुं नवी किधु, वधती
 वैरी वेलजी ॥ मूल थकी जो वेदत एहने, तो पामत जस

केलजी ॥ म० ॥ ४ ॥ हिवे पांडव साथे नवी चाले,
 एहनो सबलो साथजी ॥ जाइ पंच मांहोमांही संचे, हेत
 घणो हरी नाथजी ॥ म० ॥ ५ ॥ एक उपाव अठे मुऊ आग
 ल, देव पासा सुख दायजी ॥ देश ठंभावुं जीसि कपटे,
 जुवा खेलावी रायजी ॥ म० ॥ ६ ॥ इम विच्यार करी
 पिताने, हरख्यो मन राजानोजी ॥ शकुनी नेद पासा
 नो जाणे, माने माहरुं मानोजी ॥ म० ॥ ७ ॥ पांढव
 ने तुमे आंही तेभावो, विदुर मोकली तातजी ॥ सजा
 रचीने द्यूत रमाडुं, चाले वन विख्यातजी ॥ म० ॥ ८ ॥
 सजा करावी द्रव्य लगावी, शोचानो नही पारजी ॥ प
 धरावी सिंघासण मांड्यो, उठव विविध प्रकारजी ॥
 ॥ म० ॥ ९ ॥ तेनी हरी हलधरने पांडव, तेड्या दशे
 दस्यारजी ॥ बहु सनमानी पांडव साथे, पोखे प्रेम अ
 पारजी ॥ म० ॥ १० ॥ हुवो प्रात सजामां आयो, दु
 र्योधन नूपालजी ॥ शत धात सुनट संघाते, सेन्या स
 वि संजालजी ॥ म० ॥ ११ ॥ पायक पोताना सघला मे
 ल्या, योध तणे त्यां द्वारजी ॥ आयुध कवच टोप तनु
 सजीया, आया सजामकारजी ॥ म० ॥ १२ ॥ गाम
 गामथी तुरंगम आवे, मदगल ताजा तंगजी ॥ जनी
 त पाखर ऊलके अंग मांही, नामे शिश मन रंगजी
 ॥ म० ॥ १३ ॥ निपम द्रोण कर्ण दुःशासन, शकुनी
 सबळ सुत एहजी ॥ ऋपाचार्यने अश्वथामा, वाहीक
 अति वल देहजी ॥ म० ॥ १४ ॥ सजा मध्य नड र

ह्यां तरवारी, युद्ध जाणी तिहां प्रौढजी ॥ गडे निशाण
 गंजीर स्वर वाजे, जोइ विदुर थयो दंग मूढजी ॥
 ॥ म० ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र सजा मध्ये बेठा, पाठल सह
 राय राणजी ॥ तिणे समे पांडव पधारथा, जिम नि
 शा प्रगटीत जाणजी ॥ म० ॥ १६ ॥ पांडवने सर्व स
 जा देखासी, जोइ थया रलीयातजी ॥ प्रिती करी दु
 र्योधने काढी, द्युत क्रिमानी वातजी ॥ म० ॥ १७ ॥ आ
 पणे रमीए इहां वेहु जाइ, रमत सजामांहि वेठाजी ॥
 जिम अर्जुनने सहदेव तिहां, नकुल चिंता मांही पे
 ठाजी ॥ म० ॥ १८ ॥ युधीष्टीर कहे सुणो दुर्योधुन, ठे
 द्युत राजवी कर्मजी ॥ परनारी संग पशु वध करवो, ए
 महंत तणो नही धर्मजी ॥ म० ॥ १९ ॥ हशी बोल्यो
 राय दुर्योधन, सत्य कहु धर्मरायजी ॥ क्षत्री तणो ध
 र्म द्युत आखेठक, करतां सुखे दिन जायजी ॥ म०
 ॥ २० ॥ बलतु वचन कह्युं जलुं रमशुं, कुणे न रा
 ख्या वारीजी ॥ अर्जुननुं अजिमान न राख्युं, थइ वे
 ठा जुहारीजी ॥ म० ॥ २१ ॥ दुर्योधन दुःशाशन शकु
 नी, मिली कर्ण कुमती एहजी ॥ पांडव प्रते वायक जां
 खे, सजा सुणतां तेहजी ॥ म० ॥ २२ ॥ कांयक होड
 वदीने रमीए, तो ते जलट थायजी ॥ जे कांइ होड क
 रो ते आपुं, इम जांखे युधीष्टिर रायजी ॥ म० ॥ २३ ॥
 डावमें शुं आपवं, कहो युधीष्टिर रायजी ॥ स्व
 पलाण सहित ए घोडा, आपुं मुख केहेवायजी ॥

१ म० ॥ २४ ॥ प्रथम नाव नाख्यो राजाए, बोल्यो श
 कृनीआराजी ॥ जित्यो ए दुर्योधन राणो, पांडु तणा सु
 त हारयाजी ॥ म० ॥ २५ ॥ अरिने डावे जुवो खेलावे, वि
 दुर तणे नही सारेजी ॥ हयवर गयवर रहवर पुरवर,
 राज अने त्रिय हारेजी ॥ म० ॥ २६ ॥ राज सघलो करी
 आपेवस्य, पंचाली तेरावेजी ॥ निरजय थइ नम चा
 त्या वेगे, पंचाली मंदिर आवेजी ॥ म० ॥ २७ ॥ पर
 मुरुप दिठा आवतां, घरमां पेठी नारीजी ॥ दाशीए
 तेहां राख्या वारी, नवी लोपीजे कारजी ॥ म० ॥ २८ ॥
 फिरी पाठा आया सुनट, स्वामी अबला नावेजी ॥
 नांखे दुर्योधन मत्तर धरतो, ए परोहितथी शुं थावे
 जी ॥ म० ॥ २९ ॥ उठ दुःशासन जातुं वेगे, लाव्य नारी
 मुऊ पासेजी ॥ ते दिन सुतुं विसरयो नाइ, सहु देखतां
 किधी हांशीजी ॥ म० ॥ ३० ॥ रोस नख्यो दुःशासन राणो,
 आवे करत आवाजजी ॥ देखी द्रोपदी आंसु ढाले, शि
 रहेशे मुऊ लाजजी ॥ म० ॥ ३१ ॥ नणे दाशी मोटा तु
 म राणा, अबलाशुं सो प्राणजी ॥ मेरुकि मत तजे मर
 जा ॥ आनो वचन राजानजी ॥ म० ॥ ३२ ॥ चरण प्र

जारजी ॥ राजा सह मुने देखशे अंगे, किम रहेशे मु
 ज आचारजी ॥ म० ॥ ३५ ॥ नारी चिते हवे किम
 होस्ये, हारठे मुऊ कंतजी ॥ कुण जिवता मुऊने ताणे,
 सही थयो कलपंतजी ॥ म० ॥ ३६ ॥ गागेयने गुरु
 द्रोणाचारज, बेठा सह राजानजी ॥ सत्ता विच दुय्यो
 धन आगे, उची राखी आणजी ॥ म० ॥ ३७ ॥ क
 हे दुःशासन वेसो खोले, निठकरी मे लाचीजी, थारी
 ते गम फिरियो पाणी, खीजवशे कहे चाचीजी ॥ म०
 ॥ ३८ ॥ रिसाणो दुःशासन राणो, खेंचे चिर अजा
 णजी ॥ गुणसागर सो एकवीसमी ढाले, होशे सत
 परमानजी ॥ म० ॥ ३९ ॥

दुहा ॥ मेलो पालव कहे प्रेमदा, तव बोले इम गा
 ज ॥ बांडो पटराणी पणो, पढी करजो लाज ॥ १ ॥
 तुं हंशीथी मुऊने, आज थइ आधीन ॥ लाज न रा
 खुं ताहरी, इम चांखे मती हीन ॥ २ ॥ कुबुधी वचन
 इम सांचली, कंत सामु जोवे नार ॥ नीम थयो तव
 रातडो, वारे धर्म कुमार ॥ ३ ॥ आज जो होइ पुण्य
 आपणां, तो किम हरीए विर, ते माटे नवी बोलवो,
 राखो समता धरी धीर ॥ ४ ॥ अबला हुइ अनाथ
 णी, उलट्यो दुःख अगाह ॥ ढांकी अंग तनु कंपती,
 नयणे नीर प्रवाह ॥ ५ ॥

ढाल १२२ मी ॥ शिखल सरु तरुवर शेवीए ॥ ए
 नेनी ॥ कुण पत राखे माहरी, कोप्यो दुरीजन काल

हो ॥ आवो धावो उतावलां, सियल तणा रखवाल
 हो ॥ कु० ॥ १ ॥ परमेष्ठी मन ध्यावती, जिनशास
 न शीर ताज हो ॥ दुष्ट तणे हाथेपडी, गोडावो मुऊ
 आज हो ॥ कु० ॥ २ ॥ गांगेयने गुरु देवतां, आणी
 ग्रहि जिम चेरि हो ॥ दुरमती आइ ए सहने, किण
 हिन पाठि फेरी हो ॥ कु० ॥ ३ ॥ पांच पति शीर
 माहरे, पिण नविडळ्या कोइ हो ॥ मानी मान महाव
 लि, बेठा निचुं जोइ हो ॥ कु० ॥ ४ ॥ हाक वागी पु
 र शेहेरमां, करे किसुं किरतार हो ॥ पांडव केरी प्रेम
 दा, लुंटे सजा मजार हो ॥ कु० ॥ ५ ॥ दुष्ट दुःशा
 सन खेंचियो, द्रोपदी चिर चतुर हो ॥ आवी ताम उ
 ना रह्या, सानिध्यकारी सुर हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ चीर
 अमुलख दुसरो, ढांक्यो सती शरीर हो ॥ ते पिण खें
 च्यो तिसरो, पूरयो नवरंग चीर हो ॥ कु० ॥ ७ ॥
 देखो रांड कपटणी, पहिरयां जाजां चीर हो ॥ ल्यो
 उतारी वेगसुं, कहे दुःशासन वीर हो ॥ कु० ॥ ८ ॥
 इम अनुक्रमे पूरियां, आठोत्तर सो परम हो ॥ शील
 प्रभावे राखियो, सजा मांहे शर्म हो ॥ कु० ॥ ९ ॥
 श्वेत निलां रातनां, नारी कुंजरवान हो ॥ एक एक
 पे रंग आगला, पूरयां श्री नगवान हो ॥ कु० ॥ १० ॥
 जैजैकार देवे कियो, सतिय तणो सत जाण हो ॥
 दुष्ट दुःशासन जांखो पड्यो, हुवो अधीक खिसाण
 हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ नीपम जाखे नूपति, नीम अर्जू

न बलवन्त हो ॥ आण न लोपे राजा तणी, नहि तो
 आणे तुम अंत हो ॥ कु० ॥ १२ ॥ सती घणुं नवि ठे
 नीए, एहने सीयल समर्थ हो ॥ नारी पांश्व कने मो
 कलो, नहिंतर थाशे अनर्थ हो ॥ कु० ॥ १३ ॥ विदुर
 कहे में पेलुं कहुं, आचरतां परपंच हो ॥ आगले अ
 नर्थ नीपजे, जो जो एहना संच हो ॥ कु० ॥ १४ ॥
 कौरव कामनी ररुवडे, रोति वनमजार हो ॥ तो सा
 हरुं कहुं नानजो, जो सत होय संसार हो ॥ कु० ॥
 ॥ १५ ॥ धृतराष्ट्र सुत आंधला, हियडुं फुट्युं आज
 हो ॥ सती वीटवी शुं कियो, खोइ सचामे लाज हो
 ॥ कु० ॥ १६ ॥ होइ जांखो राजीयो, ठोडी द्रोपदी
 नार हो ॥ पंचाली जग परगटी, सतिय सिरोमणी
 सार हो ॥ कु० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ वरस बार वनमां वसे, नष्ट चर्या ए एक
 ॥ दुर्योधन कहे पांडु सुत, वली कहुं वात विवेक ॥
 ॥ १ ॥ बतां पडे जो वरसमां, तो फिरिने वनवास
 ॥ बार वरस लगे जोगवे, एठे माहरी जाष ॥ २ ॥
 आज्ञा ते अंगी करी, द्रोपदी वांधव लेह ॥ युद्धीष्टी
 र गजपूरे आवीयां, गुरु प्रणमि ससनेह ॥ ३ ॥ प्रेमे
 नमी मां बापने, विरम्या ते तेणीवार ॥ युद्धीष्टीरे मां
 की कियों, वात तणो विस्तार ॥ ४ ॥

ढाल मूलगी तेहीज ॥ सारी मान महाबलि, चा
 लियां वन श्वात हो ॥ शिख करवा आविया, जिहां ठे

कृता मात हो ॥ कु० ॥ १८ ॥ आगल आवी नामी
 यो, माताजीने शीस हो ॥ आज पुत्र में सांजल्युं, दु
 हवाणा तुम दिश हो ॥ कु० ॥ १९ ॥ हुं आवीश तु
 म केडले, मेंतो घडी न रहेवाय हो ॥ पुत्र पाखे माथ
 भी, तोले हिणि थाय हो ॥ कु० ॥ २० ॥ एतले विदु
 र आवीया, माजी कहे एम वाण हो ॥ राजा तुमने
 ए शुं थयो, हूता अधीक सयाण हो ॥ कु० ॥ २१ ॥
 विदुर कहे हुं शुं करुं, माहरुं कांड न थाय हो ॥ भागे
 य द्रोण ए दुःख धरे, पिण दुष्टने न केहवाय हो ॥ कु०
 ॥ २२ ॥ माजी मेलो इहां किणे, रेहशे अमारे पास
 हो ॥ राजा जीपम जणावीने, तम्हे चालो वनवास
 हो ॥ कु० ॥ २३ ॥ शिख आपी निज नारीने, रेहेज्यो
 माजी पास हो ॥ सेवी तृप्या अरु चूखनी, दुःख घ
 णो वनवास हो ॥ कु० ॥ २४ ॥ केम रहेवाथे मुऊथी,
 वैरी वहुलो साथ हो ॥ लाज न राखी साहरी, इणे
 ग्रह्यो मुऊ हाथ हो ॥ कु० ॥ २५ ॥ वेश खोले कहे मु
 ऊने, सांजलतां तुम कंत हो ॥ जो मुऊने नवि तेडशो,
 तो आणीश मुऊ अंत हो ॥ कु० ॥ २६ ॥ चाले सा
 थे प्रेमदा, सासुने पगे लाग हो ॥ नाता पिण साथे
 हुइ, नहि रेहवा मुऊ लाग हो ॥ कु० ॥ २७ ॥ बडा
 तणे पगे लागीने, तात तणी लेइ शिख हो ॥ पां
 डव वनमें चालिया, धरी मन समता इख हो ॥ कु०
 ॥ २८ ॥ वाविस सोमी ढालमें, कौरव कीधो कोप हो ॥

श्रीगुण पांडव नवी करे, मरजादानो लोप हो ॥ कु० ॥ २९ ॥

दुहा ॥ बिहावे अति द्रोपदी, कुर अने करभिर ॥ दि
या जमाइ पान ज्युं, पांम्व जीम समीर ॥ १ ॥ विदु
र विबुध गुरु सारिखो, देइ शिख विशेष ॥ पोहचावी
पावो वल्यो, आंसु ढाले अशेष ॥ २ ॥ धृष्टदुमन आ
नो फिरी, कंपिलपुर आणंत ॥ खबर तदा वनवासनी,
यादवपति जाणंत ॥ ३ ॥

ढाल १२३ मी ॥ हे जादु ऊगमग जोति सुहावे
॥ ए देशी ॥ ते वात सुणी माय वापनेरे हां, नयणा
न माये नीर ॥ मे एक कुंताने पांडुएरे हां, धरुं न जा
ए धीर ॥ मेरे साजना सांचलजो सहु कोय ॥ १ ॥ मौ
नपणो मुखे आदरिरे हां, पांडु न बोले बोल ॥ धर्म
पुत्र धीरज धरिरे हां, तव करे थइ अमोल ॥ मे० ॥
॥ २ ॥ खेदने खरखरो मत करोरे हां, तातजी अमे
वन जाय ॥ सत्य प्रतिज्ञां पालसुरे हां, वधस्ये तव म
हिमांय ॥ मे० ॥ ३ ॥ सुपुरुष न राचे राज्यनेरे हां, राज्य
जाए तो जाउं ॥ सुख दुःख वनथले बेठिएरे हां, पि
ण एक वचन मत जाउं ॥ मे० ॥ ४ ॥ धैर्य धरिनें ता
तजीरे हां, आपो अम आदेश ॥ बोल न बोलाए दुखे
रे हां, रोक्यो कंठ प्रदेश ॥ मे० ॥ ५ ॥ हा ना कांड
न करी शकेरे हा, वितक जाणिने तेहा ॥ वांधव पांचेने द्रौ
पदिरे हां, वने चाल्या तजी गेह ॥ मे० ॥ ६ ॥ पंडुकुं
तिने अंबिकारे हां, अंबाने बाला आद ॥ आंसु जले

नूप सिंचतारे हां ॥ केडे थयां लाहि विखवाद ॥ मे०
 ॥ ७ ॥ ते पांचे पुरथी निसरयारे हां, तव नगर थयुं
 निस्तेज ॥ जीव जते पचेंद्रि विनारे हां, तनुनुं न र
 हेम तेज ॥ मे० ॥ ८ ॥ युधीष्टीर मावित्रने नमिरे
 हां, बोले एहवा बोल ॥ प्रतिज्ञा अम पालतारे हां,
 धशे तुमारो तोल ॥ मे० ॥ ९ ॥ सुपुरुपने मान धन
 रे हां, रखे धरो मन खेद, धर्म सदा दिल धारयोरे
 हां, ते साधे अनेक उमेद ॥ मे० ॥ १० ॥ मातजि मो
 ह तणे वशेरे हां, परवश थाए प्राण ॥ विर पलि वि
 र मातनुरे हां, अरिहंतनि वहियो आण ॥ मे० ॥ ११ ॥
 अम तात तणि तक साधयोरे हां, सेवजो गुरुनां पा
 य ॥ आशिप देवो अमनेरे हा, जेहथी विघन पलाय
 ॥ मे० ॥ १२ ॥ एम अश्वासी सर्व स्वजननेरे हां, पु
 रिजन साहमुं जोय ॥ कांड करी होय अमे किलामना
 रे हां, ते खमजो सहु कोय ॥ मे० ॥ १३ ॥ नींतर ते
 नयणे बल्यारे हां, तव सहु पुरना लोक ॥ पिण पग नवि
 चाले पुर जणारे हां, सहुने बाध्यो शोक ॥ मे० ॥ १४ ॥
 गुणसागर कहे सांचळारे हां, ढाल अति रसाल ॥ वि
 सारया न विसरेरे हां, बाहलां कोइ काल ॥ मे० ॥ १५ ॥
 ढाल तेहिज ॥ वधावानी देशी ॥ कृष्ण नरेसर
 आवियो, कांड आयो हो आयो बहु परीवारशुं ए ॥
 पांडव साथे बोलियो, कांड बोल्यो हो बोल्यो सकल
 प्रकारशुं ए ॥ १ ॥ कौरव कूटि काडिए, कांड काडि

हो काठि दिजे देशथी ए ॥ राजाजीने थापिए, कांइ
 थापी हो थापी शुं विशेषथी ए ॥ २ ॥ पांडव बोले
 स्वामीजी, कांइ स्वामी हो स्वामी वनमें चालवो ए ॥
 बोल न चूक्यो आपणो, कांइ आपणु हो आपणु वो
 ल्यो पालवो ए ॥३॥ देव प्रसादे तुम्हारडे, कांइ तुम्हारे
 हो प्रसादे सहु पाधरु ए ॥ होशे कारज सुंदरुं, कांइ
 सुंदरु हो सघलुं कारज सादरु ए ॥ ४ ॥ बाइ सुज
 द्रा पुत्रशुं, कांइ लेइ हो पोहोच्या प्रभु द्वारा मती ए ॥
 पंचाली पीहरीए, कांइ पीहरीए हो पीहरीए न रहि सति
 ए ॥५॥ साते माणस संचरे, कांइ संचरे हो चूख अने
 त्रप अवगणी ए ॥ माता पुत्र सनेहडे, कांइ नेहडे हो
 राची नारी अति घणी ए ॥६॥ दिवस केतलाने आंतरे,
 कांइ आंतरे हो पुरोहित पाव धारीयो ए ॥ मोकलियो
 कौरव तणो, कांइ कौरव हो कौरवनो हितकारियो ए
 ॥७॥ जांखे देव दया करो, कांइ दया हो वनवासे मति
 संचरो ए ॥ खमो अपराध अमारडो, अमारो हो मानेवो
 कह्यो खरो ए ॥८॥ इंद्र प्रस्था नामे जलो, पुर आव्यो हो
 कीधी गाढी विनति ए ॥ बइठा तुम सुख जोगवो, जो
 गवो हो मानो हमारी वीनति ए ॥ ९ ॥ धोलो दूध
 विचारी ए, विचारी हो आया वारिणा वति ए ॥ ला
 ख घरे उतारीया, कांइ उतारीया हो जाइ मति घटीया
 रति ए ॥ १० ॥ विदुर कियो उपगार हे, उपगार हो
 सुरग वणावी पडवडी ए ॥ कागल मांही जणावीयो,

जणाव्यो हो अरीम पती जोयुं धनी ए ॥ ११ ॥ प
 यशी पेट, दुखदायकु, दुखदायक हो कंस तणी परे जो
 इस्यो ए ॥ गाफील खिजे वडवमा, कांड तेहथी हो हु
 शीयारीमें होइज्यो ए ॥ १२ ॥ फागुण कालीचउदश,
 मध्य राते हो करशे तुम्ह सुकुहडो ए ॥ देशी आग
 उतावलो, ए ब्राह्मण हो ब्राह्मण नहीं चुहडो ए ॥ १३ ॥
 पंच पुत्रमु डोकरी, कांड वहशुं हो रातवसा सुख नि
 रमली ए ॥ आग जगी फीरी पांडव पुल्या, सा बुडी हो
 बेटा वहशुं परजली ए ॥ १४ ॥ ज़ीमे जुजावल साही
 यो, साहीयो पुरोहित हजुरमां जालीयो ए ॥ पांडवजी
 उवारीया, कांड काकेहो एह उपद्रव्य टालीयो ए ॥
 ॥ १५ ॥ लोक मिली हाहा करे, कांड हुयो हो एह अ
 कारज अति घणो ए ॥ कौरव तो अति कुरलीयो,
 कांड लोगामे हो दोश उतारण आपणो ए ॥ १६ ॥
 संक कौरवनी खरी, कांड पांडव हो नाठा जाइठे सही
 ए ॥ गिरे पदे ने आखडे, कांड जाणे हो दिन रात
 जावे वही ए ॥ १७ ॥ द्रुम गिरीने वन नदी, विसामो
 हो नवी लीए शका परहरीए ॥ दर्जाकुर पग विधी
 ए, कांड विंधे हो कांटा खंचे कांकरीए ॥ १८ ॥ थाकी
 माता अति घणी, कांड थाकी हो पंचाली पग नवी
 जरे ए ॥ नकुल अने सहदेवजी, कांड थाक्या हो चा
 लवाने आलस करे ए ॥ १९ ॥ एक खंधोले माथनी,
 कांड चोहडीहो बिजे खंधोले बहु ए ॥ बंधव होइ वां

धोया, कांइ पुठे हो समरथथी होवे सहु ए ॥ २० ॥
 राजा अर्जुन कर धरी, कांइ चाल्यो हो चाल्यो मार
 ग वंकनो ए ॥ माणस पट नीर बाहीयां, काइ जाइ
 हो जाइ सुखमें नीमडो ए ॥ २१ ॥ तेवीसा सोमी ढा
 लमें, कांइ टलीयो हो टलीयो उपद्रव्य धर्मथी ए ॥
 श्री गुणसागर सुरिजी, कांइ होशे हो होशे सुख सु
 न कर्मथी ए ॥ २२ ॥

दुहा ॥ विपम पंथ बोली करी, पहुता निश्चल ठा
 म ॥ साथ सुइ सुखमें सहु, नीम चल्यो जल काम
 ॥ १ ॥ सरोवर जल लेइ वल्यो, पठे लागी ताम ॥
 तिष्ट तिष्ट मुख जांखती, जास हेडंवा नाम ॥ २ ॥
 आवीथी मारण नणी, पिण पती करवा काज ॥ वि
 नय करी करजोमीने, आगे उनी लाज ॥ ३ ॥ नीम
 नणे सुण नामनी, तुमे प्रकाशो आप ॥ राखसना
 म हेमंबनी, वहीन अबुं सकलाप ॥ ४ ॥ तुम हणवा
 हुं मोकली, हुं मोही तुम देख ॥ प्रनु हुशीयारी कि
 जीए, राक्षस जोर विशेष ॥ ५ ॥ व्याहो मुऊ प्राणे
 श तुम, हुं तुम दाशी समान ॥ वनवाशे खिजमत करुं,
 जिम वाधे मुऊ वान ॥ ६ ॥ वनवासे शुं व्याहवुं, जा
 खे नीम कुमार ॥ आडंबर आपे अवसरे, करत न
 शोच लिगार ॥ ७ ॥

ढाल १२४ मी ॥ योगननी देशी ॥ वात करंता
 नली चाली, राक्षस तो आइ गयो ॥ लाते मारी वे

नने वारे, नीम तणे मन रोस थयो ॥ १ ॥ मांसाहा
 री निज आचारी, अबलाने शुं चोट करे ॥ जो बलवं
 तो ठो मयमंतो, मुऊ साहमा पग क्युं न चरे ॥ २ ॥
 घीय शीचाणी आग तणीपरे. तरु उपाडी आइयो ॥
 वृद्ध उखानी नीम नरेसर, राक्षस उपर धाइयो ॥
 ॥ ३ ॥ होत लथा बथ होत वथावथ, उपर तले आ
 वी दोइ ॥ जाय हेमंत्रा कुंती शेती, कहे हणीयो तुम्ह
 सुत कोइ ॥ ४ ॥ खमग संबाही आयाँ धाइ, राजा
 जमरुपी होइ ॥ गदा उपाडी हेठो पाडी, मारी लीयो
 नीमे सोइ ॥ ५ ॥ ताम हेडंवा एह कुटवा, साथे
 रही साता पावे ॥ जूली पडी पंचाली वाला, देवि त
 व गोधी लावे ॥ ६ ॥ तव ते थाक्या देवि हेडंवा, सा
 सु वहुने खांधे धरे ॥ कुंतीने राजाजी हटे, नीम हे
 डंवा व्याह करे ॥ ७ ॥ मंदिर विविध प्रकारे बणावी,
 सेज तणी रचना किजे ॥ पान फूलने तेल सुगंधा,
 अनोपम पहरीजे ॥ ८ ॥ नीम संघाते सुख वी

लगावी गाढो, ब्राह्मण गहेवरीयो होवे ॥ १२ ॥ ज
 पे बक नामे एक राहस, शिला वीकुरोवी आवे ।
 नगर लोक जयजाति घणेश, वचने पिण अति
 विहावे ॥ १३ ॥ काजसगादिक करणी करतां, परमे
 ष्ठी मनमें ध्यावे ॥ राजा प्रजा एक मनावी, उपद्रव्य
 करवा पावे ॥ १४ ॥ राहस रोस तजीने सुधी, बात
 राजासुं इम जासे ॥ एक एक नर ब्रह्मण कारण
 नीत पहोचावे मुळ पासे ॥ १५ ॥ राजा मानी परी
 ठाणी, आज हमारो ठे वारो ॥ माता वहीन टावर
 वेटी, रोवेठे ए अवधारो ॥ १६ ॥ केवल ज्ञानी बात
 कहीथी, पांडवथी टलशे कारो ॥ सोतो नाया अम दी
 न आयो, बोले परदेशी प्यारो ॥ १७ ॥ ए सहुने रो
 वंता राखो, थारे वारे हुं जाशुं ॥ राहस हणीने लोक
 सकलनो, हुंतो रखवालो थाशुं ॥ १८ ॥ आप गयो रा
 हस आवासे, हरख्यो देखी उंचपणो ॥ सयल कुटंबो
 धापी खाशुं, एहने तनुनो सांस घणो ॥ १९ ॥ मांहो
 माही माच्यो जगडो, धगडे कारीज सारीयो ॥ गदा
 प्रहारे ठलठल केलवी, जीमे राहस मारीयो ॥ २० ॥
 पुष्प वृष्टी अंबरनी वाणी, जय जयकार ते उठली,
 मोटो एह उपद्रव्य टलीयो, लोगानी पूगी रली ॥ २१ ॥
 जिनवयणे करतुती देखी, लोका पांडव जाणीया ॥
 धन धन माता पिता धन करणी, पांडव सुजस व
 खाणीया ॥ २२ ॥ चंदन चंप जिहां जिहां जाए, ति

हा तिहां शितलताइहो ॥ ताप हरे परकी तनु केरो, ए
ह तणी अधीकाइ हो ॥ २३ ॥ ढाल ए चौवीस सो
मी, बक नामा राक्षस हणीयो ॥ श्री गुणसागर न रहे
वानो, नीम बल जगमांही जणीयो ॥ २४ ॥

हुहा ॥ पांडव प्रनु मन चिंतवे, प्रगट हुवा हम आज
॥ कौरव केडे लागशे, मतको विणसे काज ॥ १ ॥ आ
धी राते निकल्या, सूतो सूकी गाम ॥ द्वैतवने आया
वही, राखवा निज माम ॥ २ ॥ लोक वचनथी सांज
ली, ए सघलो विरतंत ॥ दुर्योधन राजा घणो, माने
हर्ष अत्यंत ॥ ३ ॥ प्रियवंद नामे जलो, दूत महा वा
चाल ॥ काकोजी करुणा करी, मोकलीयो सुविशाल ॥ ४ ॥
खबर हुइठे तुम तणी, दुर्योधन नरनाथ ॥ आवे ठे तु
म्ह उपरे, करणादिक बहु साथ ॥ ५ ॥

ढाल १२५ मी ॥ पंथीडो वात करे धुर ठेहथीरे ॥
ए देशी ॥ द्रोपदिरे द्रोपदि रीसे परजलीरे, बोले रोस
अपाररे ॥ कौरवरे कौरव केरु वांडे नहींरे,
आवे पनीयो लाररे ॥ द्रो० ॥ १ ॥ राजरे राज लीयो
धन सघलोरे, लीयो महातम बीनरे ॥ तो पिणरे पूठन ठं
के पापीयोरे, पुण्याइ हम हीनरे ॥ द्रो० ॥ २ ॥ धीग
मुऊरे नारीपणुं घर तुम्ह तणेरे, धीग तुम्ह द्वात्री ना
मरे ॥ वांदिरे उपर विबीनी परेरे, मांडेठे पलाणरे
॥ द्रो० ॥ ३ ॥ सासुरे सासु प्रत्ये बहुअर कहेरे, वीर
जननी ए नामरे ॥ कांडरे कांड धरावे हेजथीरे, जाया

पुण्य नीकामरे ॥ द्रो० ॥ ४ ॥ पुरुपर पुरुप सहे किम
 एवडोरे, पीसुन पराजव काजरे ॥ मङ्गलरे मद मार
 ण न विसरे, अष्टापद घन गाजरे ॥ द्रो० ॥ ५ ॥ एक जरे
 एकजणी नीरजय थडरे, नारी सिंहणी सोयरे ॥ सासुरे
 पंचजणी निज जोबनोरे, वादी गमायो जोयरे ॥ द्रो० ॥
 ॥ ६ ॥ रांकरे रांक तणी परे मुऊनेरे, विगोवी प्रखदा
 मांहिरे ॥ पांचरे पांचे उजा जोइयोरे, तरणुं न त्रुटुं
 प्रांहीरे ॥ द्रो० ॥ ७ ॥ मारेरे अने मरे त्रिय कारणेरे,
 जेहने शिर एक होयरे ॥ पुरुपर पुरुप पंचनी पदम
 णीरे, विटंबी न उठो कोयरे ॥ द्रो० ॥ ८ ॥ एहरे एह
 वचन नीसुणी तदारे, अर्जुन जीम सहदेवरे ॥ फूकेरे
 फूक दिया सिलगे घणीरे, उठीया ततखेवरे ॥ द्रो० ॥
 ॥ ९ ॥ युगतीरे युगती वचन समजावीयारे, धर्मनंद
 राखेवा धर्मरे ॥ जेठरे मासतणी नदीनी परेरे, आया
 ठाम विचारी मर्मरे ॥ द्रो० ॥ १० ॥ प्रियवंदरे प्रिय
 वंद चरितव विसरज्यो, मारी मान चल्या मतिवंतरे ॥
 श्रीगीरिरे श्रीगंधमादन आइयारे, गुपतपणो गुणवंत
 रे ॥ द्रो० ॥ ११ ॥ इंदररे इंदर किल नगर अठे जलोरे,
 तिहां राखी निश्चल ध्यानरे ॥ राजारे राजा इंदर तणो
 सुतरे, साधे विद्या सुजाणरे ॥ द्रो० ॥ १२ ॥ विद्यारे
 विद्या विधी अराधतारे, आवी उजी तामरे ॥ जग
 तीरे चावे श्री अर्जुनजीरे, किधो विद्या प्रणामरे ॥
 ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ विद्यारे चांखे कारज शुं करुरे, वसो

मुऊ देह मजाररे ॥ कारजरे कारज सकल सिद्धि करूं
 रे, कौइ आगल न लहुं हाररे ॥ द्रो० ॥ १४ ॥ वि
 चारे सिद्ध हुवो हरी नंदजीरे, गिरी शिखरे वेठो आ
 परे ॥ व्याधकरे व्याधक खेलत आहिडोरे, करतो
 दिठो पापरे ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ वरज्योरे पिण नटले ए
 पापथीरे, जिम करंतो गिमाररे ॥ आवेरे धनुष्य संवा
 ही साहमोरे, नाणे संक लीगाररे ॥ द्रो० ॥ १६ ॥ अ
 र्जुनरे अर्जुन सामो हीवंतारे, धनुष्य ठिनाइ लीधरे ॥
 खडगोरे लमतां खडग खसोटीयारे, प्रचुसे अधकी कि
 धरे ॥ द्रो० ॥ १७ ॥ वाथेरे वाथे पनीया रोसंशुरे,
 अडीया दोइ कुंजाररे ॥ हारयोरे हारयो अर्जुन आ
 गलेरे, हुवो जस विस्तारे ॥ द्रो० ॥ १८ ॥ कुसमरे वृष्टी थइ
 प्रचु उपरेरे, प्रगढ्यो सुरवर एकरे ॥ माग्घरे माग्घ वर
 मुख चांखतोरे, पुठे आणी विवेकरे ॥ द्रो० ॥ १९ ॥ वर
 नीरे पाठे आपण कुणबोरे, कियो किसो जंजालरे ॥ वै
 ताढ्येरे वैताढ्य रथनुपुर जलोरे, पुरवर अधीक रसालरे
 ॥ द्रो० ॥ २० ॥ इंदररे इंदर नामे राजीयोरे, विद्युत माली
 लवु भ्रातरे ॥ काढ्योरे काढ्यो देश वाहिरेरे, करतो अति
 उतपातरे ॥ द्रो० ॥ २१ ॥ राक्षसरे राक्षस ते तल ता
 ल तणे बलेरे, देश उजाडे सोररे ॥ चांख्योरे चांख्यो
 उपद्रव्य टालणोरे, ज्ञानी थारो जोररे ॥ द्रो० ॥ २२ ॥
 मुक्योरे मुक्यो तुम लेवा जणीरे, में दिठा गिरीवर
 श्रंगरे ॥ वलरे वल जोवा माया करीरे, तुमे हुं जि

तो जंगरे ॥ द्रो० ॥ २३ ॥ रथरे रथ वेशी प्रचु आवी
 यारे, राक्षस उपर सूररे ॥ जीत्योरे जीत्यो राक्षस वा
 जीयारे, सुजस तणा वरतूररे ॥ द्रो० ॥ २४ ॥ इंदररे
 इंदर सनमान लही घणोरे, प्रणम्यां माजी पायरे ॥
 चित्रांगदरे चित्रांगद मुखचरीत्र सुणतारे, सहु मन ह
 रखीत थायरे ॥ द्रो० ॥ २५ ॥ ढालजरे ढाल पंचवि
 ससोमी नलीरे, हणीयो ते तल तालरे ॥ श्रीगुणरे श्री
 गुणसागर सूरजीरे, पांडव जश विशालरे ॥ द्रो० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ माता पुत्र अने बहु, वेठा सुख पावंत ॥ क
 मल एक कंचन तणो, अंबरथी आवंत ॥ १ ॥ पंचा
 ली करमे लीयो, कमल वास निज सास ॥ लेतां मन
 वाध्यो घणो, पामी अति उल्हास ॥ २ ॥ नामनी चा
 खे निमगुं, एहवा कमल उदार ॥ आणी आपो मुऊ
 नणी, नाह मतलावो वार ॥ ३ ॥

ढाल १२६ मी ॥ शियलसुंरंगी चुंदडी ए देशी ॥
 लावोने कमल सुहामणा, कहे नीम नणी एम वाणरे ॥
 हुंश करुं तुम उपरे, मारा पीउजी जीवन प्राणरे ॥
 ला० ॥ १ ॥ ए कमल मुऊने गमे, लावो नाथ मतला
 वो वाररे ॥ तुम सरिखे प्रितभ ठतेरे, मुऊ लाखेणो अव
 ताररे ॥ ला० ॥ २ ॥ नामनीनो मन शखवा, उठ्यो
 नीम कुंवर मतिवंतारे ॥ पतिवृताशुं प्रितमी, तिण बोल
 न फिरी वालंतारे ॥ ला० ॥ ३ ॥ चाल्यो मारग वंकडो, काइ
 उलंघी विखम वाटरे ॥ देखी कमल वन शोचतो, अवे

हुंश धरी वन घाटरे ॥ ला० ॥ ४ ॥ लेइ कमल पाठो
 वल्यो, पुंठे हुवो रत्नक देवरे ॥ बांधी राख्यो नीमने,
 कांइ हाली न सके हेवरे ॥ ला० ॥ ५ ॥ फरके नेत्र
 दाहीणो, माताजी मनमें उचाटरे ॥ नीम संकट मांही
 पड्यो, जोता नवी आयो सुन वाटरे ॥ ला० ॥ ६ ॥
 उठा ताम उतावला, बंधव च्यारे आणी सनेहरे ॥ पो
 होंची न सक्या तेहथी ॥ तव बांधीया पिण तेहरे ॥
 ला० ॥ ७ ॥ कुंता माता द्रोपदी, कांइ एकलडी निर
 धाररे ॥ काउसग्ग ध्यान करी रह्या, सारी रात दिवस
 मजाररे ॥ ला० ॥ ८ ॥ केवल उठव कारणे, सुरपति
 आपे तव जायरे ॥ सति उपर सुर आवतां, तव जान
 रह्यो खलायरे ॥ ला० ॥ ९ ॥ ज्ञानवले तव देखीयो,
 कांइ सति तो रही विदायरे ॥ पांच पांडवने शंखचुरु,
 कांइ बांधीया अति दुख थायरे ॥ ला० ॥ १० ॥ सुरप
 तिए सुर मोकल्यो, सो आयो गोमावण काजरे ॥ ते कहे
 लेतां कमलने ॥ में बांधीयाले आजरे ॥ ला० ॥ ११ ॥
 गेढ्यो इंद्र आदेशथी, करी प्रिती घणी शंखरायरे ॥
 कमल लेइने आवीया, कांइ प्रणम्या माजी पायरे ॥ ला०
 ॥ १२ ॥ माता जिडी हेजथी, कांइ चा पे हियमा सा
 थरे ॥ उपद्रव्य टलियो धर्मथी, हेजे मिलियो सघलो
 साथरे ॥ ला० ॥ १३ ॥ ठविसा सोमी ढालमें, श्री
 जैन तणो धर्म कीजेरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी, तो
 ततक्षण कारज सिजेरे ॥ ला० ॥ १४ ॥

दुहा ॥ बोलि गया पट मास जब, पुनरपी आया
 सोइ ॥ द्वैत बने आनंदमें, वासर जाता जोइ ॥ १ ॥
 खबर लेइ दुर्योधन, कीधी दोड तेवार ॥ साहण वा
 हण सामटे, आयो विपन मऊार ॥ २ ॥ हरी सुतचि
 त्रांगद तणो, सरोवरठे सुविशाल ॥ रखवाला जल
 रोकवे. जोर करे नूपाल ॥ ३ ॥ चित्रांगद आयो च
 ढी, कौरव साथ विकराल ॥ सिंचाणो जीम चरक
 लि, लेइ गयो ततकाल ॥ ४ ॥ बूरो वांबत पर तणो,
 बूरो लहे नर आप ॥ केडे परंता पांडवा, कौरव
 पति संताप ॥ ५ ॥

ढाल १२७ मी॥ जीवरे तुं शियल तणो कर संग ॥ ए
 देशी ॥ किधो लाजे आपणोजी, कौरवपति जेम जोय ॥
 चित्रांगद लेइ गयो जी, परवश दुखियो होयरे ॥ आ सुण
 जो जी कौरवपति जेम होय ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ हाहाकार
 सहको करे जी, जोर न चाले कोइ ॥ जेहने शीर आवी
 परी जी, नीर वहे शिर सोइरे ॥ आ० ॥ २ ॥ सापे
 ताक्यो मींडको जी, मोरे ताक्यो साप ॥ निज स्वार्थनो
 आंधलो जी, मारण न जाणे आपरे ॥ आ० ॥ ३ ॥
 बगलो निंदे हंसने जी, मणिने निंदे काच ॥ काम पड्या
 थी पारखोजी, सहने प्यारो साचरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीड प
 ड्या चाइ चला जी, लोक विराणा जाण ॥ कौरवपतिनी
 कामनी जी, वेगे करी विलखाणरे ॥ आ० ॥ ५ ॥ यु
 धीष्टिर नृप आगले जी, करती अधीक विखास ॥ गो

त्र तणा गोवालियाजी, सांजल अम अरदासरे ॥ आ०
 ॥ ६ ॥ कुल मंडण कुल केसरीजी, जेठ जुगतसुं जो
 य ॥ पीकाइ चाइ घणुंजी, कवण निंद तुम्ह सोयरे ॥
 ॥ आ० ॥ ७ ॥ मथीयो मिली घनदेवताजी, रतन
 किया अपहार ॥ ऋषि अगस्ति पिवताजी, नाम लियो
 जल खाररे ॥ आ० ॥ ८ ॥ बडवानल जल बालवे
 जी, पाज तणो जसवाद ॥ राम करवे सायरुजी, न त
 जे निज मरजादरे ॥ आ० ॥ ९ ॥ गुणग्राहि तो गु
 ण अहेजी, अवगुण नाखे दूर ॥ दांत वखाण्यां स्व
 आननाजी, श्री हरी होय हजूररे ॥ आ० ॥ १० ॥ रा
 जा हरि सुत शुं कहेजी, वेगे मत लावो वार ॥ दुर्योध
 न गोडाववाजी, थान गूर अपाररे ॥ आ० ॥ ११ ॥
 विनय करीने विनवेजी, अर्जुन नीम कुमार ॥ व्याधी
 टली वीण औपधेजी, मौन तणो अधिकाररे ॥ आ०
 ॥ १२ ॥ राजा नाखे चाइयोजी, द्वात्री केरो धर्म ॥
 वहिला थान वाहरुजी, संचवाइ कुल कर्मरे ॥ आ० ॥
 ॥ १३ ॥ आ इशान जो इश नहिजी, चाल्यो श्रीहरी नं
 द ॥ चित्रांगद साथे अड्योजी, पायो सुजम आणंदरे
 ॥ आ० ॥ १४ ॥ गोडावी कौरवपतिजी, वेशी विमा
 ने आय ॥ चित्रांगद चतुराइ पणेजी, अर्जुनने पोचा
 यरे ॥ आ० ॥ १५ ॥ जब आया राजा कनेजी, दु
 र्योधन दुःख पाय ॥ शिदक चढियो मरुतकेजी, ताम
 घणुं अकुलायरे ॥ आ० ॥ १६ ॥ न नमे किलकनी

परेजी, खेचर गरदन साहि ॥ पगे लगायो जोरसुंजी,
 परवश हठ न कांइरे ॥ आ० ॥ १७ ॥ कुशल पूढतां
 बोलियोजी, निज चित्त सरखो ताम ॥ रिपु पिडा सा
 ले नहिजी, साले तुऊ प्रणामरे ॥ आ० ॥ १८ ॥ रो
 स न आयो पांडवाजी, तीतलसुं रयो गोह ॥ संतोपी
 घर मोकल्याजी, द्रोहि न तजे द्रोहरे ॥ आ० ॥ १९ ॥
 दुष्ट न ठंके दुष्टताजी, केसे हुं शीख देत ॥ धोइयो सो
 वारकेजी, काजल होय न श्वेतरे ॥ आ० ॥ २० ॥ स
 तावीससो ढालमेंजी, जला जलपण साची ॥ श्रीगुण
 सागरसूरि कहेजी, समयसमय घनमार्चीरे ॥ आ० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ विदुरने जीपम कहे, दुर्योधन स्यु ताम ॥
 दिठा अर्जुन एकणां, सुजट पणानां काम ॥ १ ॥ पां
 डव उपगारी सहि, प्राण दान दातार ॥ रे कृतघ्न
 कृतघ्नपणो, क्युं न तजे अविच्यार ॥ २ ॥ शिख न
 एकहि मन वसी, सामो थयो सरोप ॥ औषध विविध
 प्रकारनां, माने नहि त्रिदोष ॥ ३ ॥ जयद्रथ राजा आ
 वियो, जगनिपति सुविच्यार ॥ जक्ती करी जल जो
 जने, लेइ चाल्यो नार ॥ ४ ॥

ढाल १२८ मी ॥ सुमति सदा दिलमां धरो ॥ ए
 देशी ॥ सांचलजो वात विनोदनि, जयद्रथ राजा वि
 रुधात ॥ शयाने ॥ मारगे जाता उतरयो, दुर्योधननो
 जासात ॥ श० ॥ सांचलो वात विनोदनी ॥ १ ॥ कौश
 ल्या पति दुष्टने, कुंताए धरि हेत ॥ शयाने ॥ जमाइ

तं उतरयो, सघला साथ समेत ॥ श० ॥ सां० ॥ २ ॥
 अर्जुने विद्याने बले, रसोइ निपाइ रंग ॥ श० ॥ जो
 जन पिरस्यां जावता, कुंताए उज्वल रंग ॥ श० ॥
 सां० ॥ ३ ॥ मंजन जोजन युक्तिसु, उपर आपी तं
 बोल ॥ श० ॥ प्राहुणा जाणी प्रेमसुं, सहु करे रंग रो
 ल ॥ श० ॥ सां० ॥ ४ ॥ अरहां परहां सहु गयां, ते
 लंपटे लेइ लाग ॥ श० ॥ रथमां घाली द्रौपदी, रुद
 यमां आणी राग ॥ श० ॥ सां० ॥ ५ ॥ जयद्रथ ते
 महा चोरटो, रथ खेडी नाठो जाय ॥ श० ॥ वाहरे ते
 पुठे वेगशुं, नीम अर्जुन जब धाय ॥ श० ॥ सां० ॥
 ॥ ६ ॥ कुंता कहे तव हे वत्सो, गुनहि पणें ए रगे मा
 र ॥ श० ॥ जामात वे ए माहरो, रखे मारो तुमे ठा
 र ॥ श० ॥ सां० ॥ ७ ॥ नीम अर्जुन वे जयकरा,
 बहु बहु नाखता वाण ॥ श० ॥ जयद्रथने जइ मि
 ल्या, तव तिहां पड्यो जगाण ॥ श० ॥ सां० ॥ ८ ॥
 नीमे गदाने घाते करी, तेहनो रथ करयो चकचूर ॥
 श० ॥ काचा कुन तणी परे, देखी दल सहु नाठो दू
 र ॥ श० ॥ सां० ॥ ९ ॥ अर्धचंद्र बाणे अर्जुने, ध्व
 जा ठत्र दाढि सुठ ॥ श० ॥ जयद्रथना तव वेदिया,
 तव जुंडो पड्यो ते जूच ॥ श० ॥ सां० ॥ १० ॥ मा
 त वचन संचारिने, जीवतो मेल्यो जयद्रथ ॥ श० ॥
 लुंण हरामी जे हुए, ते स्यो साधे अर्थ ॥ श० ॥ सां०
 ॥ ११ ॥ गुणसागर कहे सांनलो, ए कही ढाल रसा

ल ॥ श० ॥ टाल्यो केहनो नवि टले, जेहने जेहवो हु
ए ढाल ॥ श० ॥ सां० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ मुजानी परे कुटियो, मुठ अने शिर केस ॥
बाण संघाते कापिया, चांड कियो सुविशेस ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ॥ जगकमल ठंकी जायोरे बाला, शा
म मेरो जागशे ॥ ए देशी ॥ देवऋषि एक दिवस आ
यो, करण अति उपकाररे ॥ पांनवाशुं प्रगट चांखे,
कौरवां अविचाररे ॥ दे० ॥ १ ॥ चोर चोर पणुं नव
बांडे, प्रत्यक्ष देख्यो एहरे ॥ कष्ट थकी ठोडाइ आ
णे, ग्रह्यो अवगुण तेहरे ॥ दे० ॥ २ ॥ आगथी उगा
रीया अहि, साह पाम्यो त्रासरे ॥ सिंह आखी समा
धी किधा, वैद्य पुत्र विपनाशरे ॥ दे० ॥ ३ ॥ दूध दि
धो साप मुखे, गरल हुवे जेमरे ॥ आधमे उपगार करी
यो, होइ जाइ तेमरे ॥ दे० ॥ ४ ॥ उत्तमा उपकारनी
मति, कियां अपर करंतरे ॥ कियांहिथी निच न करे,
अठतो द्वेष धरंतरे ॥ दे० ॥ ५ ॥ विंदुनो तो सिंधु
जाणे, साधु जे ससनेहरे ॥ सिंधुनो तो विंदु माने,
निच माणस जेहरे ॥ दे० ॥ ६ ॥ शेष नागठे सहस फ
णपति, जीच्या दोइ हजाररे ॥ वर्णवेजो निचनी गति,
तोहि न लहे पाररे ॥ दे० ॥ ७ ॥ गज अंकुश द्विपत
माही, नावा नीर मजाररे ॥ करी तोपिण निच आगे,
हारीयो किरताररे ॥ दे० ॥ ८ ॥ चडने जे करी कालि
मा, चूलीयो जजवानरे ॥ निचनो मुख करत कालो,

बाधतो थो वानरे ॥ दे० ॥ ९ ॥ दशादिसा थेइ अठे
 दाधी, कहे द्रुवासा शापरे ॥ लाखने रस सरिखो करे,
 देइ राखी ठापरे ॥ दे० ॥ १० ॥ व्याप विसनो वांधी
 मूकी, करे रही विधायरे ॥ निचनी तो जीज परगुण,
 कही न सके न्यायरे ॥ दे० ॥ ११ ॥ हेतु तो कह्या
 में नव, कौरवा समजायरे ॥ घडेतो चोपडे गंटो, ला
 गतो न देखायरे ॥ दे० ॥ १२ ॥ सनामाही अति उ
 चाही, बे प्रवाहे वयणरे ॥ चांखे जोले स्वजन टोले,
 कियो अधिक कुचयनरे ॥ दे० ॥ १३ ॥ पांडवने ह
 णे जे नर, लहे आधो राजरे ॥ पुरोहित सुत ग्रह्यो
 विनो, करे विप्र अकाजरे ॥ दे० ॥ १४ ॥ प्रौढ वि
 द्या नामे कृत्या, करे साधन साररे ॥ सबल दल बल
 साजी सुंदर, अठे आवणहाररे ॥ दे० ॥ १५ ॥ क
 री मसुरती सना विसर्जी, चिंतवे चित चावरे ॥ अ
 ति उपद्रव्य हरण जाणो, तप तणो सुप्रचावरे ॥ दे०
 ॥ १६ ॥ काउसग्ग करंत सघला, धरे श्री जिन ध्यान
 रे ॥ सूरने सनमुखा निश्चल, रह्या मेरु समानरे ॥ दे०
 ॥ १७ ॥ वोलीया इम दिवश साते, ध्यानमु धीरे
 गातरे ॥ आठमे दिन दिशाने मुखे, उठीयो अति वातरे
 ॥ दे० ॥ १८ ॥ घणा हाथी घणा घोडा, घणा रथ घणा लो
 करे ॥ उदधीना कलोलनी परे, सबल दल बल योग
 रे ॥ दे० ॥ १९ ॥ आइया तव ध्यानमांधी, बहु सासु
 दोयरे ॥ घाली रथमें लेइ चाल्या, नारी जोर न कांइरे

॥ दे० ॥ २० ॥ तिहां वृकोदर इंद्र नंदन, समर सुर स
काजरे ॥ मात बल्ल पिमुन पिमा, उपजेठे आजरे ॥

दे० ॥ २१ ॥ कसाघाते घणुं हणता, पिपमी पाडतरे
॥ ताम ते तो असुररुपी, तरशसु तामंतरे ॥ दे० ॥ २२ ॥

दिन वचन विचारी वीरा, पुहवी धावतरे ॥ आप आ
पणे आयुधासु, बल्लहसंता आवंतरे ॥ दे० ॥ २३ ॥

पिसुन नाठा जाइ त्राठा, कोन सामो होइरे ॥ विघन ट
लीयो दैव वलीयो, धर्मथी जय जोइरे ॥ दे० ॥ २४ ॥

आठावीस सोमी ढालमांही, पुरोहित सुत रोसरे ॥
श्रीगुणसागर सूरि साखी, हुवो हिया सोसरे ॥ दे० ॥ २५ ॥

दुहा ॥ तृपा व्यापी अति आकरी, खेद करंता चूर
॥ आया ते सरोवर चली, पिधो जल नरपूर ॥ १ ॥

जल पियो तृपता हुया, तरु तले ले विश्राम ॥ मुर
वाए धरणी पड्या, नाकी न लाजे ताम ॥ २ ॥

ढाल १२९ मी ॥ रतनशी गुरु गुण मिठडारे ॥ ए
देशी ॥ पुठे आवी द्रोपदीरे, मृत रुपी पड्यो कंत ॥

देखी अकुलाणी घणीरे, आरती अति व्यापंत ॥ १ ॥
रे रे दैव कुलक्षणारे, किस्सुं कुसहज्यो अंग ॥ पडी

यामें पाडे घणुरे, करतो रंग विरंग ॥ रे० ॥ २ ॥
एतले आवी नीलडीरे, पंचालीनी पास ॥ पूषणहारी

ए जेतलेरे, सोर मच्यो आकाश ॥ रे० ॥ ३ ॥ करती
आडंबर घणोरे, धरति रूप कराल ॥ कृत्या नामे ए

शक्तीरीरे, आइ गइ ततकाल ॥ रे० ॥ ४ ॥ नीलणी

जांखे मुण जामनीरे, एहनो क्रत्या नाम ॥ केडे ला
 गी ए जेहनेरे, तेहनो फोडे ठाम ॥ रे० ॥ ५ ॥ काति
 काठी तव कापवारे, लागी काया जाम ॥ कामनि तो
 अति कपतिरे, वाणी वदे अजीराम ॥ रे० ॥ ६ ॥ स
 हणहारोतो को नहिरे, देवी तुमारो कोप ॥ तो स्या
 माटे इम कीजीएरे, मर्यादानो लोप ॥ रे० ॥ ७ ॥ मु
 वाने शुं ए मारिएरे, कांड देवि देखेरे विमास ॥ एम
 सुणी अंबरे गइरे, करती हड हड हांशरे ॥ रे० ॥
 ॥ ८ ॥ राणी नवि रहे रोवतिरे, जाणी मूवा चरतार
 ॥ विण चरतारा जामनीरे, पामे दुख अपार ॥ रे० ॥
 ॥ ९ ॥ आंसु लुहिए आंखनारे, जीलीणी जांखे सारा ॥
 सुख दुख आपद संपदारे, लागी डोले लारा ॥ रे० ॥
 ॥ १० ॥ जगे आडंबर घणेरे, आथमता नहि वार ॥
 दोय अवस्था भोगवेरे, दिन मांहि दिनकार ॥ रे० ॥
 ॥ ११ ॥ सरखो न रहे सरवदारे, अहगण नायक चंद
 ॥ एक पखवाडे बाधतोरे, बीजे थाए मंद ॥ रे० ॥ १२ ॥
 लेहरी बाधे जिम सायरारे, तिमही घटती जाय ॥ जे
 हवो माणस बज बजेरे, तेहवो सिलो थाय ॥ रे० ॥
 ॥ १३ ॥ सब दिन न हुवे सारिखारे, ऊठो जग व्यव
 हार ॥ रोयां राज न पामिएरे, उद्यमनो अधीकार ॥
 ॥ रे० ॥ १४ ॥ मणी कालि सरीता जलेरे, सिचि सि
 चि पिउ देह ॥ मुर्ग मीटजासे सहिरे, बेठा थाशे एह
 ॥ रे० ॥ १५ ॥ पात्र चरी पाणी तपोरे, पदमनी पो

खे प्यार ॥ आलस मोडी जठियारे, नारी कह्यो सुवि
 च्यार ॥ रे० ॥ १६ ॥ विसमय पाम्यो पांडवारि, एतो अ
 चरिज कोय ॥ एतले प्रगट्यो देवतारे, परम महा सु
 ख होय ॥ रे० ॥ १७ ॥ सुर नांखे स्वामी सुणारे, हुं हर
 णामर देव ॥ तूठो तप बलि तुम्ह तणेरे, आयो कर
 वा सेव ॥ रे० ॥ १८ ॥ क्रत्या क्रत्य निवारवारे, माहा
 रां कीधा काज ॥ ए सघलाहि जाणजोरे, जग मोटो
 जिनराज ॥ रे० ॥ १९ ॥ समय समरवो हुं सहिरे, ब
 हली करी अरदास ॥ आचूपण आपी घणारे, देव ग
 यो आकाश ॥ रे० ॥ २० ॥ एगुणतिस सोमी ढालमे
 रे, पाप नाठा जाणय ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, पांस्व
 पुण्य प्रमाण ॥ रे० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ विविध प्रकारे रसवाति, अति रसवाति अ
 पार ॥ आपण काजे निपनि, आइ गयो अणगार ॥
 ॥ १ ॥ नाव घणो आदरपणो, प्रतिलाचो ऋषी रा
 य ॥ पांच दिवस सुहामणा, जय जय शब्द सुणाय ॥
 ॥ २ ॥ बोले शासन देवतां, संवढर ए वार ॥ पोहतो
 वरस ए तेरमो, गुप्त पणानो सार ॥ ३ ॥

ढाल १३० मी ॥ वली नकुल कहे सुणो वाता॥रा
 जाजी, गोधीक नामे तिहांजी ॥ थइ अश्व पालक अ
 नीराम राजाजी, रहेसुं अश्वशाल होशे जिहांजी ॥
 ॥ १ ॥ वली बोल्यो तिहां सहदेव ॥ रा० ॥ गोविंद नामे
 गोवालीउजी, करशुं गौपालानुं कामा॥रा० ॥ निश्चय लाज

ए वाते निहालियोजी ॥ २ ॥ वली दौपदी कहे सुणो
 वात ॥ रा० ॥ हुं तिहां सैरंध्री नामे सहिजी, रहेसुं
 सुदर्शना राणिने पास ॥ रा० ॥ तेहने रिजवसुं सेवामां रहीं
 जी ॥ ३ ॥ अंगिकारि निज निज काम ॥ रा० ॥ निज
 निज वेप धारीनेजी, पोहोता विराट नगर नजिक, श्रो
 ताजी, परखी नहि नर नारिनेजी ॥ ४ ॥ तेतो आव्या
 नगर समीप, श्रोताजी, शस्त्र शशिकोट कोटमा ध
 र्याजी ॥ तेहनो चेद न जाणे कोय श्रोताजी, कल्पांत
 जोए तेहवां करघांजी ॥ ५ ॥ ते सहुणे पुरमां किध प्रवे
 श ॥ रा० ॥ राज धारे जूदा जूदाजी, विराटे आपी बहु
 मान ॥ रा० ॥ निज निज कामे थाप्या सूधाजी ॥ ६ ॥
 सर्वे सुखे समाधे तेह, श्रोताजी, रहेठे विराटना राज
 मांजी ॥ कोइ दुहवे नहिं तिलमात्र, श्रोताजी, साव
 धान निज निज काममांजी ॥ ७ ॥

दुहा ॥ चोरि नाम ए आपणां, मठ देशमें जाय ॥
 घयराटा राजा घरे, रहीयां पांडव राय ॥ १ ॥

ढाल तेहिज ॥ इणपुर कंबल कोइ न लेशी ॥ ए
 देशी ॥ कंक विप्रनो नाम धरावे, राजाजी अहंकार
 रखावे ॥ जीम रसोइदार सुहायो, बृहनटा हरिनंद
 कहायो ॥ १ ॥ नकुल निरोपम नाम धरायो, ग्वाल त
 णी मति तो लहु आययो ॥ पंचाली सैरंध्री दासी, मा
 जी राख्या आला रासी ॥ २ ॥ नगर तणे परीसर
 जब आवे, पितृयवने हथीयार ठिपावे ॥ समीत त

णा तरु उपर ठावि, ग्वाल सकल जय वात बतावि
 ॥ ३ ॥ समो पिठाणे सोइ माटी, मुठ विचाले सारे
 आंटी ॥ चतुर शिरोमणी पांचे आता, एकांते सूकी नि
 ज माता ॥ ४ ॥ वयराटा घर चाली आया, निज नि
 ज कामे सयल लगाया ॥ पुवंता ए उत्तर पाया, पां
 रुव घर हम आप सवाया ॥ ५ ॥ पांडवजी तो अठे
 वनवाशी, तेह थकी हम फिरा उदागी ॥ राजा चां
 खे जाग्य हमारो, दरशण लाधो आज तुमारो ॥ ६ ॥
 मुखमे रहिए ए घर संपे, अठे तुमारो राजा जपे ॥
 प्रात समे माजीने वंदे, शीख लाहि सहुए आनदे ॥
 ॥ ७ ॥ सुदर्शना नामे पटराणी, वीर घणानी बहिन क
 हाणी ॥ ठिडोत्तर सो किचक जाइ, नृपने सालानी
 अधीकाइ ॥ ८ ॥ जेमल नामे दूत विकराल, दुर्योधन
 सेल्यो सुविशाल ॥ पांरुवानी जे खबरज लावे, लाख
 पसाय अनोपम पावे ॥ ९ ॥ चाल्यो दूत करीने जु
 हार, लावुं खबर वेगे तुमलार ॥ गाम नगर पुर जो
 तो रंगे, मांगे जंग ए नृपति संगे ॥ १० ॥ लावो
 मुज पासे लफ्वा दूतो, शक्ति न होय तो बांधीयो पु
 तो ॥ वडा बफा इम नृपती जीती, लेतो दान सहा
 बल शेती ॥ ११ ॥ मठ देश वैराटो राजा, पुरी स
 चा अधीक दिवाजा ॥ वेठो नृपती परखद्या पुरी, कं
 कविप्रसुं सजा सनूरी ॥ १२ ॥ आयो जेठी तिहां क
 सजा जाकजमाली ॥ उजो रायने करीय

जुहार, राजा पृथे कवण विचार ॥१३॥ सुण रवामी हथी
 णापूर नूप, दुर्योधननो दूत अनूप ॥ देश देशना जीती
 राणां, आव्यो आप मनावी आणा ॥१४॥ होय बलीयो
 होइ मुऊने साधो, नहीतर पुतलुं पाए वाधो ॥ किचक
 तव मुगीए वल घाल, उठ्यो कोप करी विकराल ॥१५॥
 आयो नूपती हाली चाली, दूते फंगोल्यो पाए जा
 ली ॥ कंकणणे वालीयो बलवंत, खाय घणुने ठे मय
 मत ॥१६॥ स्वामी जो इहांकण आवे, देश सहनां पुतलां
 गोडावे ॥ राजाए तव पुरुपज जेज्यो, सुतो जीम उठावे
 हेजो ॥१७॥ चालो स्वामी राय बोलावे, कंक विप्र तुम
 वात बणावे ॥ खाई अन्न खुटाडा कोस, एम वात कहे
 तिहां जोस ॥ १८ ॥ लेइ चाटवो उठ्यो जाम, धरती
 धणवा लागी ताम ॥ चाली आयो सचा मजार, देखी
 दूतने हरख्यो अपार ॥ १९ ॥ आवी कंक पाए शिर
 नास्युं, पठी जोयुं जेमल जेम सामुं ॥ इहां ए जो
 ध किहांथी आव्यो, स्या पुतलां पगे बांधी लाव्यो ॥
 ॥ २० ॥ इहां आइने वाकरी वाइ, नही जीवतो जा
 ए नाइ ॥ एम कही मांहो मांही वलग्या, लोग सह
 जूवे जइ अलगा ॥ २१ ॥ वागे हाथ उठे पडवंदा,
 खरेडे मोल नासे नर वंदा ॥ लात प्रहारे प्रथवी पि
 ण ध्रुजे, उडे खेह सूरज नवी सुजे ॥ २२ ॥ उठी क
 चेरी राजा पिण जाग्यो, पढीयो मल्ल जुजाबल ला
 ग्यो ॥ एतो पांडव जीमजी दिसे, एम विच्यारयो वि

श्वो बिसे ॥ २३ ॥ जाण्यो नीम तणो जडवाय, व
 ज्यो मुख थकी एम वाच ॥ जीन करंतो जाणी गाढ
 नीमे पढाडी पाड्यो ठांडो ॥ २४ ॥ त्रीसे सोमी
 ले जणीयो, नीमे मल्ल महा बल हणीयो ॥ श्रीगु
 सागर सूरि वदीतो, पुण्ये पांरुव जगजस जीत्यो ॥ २५ ॥

दुहा ॥ एक दिवश परीवारशुं, किचक नामे नूप
 वेन तणे घर आवीयो, दिठो सैरंद्री रूप ॥ १ ॥ वा
 न जणी एम पूढीयो, ए कुण नारी होय ॥ किहां
 की आवी अठे, रूपे रंभा सोय ॥ २ ॥ जे आपण
 र वालीयो, तेह तणी ए नार ॥ रहेवे मुऊ आगत
 दाशीपणे सुविच्यार ॥ ३ ॥ लाज तजी निरलजपणे
 बहीन जणी कहे एम ॥ एकवार मुऊ मंदिरे, मोक
 ज्यो धरी प्रेम ॥ ४ ॥ वात मतकर ए जाइजी, करत
 होय अकाज ॥ शिल न लोपे सुंदरी, एहनो पती दि
 रताज ॥ ५ ॥ राय वैराटे इम कह्यो, ए कोइ कार
 रूप ॥ रूडी रिते राखज्यो, जलावी मुऊ नूप ॥ ६ ॥

ढाल १३१ मी ॥ रामचंद्रके बागमे ॥ आंवा
 री रह्योरी ॥ ए देशी ॥ उठी चल्यो तब राय, मन
 रिस घणेरी ॥ तेडाव्योरे खवास ॥ करे वात बुरे
 ॥ १ ॥ एकली देखी जो नार, कहेज्यो हेत धरीरी
 शुं करशे मुऊ राय, पाडुं लाज खरीरी ॥ २ ॥ ए
 दिवस नृपनार, रती खेल जणीरी ॥ आवे वन उद
 न राशे मन्नीम घणीरी ॥ ३ ॥ माशे किचक गर

आव्यो अश्व चडीरी ॥ फिरता वन आराम, सैरंद्री
 द्रष्टे पकीरी ॥ ४ ॥ सतीशुं आय जखंत, चालो मुऊ
 घरेरी ॥ हुं जग मोठो राय. सहु मुऊ आण घरेरी
 ॥ ५ ॥ आपु नवलख हार, चौकी रत्न जकीरी
 ॥ करी थापु पटनार, तुऊशुं प्रित खरीरी ॥ ६ ॥ बो
 ली चटक लगाय, फिट कुवद्धी गुं लवेरी ॥ बालुं तारो
 राज, आगे शियल हवेरी ॥ ७ ॥ आव्यो चाबख ले
 इ, किचक कोप करीरी ॥ बेन सुदर्शणां ताम, आवी
 आडी फिरीरी ॥ ८ ॥ बाइ ए वारो वीर, इम किम का
 म करेरी ॥ एतो निरलज दास, एहने कुण वरेरी ॥
 ॥ ९ ॥ मोटी राजकुमार, परणावुं वरनारी ॥ रहवा
 यो एहथी हठ, एहनी जात न सारी ॥ १० ॥ एक
 वार मुऊ द्वार, आपे नेह धरीरी ॥ पूरु मन तणी खां
 त, न करुं आश फिरीरी ॥ ११ ॥ वहीन जणे सुण
 वीर, तुं मति चिंता करेरी, होशे धीरे काज, जाउं
 आप घरेरी ॥ १२ ॥ हरखाणो तव राय, होशे काम
 जलेरी ॥ हुवो विकल नरेश, लाग्यो तास पलोरी ॥
 ॥ १३ ॥ एकत्रीसा सौमी ढाल, गुणसागर एम जा
 पी ॥ लेशे दुःख अघोर, पापी पाप प्रकाशी ॥ १४ ॥
 दुहा ॥ एक दिवस राणी राउली, निपजावी पकवा
 न ॥ गोत्रज तणी पूजा करी, आपी सहुने मान ॥
 ॥ १ ॥ पात्र कर घरी प्रेमदा, किधो सैरंद्री साद ॥
 मदिर आपो मारा वीरने, गोत्रज तणो प्रसाद ॥ २ ॥

माजी किम मने मोकलो, शुं नथी जाणता वात ॥ काल
 एणे तुम देखतां, करयो घणो उतपात ॥ ३ ॥ दूध
 देखी मंजारने, हुवे लालच जेम ॥ न गिणे लाज पर
 नारनी, लंपट माणस तेम ॥ ४ ॥ वाइ न केशे तुऊने.
 में वारयो ठे एह ॥ नाम लीए जो ताहरुं, तो टलि
 आवजे गेय ॥ ५ ॥ परवश प्रेमदा शुं करे, लेइ चाली ते
 पात्र ॥ आव्यो घर जब हुंकमो, थरहर कंपे गात्र ॥ ६ ॥

ढाल १३२ मी ॥ श्री रामजीए नारी गमाइ, सी
 ता शुध न पाइजी ॥ ए देशी ॥ द्रोपदी मनसां जोयु
 विमाशी, किचक कुबुद्धी पूरोजी ॥ एकलडा जाता इ
 णे मंदीर, रहे किम शिंयल सनूरोजी ॥ द्रो० ॥ १ ॥
 एम ऊपाती आवी वाला, किचक तणे आवासजी ॥
 दिधुं पात्र दूरथी उनी, लीधुं हाथ खवासजी ॥ द्रो०
 ॥ २ ॥ मेळी थाल वली जब पागी, किचक आयो
 पूंठजी ॥ रे उनी रंडा किहां जाइस, वाणी वदे इम
 ऊठजी ॥ द्रो० ॥ ३ ॥ पामी त्रास ते सना सनमुख,
 नारी नाठी जायजी ॥ आवी उनी राजा शरणे, का
 मी केडे थायजी ॥ द्रो० ॥ ४ ॥ कंक वीप्र देखंता मा
 री, नारी लाते तामजी ॥ वैराटने सर्व सुनट जोतां,
 कीधी सना गत मामजी ॥ द्रो० ॥ ५ ॥ नाथ प्रते इ
 म वदे वाणी, ठोरुवो माहाराजजी ॥ ए पापीडो मुऊ
 ने पीडे, मूकावे मुऊ लाजजी ॥ द्रो० ॥ ६ ॥ कंक न
 णे वैराट सनानी, लाज लेइ मठरालजी ॥ इम नीसु

णी राय जंखाणो. हाकलियो नूपालजी ॥ द्रो० ॥ ७ ॥
 आज मुकुबुं तुऊने जाणी, कालै तारी वातजी ॥ आ
 ए वह माहरी राय राणा, आज घणी आख्यतजी ॥
 द्रो० ॥ ८ ॥ एम कहीने वल्यो पाठो, गयो निज आ
 वाराजी ॥ पंचाली तिहांथी आवी, मठरालीनी पा
 सजी ॥ द्रो० ॥ ९ ॥ राणी आगल किधुं सघलुं, हि
 युं फाटतां रोयजी ॥ अम देश तो सह उजड थइ,
 सार न लीए कोइजी ॥ द्रो० ॥ १० ॥ अनेकपरे
 आशासनां दिधी, राणीए रोती राखीजी ॥ कहेतां
 माहरा दांतज घाटा, ठे मुऊ अंतर साखीजी ॥ द्रो०
 ॥ ११ ॥ ते दिन दोहीलो गयो रामाने, रात पडी जे
 वारजी ॥ अवसर लेइ आवी एकाकी, विनवीयो न
 रतारजी ॥ द्रो० ॥ १२ ॥ किचके मुऊने एणीपरे नाख्यो,
 आणीश तारो अंतजी ॥ आतम घात करु ते पेहेली,
 तिण कारण मुऊ कंतजी ॥ द्रो० ॥ १३ ॥ में विन
 वाया गोद बिठाइ, तुम तणा वड वीरजी ॥ ते पि
 ए सांनली हेवुं घाल्युं, करी नही मुऊ निरजी ॥ द्रो०
 ॥ १४ ॥ नीम शुकुटी नाले चडावी, वचन वदे सुण
 नारजी ॥ एतला दिन आपण दुःख लिवा, ते धर्म
 तणो उपगारजी ॥ द्रो० ॥ १५ ॥ मुऊ आणाए एत
 लो कीजे, किचक नणी तुम जायजी ॥ आपणे दोय
 एकांते मिलशुं, करी मतो एकठायजी ॥ द्रो० ॥ १६ ॥
 कंत तणे आदेशे आवी, वात न जाणे कोइजी ॥ सो

लश्रंगार सज्या तनुं सुंदर, पेच्या दरपण जोइजी ॥
 ॥ द्रो० ॥ १७ ॥ मारग जातां किचके दिठी, बाली
 जाकऊमालीजी ॥ कामातुर अकुलाणो राजा, फेरी को
 ट निहालीजी ॥ द्रो० ॥ १८ ॥ दिवश रात हिंडु तु
 म्ह जोतां, लागी लेह तुमारीजी ॥ आज मनोरथ थ
 या पूरण, किधी सार अम्हारीजी ॥ द्रो० ॥ १९ ॥
 मुख पंचाली वायक बोली, सुणो सुनट एक वात
 जी ॥ कोइ मंदिर देखामो एकांते, तो रमीए तुम सं
 घातजी ॥ द्रो० ॥ २० ॥ हिंमोला खाट ऊबुके उंची,
 मणीमय मारा आवासजी ॥ आवज्यो रात समे
 तुम राणी, जिम पूगे मुज आसजी ॥ द्रो० ॥ २१ ॥
 इम संकेत करीने चाल्यो, किचक नीज आवासजी
 ॥ नामनीए सहु वात प्रकाशी, नीम नणी उल्हास
 जी ॥ द्रो० ॥ २२ ॥ ए बतिस सोमी ढाले, वात ज
 णावी तासजी ॥ श्री गुणसागर सूरि प्रकाशे, जो
 जो कुविसन विनाशजी ॥ द्रो० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ नीम नणे सुण नामनी, आप सुरंगो वे
 श ॥ थाशुं किचकनि कामनी, हुंश धरी सुविशेश ॥
 ॥ १ ॥ देइ आलिंगन एहने, पोचाहुं जम लोक ॥
 तो तुं मुऊने जाणजो, नीम तणो बल रोक ॥ २ ॥
 आज पत्नी कोइ नारीनो, नाम लिए नही तेह ॥
 खोफा मंजार तणीपरे, नमतो राखुं एह ॥ ३ ॥

ढाल १३३ मी ॥ समुद्र विजय सुत चंदलो, साम्

लीयाजी ॥ ए देशी ॥ रात समे जड जीमर्जा ॥ मन
 मोहना ॥ स्नान करी सुची देह ॥ लाल मन मोहना ॥
 केश समारया कामनी ॥ म० ॥ घाली फूलेल सनेह
 ॥ ला० ॥ १ ॥ सेंथो लाल सुहावीयो ॥ म० ॥ नक
 वेसर रुडी नथ ॥ ला० ॥ निलवट मोती पूरियो ॥
 म० ॥ सोवन चुडी हथ ॥ ला० ॥ २ ॥ बाह मनोहर
 कंचुकी ॥ म० ॥ मस्तक उढ्यो चीर ॥ ला० ॥ पग
 पीतांबर ढलकतो ॥ म० ॥ ऊणके नेउर गुहिर ॥ ला०
 ॥ ३ ॥ नाख्यो कंठे लहकतो ॥ म० ॥ पंचाली उर
 नो हार ॥ ला० ॥ हसी बोली एम चामनी ॥ म० ॥
 तुम जीती जग नार ॥ ला० ॥ ४ ॥ नारी वेश जीमे
 करयो ॥ म० ॥ करवा किचक जंग ॥ ला० ॥ चाल्यो
 मध्य वजारथी ॥ म० ॥ लटके जोतो अंग ॥ ला० ॥
 ॥ ५ ॥ आंव्यो किचक मंदिरे ॥ म० ॥ दिठो अनो
 पम घाट ॥ ला० ॥ मोती कुंवल वांधीया ॥ म० ॥
 लटके हिंडोला खाट ॥ ला० ॥ ६ ॥ असुर थारो आ
 वतां ॥ म० ॥ सुवं वार लिगार ॥ ला० ॥ देइ गीर जीते
 पोढियो ॥ म० ॥ चरणे चांपी किमाड ॥ ला० ॥ ७ ॥ एट
 ले किचक आवियो ॥ म० ॥ पेरी तनुं शिणगार ॥
 ॥ ला० ॥ पेठो मंदिरे एकजो ॥ म० ॥ सेवक रहियो
 वार ॥ ला० ॥ ८ ॥ लालच धरतो आवियो ॥ म० ॥
 मोहनी मोटो वंध ॥ ला० ॥ दिपक देखी पतंगीयो ॥
 ॥ म० ॥ पडीयो तिम मती अंध ॥ ला० ॥ ९ ॥ आ

ज सफल दिन माहरो ॥ म० ॥ करतो मन सुविचार
 ॥ ला० ॥ आवी आवेशे उन्नो रह्यो ॥ म० ॥ कर
 सुं कूट्यो द्वार ॥ ला० ॥ १० ॥ बोलावी बोले नहि
 ॥ म० ॥ एहनं पूगी ते शीश ॥ ला० ॥ उठो उठो न
 जे तुमे ॥ म० ॥ साद किया दश विस ॥ ला० ॥
 ॥ ११ ॥ किमाड कठीन खडखडावीयुं ॥ म० ॥ तव सां
 नल्युं शुं यार ॥ ला० ॥ चरण संकोचा आपणा ॥
 ॥ म० ॥ राय उघाज्यो द्वार ॥ ला० ॥ १२ ॥ पोल देइने प
 स्वरघो ॥ म० ॥ खोलतो खुणा चार ॥ ला० ॥ खिड
 की मंडप उंसरी ॥ म० ॥ नवि दिठी त्यां नार ॥ ला०
 ॥ १३ ॥ एम सधले जोतां थकां ॥ म० ॥ किचके दि
 ठो सोय ॥ ला० ॥ कुण कुबुद्धी इहां आवीयो ॥ म० ॥
 ए तनु नारी न होय ॥ ला० ॥ १४ ॥ जीम मधुर ए
 म वोलियो ॥ म० ॥ आवो कंत सुजाण ॥ ला० ॥
 वार घणी मुऊने थइ ॥ म० ॥ नाथजी जीवन प्राण
 ॥ ला० ॥ १५ ॥ एम कही उठ्यो जीमडो ॥ म० ॥ कि
 चक पाडी चीस ॥ ला० ॥ हा हा हिवेहुं नही करुं ॥
 ॥ म० ॥ मूको मुऊने इश ॥ ला० ॥ १६ ॥ कर जाली
 ने पटकियो ॥ म० ॥ करंतो आक्रंद साद ॥ ला० ॥
 जीम नणे परनारसुं ॥ म० ॥ वली करजो उन्माद ॥
 ॥ ला० ॥ १७ ॥ मारी कीघो कोथलो ॥ म० ॥ शिर
 चांप्युं धरु मांहि ॥ ला० ॥ किचक परतद्ध पामीयो
 ॥ म० ॥ पाप तणां फल प्रांहि ॥ ला० ॥ १८ ॥ जीमे

म वीच्यारियो ॥ म० ॥ ए नृत्य केली साल ॥ ला० ॥
 पुनर विद्या इहांकण नणे ॥ म० ॥ देखी जिये वाल
 ॥ ला० ॥ १९ ॥ जारवट जार जंचो करी ॥ म० ॥ चा
 रियो ते माय ॥ ला० ॥ पुनरपी जम वीचारीयो ॥ म०
 रखे जाणे कोइ आय ॥ ला० ॥ २० ॥ रक्त तणी स
 णीका चरी ॥ म० ॥ जारोट लीखीयो नाम ॥ ला० ॥
 जा वात जणाववा ॥ म० ॥ त्रण अह्जर तिणी ठाम
 ला० ॥ २१ ॥ काम करी किचक तणो ॥ म० ॥ जी
 गयो निज धान ॥ ला० ॥ सकल संबंध आवी
 ह्यो ॥ म० ॥ नारी जणी बहु मान ॥ ला० ॥ २२ ॥
 तीसासोमी ढालमें ॥ म० ॥ श्री गुणसागर जोय ॥
 ला० ॥ किचक प्रत्यक्ष पापीयो ॥ म० ॥ कीधाना
 ल सोय ॥ ला० ॥ २३ ॥

दुहा ॥ राय कचेरी आवियो, पूरी सजा अजी
 म ॥ किचक जाइ सहु मिली, बेठा करी प्रणाम ॥
 १ ॥ राजा पूठे सादरो, तुम बंधव गुण खाण ॥ ह
 णा अमे दिठा नथी, कुण कारण राजान ॥ २ ॥
 म जाइ काले चमी, गया हता कांइ वार ॥ राते
 ण आव्या नथी, अम मंदिर निरधार ॥ ३ ॥ राये
 वक मूकीयां, किचक तणे दरवारा ॥ पूठे जइ सा ना
 ने, किहां ठे तुम जरतार ॥ ४ ॥ सांज समे शोना
 री, तेडी शेवक साथ ॥ गया पूठ्या विण मुजने,
 जी नवि आव्या नाथ ॥ ५ ॥

ढाल १३४ मी ॥ सोइ सयाणो जे अवसर साधे
 ॥ ए देशी ॥ किचक जाइ मिली सब आवे, राजासुं
 एम वात सुणावे ॥ हजीय न आव्या किचक राय,
 राजाजी मन चिंता थाय ॥ कि० ॥ १ ॥ शेवक ते
 डी पूढयो अजीराम, ठाकुर तुमारा गया कुण काम
 ॥ नृत्य तणी साला नरनाथ ॥ तिहां सुधी हता अमे
 सहुसाथ ॥ कि० ॥ २ ॥ पगी अमने शिखज आपी,
 आप एकीला गया थिर थापी ॥ द्वारपाले पिण एम
 ज जाख्यो, निकलतां वार अमे नवी जाख्यो ॥ कि०
 ॥ ३ ॥ राजा शोध करेवा रंगे, उव्यो सुनट लेइ बहु
 संगे ॥ घर घर शेरी चोक मजार, जोतां न लाधो शो
 ध लिगार ॥ कि० ॥ ४ ॥ बेहेन सुदर्शणा वात ए जा
 णी, जाइ न लाधो होइ विराणी ॥ नृत्यशालाए आ
 वे सहु साथ, पग न लाजे जोतां नरनाथ ॥ कि० ॥
 ॥ ५ ॥ धरति विवर दिठो तिणे ठाम, दिसेवे इहां थ
 यो संग्राम ॥ नारोटे अंक दिठा अति राता, बेन ज
 णे इहां सही मुऊ भ्राता ॥ कि० ॥ ६ ॥ मुहता प्रधा
 न तेडावी राजा, वंचवे सहि अद्धर ताजा ॥ वाचंता
 एम विचारे सुजाण, में मारयो एम कहे कुण वाण ॥
 ॥ कि० ॥ ७ ॥ एतले राय आवी एम वाच्युं, में मा
 ख्यो मुख कहे तव साचुं ॥ राणी आंखे नाखे बहु नीर, तु
 मे मारयो दिसे मुऊ वीर ॥ कि० ॥ ८ ॥ क्लोएक पाप
 उदय थयो आज, किचक तणो एम थयो अकाज ॥

एणे सैरंद्री सच्चा मांही मारी, मृत्यु हुवो एम रा
 य विच्यारी ॥ कि० ॥ ९ ॥ वालीयो आद मिल्या सह
 लोग, नारोट अलगो कियो बल योग ॥ काढ्यो कि
 चक मिली बहु साथ ॥ देखी राणी नीढ्यो लेइ बा
 थ ॥ कि० ॥ १० ॥ वेन नाइनो अंग निहाले, तिम
 तिम आंखे आंसुडा ढाले ॥ वात विविध प्रकारे दा
 खी, सहु मिली एम रोती राखी ॥ कि० ॥ ११ ॥ ना
 इ मिली सुविचारण किजे, सैरंद्रीने साथे दहीजे ॥
 एह थकी किचकनो नासो, सती किहां पामे घर वा
 सो ॥ कि० ॥ १२ ॥ शवका किचक काज ए किजे,
 केस ग्रही सैरंद्री लीजे ॥ थरहर थरहर ध्रुजे सोइ, नीम
 कहे चिंता नही कोइ ॥ कि० ॥ १३ ॥ कुरु कुरु करी
 किचक कागा, सैरंद्रीने नाखण लागा ॥ नीम नूजा
 वले वृद्ध उखाली, किचक बंधव मारया वाली ॥
 ॥ कि० ॥ १४ ॥ बांधव शोक करंत सरोखी, राजा ए
 राणी संतोखी ॥ एका किना ए जे काजो, ठेढ्यो तो
 ए विनाशे राजो ॥ कि० ॥ १५ ॥ डोकरडी घर वाघ
 ज पडठो, एह उखाणो परतद्ध दिठो ॥ एतो आग
 न तरे देखाया, हाथशुरे उल्हाशी जाय ॥ कि० ॥ १६ ॥
 एतो कोएक उठी उपाधी, साध नही ए रोग असा
 धी ॥ मुऊने तो आयो जोगवणो, काठाठे नृप पद जो
 गवणो ॥ कि० ॥ १७ ॥ नूर जालमे हुंहुं पडीयो, सिंह
 तणी शिकारे चमीयो ॥ मसली पेट उपाए पिना, सा

प संघाते मांडी क्रिमा ॥ कि० ॥ १८ ॥ काम पखे ए
 वीर बोलाया, अमृत काजे महा विष पाया ॥ जइ तु
 राख्यो चाहे चूमो, तो मतकर एह कदाग्रह कूडो ॥
 कि० ॥ १९ ॥ आप जलो जगनुं जलुं जावे, आप मुवा
 जेम बुड कहावे ॥ सो हणीया तस हणता एको, क
 रे किशी ए आणी विवेको ॥ कि० ॥ २० ॥ जे दिन
 सो दिन आघो लहुंहुं, दिनपणे दिलासा दउहुं ॥ वं
 नीमानी रही जे राणी, शामाटे त्रीमीजे ताणी ॥ कि०
 ॥ २१ ॥ चौतीस सोमी ढाले नणीया, नीम किचक
 सघला हणीया ॥ श्री गुणसागर सूरि वदीतो, शिल
 पसाए जगजस जित्यो ॥ कि० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ चतुर महाचर चोकशी, फिरी आया प्रचु
 पास ॥ खबर न पामी पांम्वा, सोच घणो चित्त ता
 स ॥ १ ॥ विदुरने निपम तणो, वदन विलोके राय ॥
 प्रथवी सघली शोधतां, पांडव बखर न थाय ॥ २ ॥

ढाल १३५ मी ॥ मेतारज मुनिवर धन धन तुम
 अवतार ॥ ए देशी ॥ बलवंता पांडव प्रथवी मांही
 प्रसिद्ध, गुणवंता पांडव प्रगट होसे सो सिद्ध ॥ ए आं
 कणी ॥ विदुर अने निपम नणेजी, वाणी अधिक
 अनूप ॥ पांम्वानी सहनाणकाजी, सांजल कौरव नूप
 ॥ व० ॥ १ ॥ नीति अनिती न नीतीकाजी, रोग न अधीको
 सोग ॥ पांम्व ठे जे देशडेजी, होशे सुखीयां लोग ॥
 ॥ व० ॥ २ ॥ अरिहंता अतिशय जीसाजी, दिशे ग्रं

थ मजार ॥ केतलाएक अतिशय तीसाजी, पांढवना
 सुविचार ॥ व० ॥ ३ ॥ दूत नलो तो खरोजी, साचो
 ए उपमान ॥ मठ देश महिमा घणोजी, दिन दिन
 चढते वान ॥ व० ॥ ४ ॥ सुशर्मा राजा कहेजी,
 एतो सुधी वात ॥ नगर तणी गौंवाळवेजी, पांडव प
 रगट थात ॥ व० ॥ ५ ॥ खुणश हमारी ठे खरीजी,
 वेराटा नृपसाथ ॥ स्वामी काज समारताजी, सुजस
 दियो जग नाथ ॥ व० ॥ ६ ॥ कौरवपति सेना सजी
 जी, साथे सहु परिवार ॥ हय गय रथ पायक घणा
 जी, चीपमजी पिण लार ॥ व० ॥ ७ ॥ घम घम वांजे
 धुंधराजी, पाखर जडीया पलाण ॥ उनी रज घमसा
 णसुजी, गयण ठायो वर जाण ॥ व० ॥ ८ ॥ देखी
 दल वल आपणोजी, मुलकाणो मन राय ॥ कुण द्द
 त्री मुळ आगलेजी, युद्धे जीवता जाय ॥ व० ॥ ९ ॥
 सुशर्मा द्दक्षण दिशेजी, जाइ लाग्यो नाम ॥ गौं हर
 ता ते ग्वालीयाजी, आइ पूकारयां ताम ॥ व० ॥
 १० ॥ द्दत्री सहु चडी चालियाजी, सजी नाथा
 कर बाण ॥ पांडव चार साथे हुवाजी, वाग्या ढोल
 निशाण ॥ व० ॥ ११ ॥ नला नला नट पाखरया
 जी. संवाह्या अति सूर ॥ नूप हुवो गोवा हरुजी, वा
 जीया रण तूर ॥ व० ॥ १२ ॥ नृप लम्बे नड लम्ब
 डाजी, नाग्या जाइ चूर ॥ उगंता रवी आगलेजी,
 तम जिम नासे दूर ॥ व० ॥ १३ ॥ खीसती जाणी आ

पणीजी, सुशर्मा कोपंत ॥ मोटा चडने मोडवेजी, वै
 राटो रोपंत ॥ व० ॥ १४ ॥ सुशर्माण बांधीयोजी, वै
 राटो भूपाल ॥ जोर न चाले कोइनोजी, सोचे वाल
 गोपाल ॥ व० ॥ १५ ॥ पांडव चारे धाइयाजी, धसमसता
 धूताल ॥ सुशर्मा खाथो कियोजी, नाठा चड ततकाल ॥
 ॥ व० ॥ १६ ॥ मठ राय ठोडावियोजी, नीम चूजा
 बल जोय ॥ साथे तो वलीया चलाजी, नवलाथी शुं
 होय ॥ व० ॥ १७ ॥ हरख धरी तेही स्थानकेजी,
 रात रह्यो राजान ॥ कंक तणे मुख साजलीजी,
 पांरुवनो आख्यान ॥ व० ॥ १८ ॥ अधीकामें
 अधीको घणोजी, सुजस सुणी निज कान ॥ सत्य क
 रीने सरदहेजी, लीधी सबही मान ॥ व० ॥ १९ ॥
 चाकर जेहना एहवाजी, गूर महा सनूर ॥ ठाकुरनो
 केहवो किस्योजी, दिसे एह हजूर ॥ व० ॥ २० ॥ पें
 त्रिसा सोमी ढालमेंजी, नीमे जणाव्यो आप ॥ श्री
 गुणसागरसूरि कहेजी, न ठपे तेज प्रताप ॥ व० ॥ २१ ॥

दुहा ॥ प्रात हुवा कौरवपति, उत्तर दिशानी गा
 य ॥ वाली वलीया वेगशुं, ग्वाल पूकारया आय ॥
 ॥ १ ॥ राजानो सहु रावणो, राजा साथे जोय ॥ उ
 त्तरा कुंवर एकलो, घर रखवालो होय ॥ २ ॥ बुंवार
 व श्रवणे सुणी, बोले राज कुमार ॥ म्हारे नही कोइ
 सारथी, करे जणावण सार ॥ ३ ॥ महीलाने माय आ
 गले, गाल मारतो जाण ॥ सैरंद्री बोली हशी, कुंव

र अरती मत आण ॥ ४ ॥

ढाल १३६ मी ॥ आठिलालनी देशी ॥ तव सै
 रंद्री वाल, बोले वचन रसाल ॥ आठे लाल ॥ कुंवर
 पे चटक लगायनेजी ॥ १ ॥ अहो कुंवर कहुं तुज,
 जुद्ध करणनि वूज ॥ आ० ॥ तो सारथीठे सोहामणो
 जी ॥ २ ॥ ए तरविंदल वेश, ठे सारथी सुविशेश ॥
 ॥ आ० ॥ अदनुत रुप सोहामणोजी ॥ ३ ॥ हरीनं
 दनो रथ आप, खेमतो परम प्रताप ॥ आ० ॥ ते र
 थ खेमशे ताहरोजी ॥ ४ ॥ ल्यो तुम एहने संग, हो
 से जीत अन्नंग ॥ आ० ॥ हुंश मतराखीश को हिवे
 जी ॥ ५ ॥ हस्तां रोतां एह, आव्यो परुणो गेह ॥
 ॥ आ० ॥ कुंवरे पुढ्यो सारथीजी ॥ ६ ॥ कहे विंदल
 महाराज, एतो आठो काज ॥ आ० ॥ आपणने गौ
 बालताजी ॥ ७ ॥ मायने महेलणी पास, पेरी वगत
 र तनु खास ॥ आ० ॥ रणरंग रमवा सऊ थयोजी ॥
 ॥ ८ ॥ बहीन नणे सुण चाय, जीती कौरव राय ॥
 आ० ॥ लावज्यो ध्वज रलीयामणीजी ॥ ९ ॥ एह म
 नोरथ आज, मुऊ पुतलाने काज ॥ आ० ॥ होशे व
 स्र सादरोजी ॥ १० ॥ रणमें आयो चाल, देखी द
 ल विकाल ॥ आ० ॥ जाणे घटा कादंबनीजी ॥ ११ ॥
 अहो बहनडा वाल, चडीयो मेह असराल ॥ आ०
 ॥ वाल रथ पाठो घरेजी ॥ १२ ॥ कहे अर्जुन अनू
 प, एह दुर्थोधन नूप ॥ आ० ॥ एह दल उना एह

नाजी ॥ १३ ॥ लाख सवा गजराज, देखी पामे घन
 लाज ॥ आ० ॥ कालीघटा तेहनी वनीजी ॥ १४ ॥
 धरयो दुर्योधन जूप, मेघांबर अनूप ॥ आ० ॥ मे
 घ समो वड गाजतोजी ॥ १५ ॥ खडू चाला प्रका
 श, विजली सम आकाश ॥ आ० ॥ निलांबर नेजा
 चलाजी ॥ १६ ॥ ए दल अधिक अलोल, थाइ द्रढता
 ममडोल ॥ आ० ॥ तजी कायर सूरीमां चजोजी ॥
 ॥ १७ ॥ दल कौरवनो जोय, चयानित हुवो सोय ॥
 आ० ॥ हा हा मुऊ मारे खरोजी ॥ १८ ॥ अहो बह
 नडा बाल, चाल्य घरे रथ बाल ॥ आ० ॥ ए दल
 अधिक डरामणोजी ॥ १९ ॥ कहे हरी नद तेवार, रे
 कायर शिरदार ॥ आ० ॥ घर आगल शुं फूलतोजी
 ॥ २० ॥ इहां नही वे सेल, एवे खांडानो खेल ॥ आ०
 ॥ खेल खरो असुहामणोजी ॥ २१ ॥ ऊंऊण लाग्या
 सूर, वागीया रणतूर ॥ आ० ॥ सुनट समरमे सऊ
 थयाजी ॥ २२ ॥ पसरियो दल पूर, देखी कुमर घर
 नूर ॥ आ० ॥ अंगे बूटी धुजणीजी ॥ २३ ॥ रथथी
 पडीयो ताम, नासण लाग्यो जाम ॥ आ० ॥ पारथ
 पग पागे धरयोजी ॥ २४ ॥ हरीनंद साह्यो हाथ,
 घाली गला मांही बाथ ॥ आ० ॥ आपणो मरम प्र
 काशियोजी ॥ २५ ॥ हुं अर्जुन अनीराम, शिखरुं तु
 ऊ संग्राम ॥ आ० ॥ आज शोना तुऊने देउजी ॥
 ॥ २६ ॥ वत्रिसा सोमी ढाल, जगमे सुजस विशाल

आ० ॥ गुणसागर पांशु तणोजी ॥ २७ ॥
 दुहा ॥ उत्तरा कुमर मन लाजीयो, पांगो फिरयो सं
 ग्राम ॥ हाथ जोडी उन्नो रह्यो, अर्जुनपे अनीराम ॥
 १ ॥ खीजडे ठे हथीयार वर, धनुष्य बाण उदार ॥
 कवच प्रमुख अयुध सह, तुं जइ लाव्य कुमार ॥ २ ॥
 आदेश लेइ अर्जुननो, आव्यो ते नृप वन्न ॥ अहिरुपे
 आयुध सबे, दिठा तिहां नृप तन्न ॥ ३ ॥ डर आणी
 पांगे फीरयो, देखी काला नाग ॥ अर्जुनपें आवी क
 ह्यो, कोइ न फावे लाग ॥ ४ ॥
 ढाल १३७ मी ॥ साहिवारे मारा मेरु तणी परे
 धीर ॥ ए देशी ॥ हरीनंद आपे आयनेरे लाला, ली
 धा कर हथीयार ॥ वज्र कवच तनुथी जड्योरे ॥ ला०
 ॥ उपर साक्षी उदार ॥ १ ॥ चढी आयो लाला, पार
 थ प्रबल प्रताप ॥ ए आकणी ॥ आवी रणने सनमु
 खेरे ॥ ला० ॥ पूरयो शंख जेवार ॥ कर्ण आदे सह
 राजीयारे ॥ ला० ॥ चमक्या चित्तमऊर ॥ च० ॥ २ ॥
 नाद शंखनो सांजलिरे ॥ ला० ॥ पन्नणे श्री गांगेय,
 ए वाला रूप सुहामणोरे ॥ ला० ॥ पिण अर्जुन अह
 मेव ॥ च० ॥ ३ ॥ कौरवपति तव कलकल्यारे ॥ ला०
 ॥ अहो अहो जगदिश, ठे शत्रु मुऊ उपरेरे ॥ ला० ॥
 एतो विश्वारे वीस ॥ च० ॥ ४ ॥ द्रोण वदे नट सां
 नलोरे ॥ ला० ॥ हमणा होशे उतपात, इण अवसर
 टलवो नलोरे ॥ ला० ॥ शुकन अपशुकन थात ॥ च०

॥५॥सुजट दल जांखो थयारे॥ ला०॥चउ दिश हुवो अं
 धार, धरणी पेड ध्रुजे घणोरे ॥ ला० ॥ आयो अर्जु
 न इणीवार ॥ च० ॥ ६ ॥ सूकी धण पाठा वल्यारे ॥
 ॥ ला० ॥ तव जाखे हरी सुत, कायर किम पाठा व
 लोरे ॥ ला० ॥ रे राणी जाया रजपुत ॥ च० ॥ ७ ॥
 लका पापी राजीयोरे ॥ ला० ॥ आवी उनारे शूर,
 बायो गयण घमसाणसुरे ॥ ला० ॥ वाजीया रणतुर ॥
 च० ॥ ८ ॥ कर्ण कहे सहु सांजलोरे ॥ ला० ॥ दुःख म
 आणशो कोय, आ रण अर्जुन में वर्योरे ॥ ला० ॥ ए
 म कही आयोरे सोय ॥ च० ॥ ९ ॥ दल देखी कौरव
 तणोरे ॥ ला० ॥ वैराटा सुत कहे एम, तिलक सुजट
 कुण एहमेरे ॥ ला० ॥ कहो अर्जुन मुऊ तेम ॥ च०
 ॥ १० ॥ ऋपाचार्य रथ तणीरे ॥ ला० ॥ निलि ध्व
 ज अही नाण, कनकदंड ध्वज रथ जलोरे ॥ ला०
 ॥ ए द्रोण गुरु गुण खाण ॥ च० ॥ ११ ॥ ए दोइमुऊ
 उपगारीयारे॥ला०॥दिधी कला असमान, ए गुरु चरण
 पसायथीरे॥ला०॥हुं धरु धनुष्य वाण॥च०॥१२॥धनुष्य
 ध्वजे द्रोण सुतजीरे ॥ला०॥करे अमरसुरे वाद, नाग
 केतुवर रथ जलोरे ॥ ला० ॥ दिसे दुंर्योधन आद ॥
 च० ॥ १३ ॥ पीली पताका रथ तणीरे ॥ ला० ॥ ए
 कर्ण अजीराम, एम सघला अर्जुन कहेरे ॥ ला० ॥
 सुजट महारथी नाम ॥ च० ॥ १४ ॥ बाणे अंवर ठा
 इयोरे ॥ ॥ दल पसरया चिहु दीस उर, आया

कर्ण रथ सनमुखेरे ॥ ला० ॥ करी आडंबर जोर ॥
 च० ॥ १५ ॥ अर्जुन रथना नादथीरे ॥ ला० ॥ सु
 नट न धरेरे धीर, सींह तणी परे गाजतोरे ॥ ला० ॥
 आवी उन्नो वड वीर ॥ च० ॥ १६ ॥ शस्त्र ठेदि क
 र्णनारे ॥ ला० ॥ कहे अर्जुन तजी रीस, इण अवस
 र अंग रायजीरे ॥ ला० ॥ पूगी सघली जगीस ॥
 च० ॥ १७ ॥ विंदाचल गजनि परेरे ॥ ला० ॥ अ
 डीया दोइ ततखेव, अचरिज पामी अवरेरे ॥ ला० ॥
 मिलाया कौतकि देव ॥ च० ॥ १८ ॥ मोटा नरुने मोडतोरे
 ॥ ला० ॥ एकलडो हरी नंद, मुर्वाइ धरणि विपेरे ॥
 ला० ॥ पडीया कर्ण नरिंद ॥ च० ॥ १९ ॥ द्रोण गु
 रु तव आवियारे ॥ ला० ॥ हरखाणो मन नूप, आ
 ज गुरु नले आवियारे ॥ ला० ॥ देवा शोच अनूप
 ॥ च० ॥ २० ॥ प्रथम बाणे हरीनदजीरे ॥ ला० ॥ किधो
 गुरु प्रणाम, सूकी बाण वर दुसरोरे ॥ ला० ॥ वेदे ध्वज अ
 नीराम ॥ च० ॥ २१ ॥ अनर्थ जाणी आकरोरे ॥ ला० ॥
 प्रनु दया दिल आण, कौरवना दल उपरे ॥ ला० ॥
 सूके मोहन बाण ॥ च० ॥ २२ ॥ सैन्य सकल धर्णी
 पड्योरे ॥ ला० ॥ न रही शुद्ध लिगार, वार भणना
 जो घडेरे ॥ ला० ॥ तोपिण न लहेरे सार ॥ च० ॥
 ॥ २३ ॥ निल ध्वज कौरव तणीरे ॥ ला० ॥ पिले क
 र्ण बिराज, लेजे ध्वज रलीयामणीरे ॥ ला० ॥ तुज
 नगनीनेरे काज ॥ च० ॥ २४ ॥ निपम नय मनम

धरीरे ॥ ला० ॥ कुंवर जिम शंक, लेइ ध्वज पावो
 वल्योरे ॥ ला० ॥ कंपे अटारीरे लंक ॥ च० ॥ २५ ॥
 कौरव राय पावो वल्योरे ॥ ला० ॥ धरतो मन संता
 प, गौधन वाली उत्तरारे ॥ आ० ॥ आयो प्रचुने प्र
 ताप ॥ च० ॥ २६ ॥ समुत्रीसा सोमी ढालमेरे ॥ ला०
 ॥ अर्जुन देखायोरे आप, गुणसागर पांडव तणोरे ।
 ला० ॥ चढतो तेज प्रताप ॥ च० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ मठराय घर आवीयो, पामी खवर तेवार ॥
 उत्तरा कुमर एकलो, हुवो कौरव लार ॥ १ ॥ चूप च
 ढाइ कारणे, उद्यम करे अशेश ॥ आवी ताम वधा
 मणी, जित्यो कुमर नरेश ॥ २ ॥ कंक विप्रने रायजी,
 बेठा सजा मजार ॥ सारी पासा खेलतां, उलटनो
 अधिकार ॥ ३ ॥ करत प्रशंसा पुत्रनी, कंक कहे सुविचा
 र ॥ बृहनडा जस सारथी, जीते क्युं न कुमार ॥ ४ ॥

ढाल १३८ मी ॥ वेदनी देशी ॥ एतले चली आ
 या जगत सुहाया, हरी सुत नितर जाया ॥ कुमर
 पगे लागी उन्नो आगी, आलिंगे तव राया ॥ १ ॥ सु
 ह माथो चुंबी अंबर अंबि, वारंवार प्रशंशो ॥ आप
 णपें करतो मुख उच्चरतो, कुंवर कुल अवतंशो ॥ २ ॥
 तव कुमर चापे मर्म प्रकाशे, जीतो जास प्रसंसो ॥
 ते तीजेवासर आप उदोधर, प्रगट कुल अवतंसो ॥ ३ ॥
 ॥ दिन त्रीजो पामी पांडव स्वामी, प्रगट भया सुख
 काशे ॥ तव नाही धोइ पावन होइ, पहेरी धोती उ

दारो ॥ ४ ॥ जिनवर आराधी, सुर विधी साधी, सि
 घासण वेसंतो ॥ ते सघला वीरा साहस धीरा,
 प्रभुना पग प्रणमंतो ॥ ५ ॥ वादलने टलवे पूजा
 मिलवे, सहस किरण दिनकारो ॥ देखावे आपो
 प्रबल प्रतापो, जगमांही जयकारो ॥ ६ ॥ तिम
 कुंती जाया तेज सवाया, आप आपणी सोह ॥ पे
 खता पेखी वात विशेषी, लोगाइहा पोह ॥ ७ ॥ पां
 ऋ जाणी जण जण आणी, नामता निज शिसो ॥
 चिरंजीवजो सो कोम वरीसो, चाट चणे आशिसो ॥
 ॥ ८ ॥ तव वेगे वधावा आवे गावा, गाम तणी वर
 गौरी ॥ नाचंती पात्रो सुललीत गात्रो, चतुर महा
 चित चोरी ॥ ९ ॥ निशाण धडुके ठद न चूके, नादे
 अवर गाजे ॥ दिजे बहु दानो अति सनमानो, उठ
 व अधीक विराजे ॥ १० ॥ वयराटो राजा अधीक दि
 वाजा, करतो आवे ताम ॥ चरणे शिर नामी निज हि
 त कामी, करत घणो गुण ग्राम ॥ ११ ॥ ते निज क
 रजोडे देवो लोडे, संपत सरीसो राजो ॥ अर्जीमान
 न राखे फिर फिर चांखे, तुम्हे सारया हम काजो ॥
 ॥ १२ ॥ सगपण करवे अति विस्तरवे, नेह तणो
 अधिकारो ॥ आतासुं उलजी जाइ न सुलजी, लट
 जगनो व्यवहारो ॥ १३ ॥ कुंवरनी जगनी ठे शुभ ल
 गनी, शुभ लक्षण शुभकारी ॥ अति रुप रसाली
 जाक कमाली, वाली ठे सुविचारी ॥ १४ ॥ अहेवनने

दिजे कारज सीजे, मानो एह अरदासो ॥ ए सरखो
 मेलो थाय जो जेलो, तो पहोंचे मन आशो ॥ १५ ॥
 वाहालानुं वंठिउं आपण इठिउं, काम महा अजरि
 मो ॥ राजाजी मानी प्रीत प्रमाणी, पिण पूगी जे सा
 मो ॥ १६ ॥ नृप शर्म सलुणो दिन, दिन दुणो, ते
 ज प्रताप प्रकासो ॥ तव हरीसुं जाइ वात सुणाइ, ह
 री मानी उल्हासो ॥ १७ ॥ चाणेजा साथे श्री जग
 नाथे, आणी व्याह करायो ॥ हाथीने घोडा पाट सजो
 डा, मणी कंचक मन चायो ॥ १८ ॥ दिधां वर हेते
 तेपरणेतें, वाध्या रंग सवाया ॥ नूयासुं बंधु हरी गुण सीं
 धु ॥ द्वारामती चली आया ॥ १९ ॥ नौजननी जग
 ति जण जण युगति, साचवता अति सेवो, आदर अ
 ति दिजे खिजमत कीजे, हलधरने हरि देवो ॥ २० ॥
 यादवनि कुमरी, जेहवि अमरी, ते च्यारे परणाया ॥
 नव नव सुखवासी लील विलासी, परम माहा सुख
 पाया ॥ २१ ॥ ए ढाल सोहावी अति मन चावी,
 आरुतिसा सोमी वारु ॥ श्री गुणसागर सूरी उजाग
 र, पांडव चरीत न पारु ॥ २२ ॥

चौपइ ॥ खंड खंड रस ठे नव नवा, सुणतां मि
 ठा साकरलवा, श्री हरीवंश चरित्र जय जयो, सप्त
 मो खंड ए पूरण थयो ॥ १ ॥ इति ढाल सागर हरी
 वंस प्रबंध सप्तमोऽधिकार समाप्तः ॥

॥ अथ ढाल सागर हरीवंस प्रबंध आठमो खंड प्रारंभः ॥

दुहा ॥ श्रुत ज्ञानी जगमें वसो, प्रणमं चाव उदा
र ॥ अब अष्टम अधीकारनो, उद्यम करुं अपार ॥

॥ १ ॥ कुंवर यादव पांडव तणां, मिली मिली मननो
मेल ॥ द्वारामती मांहे करे, नित नित नवली केल ॥

॥ २ ॥ यादव बहु हित दाखवे, पांडव शुं धरी प्रित ॥
घणा नेहे घरनी परे, रहे तिहां सुज रित ॥ ३ ॥ स

मुद्राविजय आदी सहु, तव मिली जादव नाथ ॥ पां
चे पांमवने कहे, वारु सुणो एक वात ॥ ४ ॥ प्रतीज्ञा

पूरण थई, पिण अधुरी रहि वाता ॥ शत्रु पराभव बहु क
रया, बल न रह्यो तिल माता ॥ ५ ॥ हिवे तो अवसर पामी

ने, सघलो मेली साज ॥ ए कटक कटकी तरुपरे, ए
वेदो तुमे आज ॥ ३ ॥ पांडव प्रथवी वालवा, यादव

करे विवेक ॥ दुर्योधन राजा कन्हे, दूत मोकली सुवि
शेष ॥ ७ ॥ तव कौरव पति कलकले, हारी धरती फे

र ॥ किम देवाए देवजी, न्याय नजरसु हेर ॥ ८ ॥
ढाल १३९ मी ॥ त्रिपदीनी देशी ॥ तव धर्म

पुत्र कहे धरतिने काजे, युद्ध हुं न करुं सही कुल लाजे
॥ चार माहरो बली जाजे ॥ १ ॥ जुलेश काजे जाइ

वे जेहुं, पांख पोतानी कहो किम वेहुं ॥ हुं नही कुल
दु ॥ २ ॥ द्रौपदीए तव किधी सांन, तिहारे जीम जां

खे बलवान, तुमे सांजलो राजान ॥ ३ ॥ आज लगे
तो तुम कह्यो किधुं, हिवे तो ते सर्व थयुं शिधुं ॥ पिण

पाणी निर वही लिधुं ॥ ४ ॥ हिवे तो अमे आप्या वा
 जी, दिलनी नलीपरे चांगीशुं दाजी ॥ बडाशुं रुनीप
 रे बाजी ॥ ५ ॥ अब ए अवरै रह्यो न जाए, लोक
 सांहि पिण हांशि थाए ॥ बलतुं बल न खमाए ॥ ६ ॥
 तुमे तो गो ठांठा हिम, अग्निना नडका सरिखुं हुं नीम
 ॥ हिवे नहि पालुं निम ॥ ७ ॥ युधिष्ठीर कहे तुमे सूर,ा,
 सकल पराक्रममां सदा पूरा ॥ नहि मेहलो अधूरा ॥
 ॥ ८ ॥ तोपण गुले जो समजी गुंडा, तो आपण न
 हि थइए चुंडा ॥ वांधव थाए उंदां ॥ ९ ॥ सहुनी
 आण लहि अदचुत, जय नामा तव मोकल्यो दूत ॥
 गजपुरे तेह पोहचंत ॥ १० ॥ कृष्णनो दूत हुं तुं राजान,
 सांचली सर्वे थइ सावधान ॥ कथन सुणो धरी कान ॥ ११ ॥
 तेरे वरस महा दुःखे गाली, पांऊवे पुरी प्रतिज्ञा पाली,
 हिवे तुमे जूठ संजाली ॥ १२ ॥ एहनो तुमे हिवे आ
 पो राज, जेम तुमारि वाधे लाज ॥ करो विचारी काज
 ॥ १३ ॥ राज्य नापोतो आपो पंच गाम, इंद्रप्रस्थ तिलप्र
 स्थ अचिराम काशी ॥ गजपुर वारणावति नाम ॥ १४ ॥
 दूत वचन दुर्योधन काने सुणी, अहो मुने युद्धे आरो
 खो, बोलीउं ज्युं उंखो ॥ १५ ॥ मुठ सरडीने दंतज
 घरनी, आलस मोडीने अधर ते करडी ॥ आंख्ये
 आंखो तरडी ॥ १६ ॥ हारयुं राज आवे किम हेव ॥
 एतो मारा शत्रु स्वयमेव ॥ सांचलो वात सत्येव ॥
 ॥ १७ ॥ आज लगे ए जिहां रह्यां जेह, प्रथमी मा

हरी जाणी तेह ॥ जाग आप्यो मे एह ॥ १८ ॥ कटक
बले थाए ते करजो, युद्ध करता मत उसरजो ॥ वराए
तो जइने वरजो ॥ १९ ॥ सुए अणिए चंपाए जेती,
अवनि नवि आपुं एहुने तेती ॥ फोगट थाशे ए फ
जिती ॥ २० ॥ एतो रुडी ढाल पुराणी, गुणसागर ए
म बोले वाणी ॥ जिनवाणी भजो प्राणी ॥ २१ ॥

दुहा ॥ एम सुणी कहे दूत तव, राजन मानो वय
ण ॥ गौत्र विरोध नहि जलुं, जुठ विचारी सयण ॥
॥ १ ॥ किचक वक किम वीर जीसां, हेमवादिंक
हणयां जेण ॥ ते जीम आगले सही जागशो, केहेशो
न कह्यो केण ॥ २ ॥

ढाल तेहीज ॥ रुकमणी राणी मेहेलमां ॥ ए दे
शी ॥ दूत कहे सुणो रायजी, जीम तणी जडवाय
हो राज ॥ उड्या जाए आकाशमां, तुम सरिखा केइ
राय हो राज ॥ दूत कहे सुणो रायजी ॥ १ ॥ अर्जुन
आगल नहि आशरो, तुमारो तिलमात्र हो राज ॥ रा
धा वेध साध्यो जिणे, बोली विचारी मात्र हो राज ॥
दूत० ॥ २ ॥ विद्याधर दल जीतीने, तुमने जिवितदा
न हो राज ॥ ते माटे ते पूज्य ठे, कां थान अज्ञान
हो राज ॥ दूत० ॥ ३ ॥ तुं अपकार करे सदा, ते क
रे उपकार हो राज ॥ धर्म पुत्र धरमातमां, तुमारो हि
तकार हो राज ॥ दूत० ॥ ४ ॥ अवनी मेघ वरसाव
तां, युधीपीर जलघार हो राज ॥ वालि राखेठे वीरने,

आज लगे निरधार हो राज ॥ दूत० ॥ ५ ॥ देव दा
 एव जेणे दृश्यां, जेणे मारयो कंस हो राज ॥ आश्र
 वाए तेहने, तेनी जग अवतंस हो राज ॥ दूत० ॥ ६ ॥
 पावक सरिखा पांडवा, तुतो घास समान हो राज ॥
 वनमाली वायु परे, प्रेरेवे वली तास हो राज ॥ दूत०
 ॥ ७ ॥ तव जीष्म द्रोण विदुर कहे, साची बानो ए
 वात हो राज ॥ मनना आमला मेलीने, मिलि बेसो स
 हु धात हो राज ॥ दूत० ॥ ८ ॥ शिखामण ते सांज
 ली, वली कोप्यो विशेष हो राज ॥ अग्निज्वाला परे
 उपरयो, धरतो दिलमां देश हो राज ॥ दूत० ॥ ९ ॥
 तव कृष्ण दूत कहे कोपिने, आव्यो तेहने मोत हो रा
 ज ॥ युद्धे ते सहु जाणजो, जाशे गोफण गोला सुत
 हो राज ॥ दूत० ॥ १० ॥ एम कही दूत आव्यो व
 ही, कृष्ण पासै संदेश हो राज ॥ मांडीने सर्वे कह्यो,
 एके एक आशेश हो राज ॥ दूत० ॥ ११ ॥ सऊन
 सहु ढाले जुन, दुर्योधन दिल मांहि हो राज ॥ कप
 ट राख्यो गुणसागर कहे, हिवे आगले शुं था
 य हो राज ॥ दूत० ॥ १२ ॥

अथ चारथना ध्रुपद लिख्यते ॥ राग विहाग ॥ मानो
 वात हमारी हो राजा ॥ मा० ॥ पांच गाम पांडवने
 दिजे, उर सब जोमी तुम्हारी ॥ हो राजा ॥ मा० ॥ १ ॥
 करुदेश हस्तनापूर नगरी, अंग देश पंचालो ॥ उत्तर
 देश अयोध्या नगरी, दखण देश बंगालो ॥ हो राजा

मा०॥२॥पांच जाइ पांडव केवराइ, अर्जुन जोर अपारो॥
 जीमशेन ज्यारे नारथ रचशे, तारेनही उगरानो आरो
 ॥हो राजा ॥ मा०॥३॥ केवुं होय तो हमणा किजे, तुम्हे
 कृष्णजी कारो ॥ प्रथवी एक कणी को न आपुं क्या करे
 धर्म विचारो ॥ हो राजा ॥ मा०॥ ४ ॥ क्षत्री होय ते
 खांफानी गत जाणे, एतो गाय चरावनहारो ॥ राज निती
 मांही ए शुरे जाणे, मही लुटावनहारो हो राजा॥मा०॥५॥

अथ द्वितीय पद लिख्यते ॥ गइ जोम तुमारी हो
 पांडवो ॥ ग०॥ जिणे वात न मानी हमारी हो पांडवो
 ॥ ग० ॥ ए टेक ॥ क्षत्री होय ते वेरज खेडे, शुं करे
 नक्की संसारी ॥ बापकी जातां बल जे न करे, चूप
 नही पिण जिखारी हो पांडवो ॥ ग०॥ १ ॥ ए अचनी
 मांही अमर न रेणा, कहे धरम विचारी ॥ गोतर गर
 दन अमे जो करीए, तो शी गत थाए अमारी हो पां
 डवो ॥ ग० ॥ २ ॥ द्युत विद्या दलमांही रमीयां, हा
 रया गरथ जंडारी ॥ ए लाखाग्रह मांही तुमनेरे वा
 ल्या, शी रे सगाइ सगारी हो पांडवो ॥ ग०॥३॥ पाप
 तणेरे एणे पायोरे मांडवो, पंचालीरे पूकारी ॥ अंधनो
 सुत जो अचनी लेशे, तारे पोरससे गंधारी हो पांडवो
 ॥ ग० ॥ ४ ॥ आ अचनी उंधे परु नाखुं, उठ्यो जी
 म पूकारी ॥ सूरनो स्वामी शिखज आपे, ल्यो कौर
 वने मारी हो पांडवो ॥ ग० ॥ ५ ॥

अथ तृतीय पद लिख्यते ॥ किधा अमने टपारी ट

द्युम्न सेनापति, पांडवे करघो धरी प्रेम ॥ पांडवने कौ
 रव मिल्या, रामने रावण जेम ॥ १४ ॥ साम दाम जे
 द मुकीने, केवल नीग्रह एक ॥ ठरावी रणक्षेत्रमां, व
 ठवुं एह विशेष ॥ १५ ॥

ढाल तेहीज ॥ तुम हे पीतांबर पेहेरोजी मुखने म
 रकलडे ॥ ए देशी ॥ रणनुं मुहुरत निरधारीजी, राज
 वी रण रशीया ॥ आयुद्ध अरची अधिकारीजी ॥ राज० ॥
 धूप दीप अद्धत फूलेजी ॥ राज० ॥ उपे आयुद्ध बहु मू
 लेजी ॥ राज० ॥ १ ॥ नीशाण तणे नीर्घोपजी ॥ राज० ॥ जाणे
 ते वीर रस पोपेजी ॥ राज० ॥ अरुणोदय वेला रणे धाता
 जी ॥ रा० ॥ रवी सरीखा थया वीर राताजी ॥ रा० ॥ २ ॥
 कोलाहल रणे उठलियोजी ॥ रा० ॥ सिंहनाद मांहि जही
 नलीतजी ॥ रा० ॥ रणतूरना थाय रणकाराजी ॥ रा०
 ॥ चेरीना वाजे नणकाराजी ॥ रा० ॥ ३ ॥ ढकाका
 हल डणकाराजी ॥ रा० ॥ हुंडक परुरो पूकाराजी ॥
 रा० ॥ घण धरणी लाज राखेजी ॥ रा० ॥ धीर
 पणुं शीर धारेजी ॥ रा० ॥ ४ ॥ गयवर गाजे घन ला
 जेजी ॥ रा० ॥ वाजां रणना बहु वाजेजी ॥ रा० ॥
 हयवरना जो रहे स्वाराजी ॥ रा० ॥ चिहुदिशे रथना
 चित्काराजी ॥ रा० ॥ ५ ॥ वली सुनट शब्द नयंका
 राजी ॥ रा० ॥ कोदंरु तणा टणककाराजी ॥ रा० ॥ ग
 यवरनी घटा तिहां चालेजी ॥ रा० ॥ पोढा परवत
 ॥ रा० ॥ ६ ॥ मदऊर मयंगल रोशाला

जी ॥ रा० ॥ मुंडना करे उलालाजी ॥ रा० ॥ ध्वज
 घुघरी घंट वाजेजी ॥ रा० ॥ रथ देखी रवीरथ लाजे
 जी ॥ रा० ॥ ७ ॥ इम जाणे आयुध शालाजी ॥ रा०
 धरणी चानुर्घटवालाजी ॥ रा० ॥ धव धव धाता च
 क्रधाराजी ॥ रा० ॥ प्रथवीना थाय पचकाराजी ॥ रा०
 ॥ ८ ॥ न्हाना तीक्ष्ण तोखाराजी ॥ रा० ॥ खेडता
 रथ थाए होकाशजी ॥ रा० ॥ हयवरना थाए हिलो
 लाजी ॥ रा० ॥ जाणे समुद्र तणा कलोलाजी ॥
 रा० ॥ ९ ॥ चूये तो पगनवी मंडेजी ॥ रा० ॥ रवि
 रथ हयवर मान खंडेजी ॥ रा० ॥ तूर निर्घोषे गड
 तंद्राजी ॥ रा० ॥ तिहां अश्व थया उनीद्राजी ॥ रा०
 ॥ १० ॥ खणाए धरा खुर घातिजी ॥ रा० ॥ उडे डुं
 गरा उजातीजी ॥ रा० ॥ पवन वेगी जलपंताजी ॥
 ॥ रा० ॥ एहवा ते अश्व असंख्याताजी ॥ रा० ११ ॥ च
 र्म कवच सनाहाजी ॥ रा० ॥ अंगे पहिरया उठाहाजी
 ॥ रा० ॥ क्रपाए फल तुणीरजी ॥ रा० ॥ धनुरधर
 महा धीरजी ॥ रा० ॥ १२ ॥ सिंहनाद मुखे वोलेजी
 ॥ रा० ॥ विश्वने जाणे तृण तोलेजी ॥ रा० ॥ संग्रा
 म तणा महा रसीयाजी ॥ रा० ॥ पायक जाए बहु
 धशीयाजी ॥ रा० ॥ १३ ॥ रथ रेणुनरे रवी गायो
 जी ॥ रा० ॥ जाणे वरशालो आयोजी ॥ रा० ॥ सर्व
 शब्द उठ्यो समकालेजी ॥ रा० ॥ त्रिचुवन कंप्यो
 तिण तालेजी ॥ रा० ॥ १४ ॥ हाथीसुं मिलीया हाथी

जी ॥ रा० ॥ रथवाला रथ साथीजी ॥ रा० ॥ जाथी
 सुं मिलीया जाथीजी ॥ रा० ॥ घोडाचड घोडाचरु घा
 तीजी ॥ रा० ॥ १५ ॥ रण थयुं शायर रुपजी ॥ रा० ॥
 कलोल्ला तुरंग अनूपजी ॥ रा० ॥ गज रुपे जाणो वेह
 जी ॥ रा० ॥ मिन रुपी थया खेहजी ॥ रा० ॥ १६ ॥
 तिहां मगर थया रथ राशीजी ॥ रा० ॥ पाला जल
 भाणसा जाशीजी ॥ रा० ॥ प्रवहण थया विमानजी
 ॥ रा० ॥ शस्त्र ते वडवाशी मानजी ॥ रा० ॥ १७ ॥
 रणेतुर मीशे निर्घोपिजी ॥ रा० ॥ सेना वेलाने पोखे
 जी ॥ रा० ॥ एहवुं रण रणायर राजेजी ॥ रा० ॥ का
 यर देखीने जाजेजी ॥ रा० ॥ १८ ॥ ढाल रसीली
 गुणसागर बोलेजी ॥ रा० ॥ संग्राम सागरने तोले
 जी ॥ रा० ॥ सांचलतां सूरु जागेजी ॥ रा० ॥ का
 यर तो दूरे जागेजी ॥ रा० ॥ १९ ॥

लुहा ॥ वीर रस वाजे विस्तरयो, आवीने रण मां
 हे ॥ एहवुं ते तिहां देखीने, पार्थ पुत्र तिणे ठाए ॥
 ॥ १ ॥ अनीमन्यु तव उठली, पड्यो कौरव दल मां
 हे ॥ बाण धारा जल वरसतां, शत्रु जवाशा सुकाए ॥
 ॥ २ ॥ तेहवो तिहां देखीने, दल पाम्युं सहु क्षोत्र ॥
 देखी पडता आजने, कहो कुण मांडे थोत्र ॥ ३ ॥

ढाल तेहिज ॥ मेवाडा राणारे ॥ ए देशी ॥ अरजु
 न सुत आयोरे, अनीमन्यु सोहायोरे, न जाए सा
 ह्यो एतो आकरोरे ॥ क्रपाचार्य कहेठेरे ॥ ब्रह्मदवलल

हेठेरे, बेठो किम रहेठे, खारो लागे ए खरोरे ॥ १ ॥
 रथे बे वेशीरे, वाण नाखे वीहींशीरे, अनीमन्यु त
 व हशी, बलमां बोलियोरे ॥ नले तुमे आव्यारे, मु
 जने घणुं जाव्यारे, संग्रामे सोहाव्या रखे ध्रुजो हियोरे
 ॥ २ ॥ ब्रह्मदवल रुंध्योरे, अनीमन्युए गुंधोरे, कैक
 वे तव खुंधो, कृपाचार्यनेरे ॥ ते चारे युद्धे जडीयारे,
 हथीयारे वडीयारे, अंगो अगे अडीया, लागे नय
 लोकनेरे ॥ ३ ॥ कैकव कृपा जूजेरे, रथ रहित तनु
 ध्रुजेरे, खरुगे खगाशलुजे, अलुजे न एकलारे ॥ ख
 रगाडोप धरंतारे ॥ फणटोप हरंतारे, महा कोप करं
 ता, महा योद्धे मिल्यारे ॥ ४ ॥ ब्रह्मदवल बले वाध्यो
 रे, अनीमन्यु शुं वाध्योरे, रथ ध्वज सारथी तेहना
 ठेडीयारे ॥ एहवे रथ खेडीरे ॥ प्रथवी उखेडीरे ॥ नि
 प्पमे न करी जोडी, पांडव दल जेदीयोरे ॥ ५ ॥ निप
 मने जोरेरे, पांडव दले ठोरीरे, नाशी चिहुएरे, अ
 थीर थयुं अतिरे ॥ तव अनीमन्यु तप्योरे, निपमशुं
 कोप्योरे, अहो मुने लोप्यो, ध्वज ठेद्यो ते वतीरे ॥ ६ ॥
 दुरमुख नृप केरोरे, सारथी सवेरोरे ॥ जेद्यो नलेरो
 वार लागी नहीरे ॥ तव निपम क्रोधीरे, अनीम
 न्युसुं योधीरे, एह महा विरोधी, आज मारु सहीरे
 ॥ ७ ॥ तव पांडव सेनाथीरे, दश नृप थया साथीरे,
 अनीमन्यु लही हाथी, उपराले आवीयारे ॥ तव नि
 पम तिहां धायोरे, रथे वेशी आयोरे, दल दुरे नसा

यो, शत्रु न फावीयोरे ॥ ८ ॥ तव निपम निज बाणोरे,
तसु ध्वजने ठाणोरे, ठेदी मने जाणे, रखे अरि जीततारे ॥
तव उत्तर कुमारेरे, शल्य गजने संहारेरे ॥ तव शल्यने
ठारे, देखी अरि दिपतारे ॥ ९ ॥ अमोघा स्वर्ण शक्तिरे,
मेली निज चक्तिरे, सह जोतां सशक्ति, उत्तर मारीनरे ॥
तव पार्थ बाणने पूरेरे, दल नाठु दूरेरे ॥ आयो अर्जुन
सुरे, नरहे वारीनरे ॥ १० ॥ तव निपम चुजालोरे ॥
धरी धनुष क्रोधालोरे, आवी उजमालो, सेनाशुं
अड्योरे ॥ धृष्टद्युम्न थयो साहमोरे ॥ महा मच्यो सत्रा
मोरे, लेवा विश्रामो, रवी शायरे पड्योरे ॥ ११ ॥ दिनकर
गयो दूरेरे, न रह्यो हजुरेरे, महा संग्रामे दिनपणे,
आथ म्योरे ॥ प्रितीवती ढालेरे, कही गुण वीचालीरे
॥ नमीए प्रहकाले, युद्धथी जे सम्योरे ॥ १२ ॥

दुहा ॥ रणने मेली राजवी, पोहोता निज निज था
न ॥ पेहले दिवशे युद्ध एम, थयुं ते धरजो कान ॥ १ ॥
रात्री समथे सह राजवी, पांडव कृष्ण समाज ॥ मि
लीने करे मत्रणु, किम सिधाशे काज ॥ २ ॥ निष्म
सर्वथा अजित ए, जित्यो कियो न जाय ॥ तो दुर्यो
धन ए जीवतां, कहोने केम जिताय ॥ ३ ॥ तव कृ
ष्ण कहे उपाय एकठे, निष्मने नियम ठे एह ॥ विण
हधीयारा स्त्री क्लिवने, न मारे गुण गेह ॥ ४ ॥ ताढां
उपरांढा प्रत्ये, निष्मनना वे वाण ॥ चेदे निष्मने
चेदीए, सांचलो वात निवाण ॥ ५ ॥ ते माटे पार्थ

वी ठो तुम्हे, द्रुपद पुत्रछीव ॥ शिखंभीए रथे थापीने,
 तस पूठे रही अतिव ॥ ६ ॥ जिष्मने नेदे बाणशुं,
 गागेय नही नाखे बाण ॥ छीव शिखंभीया उपरे, एह
 उपाय एक जाण ॥ ७ ॥ कथन सुणी एह कृष्णनां,
 पांडव करी प्रमाण ॥ बलथी ठल बहुअठे, जो होए
 बुद्धि विनाण ॥ ८ ॥

ढाल तेहिज ॥ आरूयाननी देशी ॥ प्रजात थाते
 परवरथा, रण मध्ये सघला रायरे ॥ पांडव कौरव मि
 ल्या साहमा, धव धव क्रोधे थायरे ॥ ९ ॥ राजंद र
 णरंग रसे जरथा, आदरया शस्त्र अनेकरे ॥ वीर र
 से विराजतां, गाजतां सिंह जेम नेकरे ॥ १० ॥
 ॥ २ ॥ शिखंडीयो रथे थापीने, तिहां पार्थ रही पूठे
 रे ॥ जिष्मपे ज्युं जालीने, संचाली निज मुठेरे ॥ १० ॥
 ॥ ३ ॥ जिष्म छिवने चेदवा, समर्थ नही तक जोयरे
 ॥ आकर्णांत ताणी बाणे मारथो, जिष्म नाखे सो
 यरे ॥ १० ॥ ४ ॥ चर्म नर्म चेदीने हणे, चेद्या मा
 हरा प्राणरे ॥ ए शीखंडीयानुं नही गजुं, सही अर्जु
 न बाणरे ॥ १० ॥ ५ ॥ एम सारथीने कही ततखिणा,
 पड्यो रथ मजाररे ॥ तव शोकातुर थइ कौरव, आ
 वी रथ विंद्यो तेणीवाररे ॥ १० ॥ ६ ॥ अंत समय
 ना वचन सुणवा, सहु थयां सावधानरे ॥ तेवारे जी
 पमे तिहां सान किधी, कोइ करावो जलपानरे ॥ १० ॥
 ॥ ७ ॥ बाण बले प्रथवी चेदीने, निर्मल काढ्युं नीर

री नाखी, शस्त्र अस्त्रने घावे ॥ २ ॥ अनुपदे तव
 आवीया, शत्यकी वायु पुत्र ॥ दुर्योधनने चीम कुंजे,
 चुरीस्त्रवा शत्यकी तत्र ॥ ३ ॥ अर्जुने उशारी सर्व
 सैन्यजी, जयदरथ दिठो महा मलीनजी ॥ ते पट
 योद्धा जोर तिहां कुंजेजी, तनमन थया क्रोधे ध्रुजेजी ॥
 ॥ ४ ॥ क्रोधे करीने चुरीस्त्रवाना, मुज उपाडी ना
 खीयां ॥ तव सत्यकीए नेठारे मारयो, शत्रु विजा
 शंकीया ॥ ५ ॥ पार्थ पिण जयदरथना, तुरंग रथ
 सारथी हणी, दिनांते जयदरथ मारयो, अरि ग
 ण सघलो अवगणी ॥ ६ ॥ चौदे दिहामे अल्लोही
 णी सातजी, पांडवे चूरी देखाडी हाथजी, तव कौरव
 चिंते ए पांडव पूराजी, न्याय निति न थाए अधुरा
 जी ॥ ७ ॥ न्याय निते जीत्या न जाए, करुं इहां
 अन्याय ॥ धाडी मे लीधा ए पहतो, राते मारु ठा
 य ॥ ८ ॥ घुयडनी परे लेउ घेरी, पांशुव वायश
 नी परे ॥ एम चिंतीने धाड लेइ, पोहतो कोइक अ
 वसरे ॥ ९ ॥ तव चीम पुत्र हेडंवा जायोजी, अस्त्र ले
 इने साहमो आयोजी ॥ घटोक्कचने करी कुंज जाजो
 जी, जग मांहे जेहनो सघलो आजोजी ॥ १० ॥ आ
 जावंत ते अस्त्रजोरे, कौरव सेन्या ते मथे ॥ माया यु
 ध्वे बहु मारीया, तव कर्ण कोप्यो बल बते ॥ ११ ॥
 बाण बहुलां नाखीया, पिण तेह पागे न उंसरे ॥ त
 व वहनीकणा वृत्त शक्ती मेहली, प्राण तेहना अपह

री ॥ १२ ॥ घटोत्कचनो करी संहारजी, पांडव सेना
 मां थयो हाहाकारजी ॥ कौरव सेना मन हरखाणीजी,
 कर्ण समो को नही बाणीजी ॥ १३ ॥ बाणी नही को
 इ कर्ण सरीखो, प्रजाते धरी प्रेम ॥ रणांगणमां आ
 वीया, साहमे साहमा सागर जेम ॥ १४ ॥ विराट द्रु
 पद द्रोणे मारया. महा युद्धने जोरे करी ॥ पांडवनुं द
 ल थयुं जाखुं, अति आनंद पास्या अरी ॥ १५ ॥
 आ सुंदर ढाले तक जोइ, गुणसागर इणीपरे कही ॥
 हरखनी केडे शोक हरी. हरख शोक ते कर्म लही ॥ १६ ॥

दुहा ॥ पांडव दल थीर करी, धृष्टद्युमन साहमो था
 य ॥ द्रोणने कहे रहे उचो, जीवतो आज ना जाय ॥
 ॥ १ ॥ गजश्व नट ह्य पमाड्या, युद्ध तव जाम्यो
 जोर ॥ एहवे मालव रायनो, अश्वस्थामा गर्ज ते घो
 र ॥ २ ॥ अश्वस्थामा नामे तेह गज, पड्यो रणमां जा
 म ॥ अश्वस्थामा मारीउ, जनसहु चांखे ताम ॥ ३ ॥
 द्रोणे ते वात सांजली, विशंस्तुल थयो जाम ॥ शोका
 कुल लहीने वले, ते धृष्टद्युमनने हणयो ताम ॥ ४ ॥
 द्रोण तव धरणी ढल्यो, अणसण करीने सोय ॥ मरण
 समाधी ते मरी, ब्रह्मदेव लोके सुर होय ॥ ५ ॥

ढाल तेहिज ॥ गर्व न करशो गात्रनो ॥ ए देशी ॥
 अश्वस्थामा तिहारे उचल्यो, आव्यो पांडव दल
 मांय ॥ जलधरनी परे वरसतो, बाण धारा ते ठाय ॥
 जोरो जोयोरे युद्धनो ॥ १ ॥ पांडवना दल उपरे, अस्त्र

नारायणी नामे ॥ मुख्युं महा क्रोधे करी, विश्व कंष्युं
 ते ठामे ॥ जोरो० ॥ २ ॥ जाणे कोलियो करशे विश्व
 नो, सैन्य लीधुं सर्व घेर ॥ तेहने समर्थ नहि कोइ वा
 रवा, जोरावर पिण थया जेर ॥ जोरो० ॥ ३ ॥ तव
 कृष्णने वचने पांडवे, आयुध मेहली दूर, विनय करि
 ते स्वपरि करे, हेजे रही हजुर ॥ जोरो० ॥ ४ ॥ ज
 क्तिनी युक्ति तुठि तदा, शक्ति ते थइ शांत ॥ बार पो
 होर युद्ध ते थयुं, अनेकनो आव्यो तिहां अंत ॥ जो०
 ॥ ५ ॥ कर्ण सेनापति थापियो, कौरव मिलि ते ठाम ॥
 रणांगण मांहि आवियां, वल्यो महा संग्राम ॥ जो०
 ॥ ६ ॥ तव कर्णांत ताणी कोदंरुने, कर्णने पार्थ द्योय
 ॥ कल्पांत काल रवीनि परे, क्रोधे कोप्या कुल होया ॥
 ॥ जो० ॥ ७ ॥ बले पूरा ते विदु सहि, बाणावलि पि
 ण तुल्य ॥ सरिखे समाने बें चंडे, नूजठे जेहना अतु
 ल्य ॥ जो० ॥ ८ ॥ जीम नूजा वलि चालीने, नांज्यो
 दुःशासन ॥ नूजा काठी नूज बले, वीर हरया धरि म
 न ॥ जो० ॥ ९ ॥ रविए रेहेवाणुं नहि, नाशी गयो
 निज गेह ॥ रात्रि पडी तव तजी, थानक पोहोतां तेह
 ॥ जो० ॥ १० ॥ कर्णे प्रतिज्ञा तव करि, अर्जुनने
 मारुं आज ॥ शल्यने सारथी थापिने, शंखनो करी
 अवाज ॥ जो० ॥ ११ ॥ रणांगण मांहि आवियो, ग
 र्जना करतो घोर ॥ दशो दिशी बहिरी करी, जय ला
 गो चिहुं वर ॥ जो० ॥ १२ ॥ सजल जलद घटानि

परे, अवनि आकाश प्रळयांत ॥ तिर ते त्रिचुवने विस्त
 र्यां, जाणे कोप्यो कृतांत ॥ जो० ॥ १३ ॥ पन्नग अस्त्र क
 षं मुक्यु, पार्थ गरुड अस्त्र तांम ॥ एम अस्त्र अनेक अ
 फल्या कर्यां, अर्जुने तेणे ठाम ॥ जो० ॥ १४ ॥ शं
 खचूड निशा निधे, कर्ण मास्थो दिनांत ॥ करण पड्यो
 कौरव तणी, चांगी सघली आंत ॥ जो० ॥ १५ ॥
 आशा बलवंती जगमां कही, तव शल्य कस्थो शेना
 नि ॥ रणांगणमां आविया, हजु हुंश अठे जीत्यांनि ॥
 जो० ॥ १६ ॥ शल्य ते शल्य सारिखो, बाणनो वरसतो मे
 ह ॥ तिहां युर्धापीर एक थीर रद्यां, थयुं युद्ध अठेह
 ॥ १७ ॥ दीशी दावानल सारिखो, शकुनी आव्यो
 तक जोय ॥ उत्तर वयर संनारिने, शल्य युद्धीरे सोय
 ॥ १८ ॥ शक्ति मेलिने संहारीयो, दिनांते दल माहे ॥
 एतो ढाल रसाल ए, वदे गुणसागर उठाहे ॥ जो० ॥ १९ ॥
 दुहा ॥ शल्य पडते महा शल्य थयो, कौरवने ते
 काल ॥ लोक मांही लाजतो, मुख ढंके मठराल ॥ १ ॥
 दुर्योधन तव नाशीने, अलोप थयो ते आप ॥ कोइ
 सरोवर मांही जइ परयो, अताग देखी आप ॥ २ ॥
 ढाल तेहिज ॥ चडि आव्यो लाल पार्थ प्रबल प्रता
 प ॥ ए देशी ॥ धों धों नगारां वाजता, वाहलां, चरयो
 दुर्योधननो सेनावन मांही बोली विधुरा ॥ वा० ॥ मुख मे
 हलंता फेन ॥ १ ॥ माहरा नाथ गुमानी, कुण लेशेरे
 म्हारो मुजुरो आजुनो ॥ आवी मीळोरे, न्हारा चूप अ

जीमानी ॥ कुण० ॥ २ ॥ ए आंकणी ॥ खांते वगडो खोलतां,
 ॥ वा० ॥ किहां एक लाधी जाला ॥ जल मध्ये तिहां जाणी
 ने ॥ वा० ॥ सहु बोले समकाल ॥ मा० ॥ ३ ॥ पांड
 व पिण पोहोतां तिहां ॥ माहारा बंधु ठविला ॥ कुण कर
 शेरे जोरे युद्ध आजुनो, रणमां आवोरे माहारा रणनां
 रंगिला ॥ ए आंकणी ॥ तुं अजीमानी राजवी ॥ वा०
 ॥ तुं सूर मांही सूर ॥ माहारा ० ॥ तुज्जने न घटे नास
 वुं ॥ वा० ॥ नहि रहे नासतां, नूर ॥ मा० ॥ ४ ॥ का
 तुं कुलने लाजवे ॥ वा० ॥ पुरप तनु करी मलीन ॥
 ॥ मा० ॥ पाणीमां पोढयो थको ॥ वा० ॥ दिसेठे स
 हादीन ॥ मा० ॥ ५ ॥ अर्जुन रुपे आथले ॥ वा० ॥
 कहेने किम रहेवाय ॥ मा० ॥ ए सरोवरनो स्यो आ
 सरो ॥ वा० ॥ सोपास्ये जो समुद्र सोषाय ॥ मा० ॥
 ॥ ६ ॥ अथवा तुं जो उंसरे ॥ वा० ॥ सेनासुं युद्ध
 न थाय ॥ मा० ॥ तो मन माने जेहशुं ॥ वा० ॥ ते
 एकसुं वढोरण ठाय ॥ मा० ॥ ७ ॥ जेणे तेणे वाते
 जाणीये ॥ वा० ॥ माथे आव्युं ठे मोत ॥ मा० ॥ ते
 माटे दिन तातजी ॥ वा० ॥ मरे तुं सूर तन सहित ॥
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ तव तिहां दुर्योधन बोलीयो ॥ वा०
 ॥ गदा युद्ध जीमने साथ ॥ मा० ॥ मानी सरथी म
 गरस्यो ॥ वा० ॥ नीसरथो कौरव नाथ ॥ मा० ॥ ९ ॥
 पांडव कौरव सहु भीली ॥ वा० ॥ बेठा सजा वनाय
 ॥ मा० ॥ जीम दुर्योधन वे जडे ॥ वा० ॥ मारे ग

दाना घाय ॥ मा० ॥ १० ॥ मल्लपरे ते बे मिल्या ॥ वा०
 ॥ पोढा पर्वत मांही ॥ मा० ॥ उंचा निचा उठले ॥
 ॥ वा० ॥ घडो घडी धरती घेराए ॥ मा० ॥ ११ ॥
 रोपारुण थया रातमा ॥ वा० ॥ जोया केणे न जाय
 ॥ मा० ॥ दुर्योधन नाठो घणुं ॥ वा० ॥ प्रथवीए न
 मेली पाय ॥ मा० ॥ १२ ॥ लघु लाघवी कला ल
 ही ॥ वा० ॥ ठलवीण नवी ठेतराय ॥ मा० ॥ जंघमां
 गदा जोरे शुं ॥ वा० ॥ जीम मारे महाकाय ॥ मा०
 ॥ १३ ॥ चूए पाडीने जीमडे ॥ वा० ॥ मारी पाटुना
 प्रहार ॥ मा० ॥ मुकुट चांगी चुगो करयो ॥ वा० ॥
 पूरव कोप संजार ॥ मा० ॥ १४ ॥ गुणसागर कहे सां
 भलो ॥ वा० ॥ एतो ढाल रसाल ॥ मा० ॥ विघन घ
 णां वांका जमां ॥ वा० ॥ आवी पोहोते काला ॥ मा० ॥ १५ ॥
 दुहा ॥ संवधी जाणी ते समय, बलचद्र बहु रि
 साय ॥ पांरुव सहुने अंवगुणी, निसरी दूरे जाय ॥ १ ॥
 पाडव तव पुठे गया, आगे कृष्ण करेह ॥ बलचद्रने
 मनाववा, निज मने आणी नेह ॥ २ ॥ धृष्टद्युमन
 खेडीयो, रत्नाने रणमांही ॥ थिर करीने थापीयां, र
 ह्यां रण अवगाही ॥ ३ ॥
 ढाल तेहिज ॥ शियल सुरंगी चूनडी ॥ ए देशी ॥
 होजी दुर्योधनने ते आवी कहे, होजी क्रतवर्म कृपा
 अश्वस्थाम ॥ होजी अंत समये आव्या अमे, होजी
 तम स्वरुप जोवाने काम ॥ १ ॥ साहेबीया बोल वो

लरे जे कहो ते करुं अमें ॥ ए आंकणी ॥ होजी तुमे
 तो सहने तजी, होजी सुता मरण शयाए ॥ होजी तो
 पिण आपो आगन्या, होजी ते काज करुं उवाहे ॥
 सा० ॥ २ ॥ होजी आपोजो तुमे आगन्या, होजी
 तो पांरवना शिस, होजी मुख आगे आणी मेलीए,
 होजी एह अमारी आशीस ॥ सा० ॥ ३ ॥ होजी
 वयण सुणी वेधालुया, होजी आपे थइ उजमाल ॥ हो
 जी वांसो थापीने मोकल्यां, होजी दुर्योधने ततकाल
 ॥ सा० ॥ ४ ॥ होजी ते तिने रणमां जई, होजी
 युद्ध करीने जौर ॥ होजी धृष्टद्युमन श्रीखंडीया हणी,
 होजी शुन्य लही रणठोर ॥ सा० ॥ ५ ॥ होजी पांड
 वनां पाच पुत्रनां, होजी माथा लेइ पंच ॥ होजी मु
 ह आगले आणी मेलीयां, होजी दुर्योधन लहि प्र
 पंच ॥ सा० ॥ ६ ॥ होजी शीसु शौर उलखी वोलि
 यो, होजी तुमने पडो धिकार ॥ होजी बालहत्या मुऊ
 आपीने, होजी नारयो अति पापने नार ॥ सा० ॥
 ७ ॥ होजी मुखे एम कहितो थको, होजी पोहोतो
 ते परलोक ॥ होजी ते पिण त्रीणे किहांइ गयां, हो
 जी पामी लाजने शोक ॥ सा० ॥ ८ ॥ होजी गुणसा
 गर एम उच्चरे, होजी ढाल नली रसाल ॥ होजी मरण
 अकाले ते मरे, होजी जेहने पापनो ढाल ॥ सा० ॥ ९ ॥

दुहा ॥ नक्तिनाव विनये करी, बलनदने बहु मा
 न ॥ देइ मनावी पांरवा, आव्या करी रण स्थान ॥

॥ १ ॥ पुत्र हणयांथी शोके अति, कौरवने पांडव
नंद ॥ स्वजनादिक सह साथनां, करिअ मृत कार्य
नरिंद ॥ २ ॥ सरस्वति सरितां तटे, पांडवे मृत काज ॥
उजमणीत पालिया, सर्वेने शुच साज ॥ ३ ॥

इति पांडव कौरव संग्राम चरित्र संपूर्ण

ढाल मूलगी तेहिज ॥ नजो नरराम राम ॥ ए दे
शी ॥ दुर्योधन सेनापति नीपम, किधो बलियो जाणी ॥
धृष्टद्युमन पांडव थीर थाप्यो ॥ कटक तणो आगे वाणी
होराजा किधो आज जारथ ॥ १ ॥ अग्निमन्यु कुमर अधी
क बलवंतो, सर्व सुनटने आगे ॥ रण रंगे रमवा रलि
थायत, ब्रहतवलसुं जांगे हो राजा ॥ कि० ॥ २ ॥ नीष्म
केतु अग्निमन्यु कपि, नीष्म नीष्म होवे ॥ वेदे केतु नीम
नी नूपति, देव तमासो जोवे हो राजा ॥ कि० ॥ ३ ॥ उत्तर
कुंवरने दुःखदाइ, सलय नरेसर देखी ॥ अर्जुन कौरव
ना दल मोडे, नीष्म रीस विशेषी हो राजा ॥ कि० ॥
॥ ४ ॥ शंड शीखंडी आगे रांखी, इंद्र तणो सुत को
पे ॥ नीष्म तनु तव वाणे विंध्यो, प्रचु मरजादा नलोपे
हो राजा ॥ कि० ॥ ५ ॥ तृप्यावंत नंदी सुत जाणो,
अर्जुन पावे पाणी ॥ संधारो करी स्वर्ग वारमे, हुवो
अमर विमानी हो राजा ॥ कि० ॥ ६ ॥ द्रोणाचार्य
सेन्या नायक, होइ रणमे आवे ॥ आरंजी आरंज घ
णोरो, करतो शंक न पावे हो राजा ॥ कि० ॥ ७ ॥
श्री जगदत्त हरायो अर्जुन, जयदरथ अर्जुन नंद ॥

जयद्रथ अर्जुन करी प्रतिज्ञा, पांड्यो ततखीण मंद
 हो राजा ॥ कि० ॥ ८ ॥ सात अक्षोहणी चउदसने
 दिने, खिली कौरव केरी ॥ हेडंबा सुत हार मनावी,
 करणे करीय घणेरी हो राजा ॥ कि० ॥ ९ ॥ धृष्टद्यु
 मन आगे परपंचे, द्रोणाचार्य हारयो ॥ अणसण व
 ले पंचम सुर लोके, आठो कारज सारयो हो राजा ॥
 कि० ॥ १० ॥ सेन्या नायक करण कियो तव, आ
 स्या अमर कहावे ॥ अर्जुन करण सरीखे लडवे, हुं
 श कांड न रहावे हो राजा ॥ कि० ॥ ११ ॥ चीम प्र
 चंरु बलिने आगे, दुर्योधन बल जांग्यो ॥ दियो पर
 हार गदानो गाढो, आइ धरतिपर लाग्यो हो राजा
 ॥ कि० ॥ १२ ॥ हारयां कौरव पांडव जीत्या, धर्म
 जय जग जाण्यो ॥ यादवराय घणुं गह गहिया, पां
 डव सुदिन पीठारयो हो राजा ॥ कि० ॥ १३ ॥ रा
 य मिलि उठव कियोरे, आया गजपूर मांहि ॥ राज
 लियो पुगी रल्लिरे, पुण्य तणे बल प्राहि हो राजा ॥
 कि० ॥ १४ ॥ धरता लीधी आपणीरे, आपदा का
 ढि दूर ॥ सत्य प्रजावे-पांडवारे, जोगवे सुख नरपूर
 हो राजा ॥ कि० ॥ १५ ॥ ए गुणचालिस सोमी ढा
 लमेरे, कौरव पांडव वाद ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे,
 उपज्यो अति अह्लाद हो राजा ॥ कि० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ एक दिवस हरीनी सजा, इंद्र सजा सम
 जोय ॥ वड वडा राणा राजीया, पावे सोजा सोय ॥ १॥

एटले आया नेम जिन, राय सहु किया जुहार ॥ सिंघा
सण हरी पाखति, बेठा नेम कुमार ॥ २ ॥

ढाल १४० मी ॥ ते मन मोह्यो महावीरजी ॥ ए
देशी ॥ निपजी वात विनादमां, बल केरो अधीकार
॥ नीज नीज मनशुरे राजीया, वर्णवे विविध प्रकार
॥ १ ॥ प्राण पीयारारे नेमजी ॥ ए आंकणी ॥ कोइ
कहे वसुदेवनो, बल सोटोरे संसार ॥ अहोच बल
अधीको कह्यो, महासेन जोर अपार ॥ प्रा० ॥ २ ॥
कोइ सराहे परजुनने, संव विशेषेरे जोय ॥ पद्म ली
या आप आपणी, करे परसंसारे सोय ॥ प्रा० ॥
॥ ३ ॥ हलधर हांकीरे बोलीयो, ऊठी सघलीरे वात
॥ जिन बलने नवि पुगाहि, कुण नर कुण सुर मात ॥
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ चरम उदधीने सोसवे, मेरु दले तत
काल ॥ ठत्र करे रणधी तणो, दंड गिरंदसु विसाल
॥ प्रा० ॥ ५ ॥ चक्रि कोडनो बल अठे, सो एक सु
रनी पास ॥ कोरु सुरानो बल जेतलो, एक सुरपति
ने वीमास ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ कालत्रयी नरिंद्रनो, बल जि
न बलनेरे प्राहि ॥ लघु अंगुलिया नवि पुगाहि, व
ल अनंत जिन मांहि ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ हरिने अमरख
उपनो. लढवा उठेरे जाम ॥ जिन निज नूज उंचो
कियो, हरी हिचाणोरे ताम ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ हरी चि
त चितारे उपनी, ए बलवतोरे वीर ॥ लेशे पदविरे
महारी, साहस वंत सधीर ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ खंडो खडी

यारे खेलतां, जानीयांसुरे जाय ॥ रंगे राणीरे रुख
 मणी, बोली बोल लगाय ॥ प्रा० ॥ १० ॥ जाइ जला
 सुख जोगवे, रमणी सोल हजार ॥ स्या तुम कुमर रा
 उला, नारी एकहि लार ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ तिर्थकररे
 आगे हुवा, जोगवी जोग विलास ॥ भुक्ति पहुतारे ते
 सही, तुम्ह को उपर आश ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ जांबुवति
 पनणे सखी, वादि करो तुम्ह खेद ॥ पुरुष नाहि ए
 हेजठे, में लीधोठेरे जेद ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ नारी विना
 नर कीज रहे, पेखी पारेवा प्रेम ॥ अंबरथीरे आवे
 धरयो, कामनी उपर केम ॥ प्रा० ॥ १४ ॥ जामा जां
 खेरे जौलनी, तुं नवी समजिरे वात ॥ नारी जरेविरे
 दोहिली, सांसामें दिन जात ॥ प्रा० ॥ १५ ॥ देवरी
 योरे डाह्यो खरो, फिरे निपुणस्यारे न्याय ॥ व्याह म
 नावोरे जोरशुं, हरस्यो यादवराय ॥ प्रा० ॥ १६ ॥
 राजेमतीरे व्याहवा, आव्या तोरण बार ॥ हिंसा दे
 खीरे बाहुज्यो, चढीयो गढ गिरनार ॥ प्रा० ॥ १७ ॥
 राजुल राणीरे विनवे, नव जवना जरतार ॥ तुऊ वि
 णी व्यापीरे वेदना, सो जाणे कीरतार ॥ प्रा० ॥ १८ ॥
 संजम लीधोरे सादरो, सहस नरां परीवार ॥ घाती कर्म
 ने खय करी, पाम्या केवल सार ॥ प्रा० ॥ १९ ॥ स
 मोसरण देवे रच्यो, मिलीया चौसठ इंद्र ॥ वन रखवा
 लोरे आवीयो, प्रणम्यो कृष्ण नरिद ॥ प्रा० ॥ २० ॥
 दान देइरे संतोखीया, भेली सुंदर साज ॥ दसही द

सारारे परीवरयो, चाल्यो श्रीहरी राज ॥ प्रा० ॥ २१ ॥
 माता बबव अंगना, पुत्रा केरोरे साथ ॥ विधीसु देइ
 प्रदक्षीणा, वांछा श्री जगनाथ ॥ प्रा० ॥ २२ ॥ देश
 ना सुणीरे स्वामीनी, जवी पाम्या प्रतीबोध ॥ सम
 ता रुपरे प्राणीयां, ठोडे वयर विरोध ॥ प्रा० ॥ २३ ॥
 राजेमतिरे संजम लीयो, नवही दसारा तेम ॥ महा
 नेमी रहनेमीशुं, अवर अहे व्रतनेम ॥ प्रा० ॥ २४ ॥
 सुर पोहता निज स्थानके, हरी पोहता पुरमांही ॥ प्र
 नु विचरेरे महीतले, साथे घणां सुर प्राही ॥ प्रा०
 ॥ २५ ॥ चालीसा सोमी ढालमें, राजेमती जिन
 प्यार ॥ श्री गुण सागर सूरिजी, निवह्यो अधिक
 अपार ॥ प्रा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ गजपुर पती गर्जे महा, पांडव प्रबल प्र
 ताप ॥ आज्ञा इश्वरता पणे, पाले प्रथवी आप ॥ १ ॥
 नारद नाम महामुनी, चाली आयो ऋषी जाम ॥ वाप
 मायशुं पांडवा, किधो ताम प्रणाम ॥ २ ॥ असंजती
 ने अवरती, जाणी द्रोपदी देव ॥ मान्यो नही मुनी
 वरु, फिर चाल्यो ततखेव ॥ ३ ॥

ढाल १४१ मी ॥ चंद्रावल्लानी देशी ॥ रीस वसे
 चित्त चितवेरे, एक पुरुपनी नार, गरव करे मनमें घ
 णुरे, हुं मोटी संसारे जाणी ॥ पांच पुरुपनी नार बखा
 णी ॥ मद आठेहीसु राती अती, न्याय रहे रसरं
 गे रती ॥ १ ॥ जी नारदजीरे, कदली तरुनी उप

मारे, जाणी काल विणास ॥ फल मुंके तिम द्रोपदिरे
 पनीयो चाहे पास ॥ पडीयो चाहे पास ते एतां, मु
 ऊने तो अण आदर देतां ॥ तो हुं जोरे विणसुं का
 म, एम कही ऋषी चाल्यो ताम ॥ जी० ॥ २ ॥ सोल
 हजार ए देशमारे, वरते हरीनी आण ॥ पहोचावुं
 तेही स्थानकेरे, जिहां न चाले हरी प्राण ॥ जिहां न
 चाले हरीनो प्राण, सोधु सो जइ निश्चल ठाण ॥ द्वी
 प समुद्र उलंघी जाय, नारद करवा काज उमाय ॥
 ॥ जी० ॥ ३ ॥ धातकी खंड भरतमेरे, सुरकंकाह उ
 वाह ॥ पद्मनाभ राजा नलोरे, सात सया त्रय नाह
 ॥ सातसया त्रीय केरो नाह, आपुणपे जाणे गुण गा
 ह ॥ नारी निरोपम शुं सुख वाशी, जोग पुरंदर लि
 ल वीलाशी ॥ जी० ॥ ४ ॥ नारद चाली आइयोरे,
 महील माही मनरंग ॥ राजा राणी साचवेरे, शेवा
 धर्म सुचंग ॥ शेवा धर्म सुचंगपणेरे, अति आदरशुं
 नूप नणेरे ॥ मुऊ अंतेजर सरीखो रुडो, किहां ए
 दिठो मती जांखो कूडो ॥ जी० ॥ ५ ॥ नारद जांखे
 रायजीरे, स्यो ऊठो अहंकार ॥ कुंवा मीरक सारी
 खोरे, तुं दिसंत अपार ॥ तुं दिसत अपार नरेशर,
 अवर न दीठी नार अलवेशर ॥ जीणेहि जेतो दे
 स्यो पेर्यो, ते तोही मन वात विशेर्यो ॥ जी० ॥ ६ ॥
 जंबुद्वीपे जाणीएरे, खेत्र भरत सुस्थान ॥ हथीणा
 सुरे, पांडव नारी प्रधान ॥ पांडव नारी प्र

धान कहावे, पंचाली जगमें जस पावे ॥ तेहने पग
 अंगुठे आणी, लाखमें जागे नावे तुऊ राणी ॥ जी०
 ॥ ७ ॥ एम कही ऋषीजी गयोरे, नृपने तो रठ ला
 गी ॥ विषया वसे आतुर थयोरे, देखणनी मती
 जागी ॥ देखणनी मती जागी जाम, सुर आराधन
 किधो ताम ॥ सुर नांखे सा अवर न चाहे, शु कर
 सो इण साथ उमाहे ॥ जी० ॥ ८ ॥ नृपनो हठ जा
 णी करीरे, सुर आयो त्रिय हेत ॥ आपी निद्रा आ
 करीरे, किधी अधीक अचेत ॥ किधी अधीक अचेत
 जेवारे, पूरव संगीत काम समारे ॥ राजाना मंदीरथी
 लीधी, पद्मनाचने जइने दिधी ॥ जी० ॥ ९ ॥ मही
 ल मांही अति जलोरे, ब्रह्म अशोक उदार ॥ आणी
 राणी द्रोपदीरे, कियो अति अवीचार ॥ कियो अति
 अविचार विमासे, राजाने इम वात प्रकाशे ॥ ए का
 मथी तुं जाणजे राजा, जग वाज्या अपकीरती वाजा
 ॥ जी० ॥ १० ॥ हिवे मुऊने मत तेडावजेरे, ए कहंतुं
 तुऊ आज ॥ सती शिरोमणी ए खरीरे, धीरे करजे काज
 ॥ धीरे करजे काज निवेरो, एथी मतकरजे हठ घणोरो,
 सुर गयो एम कहीने वाणी, एकतालीस सोमी ढाल
 कहाणी, श्री गुणसागर सूरि वखाणी ॥ जी० ॥ ११ ॥
 दुहा ॥ जागी राणी द्रोपदी, जाणयो ए अपहार ॥
 आरतीवंती अति खरी, मनशुं करे विचार ॥ १ ॥
 हथीणापुर किहां रह्यो, सासु सुसरो जेठ ॥ मुऊ प्रित

शिल तणो सुविचार ॥ पिण तो परवश दोहिलोजी,
 राखेवो आचार ॥ ध० ॥ ४ ॥ लेखण खटीका काम
 नीजी, हाथ पराइ जाय ॥ सावत पाणी नावहिजी,
 लागे वचन ए प्रांह्य ॥ ध० ॥ ५ ॥ रागी तो रावण
 घणोजी, दुति राणी तास ॥ तो पिण शियल नव ख
 डीयोजी, त्रिचुवनमे शावास ॥ ध० ॥ ६ ॥ गुफा मा
 हि एकलीजी, राजुल राणी आप ॥ पडतो देवर उध
 रयोजी, शीयल गुणे थिर थाप ॥ ध० ॥ ७ ॥ चेक
 चूपतीनी सुताजी, संतानिक निज नार ॥ एवंती प
 ति बेतरयोजी, सुजस घणो संसार ॥ ध० ॥ ८ ॥
 कष्ट पडीया कामनीजी, न तजे नेम लिगार ॥ मोटा
 माणस तेहनेजी, प्रणमे प्रात अपार ॥ ध० ॥ ९ ॥
 दो उपवासे पारणोजी, आंवील तपसुं प्रेम ॥ करति
 वरते द्रोपदिजी, सानिध होवे केम ॥ ध० ॥ १० ॥
 युधीष्टीर नृप जागीयोजी, देवी न दिसे ताम ॥ अरहुं
 परहुं सोधी घणुंजी, सुद्ध न लाधी जाम ॥ ध० ॥ ११ ॥
 आज अम्हारा राजमांजी, कोन करे अन्याय ॥ लोह
 जड्यो शिर केहनोजी, कुलहिणीत ते थाय ॥ ध० ॥
 ॥ १२ ॥ वाप कन्हे आया चलिजी, जांखी सघली
 वात ॥ पाखरीया चड मोकल्याजी, वसुधा मांही वि
 रूयात ॥ ध० ॥ १३ ॥ सुनट सहु फिरी, आवीयाजी,
 खबर न हुइ कोय ॥ राजा पंडुजी खरोजी, आरती
 वंतो होय ॥ ध० ॥ १४ ॥ कुंतीशुं पांडु कहेजी, दारा

मती तु जाय ॥ वात जणावो मुरारनेजी, जिम ए का
म सराय ॥ ध० ॥ १५ ॥ वेंतालीस सोमी ढालमेंजी,
कुंती करवा काम ॥ श्री गुणसागरजी कहेजी ॥ किम
नेटे नृप शाम ॥ ध० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ कुंती आडंबर घणे, वेशी वड गजराज ॥
आवी नगरी द्वारीकां, कारीज करवा काज ॥ १ ॥
आप हरीसा बागमें, दूत मोकल्यो एक ॥ खबर कर
ण नत्रीजने, प्रचु तव करे विवेक ॥ २ ॥

ढाल १४३ सो ॥ शिथल सलुणी मयणरया स
तीरे ॥ ए देशी ॥ शोना विविध प्रकारशुरे, किधी न
गरीमें प्राहीरे ॥ जण जण जय जय उचरेरे, वाजा वा
जता उठाहीरे ॥ १ ॥ नतीज चुवा शुं सादरोरे ॥ ए
आंकणी ॥ पेसारा विधी साचविरे, हय गय रथ पा
यक साररे ॥ वेसी वडे गजराजीएरे, साथे सहु परी
वाररे ॥ न० ॥ २ ॥ देतो दान महाबलिरे, हरजी
हरखे आवंतरे ॥ दरशण देखी दुरथीरे, प्रचुजी सुख
पावंतरे ॥ न० ॥ ३ ॥ हाथीथी तव उतररीरे, प्रणमी
चुवाना पायरे ॥ जगति करी जल जावसुरे, चितनो
चोखो चावरे ॥ न० ॥ ४ ॥ जन्म क्रतारथ तव मा
हरोरे, माहरो जीव सो उल्हासरे ॥ दिठो दरशण ता
हरोरे, सुफल हुइ सब आशरे ॥ न० ॥ ५ ॥ कंठे ल
गायो प्रेमसुरे, आणी अधीक जगीसरे ॥ फूली अं
ग नमावहिरे, तव चुवाजी दिए आशीपरे ॥ न० ॥

॥ ६ ॥ चिरंजीवे चिरनंदजेरे, चिर लगी पालजे रा
जरे ॥ चिरं आश्रीत सहु लोकनारे, प्रचु पूरे वंगित
काजरे ॥ न० ॥ ७ ॥ चुवा नतिजो एकठारे, बेठा
वड गजराजरे ॥ नगरिमें पाडधारीयारे, घर घर हु
वो उढायरे ॥ न० ॥ ८ ॥ चोजाइ नगति महारे, न
णदिसुं नेह उदाररे ॥ बहुतर सहस सुहामणारे, प्र
णमे हेत अपाररे ॥ न० ॥ ९ ॥ हलधरने हरजी त
णारे, नारी अधीक उमेदरे ॥ विसामण विधी साचवी
रे, टलियो सघलो खेदरे ॥ न० ॥ १० ॥ चोजन न
कती करी खरीरे, हरी पुठयो आगमनी वातरे ॥ वात
सुणंता विशेषथीरे, हरी हांसो हिए न समातरे ॥ न०
॥ ११ ॥ एकेलो हुं एतलिरे, केशो थाडं रखवालरे ॥
ए पांमव पांचे महा बलिरे, नरखाणी एकाहि बालरे ॥
॥ न० ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे फूड सांजलोरे, मतकरो चिं
ता लिगाररे ॥ पातालाथी पेदा करुंरे, सोपुं तुज सुखका
ररे ॥ न० ॥ १३ ॥ आशासना दिधी घणीरे, आपी
बहुला मालरे ॥ पोहोचावी हथीणापुरेरे, सा आवी तत
कालरे ॥ न० ॥ १४ ॥ कृष्णे साद फिरावियोरे, त्रिहु खं
ड खबर कढायरे ॥ लाधी नहि इहां द्रोपदिरे, हरी मन
जांखो थायरे ॥ न० ॥ १५ ॥ त्रेतालिसा सोमी ढाल
मेंरे, हरजी करघी ए कामरे ॥ श्री गुणसागर सूरिजी
रे, कहे मोटानो मोटो नामरे ॥ न० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ एतले नारद आवियो, दिधी बहु सनमान ॥

आरति अति उतावली, पूठे श्री जगवान ॥ १ ॥ गा
म नगरपुर पाटणां, फिरता नव नव देश ॥ किहा
दिठी तुमै द्रोपदि, वात कहो सुविशेष ॥ २ ॥
सुरकका नगरी जली, पद्मनाभ नृप गेह ॥ मे पंचा
ली रारखी, दीठी पिण सदेह ॥ ३ ॥ हरी चांखे ना
रद प्रत्ये, थारा काम मुनिंद ॥ एम कहि उठी गयो,
निश्चे लह्यो नरिंद ॥ ४ ॥

ढाल १४४ मी ॥ बाबा कीशनपुरी ॥ ए देशी ॥ मा
धव कागल लिखीयो जलो, गजपुर नगर अठे गुण
निलो ॥ पांडू नृपति पांडव नृ धणी, कागल भांहिलि
खी हेत नणी ॥ १ ॥ मेरो जाग्य जलो मेरो जाग्य
जलो ॥ ए आंकणी ॥ दूत तेडी हरी कागल नृप दियो,
करी जुहार तेणे उचो लियो ॥ द्रोपदि खबर कहेजे सु
खदाय, हथीणापुर तुं वेगे जाय ॥ मे० ॥ २ ॥ धात
की खंड इहांथी दूर, अमरकका नगरी धनपूर ॥ पद्म
नाभ नृप सहील मजार, तिहांठे द्रोपदि राज कुमार
॥ मे० ॥ ३ ॥ कहेजे कृष्ण हुवा असवार, साथे ल
शकर अपरंपार ॥ पूरव सागर तट वैताल, तिहां चा
ल्या वागी करनाल ॥ मे० ॥ ४ ॥ जाजो कटक साथे
लावज्यो, अमपासे वेगा आवज्यो ॥ दूत शिख लेइ चा
ल्यो गजपुरे, अनुक्रमे गयो नगरी परसरे ॥ मे० ॥
॥ ५ ॥ पांडुरायने कियो जुहार, कागद दियो हरख
अपार ॥ वांची कागद हुवो संतोप, पांडव लस्कर क

री बहु जोप ॥ मे० ॥ ६ ॥ हिवे नारायण जोर मंका
 ण, गाम नगर करता मेलाण ॥ अनुक्रमे दरीया कां
 ठे गया, जली ठाम जइ डेरा दिया ॥ मे० ॥ ७ ॥ पां
 डव आव्या मननीरली, हरी दिठा मन वांग फली ॥
 मांहो मांही मिल्या ससनेह, जिम हरखे जन घुठा मे
 ह ॥ मे० ॥ ८ ॥ श्रीपति पांरुव करे विचार, जादव
 जोर जुडयो दरवार ॥ कृष्ण कहे सुणजो सहु चूप,
 आगे सागर पदम सरुप ॥ मे० ॥ ९ ॥ लाख दो जोज
 णनो मान, किम उलंघ्यो जाइ असमान ॥ आप आ
 पणी मती केलवो, पाठे अरिपुर अठे जेलवो ॥ मे० ॥
 १० ॥ बोल्या बलचद्र दसे दसार, जलनीधी तरवो
 तुम्ह आधार ॥ निसुणी सहु राजानी वात, हिवे हरी
 करे कवण अवदात ॥ मे० ॥ ११ ॥ त्रण उपवास कि
 या रोकना, जिणथी हुवे वंठीत थोकना ॥ त्रिजे दिन
 सुर प्रगट थयो, माधव मनमां आनंद जयो ॥ मे० ॥
 १२ ॥ सुर चांखे सुण केशवराय, किण कारण स
 मरयो चित लाय ॥ कृष्ण कहे सुणो सुरराय, पदम
 नाज नृप कियो अन्याय ॥ मे० ॥ १३ ॥ ढाही को
 ट पाडु कांगरा, मांगे जिख चुणे सागरा ॥ सुर बोले
 मतकरो हरी रिस, इहां वेठा तुम फले जगीश ॥ मे० ॥
 १४ ॥ पदमनाज तुम्ह लागे पाय, द्रोपदी पिण
 आणुं इण ठाय ॥ सघली नगरी आणु इहां, सायर त
 री थै जावो किहां ॥ मे० ॥ १५ ॥ को तो नगरी साय

र धरुं, तरली माटी उपर करुं ॥ तिणे मूरख जो कि,
 यो अकाज, तुमे हठ मतकरो महाराज ॥ मे० ॥ १५ ॥
 कृष्ण कहे ए सघलुं नलुं, पिण एकवार जइ एहने
 मिलुं ॥ सायर मारग मांगु उढाह, एह तणी मुऊने ज
 स चाह ॥ मे० ॥ १७ ॥ चंमालिसा सोमी ढाल, कहे
 गुणसागर अधीक रसाल ॥ द्रोपदी सीयल तणे सु
 प्रकार, उपनो हियडे हरख अपार ॥ मे० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ दिधो मारग मोकलो, पांडवने नृप शाम
 ॥ पट रथ सायर उतरी, आया कंकापुरी ताम ॥ १ ॥
 दारुक नामा सारथी, नृप कन्हे गयो तेह ॥ सिंघास
 ण लाते हएयो, काढि जाला रेह ॥ २ ॥ दुरवचने
 नीभ्रंठियो, रेरे लंपट चूप ॥ कृष्ण वारे आविया, था
 साहमो धरी चूप ॥ ३ ॥ राजा कोप्यो ततद्वणे, दू
 तने देइ अपमान ॥ चनीयो आडंबर घणे, दलवल
 ने मंडाण ॥ ४ ॥ करी शिणगार शोना धरी, हाथ अ
 हि शर चांप ॥ गज अइरावत पर चडी, आयो सन
 मुख आप ॥ ५ ॥ कृष्ण कहे पांडव प्रते, अरी साथे सं
 ग्राम ॥ तुम करशो के हुं करुं. जांखे पाडव ताम ॥ ६ ॥

ढाल १४५ मी ॥ वीराजी गज थकी उतरो ॥ ए
 देशी ॥ हमें हरसा संग्रामने, तुमे देखो एक वारोरे ॥
 हरी पमे लागी रथ चड्या, वचन कह्यो अविचारोरे
 ॥ १ ॥ पांडव कहे हरजी सुणो ॥ ए आंकणी ॥ पद
 मनाच के अम्हे नहि, एम कही सनमुख चाल्यारे ॥

माधव तिहा विचारीयो, पहेले वचने पाल्यारे ॥ पां० ॥
 ॥ २ ॥ बेहु दल एकठा मिल्या, वाग्या बाणना शांकोरे ॥
 पायकसुं पायक जिमे, नाठा काठा लोकोरे ॥ पां० ॥ ३ ॥
 सहदेव जोशी योगणी, डावी जैश्व घेरेरे ॥ लाह को
 ट जड कटकमें, कृष्ण दुहाइ फेरेरे ॥ पां० ॥ ४ ॥ दु
 समन चूप जुजंग मन, कुल नकुल परे धावेरे ॥ धर्म
 पुत्र पुकारीया, वडा वडा विरुद बोलवेरे ॥ पां० ॥ ५ ॥
 पदमनाच चडी आइयो, पडी ददामां ठोरोरे ॥ हल
 कारा वड वागीया, पमी लडाइ जोरोरे ॥ पां० ॥ ६ ॥
 अर्जुने बाण संचारीया, जिम धोरीधर धीरोरे ॥ स
 नमुख को आवे नही, पासे वहे हथीयारोरे ॥ पां० ॥
 ॥ ७ ॥ अर्जुने नीरु करण जणी, जमि गदा लेइ धा
 योरे ॥ पदनाच मन चिंतवे, ए दाणव किहांथी आयोरे
 ॥ पां० ॥ ८ ॥ आप चूप रोसे चड्यो, पांच लाखपें
 जायोरे ॥ पांच सहस कर एकठां, अरजुनने ठहरा
 योरे ॥ पां० ॥ ९ ॥ पदमनाच परपंचथी, अर्जुन म
 न अकुलावेरे ॥ शस्त्र सघलाहि चालवे, हाथ कोइ
 नवी फावेरे ॥ पां० ॥ १० ॥ दिश सुंजाणी पांडवा, उ
 चा तव पिठतायोरे ॥ सूरवीर पिण शुं करे, वचन ठ
 ले वेतरायोरे ॥ पां० ११ ॥ नाठा जाग्या आवीया,
 पांचे पांरुव सूरुोरे ॥ विलखाणा मन आपथी, कायर
 देह न नूरोरे ॥ पां० ॥ १२ ॥ कृष्ण कहे पांडव सु
 णो, रहो उजा मती जूरोरे ॥ हिवे नाशी किहां जाइसो,

द्वारकां तो रही दूरेरे ॥ पां० ॥ १३ ॥ एही वचन मू
 ऊ मानजो, दुसमन दूर नसावुरे ॥ पदमनाचने जी
 वतो, अपुठो तारा बंधावुरे ॥ पां० ॥ १४ ॥ पेंता
 लीसा सोमी ढालमें, सनमुख उठ्यो सोइरे ॥ श्री गु
 णसागर देखजो, हिवे कुण तमाशो होइरे ॥ पां० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ ऊऊ करण माधव चड्यो, करी आरुंवर जोर
 ॥ पदमनाच सेना सजी, उनो एकणकोर ॥ १ ॥
 आज अमारो जय हुशे, पदमनाचनो नाश ॥ एम
 कही रथ उपर चड्या, दारुक सारथी पास ॥ २ ॥

ढाल १४६ मी ॥ कडखानी देशी ॥ धजा रथ फ
 रहरे देखी वैरी डरे, एक रथ सहस रथ आंखी दिसे ॥
 जाणे गढ जेलशे कोमी सुजट मेलस्ये, कृष्ण लोचन
 अरुण हुठरीसे ॥ १ ॥ हिवे गढ जेलवा चड्यो वसुदे
 व सुत, सूर जीम तेजे दिपे सवायो ॥ अमर कंकापु
 री रतन माणक जरी, जय करी यिर हरी कोण आ
 यो ॥ हि० ॥ २ ॥ पांच पांरुव तणी वात श्रवणे सुणी,
 रोस धरी रथ चडी कृष्ण आवे ॥ दूरथी अटकल्यो, गाम
 नृप खलजल्यो, एकुण सामत तुम सबल दावे ॥ हि० ॥ ३ ॥
 देव दिठे पड्या रथेरथ आथाफ्या, कृष्ण मुख हाथशुं
 शंख वायो ॥ तिसरो जाग लशकर तणो घटि गयो,
 मिट गयो नूप बलतो न आयो ॥ हि० ॥ ४ ॥ धनुष्य
 सारंग मनरंग हरी कर धरी, पिण वडण काज तिण
 चार नाठो ॥ जाग त्रिजो कटक सुजट पग चातरया,

पदम पग गोडीया हुतो नाठो ॥ हि० ॥ ५ ॥ अमर
 कंका जडी नगर जागज पडी, खलजल्या लोक सह
 एम जांखे ॥ चुप ए लंपटी न्याइ प्रचूता घटी, नासतां
 जागतां कवण राखे ॥ हि० ॥ ६ ॥ अमरकंका जिहां
 कृष्ण आवे तिहां, रथथी उतरी कोट देखे ॥ ढाहि ढ
 म ढेर करी सुसाहे ततखिणे, रुप नरसिंहनो करी सु
 विशेषे ॥ हि० ॥ ७ ॥ हिवे कृष्ण नरसिंहनो रुप
 सवलो कियो, अमरकंकापुरी कोट पाड्यो ॥ वड व
 डा मेहेल तो रण पड्या धडहडी, पोलनो वार हरी
 आप उघाड्यो ॥ हि० ॥ ८ ॥ अमरकंका धणी, चि
 त चिंता घणी, एकले कवण ए काम कियो ॥ कटक
 नाशी गयो, कोट पिण इण लियो, कोटि दे राखीए आ
 प जियो ॥ हि० ॥ ९ ॥ आप आलोच करि हियो नि
 ज ठाम करी, द्रोपदि पासे नूपाल आवे ॥ माहरी ध
 र्मरी वेहेन मुऊ राबले, सुमती दे ताहरी दाय आवे
 ॥ हि० ॥ १० ॥ द्रोपदी कहे सुण वाणी कल्याण मुऊ,
 पदम तुं रदन करे देश सारो ॥ सार जंकारथी लाल
 बहु मालले, लाग्य हरी पाय जो जाग्य थारो ॥ हि०
 ॥ ११ ॥ दिन दिवो धरी लेइ अंतेउरी, त्रणो दांत ध
 री साथ मोरे ॥ मन हठ परहरी हाथ जोडी करी, रा
 खले माधवा शरण तोरे ॥ हि० ॥ १२ ॥ हुं कहंतिम
 करो कृष्णथी मत डरो, चरण लागी करी एम जांखो ॥
 । । शरण संसार तारण तरण, मुऊ गुनह माफ

कर माम राखो ॥ हि० ॥ १३ ॥ कृष्ण बोलया तव बुट
 रयो किम हिवे, वहिन तें माहरी केम आणी॥मारी शत
 खंड चुजदंरु शीर मुंड करी, करुं तेम बेल वहे
 जेम घाणी ॥ हि० ॥ १४ ॥ हिवे मुऊने मिल्यो कोप
 सघलो टल्यो, जा घर ताहरे पदम पापी ॥ द्रोपदि ले
 इ करी तिहां थकी संचरी, द्वारकां गमनरी वात
 थापी ॥ हि० ॥ १५ ॥ कृष्ण पांडव मिल्या, द्रोपदी ले
 इ वल्या, उहु रथ पाठली राते चाल्या ॥ चाग्य मोठे
 कीसन नाहि कोइ वसन, घणा पकवान लेइ साथ घा
 ल्या ॥ हि० ॥ १६ ॥ द्रोपदी सिल वले किसन शोभा
 ग्य बले, पांडु सुत चाग्य बले विजय पायो ॥ पारको
 वध धावली पारकी, पारकी जइ जलनीधीनं सवायो
 ॥ हि० ॥ १७ ॥ ढाल सेतालीसा सोमी सुहामणी, द्रो
 पदी सिल थकी काज सरीयां ॥ श्रीगुणसूरि गुरु चवीक
 ने शिखवे, सियल केडे व्रत सघलाही धरीया ॥ हि० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ तिणे कालेने तिण समे, धातकी खंड मऊार ॥
 पूरव धातकी चरतमें, चंपा नगरी सार ॥ १ ॥ नगरी
 वाहीर उद्यानमें, विराजे श्रीजिनराज ॥ कंपीलपूर मुख
 परखदा, बैठी अधिक सकाज ॥ २ ॥

ढाल १४७ मी ॥ इडर आंवा आंवलीरे ए देशी ॥
 जिन दरशन मन उलसेरे, आणंद अंग न भाय ॥
 जिन देशना सहुको सुणेरे, सुणता आवे दाय ॥ १ ॥
 जिनेसर इम चांखे उपदेश ॥ ए आंकणी ॥ तिण वे

ला सुणी तिहारि, शंख शब्द घननाद ॥ चित्त चम
 क्यो नृप चिंतवेरे, मन उपनो विखवाद ॥ जि० ॥ २ ॥
 कोइ नवो इहां उपनोरे, वासुदेव बलवंत ॥ मुऊ सरी
 खो जाणीएरे ॥ जीण बले अचल चलंत ॥ जि० ॥
 ॥ ३ ॥ हरी पूढे जिनने नमीरे, शंख शब्द सबंध ॥
 जिन बोले थें मत डरोरे, पदमनाज प्रबंध ॥ जि० ॥
 ॥ ४ ॥ एक खेत्र एकणसभेरे, चक्री जिन बलदेव ॥ वासुदेव
 पिण जोरलेरे, नवी उपजे नितमेव ॥ जि० ॥ ५ ॥ पद
 मनाजसु ऊंऊतारे, कृष्ण बजायो शंख ॥ ते सांज
 ली तुऊ उपनीरे, वासुदेव निशंक ॥ जि० ॥ ६ ॥ कं
 पील वात सुणी हरखीयोरे, टाल्यो मन संदेह ॥ जि
 न वांढी एम विनवेरे, कृष्ण मिलण मुऊ नेह ॥ जि० ॥
 ॥ ७ ॥ बलतुं मुनीसुब्रत नणेरे, वासुदेव सुण वाण ॥
 हुठ न होशे हुइ नहीरे, ए तुं निश्च्ये जाण ॥ जि० ॥
 ॥ ८ ॥ हरी हरीने नवी मिलेरे, जो करे कोड उपाय ॥
 देखिश ध्वज हरी रथ तणीरे, सागर तट तिहां जाय
 ॥ जि० ॥ ९ ॥ प्रचुने वांढी गज चडीरे, कंपील चा
 ल्यो ततकाल ॥ सागर विच दिठी तिसेरे, धजा पि
 त शितलाल ॥ जि० ॥ १० ॥ शंख बजायो मन रली
 रे, कृष्ण सुणो अरदास ॥ एकवार देदार दियोरे ॥
 मुऊ मन पूरो आश ॥ जि० ॥ ११ ॥ हरी पिण शंख
 बजाइउरे, शंखे शंख मिलंत ॥ घणी नोमी अमो आ
 वीयोरे ॥ रथ पाठा न बलंत ॥ जि० ॥ १२ ॥ हरख

धरी पावो वल्योरे, सुरकंका नणी जाय ॥ पद्मनाभ
 पिण साहमोरे, आवी लाग्यो पाय ॥ जि० ॥ १३ ॥
 पद्म नणी तव पुढीयोरे, किस्यो नगरी प्रकार ॥ कुण
 वैरी ए तुजनेरे, संताप्यो निरधार ॥ जि० ॥ १४ ॥
 स्वामी ताहरी साहीवीरे, लेवा कारण आज ॥ हरी
 आपण आव्यो हतोरे, में आय्यो तस वाज ॥ जि०
 ॥ १५ ॥ कंपील क्रोधातुर थयोरे, सांजली एहवी वा
 ण ॥ आणा थकी अलगो कियोरे, पाम्यो दुःख असमा
 न ॥ जि० ॥ १६ ॥ तेमावी तस नंदनेरे, थाप्यो नर
 पती पाट ॥ राजा निज स्थानक गयोरे, टाली दुःख
 उचाट ॥ जि० ॥ १७ ॥ सडतालीस सोमी कहीरे,
 ढाल अनोपम एह ॥ गुणसागर जिन वाणीएरे, उप
 जे अधीको नेह ॥ जि० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ मारग जातां इम कहे, पांश्वने हरी राय ॥
 सुस्वीक सुर जेटी करी, हुं आवीश सुखदाय ॥ १ ॥
 थान पात्र तरी जानवी, लेजो जइ विश्राम ॥ प्रवहण
 पावो मूकज्यो. मुक कारण अनीराम ॥ २ ॥ गंगाने त
 ट आवीया, पारुव पंच उदार ॥ ठठी राणी द्रोपदी, र
 थ वाहन अति सार ॥ ३ ॥ नावा मोठी मनोहरु, वे
 ठो सघलो साथ ॥ खेम कुशल जल उतरया, चित
 चितवे नर नाथ ॥ ४ ॥

ढाल १४८ मी ॥ इण पुर कंवल कोइ न लेशी ॥
 ए देशी ॥ चित चितवे तव नर नाथो, एक मतो वे

सघलो साथो ॥ होणहार मेठ्यो नवी जाय, सघला
 नी मती सरखी थाय ॥ १ ॥ कुंरु कुंडनो जूदो पाणी,
 तुंरु तुंडनी जूदी वाणी ॥ मस्तके मस्तके मती ठे जुइ,
 पिण सहुनि एकज हूइ ॥ २ ॥ सहु सयाणा सोचो कां
 इ, चावीनो बल मोटो प्रांही ॥ पांडवजी सरखा जो
 चूके, सुमति सरोवर तो कुण ठुंके ॥ ३ ॥ हांसि मिसे
 उपाय उठावे, सांतकमें वैताल जगावे ॥ एह अजा
 णपणो जय मोटो, जाणी बुजी खाजे खोटो ॥ ४ ॥
 नाव ठिपावे एम विचारी, कितनो एक बलवंत मूरारी ॥
 हांसो काम विणा सणहारो, हांसाथी चिड थाइ पीया
 रो ॥ ५ ॥ शाम तदा सुरने संतोखी, प्रिती पनोती
 परघल पोखी ॥ श्री गंगा तटी चाली आया, नाव न
 देखे तव हरी राया ॥ ६ ॥ एक हाथे रथ खेडु घोडा,
 विजे हाथ तिरे जल थोडा ॥ पाट नदिनो जोजन वा
 सठ, ते पिण जोजन देव तणो पट ॥ ७ ॥ जल अध
 विचे आया जामो, थाक्या अति न तिराइ तामो ॥
 चित चिंतरे ए चिंता थापी, पांरुव तो बलवंता आ
 पी ॥ ८ ॥ नाव विना ए पयरी उपाणी, हय रथने नी
 रवाहे राणी, एह अचंनो दिसे चारी, किम आया अ
 री आगे हारी ॥ ९ ॥ जाणी हरी चिंताए चंप्यो,
 गंगा देवीनो आसण कंप्यो, गंगा देवीए दिघो थाह,
 हरी मन उगज्यो अधीक उगाह ॥ १० ॥ पाणी पय
 री कांठे लागे, पांडव आवी उजा आगे ॥ श्री हरी

पांडव प्रेम अपारो, अब उपजे मन मांहि विकारो ॥

॥ ११ ॥ दुपण तो हरीनो नवि दिसे, पांडवनो तो

विसवा विशे ॥ लुगडातो धोवंत कुहाडा, न रहे साजो

होइ आति जाग ॥ १२ ॥ अडतालिस सो ढालसुं

चांखी, चंद्र सूरज दो दिधा साखी ॥ श्री गुणसागर

सूरि प्रकाशे, मति चुक्या नर गाढा घासे ॥ १३ ॥

दुहा ॥ कृष्ण कहे पांडव सुणो, तुम बलवंत अपार

॥ गंगा जल जुजवले तिरया, नारी लिया वली लार

॥ १ ॥ जल अधविचे आवियो, हुं अति थाक्यो ताम ॥ गं

गादेवीए माहरी, सानिध्य करी सकाम ॥ २ ॥ तो ह

मथी बलवंत तुमो, चांखे हरी ससनेह ॥ पद्मनाभ नृ

प आगले, हारया एह संदेह ॥ ३ ॥ गाथा ॥ सरला

चाखे सरली वाणी, नवि मेले कोइ दुजी आणी ॥ आहि

ल्या चांख्यो हरी मम जार, गंगा दाख्यो हर नरतार ॥ ४ ॥

दुहा ॥ कपट तजी पांडव जणे, आणी सरलो जाव

॥ जोवा तुम बल कारणे, हमे ठिपावी नाव ॥ ५ ॥

ढाल १४९ मी ॥ मारा घणारे पीयारा प्रचुजी ॥

ए देशी ॥ निसुणी एह कहाणी, हरी ऋदयामां रीस

नराणी ॥ हो कुवुद्धी, थुं क्युं अकल तुज आइ ॥ बा

लपणेथी जेला, वस्तां थइ एवडी वेला हो ॥ कु० ॥

॥ १ ॥ गोवरधन गिरीराज, में उपाढ्यो बल काज

हो ॥ कु० ॥ वली बालपणे महा चाग्य, में नाथ्यो

काली नाग हो ॥ कु० ॥ २ ॥ वली जरासंध लमा

इ, हुवता पिण अधीक वनाइ हो ॥ कु० ॥ तप आठ
 म करी में साध्यो, सुर आयो आप आराध्यो हो ॥
 ॥ कु० ॥ ३ ॥ द्विल खलवण कहाय, उलंघी जीत्यो
 बडराय हो ॥ कु० ॥ पदमोतर ऊगडो जेथ, तिहां हु
 ता आपण सहु सेथ हो ॥ कु० ॥ ४ ॥ लडतां पदमोत
 र जंग, तुम जागी आव्या मुज संग हो ॥ कु० ॥ दे
 खी मुऊ बल काठो, नृप पदमोतर गयो नाठो हो ॥
 ॥ कु० ॥ ५ ॥ देइ पुर तणा दरवाजा, जइ पेठो मेहे
 ल मांही राजा हो ॥ कु० ॥ पदमोतर अस्त्री रुप, ति
 हां आवी नम्यो ते नूप हो ॥ कु० ॥ ६ ॥ ते बल ना
 व्यो तुम दाय, हजी केतो बल जोवाय हो ॥ कु० ॥
 एतो आव्या पुण्य पसाय, कृष्ण जाता तुमारुं शुं जा
 य हो ॥ कु० ॥ ७ ॥ तुम प्रत्ये मिली तुम नार, कृष्ण
 वाट जुवे बत्रिस हजार हो ॥ कु० ॥ आपण सरियां
 काम, तरे कुण विचारो साम हो ॥ कु० ॥ ८ ॥ पि
 ण एटली तो नवि जाणी, जे रोशे हरी पटराणी हो
 ॥ कु० ॥ कृष्णनी वाट विचाल, जोतां हुसे बालगोपा
 ल हो ॥ कु० ॥ ९ ॥ जात जो गंगा सजार, तो कु
 ण आपत समाचार हो ॥ कु० ॥ नीगुण नीठोर मुखे
 मीठ, तुऊ ऋदय कठण अति धीठ हो ॥ कु० ॥ १० ॥
 तुम वात सकल में लाधी, तुम पांचे वडा अपरा
 धी हो ॥ कु० ॥ हिवे तजवो तुम्ह साथ, एम जांखे
 श्री जदुनाथ हो ॥ कु० ॥ ११ ॥ न. कबु वातके का

ज, तुम्ह किधो अधीक अकाज हो ॥ कु० ॥ तुम्ह
नीस्नेहि थया आज, मुऊ लेखे न कियां काज हो ॥
कु० ॥ १२ ॥ लोह दंड उपाडीने आयो, केशवजी को
पे चरायो हो ॥ कु० ॥ एगुणपचास सोमी ए ढाल,
गुणसागर कहे सुविशाल हो ॥ कु० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ चूप चुजगम सारिखा, जालविया सुख हो
य ॥ आसंगे असुहामणा, पांशवनी परे जोय ॥ १ ॥
केशव कोपे पूरीयो, देखी थरहरी वाल ॥ आडी फि
री उजी रही, नांखे वचन रसाल ॥ २ ॥

ढाल १५० मी ॥ रायजी अमने हिंदुआणा रा
य गराशीथारे लोल ॥ ए देशी ॥ कृष्णजी तुमने क
हुं करजोरु के, सुणो प्रनु विनतीरे लोल ॥ प्रनुजी
नहि कोइ तुमारो दोपके, निठोर थया मुऊ पतीरे लो
ल ॥ प्रनुजी तुमसु एवमी हाशके, करवी केम घटेरे
लोल ॥ प्रनुजी लिख्या ठठीना लेखके, मिटाज्या नवि
मिटेरे लोल ॥ १ ॥ प्रनुजी दोश नहि तुम कोइके,
केरतार एहि गमेरे लोल ॥ प्रनुजी गोरु कुगोरु था
पके, मावित्र तोहि खमेरे लोल ॥ वधव तुमारी मो
री लाजके, काज विचारीयेरे लोल ॥ प्रनुजी विनवुं
गोद विठायके, रोस निवारीएरे लोल ॥ २ ॥ प्रनुजी
तुमे मोटा माहाराजके, मनमां जाणीयेरे ॥ लो० ॥
प्रनुजी पोतानो परीवारके, दिलमें आणीएरे ॥ लो०
॥ प्रनुजी मोटा होय दातारके, बोले मुख मीठडुरे

॥ लो० ॥ प्रचुजी मोटा न कये आलके, करे अण
 दिठडुरे ॥ लो० ॥ ३ ॥ द्रोपदी ताहरा पतिना बोलके,
 खीण खीण सांजलेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी इणे कीधा जे
 कामके, वैरी पिण नवी करेरे ॥ लो० ॥ द्रोपदी मारी
 एकज वातके, गदा पाणी नवी फीरेरे ॥ लो० ॥ एहने
 बल देखाडुं आजके, हरी मन रीस धरेरे ॥ लो० ॥
 ॥ ४ ॥ राणी विलखाणी तेणीवारके, आंखे आंसु ढ
 लेरे ॥ लो० ॥ जाइजी एवडो मकरो रोसके, उनी ए
 म टलवलेरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी फूड कुंताजीनी लाजके,
 दिलमां आणवीरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी पंडुराय मयायके,
 मनमां जाणविरे ॥ लो० ॥ ५ ॥ प्रचुजी गौब्राह्मण प्र
 तिपालके, सहु तुमने कहेरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी तुम्ह
 शरणे जे आयके, सो नर नीरवहेरे ॥ लो० ॥ प्रचु
 जी नीठोर थया तुम आजके, किम होशे सहिरे ॥
 ॥ लो० ॥ प्रचुजी कठण मरमनी वातके, वांक केहनो
 नहिरे ॥ लो० ॥ ६ ॥ प्रचुजी माणस होशे एह तो,
 वात घणी थइरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी बांहे ग्रह्यानी ला
 जके, राखो हेत लेइरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी करणी तणा
 फल एहके, तुमारी वेनडिरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी पूरव न
 वनो पापके, तास वेला पडीरे ॥ लो० ॥ ७ ॥ प्रचुजी
 एवडी तुमारी धाकके, हिवे हुं कीम सहुरे ॥ लो० ॥
 प्रचुजी अखंड एवा तण राखके, जाकुं शुं कहुरे ॥ लो० ॥
 ॥ प्रचुजी राखो एटली लाजके, गोरु करी गोडवोर ॥

॥ लो० ॥ प्रचुजी मेलो मननी रीसके, वेहेला रथ जो
 डवोरे ॥ लो० ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी जदुरायके,
 मनसुं विचारीयोरे ॥ लो० ॥ हठे मिलियो अबला अं
 तके, एम मन वालियोरे ॥ लो० ॥ केशव उपाडी लो
 ह दंडके, कोप करी तिहारे ॥ लो० ॥ पांचे रथ किया
 चकचूरके, पांडव जना जिहांरे ॥ लो० ॥ ९ ॥ चाखे
 रोस धरी हरी रायके, आण माहरी वहेरे ॥ लो० ॥
 पांभव तुमारो सहु परिवारके, रेहवा नवि लहेरे ॥ लो०
 रेहेज्यो द्रष्ट थकी तुमे दूरके, पासे मति आवज्योरे
 ॥ लो० ॥ प्रचुजी मन फाटो न सधायके, सहि एम
 जाणजोरे ॥ लो० ॥ १० ॥ प्रचुजी रथ मर्दनने ठामके,
 कोठो वसावीयोरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी सैन सकल तेणी
 वारके, सनमुख आवियोरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी द्वारापुरी सहु
 साथके, पोहोता ते सहिरे ॥ लो० ॥ प्रचुजी एकसो प
 चासमी ढालके, गुणसागर कहिरे ॥ लो० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ पांडव प्रचु सोचे घणुं, कीयो किसो कीर
 तार ॥ ॥ विगडी वात विशेषथी, खीज्यो देवसुरार
 ॥१॥ जेह त्रुठे ते जग त्रुठीये, जेह रुसे जग रोस ॥ सोतो
 प्रचुजी पामीए, त्रुसाहि संतोप ॥ २ ॥ पांचे पांभव द्रो
 पदी, तिहांथी आया गेह ॥ पांडुराय कुंता मिलि, जाग्यो
 अधीक सनेह ॥ ३ ॥ विलख्यां अंगज देखने, पूठे पांडु
 विचार ॥ कुति वेठी सांजले, पासे सहु परीवार ॥ ४ ॥

ढाल १५१ मी ॥ एकली नारी साथ मारगडे नवि

जावुं हो ॥ ए देशी ॥ पांडव बोल्यो बोल, माता प
 ताजी हो एक वचन सुणो ॥ श्रीपति सेति प्रीत, ज
 जेरी हुती हो सुख पिण हुतो घणो ॥ १ ॥ संप्रती
 ठो जाण, केहेने जइ कहीए हो देशवटो दियो ॥ वच
 कहरां दसवीस, ते तो हम साले हो एक जाणे हिय
 ॥ २ ॥ पूढे पांडु नरिंद, ए किम खटपट हो थें हरी
 करी ॥ सायर कांठे जाय, हरी पाय लागी हो उच
 हेत धरी ॥ ३ ॥ सुस्थीत सुर आराध, श्रीपती सा
 हो पट रथ लेइ करी ॥ पहुता पेले पार, जिहां क
 दिसे हो अमर कंका पुरी ॥ ४ ॥ माधव कियो सुव
 ल, जूज करीने हो कटक जगाडीयो ॥ कियो नरसिं
 रूप, गढमढ पाडी हो पदम नसामीयो ॥ ५ ॥ द्रोपद
 आणीने दिध, हरी पगे लागी हो पदम पाठो बल्यो
 रथ चढी पूरण प्रित, जलधी उलंधी हो हरी सुरने
 ल्यो ॥ ६ ॥ अस्ह दिधो आदेश, गंगा जइने हो प
 र तुमे करो ॥ हुं पिण आइस वेग, जाइजी पां
 हो मन धीरज धरो ॥ ७ ॥ हम पिण गंगा आय, न
 व चढीने हो गंगातट लह्यो ॥ हरीनी जोतां वाट,
 रु तले बेठां हो हियडो गह गह्यो ॥ ८ ॥ एतले
 षण नरेश, शिख करीने हो सुर शेती वली, आय
 गंगा तीर, नीर निहाले हो तरणी अटकली ॥ ९ ॥
 नाव न लाधी कांड, हरी जुज वले हो गंगा उतरी
 अमे लाग्या हरी पाय, हिली मिलीने हो उचा हेत धर

॥ १० ॥ पत्नी हरी बोल्या एम, गंगा तिरीने हो थें कि
 म आइया ॥ नावा हती अम्ह पास, तिण हम तिरी
 या हो पांचे जाइया ॥ ११ ॥ वली माधव वोलंत, किम
 ते नाणी हो सनमुख नावडी ॥ निज जुज तरशे केम, ह
 री बल जोस्यां हो अमे एम तेवडी ॥ १२ ॥ वचन सु
 णी निज कान, कृष्ण रिसाणो हो बोले आकरो ॥ कृ
 त्म मुंढ नीटोल, पांडव ते दिठा हो वचन कह्यो वू
 रो ॥ १३ ॥ लाख जोयण दो मान, सागर उलंघी
 हो आणी तुम बहु ॥ मुऊ बल तोहि न दिठ, थें मन कु
 डा हो जगत जाण सहु ॥ १४ ॥ मुख न देखाऊजो
 मुढ, एम उलंघो हो देइने हरी गया ॥ अमें पिण तिहां
 थी एथ, दुमना आया हो तुम्ह दरसन थया ॥ १५ ॥
 पांडुराय सुणी वात, बलता बोले हो पुत्र थें वूरी क
 री ॥ कृष्ण किया कुण काम, साम वधारी हो तुम्हे
 तो एवी करी ॥ १६ ॥ मोतीने मन लाख, लाखने मू
 ले हो मोती तो मिले फिरी ॥ पिण मन जाग्यो जाण,
 ते रंग नावे हो कोड जतन करी ॥ १७ ॥ पांडुराय
 महीपती ताम, कुंती तेडीने हो वचन एसो कहे ॥ मत
 करो अवर विचार, श्रीपति पासे हो जायवा मन वहे
 ॥ १८ ॥ कहेज्यो घरनो सुल्प, माधव लज्या हो रा
 खो हिवे माहरी ॥ तें पूरया मन कोड, वली हुं श्रीप
 ति हो चुवा ताहरी ॥ १९ ॥ एम दीधी नृप शिख,
 कुंती चाली हो पोहती एम अनुक्रमे ॥ द्वारामतीनो

शय, माधव आवी हो चुवाने पाये नमे ॥ २० ॥
 पुरुपोत्तम करजोरु, कुंती पुत्री हो केम पधारीया ॥ कुं
 ती चांखे एम, तेंतो रिसे हो पांडव वारीया ॥ २१ ॥
 अण खंरु प्रथवी मांही, आण तुम्हारी हो संघली शि
 र वहे ॥ जाइ नलपण जाण, ठाम वतावो हो वीरा
 जिहां रहे ॥ २२ ॥ गोरु उपर रिस, मात पितानी हो
 पाणी बल रहे ॥ वली मनावे आप, खोले वेसाडी हो
 शिख वचन कहे ॥ २३ ॥ जो थें करसो रोस, तो
 जाइ पांडव हो जइने किहां वसे ॥ वली मोटो संताप,
 देखी दुरजन हो दुर्योधन सुत हसे ॥ २४ ॥ बाहुब
 ल नरतने जिम, रोस धरीने हो बंधव निषेदीयो ॥
 आणी जाइ सनेह, पडता अपुठो हो तास जीलीलियो
 ॥ २५ ॥ आप उबेरी रुख, कोइ न कापे हो जो फ
 ल नवीदिए ॥ एसोहे तुम पास, दूर मतकाढो हो को
 गुण लेइ हिए ॥ २६ ॥ रहेता पिहरनी उल, आश वि
 रानी हो चुवाने हुती घणी ॥ थोडामां दियो वेद, वा
 त विचारे हो एतो आवी वणी ॥ २७ ॥ दीन वचन
 सुणी एम, माधव चांखे हो चुवा दुःख मती धरो ॥
 उंबुं मतआणशो एह, पांडवर्था माहरे हो अधीक न को
 खरो ॥ २८ ॥ कहेजो सुतने जाय, दक्षीण सागर हो
 वेल वहे जिहां ॥ तिहां रहेज्यो चित लाय, पांडु मथु
 रां हो नगरी वाशी तिहां ॥ २९ ॥ कहे चिरं लगी पा
 लजो राज, अदिठ शेवाथी हो कारीज सारज्यो ॥ व

नो शी लावे निर, स्वादन आवे हो मूल एम धारज्यो
 ॥ ३० ॥ कुंती मानी वात, तिहां थकी आवी हो प
 ती सुतने कह्यो ॥ हिवे कुण करे विचार, गजपुर मा
 ही हो किम जाइ रह्यो ॥ ३१ ॥ जिहां लगे पुण्य प्र
 काश, तिहां लगे बंधव हो सुजन मेलावयो ॥ गुणसा
 गर कहे एम, जिहां लगे सूरज हो तिहां लगे तावडो
 ॥ ३२ ॥ पांडुराय मथुरां निवास, नगर वसावी हो र
 ह्या मननी रली ॥ सुखमें पाले राज, एकावनसोमी
 हो ढाल जांखी जली ॥ ३३ ॥

दुहा ॥ श्री जिन नेम दयालजी, अतिशयवंत अ
 शेष ॥ अरती असुख दुःख टालतां, विचरे देश विदे
 श ॥ १ ॥ नद्विलपुर आया सही, हरख्या लोक अपा
 र ॥ राजा वंदन आवीयो, साथे सहु परीवार ॥ २ ॥
 सुलसा सुधी श्रावीका, नारी निरोपम नाम ॥ पट नं
 दनसु आवीया, श्री जिन वंदन ताम ॥ ३ ॥

ढाल १५२ मी ॥ जुमखडानी देशी ॥ दे उपदेश
 सुहामणोरे, ए संसार असार ॥ सुंदर सुखकारी ॥ धन
 जीवन परीवार सहरे, कोइ न आवे लार ॥ सुं० ॥
 ॥ १ ॥ दसे द्रष्टांते दोहिलोरे, मांणसनो जव एह ॥
 सुं० ॥ आलस तजी आतुर थइरे, किजे धर्म सने
 ह ॥ सुं० ॥ २ ॥ श्री जिन वाणी सांचलीरे, ते पट
 ही सुकुमार ॥ सुं० ॥ समजावे माता पिता
 रे, लेवा संजम नार ॥ सुं० ॥ ३ ॥ वत्रीसे वरकामनीरे,

अमरीने अवतार ॥ सु० ॥ वत्रीशे कंचन तणीरे, को
 डी तजी तेहीवार ॥ सु० ॥ ४ ॥ जिन मुख संजम
 उठेरे, पाले सुधाचार ॥ सु० ॥ दो उपवासे पारणो
 रे, सदा करे सुखकार ॥ सु० ॥ ५ ॥ स्वामी पधारघा
 द्वारीकारे, वंदन श्रीहरी राय ॥ सु० ॥ आयो आडंव
 र घणोरे, वाणी सुण्या सुख थाय ॥ सु० ॥ ६ ॥ प
 ट बंधवनो पारणोरे ॥ एकण दिन सुविशेष ॥ सु० ॥
 संघाडा त्रण जुजुवारे, पामी प्रभु आदेश ॥ सु० ॥
 ॥ ७ ॥ नगरी मांही आवीयारे, जूदा पकीयां जाम
 ॥ सु० ॥ एक जुगल हरी मंदीरेरे, आया तव अग्नि
 शम ॥ सु० ॥ ८ ॥ दिठां राणी देवकीरे, विधी वंदन
 अधीकार ॥ सु० ॥ अंतरजामी आत्मारे, हेज जणा
 वण हार ॥ सु० ॥ ९ ॥ लाडु तो हरी केसरीरे, वोह
 राव्या नरी थाल ॥ सु० ॥ निज हाथे उलटपणेरे, आ
 णी नाव रसाल ॥ सु० ॥ १० ॥ जेहनो चित्त देवा
 तणोरे, तेहने चित्त मजोय ॥ सु० ॥ वित्तवंतने चित्त
 नहीरे, चित्त वीत्त पुण्ये होय ॥ सु० ॥ ११ ॥ चित्त वी
 त्त दोइ संपज्यारे, पात्र पोखे तोवादी ॥ सु० ॥ पात्र
 वडो ससारमारि, सुकृत सहुनि आदी ॥ सु० ॥ १२ ॥
 पोखी न जाणे पात्रनेरे, पोखे काया जेह ॥ सु० ॥
 विण शिंगाही जाणीएरे, ढोर सरीखो तेह ॥ सु० ॥
 ॥ १३ ॥ व्याजे दिया दूणो वधेरे, चतुर गुणो व्यव
 साय ॥ सु० ॥ ॥ खेति सेहेसे गुणा हुवेरे, दान दिया अन

तो धाय ॥ सुं० ॥ १४ ॥ कुप वागने गौतणोरे, परन
 ख देखी विचार ॥ सुं० ॥ देता दान न थाकीएरे, दा
 न बडा संसार ॥ सुं० ॥ १५ ॥ दिधां राणी देवफीरे,
 मोदक खरा अमोल ॥ सुं० ॥ एतले विजो आवीयो
 रे, संघाडो समतोल ॥ सुं० ॥ १६ ॥ बावनसोमी ढा
 लमेरे, दाता करता दोय ॥ सुं० ॥ श्री गुणसागर सू
 रिजीरे, एक सरीखा होय ॥ सुं० ॥ १७ ॥

दुहा ॥ सोइ लाडु थाल सोइ, विधी वंदन पिण सो
 इ ॥ सोइ नाव उदारसुं, प्रतीलाच्या मुनी दोइ ॥
 ॥ १ ॥ देव योग एवो हुवो, त्रिजो जुगल जिवार ॥ श्री
 हरी जननीने घरे, आया सही तिणीवार ॥ २ ॥
 उही लाडु उही विधी, वोहराव्या मुनी तेह ॥ पिणतो
 शंका उपनी, राणीने मन एह ॥ ३ ॥

ढाल १५३ मी ॥ पूढी हो पूढि कोइनार ए देशी ॥
 पूढे हो पूढे राणी वात, फिरि फीरि हो आया तुम्ह
 घर माहरेजी ॥ वारी हो वारी हुं सोवार, वारी हो वा
 री दर्शण ताहरेजी ॥ १ ॥ मिलीया हो मिलीया साधु
 अपार, न मिल्यो हो न मिल्यो योग अहारनोजी ॥
 करवी हो पिड गवेपणा सुध, करवो हो उद्यम सुधा
 चारनोजी ॥ २ ॥ मुनिवर हो मुनिवर नाखे वाण, वाणी
 हो वाणी अमृत सारखीजी ॥ हम पट हो हम पटबंध
 व जाण ॥ न सके हो कोइ जुदा पारखीजी ॥ ३ ॥ न
 दिल हो नदिलपुर अवतार, सुलसाहो सुलसा माता मा

हरीजी ॥ तिस हो तिस अने दोड नार, एति हो को
 डी कनकानि परीहरीजी ॥ ४ ॥ जेठ्या हो जेठ्या नेम
 जिणंद, जाण्यो हो जाण्यो जिन जग तारणोजी ॥
 लीधो हो लीधो संजम नार, किजे हो दोड उपवासे
 पारणोजी ५ ॥ जोडा हो जोडा तीने आज, आया हो
 वोहरण थारे श्राविकाजी ॥ लालच हो लाडुनी नही
 कोइ, लालचि हो शिवनी पुण्य प्रभाविकाजी ॥ ६ ॥
 राणी हो चित्तसु चिते ताम, मुऊसु हो निमित्तीये एम
 नखीयोजी ॥ थारे हो थारे उत्तम नंद, होशे हो होशे
 एम कहि दाखीयोजी ॥ ७ ॥ म्हारो हो म्हारो कान नरिंद,
 जेहवा हो तेहवा पट जाणीएजी ॥ मुऊथी हो मुऊथी सुल
 सा सोय, मोटी हो मोटी आज वखाणीएजी ॥ ८ ॥ वंदन हो
 वंदन नेम जिणंद, आवी सा उतावलीजी ॥ देखी हे देखी
 तेह मुनिंद, उपजे हो उपजे अति मननीरलीजी ॥ ९ ॥ सु
 रहि हो सुरहिनी परे जोय, हिंसे हो हिंसे हेज हिए
 घणोजी ॥ नयणा हो नयणा ज्ञानी होय, उलखी हो उलखी
 ले जण आपणोजी ॥ १० ॥ ढालज हो ढालज सीठी
 चुर, त्रेपन हो त्रेपनने सोमी चलीजी ॥ श्री गुण हो श्री गु
 णसागर सूरि, माता हो माता सुत मनसा रलीजी ॥ ११ ॥

दुहा ॥ पूबे राणी देवकी, नेम जिणंदा पास ॥ ए पट
 मुनिवर देखतां, माहरे मन उल्हास ॥ १ ॥ ए चव
 के पर चव तणो, सगपणको व्यवहार ॥ देव दया क
 री दाखवो, ज्ञान तणा नंडार ॥ २ ॥

ढाल १५४ मी ॥ मेतारज मुनिवर धन धन तु
 म्ह अवतार ॥ ए देशी ॥ बलीजात प्रचुजी, चांजो ए
 ह संदेह ॥ साधु सलुणा देखताजी, उपनो अधीक
 सनेह ॥ व० ॥ १ ॥ सांजल राणी देवकीजी, चांखे
 श्री जगनाथ ॥ ए पट नंदन ताहराजी, नीसुणे स
 घलो साथ ॥ व० ॥ २ ॥ सारद नामे सारदाजी, सा
 रद देवी होय ॥ वडवखती तुऊ सारखीजी, नारी न
 वीजी कोय ॥ व० ॥ ३ ॥ कंस कर्म आदे करीजी, सं
 जलाव्यो विरतंत ॥ हरखी राणी देवकीजी, वांदी
 श्री जगवत ॥ व० ॥ ४ ॥ घर आवी एम चिंतवेजी,
 जाया नदन सात ॥ बालपणे न रमाडीयोजी, एकहि
 धीग मुऊ मात ॥ व० ॥ ५ ॥ जाग्यवती सा चामनी
 जी, वालिक जेहने गोद ॥ हुलरावे हियडे धरीजी,
 वासर जाय विनोद ॥ व० ॥ ६ ॥ में कुण कुण पूरव
 जवेजी, प्रोढा प्रातिक कीध, केसर वरणो नानडोजी,
 एहवो मुऊ दैवे न दीध ॥ व० ॥ ७ ॥ एम केहती ध
 रती खीलेजी, सजल सलुणां नेण ॥ थया अणगस
 ता काननेजी, वाली सखीय न वेण ॥ व० ॥ ८ ॥ अर
 ती अलुर वाधी घणीजी, आहट दूहट ध्यान ॥ पगे
 लागवा आवीयोजी, एटले श्री नृप कान ॥ व० ॥ ९ ॥
 च्यार च्यारसें मायनेजी, हरी नमे नित्य आय ॥ ए
 म ठ मासे वांदताजी, नीज जननीना पाय ॥ व० ॥
 ॥ १० ॥ निज पखेरां आंतरोजी, मोटा नाणे कोइ ॥

मेह अने शशी देवताजी, सहुने सरीखां जोइ ॥ व०
 ॥ ११ ॥ उपजाणे अरती तणोजी, माता मनहि म
 कार ॥ श्री हरीजीनो आवणोजी, तिणही वार वि
 चार ॥ व० ॥ १२ ॥ वीनय करीने वीनवेजी, जननी
 श्री हरी राय ॥ माय भया करी चांखीएजी, आरती एव
 डी कांइ ॥ व० ॥ १३ ॥ अति लांबो निसासडोजी,
 मेलहि बोली माय ॥ सात नंदन में जाइयाजी, तुज
 सरीखा हरी राय ॥ व० ॥ १४ ॥ पट वाध्या सुलसा
 घरेजी, तुं पिण गोकुल मांहि ॥ हुंश न पुगी महारी
 जी, बाल रमाडण प्रांहि ॥ व० ॥ १५ ॥ उं दिनथी प
 रवश पणेजी, वैरी केरे वास ॥ नंदन होवे आठमोजी,
 तो मुऊ पूरे आस ॥ व० ॥ १६ ॥ माय मनोरथ पूर
 वाजी, कांहे किया उपवास ॥ देव चवीने आवीयोजा,
 राणी उदर निवास ॥ व० ॥ १७ ॥ जो जो संच्यो
 पुण्यनाजी, मांया नंदन होइ ॥ चेलणा चुथा कारणेजी,
 रोइ न लहिए सोइ ॥ व० ॥ १८ ॥ चोपन सोमी
 ढालमेंजी, माधव केरी मात ॥ श्री गुणसागर सूरि क
 हेजी, सुख मांही दिन जात ॥ व० ॥ १९ ॥

दुहा ॥ नविक जीव प्रतिबोधवा, निनवर करे वि
 हार ॥ पाप तिमर निरघाटवा, सहस किरणदिनकार
 ॥ १ ॥ गर्ज दिवस पूरा करी, जायो सुंदर नंद ॥ घ
 र घर रग वधामणां, घर घर अति आनंद ॥ २ ॥

ढाल १५५ मी ॥ नमिराय धन धन तुम अवता

र ॥ ए देशी ॥ राणीजी हो जायो पुत्र रतन, जिहो
 कोमल जिम गजतालु ॥ लाला ॥ नामे गजसुक
 माल ॥ रा० ॥ १ ॥ जिहो हरख्यो श्रीहरी राजीयो
 ॥ ला० ॥ हरख्या दसेही दसार, जिहो हरखी माता
 देवकी ॥ ला० ॥ हरख्यो सह परिवार ॥ रा० ॥ २ ॥
 जिहो बंदिखाना ठोडीया ॥ ला० ॥ किधा बहु मंडा
 ण, जिहो नगरीनी शोना घणी ॥ ला० ॥ वाजे गुहि
 र निसाण ॥ रा० ॥ ३ ॥ जिहो यादव नारी सामटि
 ॥ ला० ॥ आवे गावे गीत, जिहो आरण कारण किजीए
 ॥ ला० ॥ साचवीए गुन रित ॥ रा० ॥ ४ ॥ जिहो दि
 जे मयंगल मोटका ॥ ला० ॥ दिजे हयवर हार, जिहो
 दिजे सोना सावटु ॥ ला० ॥ दिजे अरथ जमार ॥ रा०
 ॥ ५ ॥ जिहो बारसमो दिन आवीयो ॥ ला० ॥ ना
 म दियो अनिराम, जीहो चंदकला जिम वाधतो ॥
 ला० ॥ रूप कला गुणधाम ॥ रा० ॥ ६ ॥ जीहो खे
 लावणी हुलरावणी ॥ ला० ॥ चुन्नावणी चित लाय,
 जीहो न्हवरावणी पहेरावणी ॥ ला० ॥ आंगी अंग लगाय
 ॥ रा० ॥ ७ ॥ जीहो आंखलडी अंजावणी ॥ ला० ॥
 नाले करावण चंद, जीहो गाला टीकी सामली
 ॥ ला० ॥ आलिंगन आनद ॥ रा० ॥ ८ ॥ जीहो प
 गमंडण ग्रहि आंगुली ॥ ला० ॥ ठमुक ठमुकती चा
 ल, जीहो बोलण चापा तोतली ॥ ला० ॥ रिंजावणी
 अति ख्याल ॥ रा० ॥ ९ ॥ जीहो रोटी दहिय जिमा

वणी ॥ ला० ॥ लिळा वाल विनोद, जीहो सबहीपरे
 माय देवकी ॥ ला० ॥ पावे अधिक प्रमोद ॥ रा० ॥
 ॥ १० ॥ जीहो पढ्यो गुणयो गति आगलो ॥ ला० ॥
 जदुपती जीवन जोय, जीहो प्यारो प्राण थकी खरो
 ॥ ला० ॥ माताजीने सोइ ॥ रा० ॥ ११ ॥ जीहो ए
 टले नेम समोसरया ॥ ला० ॥ वंदन देवमुरार, जी
 हो लघु जाइ आगे करी ॥ ला० ॥ परीवरीयो परिवा
 र ॥ रा० ॥ १२ ॥ जीहो सोमल ब्राह्मणनि सुता ॥
 ॥ ला० ॥ परणावणने काज, जीहो मूकि मंदिर आप
 णे ॥ ला० ॥ जइ वांटे जिनराज ॥ रा० ॥ १३ ॥ जी
 हो पूजा प्रणमी सांजले ॥ ला० ॥ वेठि परखदा बार,
 जीहो श्री जिनवाणी विस्तरि ॥ ला० ॥ चविकजना
 सुखकार ॥ रा० ॥ १४ ॥ जीहो पंचावन सोमी ढाल
 में ॥ ला० ॥ कुंवर गजसुखमाल, जीहो श्री गुणसा
 गर सूरिजी ॥ ला० ॥ धर्म सुणे सुविसाल ॥ रा० ॥ १५ ॥
 दुहा ॥ उपदेसे श्री नेम जिन, जीवा जीव विचा
 र ॥ दान शियल तप जावनां, श्री जिन धर्म उदार
 ॥ १ ॥ नव नय हरवा जावना, बार तणो विस्तार
 ॥ विवराशुं विवरी कहे, त्रिचुवन तारण हार ॥ २ ॥
 ढाल १५६ मी ॥ ए जग थिर नही ॥ ए देशी ॥
 जे द्वाण जायठेरे, फिरी नावेढे तेह ॥ चेत चेत नर
 चेतिए हो, कर कर धर्म सनेह ॥ जे० ॥ १ ॥ (१ अथ
 अनित जावना) ॥ ए संसार असार विच्यारो, पंखी

तरुवर वासो ॥ हाट मिल्यो वाजीगर केरो, पसरे प्रग
ट तमासो ॥ तिरथ मेलो जेहवो तेहवो, जग व्यवहा
र विनासो ॥ जे० ॥ २ ॥ अश्र मंटल जिम उपजे
विणसे, तनु धन जोवन जाणो ॥ गगन नगर सरी
खो साचो, पदमनी प्रेम प्रमाणो ॥ साजन साथ स
रिस सुहावो, विद्युतवान वखाणो ॥ जे० ॥ ३ ॥ (२
अथ शरण जावना ॥) मृग शावक वन मांही फिर
तो, करतो केली विचारो ॥ सिंहसूरि देखी सुविसेखी,
ले चलियो निरधारो ॥ काल तणी असवारी होता,
कोइ न राखण हारो ॥ जे० ॥ ४ ॥ (३ अथ सं
सार जावना) ॥ चण्णगति फेरी करीय घणेरी, अम
र थयो ए प्राणी ॥ नरगतिरी अवतार अनता, पाप
तणी अहि नाणी ॥ नरन्वे धन धन रामा रामा, वि
जी वात न जाणी ॥ जे० ॥ ५ ॥ (४ अथ
एकत्व जावना ॥) जिहां तिहां नर आप एकिलो,
फिरे रमतो सोइ ॥ परन्वे जातां जोइ पनोता, साथे
नावे कोइ ॥ कां धन कां धनियाणी धरति, धर्म सखाइत
होइ ॥ जे० ॥ ६ ॥ (५ अथ अन्यत्व जावना) ॥
जीव सचेतन देहि अचेतन, एक कहो किम होवे ॥
उ शिव वंठे उ नव इठे, उजागे उ सोवे ॥ आतम देहि
विचारे जूदि, सोइ अघ मल धोवे ॥ जे० ॥ ७ ॥ (६ अ
थ अशुचि जावना ॥) काय अशुचि अनेक प्रकारे,
धोया सुधि न पावे ॥ दसाहि द्वार श्रवे निसवासर,

ते किम सोच लहावे ॥ सातै धाते पूरित ए तनुं, बा
 हिर सोह देखावे ॥ जे० ॥ ८ ॥ (७ अथ आश्रव
 जावना ॥) श्रवण नयणने घाण घणी परे, रसना
 फरस कहिजे ॥ हरिण पतंग नमरने मठी, मयंगल
 मरण लहिजे ॥ एक एक इंद्रिय कारणे एतो, पंचे क्यु
 न कशीजे ॥ जे० ॥ ९ ॥ (८ अथ संवर जावना) ॥ आश्र
 व रोक्या होवे संवर, संवरथी फल मोटो ॥ व्यापारी व्या
 पार करंतां, जाणी न खाइ खोटो ॥ समऊ समऊरे जीव
 सलुणा, दुःख घणो सुख थोको ॥ जे० १० ॥ (९ अ
 थ निर्झरा जावना ॥) उदय उदिरण दुनी प्रकारे,
 कर्म निर्झरा काहिए ॥ श्री जिनशासन गंडी अनेरां,
 एतो मर्म न लहीए ॥ तप जप दुःकर करणीने बले,
 निश्चल हुइने रहिए ॥ जे० ॥ ११ ॥ (१० अथ लो
 क जावना ॥) चउद राज तिम उंचो निचो, लोक
 प्रमाण विचारो ॥ सात पांचने एक राजूवर, चउडप
 णे अवधारो ॥ कियो न क्रिणहि कोइ न करेगो, जिम
 ठे तिम निरधारो ॥ जे० ॥ १२ ॥ (११ अथ बो
 ध जावना ॥) थावरथी ए त्रसपणो दुर्लभ, त्रसथी
 इंद्रो पूरा ॥ पांचे इंद्रिमें माणसनी गती, आर्य खेत्र
 सनूरा ॥ साधु योग संजमनो धरवो, जोतो पुण्य अं
 कूरा ॥ जे० ॥ १३ ॥ (१२ अथ धर्म जावना ॥)
 धर्म विना सब धंदो दिसे, कांइ हाथ न लागे ॥ धर्म
 विना रुलीयो नव नवमें, रे मन मूरख आगे ॥ वित्यो

काल अनंतो सोवत, अब्रहि क्युं नवि जागे ॥जे०॥१४॥
 आगे जीव अनंत विगुतो, पडीया घन प्रमादे ॥ विप
 या वाह्या न रह्या साह्या, माची रह्या उनमादे ॥ पिण
 परमार्थ एह न जाण्यो, तरवो गुरु प्रसादे ॥ जे०॥१५॥
 एकसो बप्पनमी ढाले, श्रीमुख जिन उपदेशा ॥ नविक
 जना मन मान्या कानी, किधा क्रोध किलेसा ॥ श्री गु
 णसागर सूरि सुहावे, समताभाव विशेषा ॥ जे० ॥१६॥

दुहा ॥ जिन वाणी श्रवणे सुणी, गज सुखमाल कु
 मार ॥ विपयाथी विरच्यो खरो, मनसु करे विचार ॥ १ ॥
 विपया विपहीथी वुरी, विपीया नाम कुनाम ॥ विप
 या वाह्या मानवी, दो नव गमे निकाम ॥ २ ॥ आग
 अने विषया कही, एक सरीखी जोय ॥ सिलगीने वा
 हिर पडी, हाथ न आवे सोय ॥ ३ ॥ धुरही दावी रा
 खीए, लहे अति विस्तार ॥ ए निश्चय मनमां धरयो,
 व्याह तणो परीहार ॥ ४ ॥

ढाल १५७ मी ॥ कानजी मेलोने कांबलीरे ॥ ए
 देशी ॥ प्रनु प्रणमी घरे आवीयोरे, माताजीनी पास
 ॥ अनुमतीने उतावलोरे, संजमसु उल्हास ॥ १ ॥
 माता अनुमत दिजीएरे, लेसु संजम चार ॥ जइ जो
 डं उतावलोरे, मुक्ती मनोहर नार ॥ मा० ॥ २ ॥ मूर्गा
 णी मा देवकीरे, वात सुणंता ताम ॥ जाया तुं मुऊ वा
 लहोरे, प्राण थकी अचिराम ॥ मा० ॥ ३ ॥ दुरलज
 उंबर फूल जीउरे, सांचलवो जग माही ॥ तो देखेवो

किंहारे, तिम तुम दरसन प्राही ॥ मा० ॥ ४ ॥ पान
 फूलनो जीव तुरे, कोमल केली समान ॥ लहुडने अ
 ति लाडीलोरे, लाल न लिलां थान ॥ मा० ॥ ५ ॥
 चारीत्र काठोठे खरोरे, जिन वचने विख्यात ॥ मिण
 तणे दांते करीरे, लोह चणा न चवात ॥ मा० ॥
 ॥ ६ ॥ वाक चरेवो कोथलोरे, चालवो खांडा धार ॥
 सायर तरवो जुज बलेरे, दुःकर संजम नार ॥ मा०
 ॥ ७ ॥ धुरी होइ उतावलोरे, गंभी घर व्यापार ॥ प
 ठी परीसह उपज्योरे, ढिला पडेही अपार ॥ मा० ॥
 ॥ ८ ॥ लुदल जावे जातीनोरे, दोमें एक न होय ॥ ना
 घर ना संजमपणोरे, वादी गमे नव दोइ ॥ मा० ॥ ९ ॥
 कुमर कहे माजी सुणोरे, रागीनो ए माग ॥ जाणोवो
 जुगतो सहिरे, पिण जुदो वैराग ॥ मा० ॥ १० ॥ जे
 वंठक एह लोकनारे, नवि वंठक परलोक ॥ ते कायर
 ने दोहिलोरे, जालवणो जगी जोग ॥ मा० ॥ ११ ॥
 सूरवीरने साहसीरे, त्रिकरण सुधा जास ॥ तेहने तो
 सहु पाधरोरे, कांड न दोहिलो तास ॥ मा० ॥ १२ ॥
 जोबनने धन कारीमोरे, अने कारमी देह ॥ साणपणा
 नो नाम एरे, संजम साथे सनेह ॥ मा० ॥ १३ ॥ ध
 नजीवो संजोगथीरे, त्रपती न पावे जीव ॥ संतोखी
 सुखीया महारे, समतावंत सदिव ॥ मा० ॥ १४ ॥ स
 मजावी संजम लिउरे, नेमी जिनेश्वर हाथ ॥ ध्यान ध
 रयो समसानमेरे ॥ दुज दियो जगनाथ ॥ मा० ॥ १५ ॥

सोमल सुसरो आवियोरे, शिर माटीनी पाल ॥ अं
 गारा लेइ खेरनारे, धगधगता ततकाल ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ मेलि मस्तके चालीयोरे, साधु न चूक्यो
 ध्यान ॥ चडते परीणामें लह्योरे, केवल पद निरवाण
 ॥ मा० ॥ १७ ॥ पटमासी रजनी थइरे, सुत विरहे
 विकराल ॥ प्राति पधारी प्रचु कन्हेरे, देखण गजसु
 खमाल ॥ मा० ॥ १८ ॥ वाठा उपर हिसतिरे, सुरहि
 आवे जेम ॥ सुत मुख निरखण सांजलिरे, माता आ
 री तेम ॥ मा० ॥ १९ ॥ अकुलाणी अणदेखवेरे, पु
 ब्या त्रिचुवन स्वाम ॥ नंद हुठ आनंदमेरे, पोहोंचा
 अविचल ठाम ॥ मा० ॥ २० ॥ फरसी वेदी डाली
 जोउरे, ढली पत्नी सा माय ॥ रोवे गोरी गहवरीरे, ह
 री हलधर दुःख थाय ॥ मा० ॥ २१ ॥ हरी पूबयो
 जिनवर कह्योरे, धसकि बुटशे प्राण ॥ बंधव हता ते
 जाणवोरे, स्वामी कह्या सहि नाण ॥ मा० ॥ २२ ॥
 सेरी वाटे आवतारे, सोग धरी हरीराय ॥ सोमल सां
 सार्हीमें मुउरे, किधांना फल पाय ॥ मा० ॥ २३ ॥
 उत्कृष्टा पातिक जे करेरे, उत्कृष्टी हि वार ॥ पापे
 पचे घणुं आपणेरे, नहि सदेह लिगार ॥ मा० ॥
 ॥ २४ ॥ जे हुवा त्रिचुवनपतिरे, तेहनो सोग न को
 य ॥ कीधी हरी समजावणिरे, नेम जिणंदा जोय ॥
 ॥ मा० ॥ २५ ॥ सत्तावन सोमी ए ढालमेंरे, मुगती
 गया सुखमाल ॥ श्री गुणसागर सुरिजीरे, प्रणामु चर

ए त्रीकाल ॥ मा० ॥ २६ ॥

दुहा ॥ हलधर श्री हरीसुं कहे, पुण्य घटंतो आपा ॥
दिसेवे तेहि कारणे, उपज्यो ए संताप ॥ १ ॥ मोटा
ना तो कुंकरा, आसंगे नहि कोइ ॥ जाइ हणयो सुख
माल सो, बडो अचंचो जोइ ॥ २ ॥

ढाल १५८ मी ॥ कपुर होवे अति उजलोरे ॥ ए
देशी ॥ श्री बलदेव विनो करीरे, पूठ्या नेमी जिनेश
॥ होतार्थ जे आगलोरे, सुख दुःख हरख किलेश ॥ १ ॥
मया करी स्वामी करी प्रसाद, जे उगे ते आथमेरे,
कोइ नहि विखवाद ॥ ए आंकणी ॥ ए नगरी ए सा
हिबीरे, ए श्री कृष्ण नरेश ॥ कव लगी रेहसे एह
वारे, यादव जोर विशेष ॥ म० ॥ २ ॥ नेम कहे स
हु सांजलोरे, जुठो जग व्यवहार । मिलतां दिन ला
गे घणारे, विठडता नही वार ॥ म० ॥ ३ ॥ रंग कृ
सुम पतंगनोरे, दिसे अर्धाक सुचंग ॥ दिवस दशाने
आंतरेरे, सो फीर थाइ विरंगा ॥ म० ॥ ४ ॥ तन धन जो
बन कारमोरे, परीअणने परिवार ॥ च्यार दिवसनो
चह चहोरे, पाठे विरस अपार ॥ म० ॥ ५ ॥ द्वारा
माति नगरी तणोरे, मदिरा हेते विणास ॥ बारसमें व
रसें होसेरे, करसे ए श्री व्यास ॥ म० ॥ ६ ॥ निज
खांडे श्री हरी तणोरे, जरत कुमरने हाथ ॥ बन कौ
संवे निश्चेशुरे, मरण कह्यो जगनाथ ॥ म० ॥ ७ ॥
एह सुणंता वातडीरे, खलजलीया सहु कोय ॥ आर.

ती उपजे अति घणीरे, हरी हलधरने जोय ॥ म० ॥
 ॥ ८ ॥ चाइ सुतने सुदरीरे, अवर अनेरा कोइ ॥
 दिख्या लिए सादरीरे, श्रीहरी अनुमति होइ ॥ म० ॥
 ॥ ९ ॥ केता एक दिक्षा अहिरे, केता नगरी मजार
 ॥ आया हरी निज मंदिरेरे, उपकर्मा अधिकार ॥
 ॥ म० ॥ १० ॥ मझीरा नगरी बाहिरेरे, कीधी सवली
 जाम ॥ दिपायन तप आकरोरे, तपवा लाग्यो ताम
 ॥ म० ॥ ११ ॥ जगत कुमर उदाशनिरे, वनही मांही
 वसत ॥ खाडो पथवर उपरेरे, घाढो करी घसंत ॥ म०
 ॥ १२ ॥ खिस्यो अणि तव आकलोरे, पाणी मांही
 पसत ॥ गिलीयो मोठे नाठलेरे, पडीयो जाले तुरंत ॥
 ॥ म० ॥ १३ ॥ उदरथी कियो ठूकडोरे, तिर तणे
 आकार ॥ निकलीयो ते तिरशुरे, खायो हरीण गिमा
 र ॥ म० ॥ १४ ॥ हरीण गयो वनमें चलीरे, मा
 रयो जगत कुमार ॥ तरकस मांही राखीयोरे, सोइ
 तिर ते वार ॥ म० ॥ १५ ॥ आठावन सोमी ढालमें
 रे, साचा श्री जिन बोल ॥ श्री गुणसागरसूरिजीरे,
 अभिय सभो निर मोल ॥ म० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ चंद चले सूर्ज चले, चले सोइ नरिंद ॥ गोप चले
 साथर चले, चले सुवडगिरिंद ॥ १ ॥ पिण न चले
 जवीतव्यता, एहनो जोर अपार ॥ सांब प्रमुख अ
 ति सामटा, खेलण चल्या कुमार ॥ २ ॥

ढाल १५९ मी ॥ हिवे राणि पदमावतिरे हां ॥ ए

कार ॥ अब नवमा अधिकारनो, नवीक गुणो सुवि
चार ॥ १ ॥ कामदेव एम चिंतवे, सारीजे निज का
ज ॥ संसारीक सुख जोगव्यां, सार्धीजे शिवं राज ॥ २ ॥

ढाल १६० मी ॥ श्री रामजीए नार गमाइ हो ॥
ए देशी ॥ अनुमती मांगे हो, विनो करी पगे लागे
॥ मदन उजो हरी आगे, मोह निंदथी जागे ॥ अ०
॥ १ ॥ अनुमती नाम सुणंता मुरब्धा, हरी हलधर
शुं देवा हो ॥ वज्रपात सम वात विचारी, धरणी प
ड्या ततखेवा हो ॥ अ० ॥ २ ॥ संजम स्योने स्यो
तुं कुंवर, किजे जोग विलासहो ॥ विणहि धाजे जे वि
प खाइ, ते तो पावे हास हो ॥ अ० ॥ ३ ॥ कुंवर
कहे जिन वचने शंका, मुजने कांइ नावे हो ॥ द्वार थ
की निज मंदिर लाग्यो, काढण कोइ न पावे हो ॥
अ० ॥ ४ ॥ पंडीत मूरख बुढा बाला, कायर सूरजो
इ हो ॥ राजा राणी रविमुत आगे, रहेण न पावे को
इ हो ॥ अ० ॥ ५ ॥ आदीनाथ आदी चौबीसे, जिन
वर चक्री बारे हो ॥ केशव युग गण हरने हलधर, ए
सहुए यम सारे हो ॥ अ० ॥ ६ ॥ मात पीताने बंधव
बेटा, वार अनंता पाया हो ॥ परजव जातां कोइ प
नोता, मुजने आडा नायाहो ॥ अ० ॥ ७ ॥ चूल्यो
तुं तो अतिही चूल्यो, अब चूल्यो नवी जाइ हो ॥ अ
णजाण्या विष खाधो केवल, जाण्या विष न खवाइ हो
॥ अ० ॥ ८ ॥ जगत तणी स्थिती झणीक देखी, थ

यो हं नत्र वेशर्गीहो ॥ यो अनुमति तो लेज दिह्वा,
जिन वचने रह लागी हो ॥ अ० ॥ ९ ॥ समजाव्यो बावा
ने बुढो, समजाव्यो निज तातो हो ॥ चारित्रने उमा
ह्यो चवीको, अवगमे नहि वातो हो ॥ अ० ॥ १० ॥ साठ
अने एकमोमी ढाले, हरीनो लहि आदेसो हो ॥ श्री गुण
सागर सूरि पश्यै, बाध्यो जाव विशेषो हो ॥ अ० ॥ ११ ॥

बुहा ॥ मातामुं विनती घणी, काम करे करजोड
॥ संजन लेवा भेलवे, केलवणीनी कोड ॥ १ ॥ जिम
थी तिम धसकी पडो, न रही सुद्ध लिंगार ॥ बाहे ध
री बेठी करी, करी करी अति उपचार ॥ २ ॥

ढाल १६१ मी ॥ सौदागर लाल चलण न देशा
॥ ए देशी ॥ प्यारे हमारे लाल ॥ एसी न कीजे, तु
म विण आ ठे लाल कहो किम किजे ॥ प्या० ॥ ठ
तिया मेरी लाल तिखी काति, कालज कापे लाल अ
ति अकुलाती ॥ प्या० ॥ १ ॥ तुम विरहेरे लाल वित
क विते, फीर क्युं चाहुं लाल वेदि न विते ॥ प्या०
दुःख गतिया मेरे लाल आगज उठि, तनु जालेरे ला
ल न समजे ऊठी ॥ प्या० ॥ गतियामें लाल दुःख
न समावे, दाडिम ज्युरे लाल फाटी आवे ॥ प्या० ॥
॥ २ ॥ तुम्ह वीरहेरे लाल वितक विते, फीर किउं
चाहुं लाल उदिन विते ॥ प्या० ॥ दुःख हं तेरे लाल
जेते नारे, तुम्ह आइरे लाल नीठ विसारे ॥ प्या० ॥
॥ ३ ॥ च्यारे दिनाकी लाल करीय उजवाली, पुनरपि

थाइ लाल रानी काली ॥ प्या० ॥ दइय मनाइ ला
 ल ए दिन लोके, कहा करो हो लाल तोडा तोडे ॥ प्या० ॥
 ॥ ४ ॥ बेटा केरी लाल आस्या एति, कहिय न जा
 इ लाल अवरं जेति ॥ प्या० ॥ देश प्रदेशा लाल सु
 खनीरे साइ, माताने हुवे लाल सुतथी वडाइ ॥ प्या०
 ॥ ५ ॥ सुंदर जाइ लाल सुंदर जायो, नेह वसेरे लाल
 ज्युं घर आयो ॥ प्या० ॥ सुंदर जाइ लाल खरीय स
 पूति, सिंहणी ज्युं रे लाल सुखचर सूती ॥ प्या० ॥
 ॥ ६ ॥ उंबी लेइरे लाल आजे अडाइ, निचि किएरे
 लाल जात वनाइ ॥ प्या० ॥ दुःख न सहाइ लाल क
 हि जे कासुं, सोका वासो लाल होसे हांसु ॥ प्या० ॥
 ॥ ७ ॥ लाल नगीनो लाल तुं मुऊ किको, तुऊ विण
 लागे लाल ए सहु फिको ॥ प्या० ॥ रोवंत अति हे
 लाल रुखमणी राणी, चर चर आवे लाल नयणें पा
 णी ॥ प्या० ॥ ८ ॥ मदन कहे लाल मायन रोजे, जेम
 दिन आयो लाल कियुं सोखे सोजे ॥ प्या० ॥ मोहन
 किजे लाल मोहन माच्यो, संग अनेके लाल प्राणी
 नाच्यो ॥ प्या० ॥ ९ ॥ अथीर मेलोरे लाल कहो किम
 गजे, सर्द घन ज्युं रे लाल फोगट गाजे ॥ प्या० ॥
 जन्म जरारे लाल पूठे लागी, कियुं वुटिजे लाल तेह
 थी जागी ॥ प्या० ॥ १० ॥ उत्कृष्टीरे लाल किजे
 करणी, तो तो मीटेरे लाल यमकि करणी ॥ प्या० ॥
 अजर अमररे लाल अब हम होसुं, सिद्ध थइने लाल

त्रिभुवन जोसुं ॥ प्या० ॥ ११ ॥ देव युगति लाल,
 कहि समजावी, काम कुमरे लाल साथ मनावी ॥ प्या०
 ॥ एकसठ सोमी लाल ढाल सुहावी, कहे गुणसूरि
 लाल नविक मन चावी ॥ प्या० ॥ १२ ॥

ढुहा ॥ मातानी अनुमति लइ, अंतःपुरमां जाय ॥
 समजावे अंतेउरी, वाणी वदे सुखदाय ॥ १ ॥ प्री
 तीवत नीसुणो प्रिया, हमे ग्रहांगं दिख ॥ पाठे रुमा
 चालजो, एह हमारी शिख ॥ २ ॥

ढाल १६२ मी ॥ वीसजणांसुं वाद न कीजे ॥
 ॥ ए देशी ॥ बोले राणी अति वीलखाणी, नाखे नय
 ऐ पाणीजी ॥ आरतिवंत आतुर सघली, चांखे गद
 गद वाणीजी ॥ वो० ॥ १ ॥ प्रीतम प्रेम विहुणी वा
 णी, किम चांखोठो आजजी, चारीत्रनी चतुराइ ठां
 डो, तुम्हने करवो राजजी ॥ वो० ॥ २ ॥ तुम्ह प्रचु
 इंद्र तणे अवतारे, हम इंद्राणी रुपजी ॥ लिजेलाहो
 नरनव केरो, सांनल जादव चूपजी ॥ वो० ॥ ३ ॥
 नारीने कारण नर जगमें, कष्ट करतां कोडजी ॥ एक
 मना उजा नृप आगे, सेव करे करजोडजी ॥ वो० ॥
 ॥ ४ ॥ अधीक जयंकर सागर लंघे, आटविमें पयसं
 तजी ॥ रोल महा संग्रामे सूर, आतुर थइ धसंतजी
 ॥ वो० ॥ ५ ॥ अहिल्या रुपे इंद्र विगुतो, ए प्रगटो
 अवदातजी, एक लाख हजारा केइ, न सरथुं खा
 धी लांचजी ॥ वो० ॥ ६ ॥ पाराशर सरीखा पातरी

यो, पातरायो श्री व्यासजी ॥ सत्यकी बेला शुं पातरी
 यो, पाम्यो प्राण विणासजी ॥ बो० ॥ ७ ॥ ब्रह्मा पु
 त्रिसुं पातरीयो, तापस तरुणी देखजी ॥ वरशी तप त
 रु बाली चाटंतो, राच्यो रुप विशेषजी ॥ बो० ॥ ८ ॥
 चरत सुंदरी साथे मोह्यो, दिख्या लेण न दिधजी ॥
 साठ सहस वरसां तप तपवे, काया खिणी किधजी
 ॥ बो० ॥ ९ ॥ प्रजापति नृप कियो किरावर, ते तो
 न करे कोइजी ॥ दसकंधर दस माथा शेति, लंका
 सरीखी खोइजी ॥ बो० ॥ १० ॥ रामचंद्र सीताने का
 जे, किधो किम विलापजी ॥ पवन जय पदमनीने ली
 धे, देह तजेतो आपजी ॥ बो० ॥ ११ ॥ शांतनु नंद
 न आरतीवंतो, चिषम पूरी आशजी ॥ करमंतां कुं
 तिने कारण, पांरुव हुवो उदाशजी ॥ बो० ॥ १२ ॥
 देव हमारे सुसरे सुंदरी, सासु काजे किलेसजी ॥ अ
 ष्टदश अहोहणीसुं, मारयो बडो नरेशजी ॥ बो० ॥
 ॥ १३ ॥ पांरुव हरी पर खंरु शिधाव्या, पंचालीने का
 मजी ॥ नाम कहुं केतां जग जोतां, पार न पावे स्वा
 मजी ॥ बो० ॥ १४ ॥ जैरव जंपा कमलानी पूजा, क
 रवत कासि मांहिजी ॥ पंचाश्री साधे सीर उधे, धुड
 घुटे प्रांहिजी ॥ बो० ॥ १५ ॥ एहवि कलपना करीने
 कामी, वंढे नारी जोगजी ॥ नाह पामीनें परहरिए, कि
 ण दीठो परलोकजी ॥ बो० ॥ १६ ॥ काम कहे काम
 नी तुमे नीसुणो, जोग जोगवी जल चूरजी ॥ योगी यो

ग युगती जालवतां, हुवा मोह हजुरजी ॥ वो० ॥
 ॥ १७ ॥ तुम वाट पाडी मुक्ति पंथनी, जाणी श्री जि
 नरायजी ॥ सहस व्याणुं तजे समकाले, तो वैरागी था
 यजी ॥ वो० ॥ १८ ॥ चारीत्र कठण होवे कंता, कर
 वो केसां लोचजी ॥ परघर आसा धरवि नीतकि, नी
 द्दाकेरो सोचजी ॥ वो० ॥ १९ ॥ उन्हो पाणी आव
 ण वाणी, पिधो कहो किम जायजी ॥ अणुवाणा पा
 ए चालेबुं, फीरी पळतावो थायजी ॥ वो० ॥ २० ॥
 नाह विना नारी नीरधारी, निपट नीकामी होयजी ॥
 अंगुठाविण आंगुलीया जिम, नारीनिहाली जोयजी
 ॥ वो० ॥ २१ ॥ सासरफे सुखसाता न लहे, नलहे पिय
 र मानजी ॥ धणी गया धणियापो वुटे, घर आंगण म
 साणजी ॥ वो० ॥ २२ ॥ वेटा पोता जनक जमाइ,
 गांठे जाजा दामजी ॥ अलवेसर अलगाथी कहिए, तो
 पिण नाम कु नामजी ॥ वो० ॥ २३ ॥ धन धन दवदं
 ति सतव्रंति, धन धन पांडव नारजी ॥ आपदसांहि
 साग आहारी, हुइ खिजमतदारजी ॥ वो० ॥ २४ ॥
 नारीने पियु साथे नलो, कां घर कां वनवासजी ॥ प
 तिव्रता व्रत साचो ते, सुख दुःख सरीखो जासजी ॥
 ॥ वो० ॥ २५ ॥ पिउनी लारे संजमलेसा, साधसा निज
 काजजी ॥ महेल सुगतमें सामी सरसी, करसां अवि
 चल राजजी ॥ वो० ॥ २६ ॥ वासठने एकसोमी ढा
 ले, हरख्या काम कुमारजी ॥ श्री गुणसागर निजपद

थाप्यौ, श्री अनीरुद्ध कुमारजी ॥ बो० ॥ २७ ॥

दुहा ॥ उच्चव मांडयो अतिघणो, संजमनो मंडाण
॥ धन विलसे मन मोकले, साजन मिल्यां सुजाण ॥१॥
जूपतने जूपतिनी सुता, मीत्रोने परीवार ॥ संजम ले
वा चालियो, श्री परजून कुमार ॥ २ ॥

ढाल १६३ मी ॥ दधीसुत विनतडी सुणजो ॥ ए
देशी ॥ संजम लेवा संचरीयो, समतारससुं चित ज
रीयो ॥ प्रजु परीवारे परवरीयो हो ॥ सं० ॥ १ ॥ हा
थी उपर आरोहे, सीर ठत्र महा मन मोहे ॥ चामरकी
सोचा सोहे हो ॥ सं० ॥ २ ॥ तव वाजा वाजे वारु,
तव नाचे पात्र उदारु ॥ तव दीजे दान अपारु हो ॥
सं० ॥ ३ ॥ हरी हलधर साथे आवे, लोकानो पार
नवि पावे ॥ पुरमांहि होइ सिधावे हो ॥ सं० ॥ ४ ॥
माधवजी सरीखो तातो, रुखमणीजी सरीखि मातो ॥
एह अचंजानि वातो हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ आपणपे
तो प्रजुताइ, ए सवि वाते वडाइ ॥ वांडी जे ए ठकु
राइ हो ॥ सं० ॥ ६ ॥ चिवी बिबी अति वूढी, सा
चि पति तणी तो कूढी ॥ न तजाइ मनकि गूढी
हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ खेचरनी धरती सांधी, जूच
रनी प्रजुता लाधी प्रजु चाहे सीव आराधी हो ॥
॥ सं० ॥ ८ ॥ एम सुणंता आया, जिनराज समीपे
सोहाया ॥ तव श्री मुखे संजम पाया हो ॥ सं० ॥
९ ॥ सांव कुमर वर वैरागी, व्रत साथे महा लय

लागी ॥ ए मदनतणी परे त्यागी हो ॥ सं० ॥ १० ॥
 अंतेउर ए विधि किजे, पिड साथे संजम लिजे, राजे
 मती पासे रहींजे हो ॥ सं० ॥ ११ ॥ जानु कुमरे पि
 ण लिधो, चारीत्र साथे चित्त दिधो ॥ तिनो पिण का
 रज सिधो हो ॥ सं० ॥ १२ ॥ रुखमणी आदे पट
 नारी, ए आठे सुविचारी ॥ चारीत्र लिधो सुख
 कारी हो ॥ सं० ॥ १३ ॥ मदन महा मनिराया, प
 रमारथसुं चित्त लाया ॥ ए साध सकलहि सुखदाया
 हो ॥ सं० ॥ १४ ॥ त्रेसठ अने सोमी ढाले, मुनी चोखुं
 चारीत्र पाले, गुणसागर कुल उजय्याले हो ॥ सं० ॥ १५ ॥

दुहा ॥ हरी हलधर जिनने नमी, आंसु ढाले अ
 पार ॥ मन मेली कुंवर कन्हे, घर आया तेहिवार ॥
 ॥ १ ॥ मेहेल मांदि नवि सुंदरी, सजा मांदि सुकुमा
 रा ॥ अणदेख्या हरी जाणीयो, सुनो सहु संसार ॥ २ ॥

ढाल १६४ ॥ मी राम रसे राची घणुं ॥ ए देशी
 ॥ श्री हरीजी आलंगे नहि, ते वात न जाइ कहि हो
 ॥ श्री० ॥ १ ॥ रोम रोमसम राचियो, रुखमणी केरो
 राग हो ॥ खांचि काव्यो दुःखाहि, नहि उपधनो लाग
 हो ॥ श्री० ॥ २ ॥ सूना मंदीर मालिया, सूनी घर
 पटसाल हो ॥ सूनी सेज डरामणी, विण रुखमणी सु
 कुमाल हो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ खाट हिंचोले हिंचता, ह
 रीनो हियो नराय हो ॥ उंचो नीचो देखाहि, पतिव्रता
 नहि पाय हो ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जोजन तो जावे नहि,

नहीं पाणी प्यास हो ॥ आख्या न लागे सोवतां ॥
 लांबा लिए निसास हो ॥ श्री० ॥ ५ ॥ जो कदाचि
 त दैवथी, पलक मिलंति जोय हो ॥ सुपने रुखमणी
 सुं खरी, वात करे हरि सोय हो ॥ श्री० ॥ ६ ॥ जा
 ग्याथी कांड नहीं, अरतिवंत मुरार हो ॥ आव्य नि
 रासी निद्रडी, फीरी ज्युं देखुं नार हो ॥ श्री० ॥ ७ ॥
 उठत बेसत चालता, सहस रुखमणी होय हो ॥ आ
 ख्या आंगे रुखमणी, सुख पामे अवलोय हो ॥ श्री०
 ॥ ८ ॥ आसन शयन विलोकतां, वेदन तो असमा
 न हो ॥ साजनिया साले नहि, साले ए अहि ठाण हो
 ॥ श्री० ॥ ९ ॥ अवरं पासेवे नहीं, रुखमणीको सु
 विलास हो ॥ आंवलिया नवि पुगहिं, आंबा केरी आ
 स हो ॥ श्री० ॥ १० ॥ सिता विगेहो रामजी, नय
 ण श्रावण मेह हो ॥ ऊडमंडी वरसे सही, नारी नी
 रोपम नेह हो ॥ श्री० ॥ ११ ॥ हुं कुण तुं कुण इम
 कही, लखमणजीसुं राम हो ॥ जूरी जूरी पंजर हुवा,
 मुद्रा कंकण नाम हो ॥ श्री० ॥ १२ ॥ अवरं साथें
 न एहवो, जेहवो त्रीयसुं चाव हो ॥ मेलावा निकोप
 री, वैद कियो उपाव हो ॥ श्री० ॥ १३ ॥ रुप नहि
 कांड एहवो, कला एहवि नांहि हो ॥ मटका मोटा मो
 हवा, नारी न अवरं मांहि हो ॥ श्री० ॥ १४ ॥ आ
 क्कर चारु रुखमणी, हीए वसी हरी राय हो ॥ वासर
 लो निठे नहि, रयणी ठमासी थाय हो ॥ श्री० ॥ १५ ॥

मदन कुपरनि मूरति, जोवतां जग मांहि हो ॥ सारी
 खी अणदेखवे, पुरुपोत्तम दुःख प्राहि हो ॥ श्री० ॥
 ॥ १६ ॥ हेलविया हीरा तणां, फरके फरके हाथ हो
 ॥ रुखमणी रुखमणी मदनने, संजारे जगनाथ हो ॥
 श्री० ॥ १७ ॥ चोसठने सोमी ढालमे, उलंजो अधी
 कार हो ॥ श्री गुणसागर वखाणीयो, प्रेम परम रस
 सार हो ॥ श्री० ॥ १८ ॥

दुहा ॥ साव अने परजुनने, अधीको धर्म सनेह
 ॥ तप जप किजे एकठा, सोखीजे निज देह ॥ १ ॥
 चारित्र पाले नीरमलो, ते मोटो मुनिराय ॥ सुमति गु
 पति खप करे, जीती विपय कपाय ॥ २ ॥ एपणा सु
 ध आहारनि, करे गवेखणा शुद्ध ॥ सुद्धाचारी साधु
 नो, मारग ए अविरुध ॥ ३ ॥ सतात्रासे, गुण धरे,
 साधुतणा सुखकार ॥ मुनिवर महियल संचरे, ने
 मिनाथनि लार ॥ ४ ॥

ढाल १६५मी ॥ प्रणमी सहगुरु पाय, गुणरे गासुं रा
 जेमति सतीजी ॥ ए देशी ॥ सांव परजुन मुणिंद, चारीत्र पा
 ले निरमलोजी ॥ प्रणमे पाय नरिंद, आराधे मार्ग जलोजी
 ॥ १ ॥ जंगम थावर जीव, आप समानां राखिएजी ॥
 जाणी दोष अपार, मृपा जाख न जांखीएजी ॥ २ ॥
 स्वामी जीव जिनदेव, गुरु अदत्ता न आदरेजी ॥
 वाडी विसुध विशेष, सुधो सीयल समाचरेजी ॥ ३ ॥
 अंतर बाहिर नेद, परीग्रह सह परीहरेजी ॥ रात्री

जोजन त्याग, पट काया रक्षा करेजी ॥ ४ ॥ जित्या
 विषय विकार, पाच इंद्रिणा पांडूवाजी ॥ निरलोनी
 अणगार, आतमराम रमाडवाजी ॥ ५ ॥ आणी ह्
 मा गुण सार, पडीलेहण नल चावशुंजी ॥ करण वि
 सुध विहार, चतुर महा चित चावशुंजी ॥ ६ ॥ सं
 जम सुध विसुध, मन वचन काय करी जिएजी ॥
 शिता दिक्कनी पिड, विविध प्रकारे सही जीएजी ॥
 ॥ ७ ॥ मरणांतिक उपसर्ग, आया अहिया सिजीए
 जी ॥ आदि थकी ए टेक, पाठा पावन दिजीएजी ॥
 ॥ ८ ॥ साधु गुणे शिरदार, दुःकर तप करणी करेजी
 ॥ पामी लबधी अपार, सुर थडने संचरेजी ॥ ९ ॥
 एकांतरथी मांडी, मामा आया उल्हशीजी ॥ उत्कृ
 ष्टा तप क्रिध, कंचन जिम काया कशीजी ॥ १० ॥
 पंच विगयनो त्याग, अरस विरस अन लिजीएजी ॥
 समता साथे सनेह, कदही क्रोध न किजीएजी ॥ ११ ॥
 वर्षा काल विशेष, तरु मूले वासो रहेजी ॥ डांस मसा
 शुं द्वेष, नाणे निश्चलता रहेजी ॥ १२ ॥ शियाले अ
 ति थांडे काया थर हरेजी ॥ शितल वाजे वाय, बाए
 शिलक विस्तरेजी ॥ १३ ॥ ग्रीपमकाले जोय, लूंतावड
 वाजे आकरीजी ॥ गिरी शिर धरीयो ध्यान, तदा शी
 लावे अनुसरीजी ॥ १४ ॥ सुता कुसमरी सैज, इहां
 कांकरामें संधरीएजी ॥ चालंता चढी गजराज, इहां
 अणवाणे पाज धारीएजी ॥ १५ ॥ करतां सोल शिण

गार, इहा उडण जिण पढेवडीजी ॥ चुवा चंदन वा
 स, इहां मलमु मैली देहडीजी ॥ १६ ॥ पाडे था जग
 त्रास, इहां सांती होइ चाले खराजी ॥ आलस नही
 लिगार, साधु किरियासुं सादराजी ॥ १७ ॥ परीसा
 सहे बावीस, सूरपणाथी जितीयाजी ॥ हिंसादिक अढा
 र, पाप सहु अलगा कियाजी ॥ १८ ॥ तेज तपत
 दिनकार ॥ चंद जिम चढती कलाजी ॥ सायर जेम
 गंचीर, गुण आचारे आगलाजी ॥ १९ ॥ पढीया
 द्वादश अंग, जवीक नरां प्रति वुजवेजी ॥ जावे जाव
 ना वार, आपे आपो सुजवेजी ॥ २० ॥ आया गढ
 गिरनार, कर्म सबल दल नाशीयोजी ॥ पाम्या केव
 ल ज्ञान, लोकालोक प्रकाशीयोजी ॥ २१ ॥ च्यार
 प्रकारां देव, खेचर चूचर आवीयाजी ॥ जादव जाद
 वराय, मुनी दरशण सुख पावीयाजी ॥ २२ ॥ करि
 केवल उठाह, ऋषीमुख देशनां सांचलेजी ॥ जीवा
 जीव विचार, संशय नव नवनां टलेजी ॥ २३ ॥ मा
 लव देशे स्वामि, साथे सहसुं चालीयाजी ॥ निस्ता
 रया बहु लोक, पाप परा नवना टालीयाजी ॥ २४ ॥
 पांसठ सोमी ए ढाल, वैरागी सुखीया सहुजी ॥ पच
 णे श्री गुणसूरि, रागी दुःख पावे बहुजी ॥ २५ ॥

दुहा ॥ द्वारापतीनो द्वेषीयो, ते द्वीपायण देव ॥
 तप बले पोहची नवीशके, पिण न तजे अहमेव ॥
 ॥ १ ॥ चावीनो बल आवीयो, काल विनाश जेवारा ॥

॥ लोक पञ्चा परमादमें, रवइछाहार विहार ॥ २ ॥
 ढाल १६६ मी ॥ साहीब बाहु जिणोसर विनवुं ॥
 ॥ ए देशी ॥ तापस बल पाम्यो ते देवता, बलका
 पात अपार हो ॥ हो तापस ॥ किधी वाय विकुर्वणा,
 आणी पुरी मजार हो ॥ १ ॥ तापस वाले नगरी द्वा
 रीकां, द्विपायन अति क्रोध हो ॥ ॥ ता० ॥ रिस व
 से नर आंधलो, नवी पामे प्रतिबोध हो ॥ ता० ॥
 वा० ॥ २ ॥ काष्ठ घणाने तृण घणा, जुहरनो सम
 दाव हो ॥ ता० ॥ आणी मेल्यो एकठो, पामीने प्र
 स्ताव हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ३ ॥ हाहाकार हुवो घणो,
 आरड जेरड नूरहो ॥ ता० ॥ दूर गयां जे मानवी,
 आणी कियां हजुर हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ४ ॥ गढ
 मढ पोल प्रकारशुं, मंदिर महील उदार हो ॥ ता० ॥
 राज जुवन सुविशेषथी, बलता न लागे वार हो ॥
 ता० ॥ वा० ॥ ५ ॥ बाल हत्या ने गौ हत्या, ब्रह्मह
 त्या ने नार हो ॥ ता० ॥ चार हत्या चंडालनी, किधी
 कोडी प्रकार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ६ ॥ पार नही प
 शुपंखीया, पदमनी करे पूकार हो ॥ ता० ॥ अरे अ
 देखा पापीया, करे किसुं कीरतार हो ॥ ता० ॥ वा०
 ॥ ७ ॥ ठोरु गोरु आपणां, ठाती आगे राख हो ॥
 ता० ॥ बलती वाला बलबले, दीन महा अति जांख
 हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ८ ॥ मांही मांही आफले, सहि
 न जाइ जाल हो ॥ ता० ॥ निकलवा पावे नहि, वि

लवे बाल गोपाल हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ९ ॥ नारी
 आखे नाहसुं, सघला साथे तोड हो ॥ ता० ॥ जोर्नी
 थी मुऊथी खरी, अबकां जाउ गेड हो ॥ ता० ॥
 वा० ॥ १० ॥ बालक बलतां विनवे, माताजीसुं एम
 हो ॥ ता० ॥ जठराशीथी राखिया, आज न राखे
 केम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ११ ॥ सेवकसुं स्वामी क
 हे, नित्यहि रेहेतां पास हो ॥ ता० ॥ ताप न देता
 लागवा, अबकां जाउ नास हो ॥ ता० ॥ वा० ॥
 ॥१२ ॥ आ रेणीथी आणीयो, आडो घोमो घाली हो
 ॥ ता० ॥ अब मुऊ मूकि जाइजी, कां जाउ मुह ठा
 लि हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १३ ॥ मीत्र मनोहर माह
 रा, मतिसागर तुऊ नाम हो ॥ ता० ॥ एह उपद्रव्य
 जो टले, तो तुऊ नाम सकाम हो ॥ ता० ॥ वा० ॥
 ॥१४ ॥ कंधने देखी कामनी, कामनिया पिए कंधहो
 ॥ ता० ॥ जे जिम था ते तिम बल्यां, अइ अइ ज
 गवंत हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १५ ॥ बहोत्तरकुल बहोत्तर
 कोडीनो, नगरी मांहि निवास हो ॥ ता० ॥ साठि कहि
 पुरबाहिरी, ए सहु लह्यो विनास हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १६ ॥

ढाल उदय रतनजी कृत ॥ नगरी बलति देखिने
 रे, घणु हुवा दिलगीर ॥ हियडु लाग्युं फाटवारे चाइ,
 नयणे बटुट निररे ॥ बाधव एम बोले ॥ १ ॥ बंधव
 बेहुं तिहा मिलारे, बात करे करुणा ए ॥ दुःख साले
 द्वारकां तणुरे चाइ, कथ्युं कांइ न जायरे ॥ सा० ॥ २ ॥

किहा द्वारकांनि साहिबीरे, कीहा गजदलनो ठाठ ॥
 साजन भिलावो किहां गयोरे जाइ, खिणमें हुवां घन
 घाटरे ॥ मा० ॥ ३ ॥ माधव कहे सुणो बंधवारे, जा
 ग्यां पूर्वलां पाप ॥ अग्नी चउदसें परजलीरे जाइ, का
 ठो मायने बापरे ॥ मा० ॥ ४ ॥ मातपिता कहे सुणो
 टावरारे, न फिरे नेमनी वाण ॥ नूए संथारो आद
 रोरे, तजी अन्नने पानरे ॥ मा० ॥ ५ ॥ रथ जोडी री
 खन आणीनेरे, लागी चौदिसे लाह ॥ आपण बहुज
 ण ताणीएरे जाइ, बलद लेवा कुण जायरे ॥ मा० ॥
 ॥ ६ ॥ रथे जुता बे बंधवारे, अग्नी विचे पाडी घाट
 ॥ देवतातो कौप्यो सहिरे जाइ, तुटीने पडीयो माट
 रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ रथ घोमाने वेलु बलेरे, बले बे
 तालीस लाख ॥ अडतालिस क्रोड पाला बलेरे जाइ,
 खिणमांहि होइ गइ खाखरे ॥ मा० ॥ ८ ॥ हरी जांखे
 बलदेवनेरे, धिग धिग जीवत मोय ॥ नगरी बले सु
 ऊ देखतारे, मारो जोर न चाले कोयरे ॥ मा० ॥ ९ ॥
 बलती नगरी देखीनेरे, हुं राखि न सकुं एम ॥ इंद्र
 धनुष्य अमे धारीयोरे जाइ, ते बल जांगो केमरे ॥ मा०
 ॥ १० ॥ जेणी दिसे आपणे जोवतारे, सेवक सेहेस अ
 नेक ॥ हाथ जोडी रहेतां खनारे जाइ, आज न दी
 से एकरे ॥ मा० ॥ ११ ॥ वादल विज तणी परेरे, ऋ
 द्वि बिल्लाई सोय ॥ एणी वेलासां आपणारे, सगो न दी
 मा० ॥ १२ ॥ मोटा मोटा राजवीरे, सरणे

रहेतां आय ॥ जलटो सरणो तार्कीयोरे जाइ, वेरण
 वेला पायरे ॥ मा० ॥ १३ ॥ हरी जांखे बलदेवनेरे,
 सांजलो बंधव वात ॥ धरति आपणसुं फिर गइरे जा
 इ, कोइ दुसमनने वतायरे ॥ मा० ॥ १४ ॥ माधव व
 चन सांजलीरे, हलधर बोले एम ॥ पांडव फिरी कुंता
 तणारे जाइ, चालो तेने गामरे ॥ मा० ॥ १५ ॥

ढाल तेहिज मूलगी ॥ हरी माताने रोहिणी, श्री
 वसुदेव तिवार हो ॥ ता० ॥ अणसणने वले पामीयो,
 देव तणो अवतार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ १७ ॥ सो
 ल सहस हरीनी त्रीया, अणसण वले सुर लोक हो
 ॥ ता० ॥ पोहाति यादवनी त्रिया, अवर अनेरो जो
 य हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ १८ ॥ नेमिनाथनो शीष्यवं, कर
 तो एन पूकार हो ॥ ता० ॥ नंदन श्री वासुदेवनो,
 देवालियो उबार हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ १९ ॥ श्री हरी हलधर
 निकल्या, उजा वाहिर जाय हो ॥ ता० ॥ बलती दे
 खी द्वारिकां, दुख हिए न समाय हो ॥ ता० ॥ बा०
 ॥ २० ॥ हलधर श्री हरीसुं कहे, आपा अलगी वात
 हो ॥ ता० ॥ नगरी अवर वसावसां, सांजल सुंदर
 भ्रात हो ॥ ता० ॥ बा० ॥ २१ ॥ सगो सगानी ज
 रु अठे, सगो सगा आधार हो ॥ ता० ॥ प्रजुजी पां
 डव संजारीया, आपदने अधीकार हो ॥ ता० ॥ बा०
 ॥ २२ ॥ पांडु मथुरांने चल्यां, केवल बंधव दोय हो
 ॥ ता० ॥ पाणीहि पावा जणी, साथ न त्रिजो कोय

हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २३ ॥ न हय न गय बाहरी
 पाला पुलाया सोइ हो ॥ ता० ॥ अंतर नयणे नी
 खज्यो, दिन पलटे इम होइ हो ॥ ता० ॥ वा०
 ॥ २४ ॥ गर्व मतकरजो लठिनो, कोइ एक लिगार हो
 ॥ ता० ॥ जो न हुइ नीज कंतनी, बिजा कवण विचा
 हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २५ ॥ लठि आवती जालि, ज
 तां जाय विगोय हो ॥ ता० ॥ एतो पडवो आशनो
 द्वारामति पति जोय हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २६ ॥ पि
 टरे लठी कुलदुणी, बटकी देखायो वेह हो ॥ ता०
 ॥ दैव कराव्यो हरी कियो, निगुणी सरसो नेह हो ॥
 ता० ॥ वा० ॥ २७ ॥ निजबल परबल पाधरो, दिन
 पाधरो जेवार हो ॥ ता० ॥ दिन वांके वांकु स
 हु, घणुं किस्सुं वितार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ २८ ॥ हरी
 हलधर तनु बल घणो, सुर बलनो नवी पार हो ॥ ता०
 ॥ एकही आडो नावीयो, मेटण व्यास विकार हो
 ॥ ता० ॥ वा० ॥ २९ ॥ पट मासा लगी द्वारीकां, व
 ली बुजाणी जाण हो ॥ ता० ॥ सायर जल विंटी
 वल्यो, परबले परीमाण हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ३० ॥
 बासठ सौमी ढालमें लठि न चाले लार हो ॥ ता० ॥ श्री गु
 णसागर सूरिजी, पुण्य वमो संसार हो ॥ ता० ॥ वा० ॥ ३१ ॥

दुहा ॥ कर्म इद्र विगोइयो, कर्म चंद्र कलंक ॥ क
 र्में मोटा राजवी, वनमें चम्या निशंक ॥ १ ॥ सतव
 र्ति आदे सति, कर्म करी सद्गोश ॥ कर्मागल नवि बु

टिया, हरी हर ब्रह्मा सरोस ॥ २ ॥

ढाल १६७ मी ॥ साहाविदेह खेत्र सुहामणो ॥ ए देशी ॥ की
धाकर्मन वृष्टिए, राय रंक सम जाय लालरे ॥ हरी हलधर
दोइ चालिया, पांडव मथुरां जाय लालरे ॥ कि० ॥

॥ १ ॥ हस्ती कल्पनामे सहि, आयो पुर अजीराम
॥ ला० ॥ दोइ बंधव तिहां वागमें, तरु तले ले विस
राम ॥ ला० ॥ कि० ॥ २ ॥ साजन जन लोगां तणो,

हरीने बहुलो दुःख ॥ ला० ॥ एताहिमे आकरि, आ
वी लागी चूख ॥ ला० ॥ कि० ॥ ३ ॥ चुंडी चूख अ
चागणी, वाल्हा खाए तारुं नाम ॥ ला० ॥ आप ज

णावण आकति, न गणे ठाम कुठांम ॥ ला० ॥ कि०
॥ ४ ॥ हलधरसु हरजी कहे, ए वैरीनो वासा ॥ ला० ॥
नृपटे दंत डरामणो, मति आणो विसवास ॥ ला०

॥ कि० ॥ ५ ॥ ल्यो मुऊ करनी मुंद्रडी, वेची सारो
काम ॥ ला० ॥ लावो खावा सुखडी, बाकी लावो दा
स ॥ ला० ॥ कि० ॥ ६ ॥ हलधर पुरी माहे चलयो,

कंदोइनी पास ॥ ला० ॥ नामांकित सा मुंद्रडी, जोइ
वांचे उल्हास ॥ ला० ॥ कि० ॥ ७ ॥ वात जणावी
रायने, राजा दलबल साज ॥ ला० ॥ घेरी लीधो सां

कडे, नाद कियो बलराज ॥ ला० ॥ कि० ॥ ८ ॥ नाद
सुणी हरी धाइयो, मारे लात किमारु ॥ ला० ॥
उडीने अलगां पढ्या, आणी जिती राड ॥ ला० ॥ कि० ॥

॥ ९ ॥ रांग नली पिण खोखरी, तो पिण हांडी योग

॥ ला० ॥ राजा धशी पगे लागीयो, पगे लाग्या सहु लोग
 ॥ ला० ॥ कि० ॥ १० ॥ पुनरपी आया वागमें, हलधर शुं
 नृप स्वामी ॥ ला० ॥ आरोगी ते सुखडी, चाल्या आगे
 ताम ॥ ला० ॥ कि० ॥ ११ ॥ वन कौसवे पोहोंचीया,
 त्रण्या व्यापी अपार ॥ ला० ॥ सुतो हरी तरु ठाय
 डी, पुगी वेला वार ॥ ला० ॥ कि० ॥ १२ ॥ हलध
 र जल लेवा गयो, आयो जरत कुमार ॥ ला० ॥ सो
 बाण तिहां सांधीयो, जांणी हरण तेवार ॥ ला० ॥ कि०
 ॥ १३ ॥ विंधाणो पग बाणशुं, धिग धिग करतो सो
 य ॥ ला० ॥ जरत कुमार हरी आगले, आवी उचो
 होय ॥ ला० ॥ कि० ॥ १४ ॥ हरी जांखे सुण चाइला,
 तुऊने कोइ न दोश ॥ ला० ॥ जारे जा उतावलो, ह
 लधर करशे रोस ॥ ला० ॥ कि० ॥ १५ ॥ सहनाणी
 ने आपीयो, कौस्तुभ रत्न प्रधान ॥ ला० ॥ लेइ चा
 ल्यो एतले, बुढ्या हरीनां प्राण ॥ ला० ॥ कि० ॥ १६ ॥
 गशठ सोमी ढालमें, कृष्ण तणो निरवाण ॥ ला० ॥
 श्री गुणसागर सूरिजी, प्रवचन वचन प्रमाण ॥
 लालरे ॥ कि० ॥ १७ ॥

ढाल उदय रत्नजी कृत ॥ गर्व न करजोरे गात्रनो,
 आखर एह असाररे ॥ राखु केहनुरे नही रहे, कर्म
 न फिरे किरताररे ॥ गर्व० ॥ १ ॥ सडण पडण विद्धंसण, जे
 हवो माटीनुं चंडरे ॥ क्षिणमां वाजे ते खाखरुं, ते कि
 म रहे अखंररे ॥ ग० ॥ २ ॥ मोहने पूढीने जे जिमे, पान

खाय चूटी चूटी वींटेरे ॥ ते मोह बंधाणा जाडुए, काग
 डा चरकता वींटेरे ॥ ग० ॥ ३ ॥ मोह मरमने मोजो
 करे, कामनीसु करे गजे केलरे ॥ ते जइ सुए सम
 सानमां, मोह ममताने भेलरे ॥ ग० ॥ ४ ॥ हस हस
 बोलता हेजमां, नरनारी लाख कोडिरे ॥ ते जइ सुए
 मसाणमां, धनकण कंचन ठोडिरे ॥ ग० ॥ ५ ॥ को
 रु उपाय जो किजीए, तो पिण नवि रहे नेटीरे ॥ स
 जन मिली सह तेहने, करे अगननी जेटीरे ॥ ग० ॥
 ॥ ६ ॥ कृष्ण सरिखो जुठ राजीठ, बलजद्र सरिखो
 जो वीररे ॥ जंगल मांहे जुठ तेहने, ताकी मारजे तीररे ॥
 ग० ॥ ७ ॥ बत्रीस सहस अतेउरी, गोवालीणी सो
 ल हजाररे ॥ तिरसे तरुफे ते त्रीकमो, नही को पाणी
 पानाररे ॥ ग० ॥ ८ ॥ कोरु सिला करे धरी, गिरधारी
 धरयु नासरे ॥ वेठा न थाय ते बले, जुठ कर्मना कामरे
 ॥ ग० ॥ ९ ॥ जन्मतां केणे नवि जाणीठ, मरतां नही
 को रोमाररे ॥ महा अटवी मांहे एकलो, पड्यो करे पू
 काररे ॥ ग० ॥ १० ॥ ठविलो ठत्र धरावतो, फेरवतो
 चारे दिश फोजरे ॥ वनमां वासुदेव जिहां वसा, वसे
 जिहां वनचर रोजरे ॥ ग० ॥ ११ ॥ गजे बेसी जेह
 गाजतां, थती जिहां नगारानी ठोररे ॥ घुअड होला
 तीहां घुघवे, लावज करेठे सोररे ॥ ग० ॥ १२ ॥ ज
 श कुमर तीण जंगल वसे, ते खेलेठे सकाररे ॥ हरी
 पगे पदम ते हेरीठ, मृगनी भ्रांते तेणे ठाररे ॥ ग० ॥

॥ १३ ॥ तीर मारयो तेणे ताणीने, पग तले बल पूरे
 ॥ पग जेदीने ते निसरयो, तीर पड्यो जइ दूररे ॥ ग०
 ॥ १४ ॥ आप बले तव उठी कहे, रे रे हुंतुं कृष्णरे ॥
 बाणे केणे मुऊने विंधीउ, एहवो कोण ठे पापीष्टरे ॥
 ग० ॥ १५ ॥ शब्द ते कृष्णनो सांचली, वृद्ध तले
 जरा कुमाररे, कहे वसुदेव पुत्रवु, रहंतुं आरण्य मजाररे
 ॥ ग० ॥ १६ ॥ कृष्ण रखोपाने कारणे, वरस थया
 मुऊने बाररे ॥ पिणमें न दीठुं कोइ मानवी, आज ल
 गी नीरधाररे ॥ ग० ॥ १७ ॥ दुष्ट कर्म तणे उदे, इ
 हां आव्या तुमे आजरे ॥ मुऊने हत्यारे आपवा, व
 ली लगाडवा लाजरे ॥ ग० ॥ १८ ॥ कृष्ण कहे उरो
 आव वंधवा, जिण कारण तुं सेवेवे वंनरे ॥ ते हुं कृष्ण
 तें मारीउ, न मिटे श्री नेमनां वचनरे ॥ ग० ॥ १९ ॥
 ए निसाणी पांडवाने आपजो, तुं इहांथी जारे वेगरे ॥
 नही तो बलजद्र मारशे, उपजशे उदवेगरे ॥ ग० ॥
 ॥ २० ॥ आ समे किम जाउ वेगलो, जोरे मोकलेठे
 मराररे ॥ फिरी पाठो जोतो थको, वरसतो आंमु जलधा
 ररे ॥ ग० ॥ २१ ॥ दृष्टि अगोचर ते थयो, ए ढाल अ
 ति रसालरे ॥ उदयरत्न कहे एटली थइ, सहको सुण
 जो उजमालरे ॥ ग० ॥ २२ ॥

दुहा ॥ जरत कुमर वेगे करी, पांडव मथुरा जाय
 ॥ जल लेइ हरी पाखती, हलधर आयो धाय ॥१॥ उ
 ठो प्रचु पाणी पिवो, देव न बोले जाम ॥ रिसाणो प्र

भु जाणीयो, हलधर बोले ताम ॥ २ ॥

ढाल १६८ मी ॥ गुरांजी थें मुने गोडे न राख्यो
 ॥ ए देशी ॥ उठो प्रभुजी पिवो पाणी, अणमिलतां ए
 ती वार लगाणी ॥ तुं मुऊ वंधव प्राण पियारो, जाइ
 जी मानो बोल हमारो ॥ उ० ॥ १ ॥ हुंतो शेवक आ
 दि तुमारो, गोकुलमां तुं फिरत कुमारो ॥ ते दिनथी
 तुं प्रितम प्यारो, हुं न रह तुमथी खिण न्यारो ॥ उ०
 ॥ २ ॥ पूर्व जवंतर नेह घणेशो, गंगदत्तने ललीतांग
 नलेरो ॥ चारीत्र पाली देव विमानी, पुनरपी आप
 ण प्रित थपाणी ॥ उ० ॥ ३ ॥ एतितो प्रभु कदही न की
 धी, हम तुम्ह एकला सप्रसिधी ॥ वासर जाणी आ
 ज अपूठो, कहेरे वंधव तुं पिण रूठो ॥ उ० ॥ ४ ॥ दुः
 ख जरी आंख्या आंसु ढाले, उंचो निचो खरोही नि
 हाले ॥ कोइ नही जे रीतो राखे, रान रोज मिली ए
 ही साखे ॥ उ० ॥ ५ ॥ खांधे धरी चाल्या बलदेवा,
 पटमास लगी करतां सेवा ॥ सुर द्रष्टांत अनेक वतावी,
 दाघ दियो हलधर समजावी ॥ उ० ॥ ६ ॥ चारण ऋ
 पि समजावा आयो, जिननो प्रेरयो बली मन जायो ॥
 संजस लेइ पाले निरतो, विपय कपाय शकी मन वि
 रतो ॥ उ० ॥ ७ ॥ रुखमणी आदि आठे देखि, इग्या
 रे अंग पढी सुविशेखी ॥ वरस विस व्रत पाली सारी,
 मास सलेखणां मोक्ष सिधारी ॥ उ० ॥ ८ ॥ संव अ
 ने परजुंन मुनिसां, चारीत्र पाली सोल वरीसा ॥ ३

त्रुंजे संधारो साधी, मोटा मोटी पदवी लाधी ॥ उ० ॥

॥ ९ ॥ सार्द्धं त्रिकोटी कुमर काहियां, मदन सामिनेसा
थे लहिया ॥ ते सघलाए शिव गती पांमी, नाथ नि
रंजन अंतरजामी ॥ उ० ॥ १० ॥ अनीक्यसादिक

ते पट बंधु, क्रियावंत महा गुणसिंधु ॥ विमल पणे
विमलाचल आवी, अमल विमल गति उत्तम पावि ॥

उ० ॥ ११ ॥ जादवने जादवनी नारी, मोह गया व
हु कर्म निवारी ॥ नामसुं गीत सदा सुखदाइ, त्रिवि

धि त्रिकाल नभुं चितलाइ ॥ उ० ॥ १२ ॥ अडसठ
अने सोमी ढाले, श्रीवलदेव महा व्रत पाले ॥ श्रीगुणसा

गर सूरि सोहावे, हर्ष धरी ऋषीनां गुणगावे ॥ उ० ॥ १३ ॥
दुहा ॥ श्रीवलदेव महा मुनी, द्विविध शिष्य संयूत

॥ पंडित राज शिरोमणी, समदम गुण संपूत ॥ १ ॥
तुंगीया गिरी शिखरे, ध्यान तपो अधिकार ॥ चिह्ना ले

वा पुरी जणी, आवे श्री अणगार ॥ २ ॥
ढाल १६९ मी ॥ जुमखमानी देशी ॥ चिह्ना ले

वा पुर जणी हो, आवे श्रीअणगार ॥ रुडा साधु नभुं
॥ इर्या मारग सोधतां हो, गयवरनी गति सार ॥ रु

डा साधु नभुं ॥ १ ॥ कुवा कांठे कामनी हो, सात पां
चनी जोड ॥ रु० ॥ काढे पाणी हेजशुं हो, खांचे हो

डा होड ॥ रु० ॥ २ ॥ रुपे मोही चामनीहो, गाफील
थइ ते वार ॥ रु० ॥ फांसो देइ सुतने गले हो, नल

हे शुद्धि लिगार ॥ रु० ॥ ३ ॥ श्री ऋषीजी चित चित

वे हो, रूप नहि ए फंद ॥ रु० ॥ माननिया मत मो
 हनि हो, पाठा फिर्यारे मुणिंद ॥ रु० ॥ ४ ॥ एको
 गहिल गिमारडी हो, राचे रूप रसाल ॥ रु० ॥ सब
 कीधी सुंदर नारिना हो, होसे कवण हवाल ॥ रु० ॥
 ॥ ५ ॥ चंद समावे तापने हो, ए जग प्रगटी रीत ॥
 रु० ॥ लहे ताप जग चंदथी हो, एतो अति विपरीत
 ॥ रु० ॥ ६ ॥ सूर कह्यो उद्योतमे हो, जोरे करे अं
 धार ॥ रु० ॥ सूर नहि ए साचलो हो, राहु तपो अ
 वतार ॥ रु० ॥ ७ ॥ नाव करीठे निरमे हो, जावण
 पेले पार ॥ रु० ॥ जो बोले जलधारमे हो, तो कुण
 राखणहार ॥ रु० ॥ ८ ॥ अजरामर कारी कह्यो हो,
 आठा अमृत पान ॥ रु० ॥ कुण वडतण वाधवो हो,
 करता जगनो जान ॥ रु० ॥ ९ ॥ दिठे दरिशाण सा
 धुने हो, संजम गुणनो पोख ॥ रु० ॥ जोरे असंजम उ
 पजे हो, तो ए मोठो दोष ॥ रु० ॥ १० ॥ जाणी ला
 च विशेषथी हो, साह करे व्यापार ॥ रु० ॥ तोटे जे
 विरचे नहि हो, पावे नाम गिमार ॥ रु० ॥ ११ ॥
 आज पठी वस्ती विशेष हो, मे नावेवो एह ॥ रु० ॥
 किधो निश्चे आकरो हो, जंगल साथे नेह ॥ रु० ॥ १२ ॥
 ॥ दुःखर तप करणी करे हो, समतारुपी होइ ॥ रु०
 ॥ वनमांहि आहारानि हो, करे गवेषणा सोइ ॥ रु० ॥
 ॥ १३ ॥ मास खमण करतां जला हो, साठि महा सुख
 कार ॥ रु० ॥ पांच खमण पण एटला हो, चार चोना

सी सार ॥ रु० ॥ १४ ॥ पुठि अपुठि राखके हो, वे
 से ध्यान अनूप ॥ रु० ॥ मतिको देखे खेचरी हो, मो
 हे माहरे रूप ॥ रु० ॥ १५ ॥ अमृतवाणी वीशेपथी
 हो, विधीसुं दीए उपदेस ॥ रु० ॥ बाघ सिंघ प्रतिबो
 धीया हो, हीसा तजेरे असेस ॥ रु० ॥ १६ ॥ हरिण
 एक हख्यो खरो हो, सेवा करे सुजाण ॥ रु० ॥ साथे
 फिरे जिम चेलणा हो, पाम्यो पुण्य प्रमाण ॥ रु० ॥
 ॥ १७ ॥ एक दिवस रथ कारने हो, जाणी चोजन यो
 गा ॥ रु० ॥ साधु पधारया वोहोरवा हो, मिलीयो गृन्
 सजोग ॥ रु० ॥ १८ ॥ वोहोरावे रथकारजी हो, वो
 होरे श्री ऋषीराया ॥ रु० ॥ जावना चावे हरिणलो हो,
 घनी पोहोति आय ॥ रु० ॥ १९ ॥ तुटि शाखा तरु
 ताणे हो, चंपाणा ते तिन ॥ रु० ॥ स्वर्ग पंचमें देव
 ता हो, सुर सुखमें लयलिन ॥ रु० ॥ २० ॥ ए गुण
 तरसोमी ढालमे हो, राम ऋषी निरवाण ॥ रु० ॥ श्री
 गुणसागर सूरिजी हो, किजे संघ कल्याण ॥ रु० ॥ २१ ॥
 दुहा ॥ राम ऋषी सुरगति लहि, तपतणे परकार
 ॥ दान गुणे रथकारजी, मृगलो वडो विचार ॥ १ ॥
 ढाल १७० मी ॥ आजतो आपंद वधामणा, दि
 ठा ऋपन्न जिणंद ॥ ए देशी ॥ साधु कहे नवि सांनलो,
 एहनो एह विचार ॥ दान सीयल तपने विषे, जावन
 जो अधीकार ॥ १ ॥ जगमें मोठी ज्ञानो जावो हृद
 य मजार ॥ जाव थकी

२ ॥ ज० ॥ २ ॥ लुण विना जिम रसवती, चोजन वि
 ण तंबोला ॥ दान विना कमला जिती, साच विना नि
 म बोल ॥ ज० ॥ ३ ॥ कंथ विना जेम कामनी, सील
 विना सिणगार, पुत्र विना घर आंगणो ॥ राय विना द
 रवार ॥ ज० ॥ ४ ॥ करणी तिम वड चावनां, न लहे
 लोच लिंगार ॥ चार थकी चारे धडो, चाव वसो संसा
 र ॥ ज० ॥ ५ ॥ दांन नाम धनथी हुवे, सिल रोकेवो
 चित्त ॥ तप करी काया सोखवि, चावे न लागे वित्त ॥
 ज० ॥ ६ ॥ श्रीं मरुदेवा स्वांमिनी, आदिनाथनी मा
 त ॥ चाव वले नवजल तरी, ए प्रगट्यो अवदात ॥
 ज० ॥ ७ ॥ श्रीं नरते सर चावनां, चावे ते केवल लाध ॥
 तिमही आठ पटोधरां, चावन जोर अगाध ॥ ज० ॥
 ८ ॥ पुत्र एलाची जोइ ज्यो, किण विध सारथा का
 ज ॥ एम द्रष्टांत अनेकजी, परतद्ध दिसे आज ॥
 जि० ॥ ९ ॥ दूध जीमण जिम चावना, कांजी क्षूद्र प्रणाम
 ॥ चावनावे नव नासनी, लाच घणो विण दाम ॥ ज०
 ॥ १० ॥ सत्तर सोमी ढालमें, चाव कियो शिरदार ॥ श्रीं
 गुणसागर न्यायए, हरिण लह्यो पद सार ॥ ज० ॥ ११ ॥
 दुहा ॥ जरत कुमर जाइ कह्यो, चुवा चाइयां
 साथ ॥ विद्धंसण द्वारामति, काल कियो जगनाथ ॥
 ॥ १ ॥ ए आचरण हरी कंठनो, आप्योणे धरी नेह ॥
 चुवाजी हिवे आजथी, आस मत करसो एह ॥ २ ॥
 ढाल १७१ मी ॥ चाग्य प्रबल नृप चंदनोरे ॥ ए

देशी ॥ कुंति कालिज कापीयोरे, धरणी पडी ततकाल
 रे माय ॥ दुःख जरती अति रोवतिरे, विलवे सा अस
 रालरे माय ॥ कुं० ॥ १ ॥ हाहा ए स्यु निपनुरे, अण
 चितव्युं वली आमरे माय ॥ जाइ नामे घणु पामतारे,
 शितलता अजिरामरे माय ॥ कुं० ॥ २ ॥ हरी हलध
 रनी सुरतिरे, मुरती अवर न कोयरे माय ॥ मरदाना
 मरदां सिरेरे, एह अवस्था होयरे माय ॥ कुं० ॥ ३ ॥
 इंद्रपुरी द्वारामतिरे, सघलाही जगनो साररे माय ॥
 कनक मय सुर निरमइरे, जली वली हुइ ठाररे माय
 ॥ कुं० ॥ ४ ॥ गुण संजारो एहनारे, निरमल गंगा
 नीररे माय ॥ हरुकुंदण लागी हिणरे, नयणे चाल्यां
 निररे माय ॥ कुं० ॥ ५ ॥ परउपगार शिरोमणीरे, हा
 बंधव हा आतरे माय ॥ वहीला आवो वालहारे, कर
 वा मोसुं वातरे माय ॥ कुं० ॥ ६ ॥ हियडा हिवे तुं स्युं
 रह्योरे, गयो ते तुऊ आधाररे माय ॥ जाइ माधव मि
 लरये क्यारे, निडनो नंजण हाररे माय ॥ कुं० ॥ ७ ॥
 द्राजा डाय्या पापीयारे, तापस थारी वाटरे माय ॥ पर
 ज्यो मारे कोसणरे, उपायो उचाटरे माय ॥ कुं० ॥
 ॥ ८ ॥ उग्यो आडंबर घणरे, आथमता नही वाररे
 माय ॥ सूर सरीखो जाद्वारे, होइ गयो चक्रहाररे मा
 य ॥ कुं० ॥ ९ ॥ साजनीयां साले घणरे, संजारघा
 सो वाररे माय ॥ जेविण घडी नवी चालतरे

मजावणीरे, माता साथ करंतरे माय ॥ उपज्यो ते वि
 एसे सहीरे, एम कहे अरिहतरे माय ॥ कुं० ॥ ११॥
 इंद्र चंद्र नर देवतारे, जिण चक्री गणधाररे माय ॥
 जम आगल नवी ठुटीयारे, अवरं किस्यो विचाररे
 माय ॥ कुं० ॥ १२ ॥ चाल्या ते चाली गयारे, नही
 ते चालण हाररे माय ॥ समजी न करे आपणीरे, सा
 चो सोड गिमाररे माय ॥ कुं० ॥ १३ ॥ चावनचावी
 आपणीरे, पथी पंथ पुलायरे माय ॥ तिम आगल कि
 रतारनेरे, रंच न रहेणो जायरे माय ॥ कुं० ॥ १४ ॥
 ए उपदेश विशेषथीरे, माताजी सुसता थायरे माय ॥
 धरम करेवा कारणेरे, खिण लाखेणी जायरे माय ॥ कुं०
 ॥ १५ ॥ एकोत्तर सोमी ढालमेरे, धर्म नंदना बोलरे
 माय ॥ श्री गुणसागर सूरिजीरे, अमीय समा निर
 मोलरे माय ॥ कुं० ॥ १६ ॥

दुहा ॥ पांडव प्रचु मन चिंतवे, साधु योग जो था
 य ॥ तो तो कारज सारीए, ज्ञान बले जिनराय ॥ १ ॥
 धर्मघोष सुनिश्वरु, पांच सग्या परीवार ॥ पांडव मथु
 रां आवीया, सर्व जीवा हितकार ॥ २ ॥ पांडव ताम
 पधारीया, वंदन श्रीगुरु देव ॥ देशनां सुणे सुहामणी,
 साचवतां अति शैव ॥ ३ ॥

ढाल १७२ मी ॥ हनुमंतो वीर आयो ॥ ए देशी
 ॥ समजो हो तुम्हे नवी प्राणी, ए जगत विणाशि
 जाणी ॥ श्री जिन धर्म आराधो, समताए शिवही सा

धो ॥ स० ॥ १ ॥ त्रिवीध वातां वैरागो, जोग जयंकर
 र नागो ॥ जोगे जुल्या जे जोला, जटके जिम गिरी
 टोला ॥ स० ॥ २ ॥ दिसे कारमी काया, बांधी रही
 अति माया ॥ पहीरण खाण अणूरी, रोग व्यथा करी
 पूरी ॥ स० ॥ ३ ॥ चिहुं गती मांहे नर गाढो, रुल
 ता नवि हुठ थांडो ॥ आज लगी अंत नवी आवे, द
 रसणथी दोलत पावे ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिकर्ण सुध रा
 खीजे, करणी फल चाखीजे ॥ आठ मदनो परीहारो,
 करतां जवनो पारो ॥ स० ॥ ५ ॥ इंद्री जीतेवा काठा,
 इंद्रीयानां फल घाठा ॥ नरक नीगोदमें पमीया, काल
 घणो रडवडीया ॥ स० ॥ ६ ॥ विकथा चारु निवारी,
 पाण्या प्रचुता चारी ॥ विकथा वाही डोकरडी, सघलाए
 जाखे खरडी ॥ स० ॥ ७ ॥ विसन वीलुधा विगुता, हिंसे
 वे एहां हुता ॥ साता साते फरशीजे, तजीया शिव द
 रशीजे ॥ स० ॥ ८ ॥ पाप अठारे परीहरीए, अपज
 सथी अति डरीए ॥ दिन दुःखी उद्धरीए, पुण्ये करी
 घर चरीए ॥ स० ॥ ९ ॥ श्री गुरुया ए वाणी, अ
 मृतपान समाणी ॥ समता केरी सहनाणी, पांडव पां
 चा सोहाणी ॥ स० ॥ १० ॥ बहोत्तरने सोमी ढालें, पा
 डव पाप पखाले ॥ सूरि गुणसागरजी साचो, श्री जि
 नमत हिरो जाचो ॥ स० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ सदगुरु केरी देशनां, दूध सरीखी जाण ॥

घूंट पिथी पांडवा, पूढे जोडी पाण ॥ १ ॥ पूर्वज,

वतरनी वली, चाखो श्री गुरुराज ॥ चवसायरने तार
वा, तुम्ह वरु सफरी जिहाज ॥ २ ॥

ढाल १७३ मी ॥ वीर वखाणी राणि चेलणा
ली ॥ ए देशी ॥ साधु कहे नृप सांचलोजी, पूर्व चवतर
वात ॥ पांचहि तुम परचव तणाजी. धुरथी सुणो अ
वदात ॥ सा० ॥ १ ॥ एक स्थानक वसता हुताजी,
पंच सहोदर सार ॥ करसणनी अजीविकाजी, आप
दनारे जंडार ॥ सा० ॥ २ ॥ सुरतिने सातनुं जा
णीएजी, देवने सुमति सुजाण ॥ नामे सुजद्रक
पांचगोजी, प्रितीतणो मंडाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ श्री
जसोधर गुरु पाखतीजी, लीधो संजम चार ॥ सुमति
गुपति व्रत पालताजी, महियल करेरे विहार ॥ सा० ॥
॥ ४ ॥ तप जप करणि आगलाजी, आगला गुणेरे आ
चार ॥ शास्त्र कला करी आगलाजी, आगला धर्म
विचार ॥ सा० ॥ ५ ॥ सुरति करथो कनकावलिजी,
रतनावलिय विशेष ॥ सातनु सूरी मुगतावलिजी, सुम
ति तणो तप देख ॥ सा० ॥ ६ ॥ सिहानि केडी न
सावव्योजी, आंविल तप वृथमान ॥ साधु संजद्रनो जा
णावोजी, ए तप पंच प्रधान ॥ सा० ॥ ७ ॥ मास स
लेहणा विधी करीजी, स्वर्ग अनुत्तर पाम ॥ ए तुम आ
विने उपनाजी, पंचही पांडव नाम ॥ सा० ॥ ८ ॥
एम सुणि व्रत आदर्याजी, परीक्षतने देइ राज ॥
पंच मुनिसर मोटकाजी, सारे सारे आपणां काज ॥

धो ॥ स० ॥ १ ॥ त्रिवीध वातां वैरागो, जोग जयंकर
 र नागो ॥ जोगे जुल्या जे जोला, जटके जिम गिरी
 टोला ॥ स० ॥ २ ॥ दिसे कारमी काया, बांधी रही
 अति भाया ॥ पहीरण खाण अणारी, रोग व्यथा करी
 पूरी ॥ स० ॥ ३ ॥ चिहुं गती मांहे नर गाढो, रुल
 तां नवि हुव थांढो ॥ आज लगी अंत नवी आवे, द
 रसणथी दोलत पावे ॥ स० ॥ ४ ॥ त्रिकर्ण सुध रा
 खीजे, करणी फल चाखीजे ॥ आठ मदनो परीहारो,
 करतां जवनो पारो ॥ स० ॥ ५ ॥ इंद्री जीतेवा काठा,
 इंद्रीयानां फल घाठा ॥ नरक नीगोदमें पसीया, काल
 घणो रडवडीया ॥ स० ॥ ६ ॥ विकथा चारु निवारी,
 पाख्या प्रचुता चारी ॥ विकथा वाही डोकरडी, सघलाए
 चाखे खरडी ॥ स० ॥ ७ ॥ विसन वीलुधा विगुता, हिंसे
 ठे एहां हुता ॥ साता साते फरशीजे, तजीया शिव द
 रशीजे ॥ स० ॥ ८ ॥ पाप अठारे परीहरीए, अपज
 सथी अति डरीए ॥ दिन दुःखी उद्धरीए, पुण्ये करी
 घर जरीए ॥ स० ॥ ९ ॥ श्री गुरुराया ए वाणी, अ
 मृतपान समाणी ॥ समता केरी सहनाणी, पांडव पां
 चा सोहाणी ॥ स० ॥ १० ॥ बहोत्तरने सोमी ढालें, पं
 डव पाप पखाले ॥ सूरि गुणसागरजी साचो, श्री जि
 नमत हिरो जाचो ॥ स० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ सदगुरु केरी देशनां, दूध सरीखी जाणा ॥
 घंट घंट पिथी पांडवा, पूठे जोडी पाण ॥ १ ॥ पूर्वज

चंतरनी वली, चाखो श्री गुरुराज ॥ चवसायरने तार
वा, तुम्ह वरु सफरी जिहाज ॥ २ ॥

ढाल १७३ मी ॥ वीर वखाणी राणि चेलणा
जी ॥ ए देशी ॥ साधु कहे नृप सांचलोजी, पूर्व चवंतर
वात ॥ पांचहि तुम परचव तणाजी. धुरथी सुणो अ
वदात ॥ सा० ॥ १ ॥ एक स्थानक वसता हुताजी,
पंच सहोदर सार ॥ करसणनी अजीविकाजी, आप
दनारे चंडार ॥ सा० ॥ २ ॥ सुरतिने सातनुं जा
णीएजी, देवने सुमति सुजाण ॥ नामे सुचद्रक
पांचमोजी, त्रितीतणो मंडाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ श्री
जसोधर गुरु पाखतीजी, लीधो संजम चार ॥ सुमति
गुपति व्रत पालताजी, महियल करेरे विहार ॥ सा० ॥
॥ ४ ॥ तप जप करणि आगलाजी, आगला गुणेरे आ
चार ॥ शास्त्र कला करी आगलाजी, आगला धर्म
विचार ॥ सा० ॥ ५ ॥ सुरति करयो कनकावलिजी,
रतनावलिय विशेष ॥ सातनुं सूरी सुगतावलिजी, सुम
ति तणो तप देख ॥ सा० ॥ ६ ॥ सिंहनि केडी न
साचव्योजी, आंविल तप वृधमान ॥ साधु संचद्रनो जा
णावोजी, ए तप पंच प्रधान ॥ सा० ॥ ७ ॥ मास स
लेहणा विधी करीजी, स्वर्ग अनुत्तर पाम ॥ ए तुम आ
विने उपनाजी, पंचही पांडव नाम ॥ सा० ॥ ८ ॥
एम सुणि व्रत आदरयाजी, परीक्षतने देइ राज ॥
पंच मुनिसर मोटकाजी, सारे सारे आपणां काज ॥

सा० ॥ ९ ॥ मात कुंताने द्रोपदिजी, चारीत्र लियो ते
 हीवार ॥ कर्मपखे तिम धर्मनेजी, पद्ध तजी नहि ला
 र ॥ सा० ॥ १० ॥ तिहुत्तर सोमी ए ढालमेजी, पांड
 वनोरे वैराग ॥ श्री गुणसागर साधसेजी, मुनिवर
 मोहनो माग ॥ सा० ॥ ११ ॥

दुहा ॥ जगजीवन जगवञ्जलु, जगपति जग प्रतिपा
 ल ॥ विचरेठे महिमंडले, श्री जिन नेम दयाल ॥ १ ॥
 नेम दयाले देवतां, सौरीपुरी उद्यान ॥ रेवतकाचल म
 स्तके, हार मनाइ जाण ॥ २ ॥ जरासंधना युद्धमें, ज
 रा व्यापना काल ॥ दल शेकी सहु राखियां, नूप अ
 पुठो वाल ॥ ३ ॥ दहनकाले द्वारामति, जो जिन हुतो
 माहि ॥ तो द्विपायन द्वारिकां, बालि न शकतो प्राहि
 ॥ ४ ॥ गुण अनंत जगवंतना, कहिता न आवे अंत
 ॥ गगनवमे गुण आगला, गाढो विद्यावंत ॥ ५ ॥

ढाल १७४ मी ॥ धन धन सीयल सोरोमणी ॥ ए
 देशी ॥ धन धन नेम जिनेसरु, धन धन यादव वंस
 उदारतो ॥ पुरुष रतन जिहां उपना, तेतो त्रीचुवननां
 शीणगरतो ॥ ध० ॥ १ ॥ जीव घणा प्रचु तारीयां,
 तारीतारी राजेमति वर नारतो ॥ पहिले सुगते सोकली,
 जाणो जाणो राखे ठाम समारतो ॥ ध० ॥ २ ॥ प्रिती
 पनोती पालवी, गाढि गाढि हे काठी जगमें जोयतो ॥
 राजुल साथे नेमजी, वेहां वेहे हे निपाहि सोइतो ॥
 ध० ॥ ३ ॥ किहां नर जव किहां सुरजवे, किहांरे मनोहर मु

गति मजारतो ॥ सरसी राखी स्वामीजी, अलगी न
 करी एक लीगारतो ॥ ध० ॥ ४ ॥ आरज देश अ
 नारजे, विचरे हे स्वामी करत विहारतो ॥ प्रतिबोध्यां
 नविजन घणां, केइ समकित केइ व्रत धारतो ॥ ध० ॥ ५ ॥
 जाणी समय निरवाणनो, स्वामी आव्या हे गढ गीर
 नारतो ॥ दिधी ठेली देशनां, जीव घणांना काम समा
 रतो ॥ ध० ॥ ६ ॥ पंच सया पट तिसमुं, सथारो
 हे किधो सुविसालतो ॥ शोग धरंता सामठा, आया
 इंद्र हे चलि ततकाल तो ॥ ध० ॥ ७ ॥ स्वामी प
 धारया शिवपुरी, जनम जरानो हे प्रनु आणयो अं
 ततो ॥ ज्ञानादिक वर आठसुं, सिद्धगुणे हे सोहे न
 गवंततो ॥ ध० ॥ ८ ॥ संस्कार काया नणि, चंदन
 काठे हे किधोठे तामतो ॥ हाढा लीधी सुरपतिए, सुर
 लोके हे पूजण अजीरामतो ॥ ध० ॥ ९ ॥ द्वीप गया नं
 दिश्वरे, आठ दिवसहे उठव अधिकार तो ॥ हरी पोहता
 निज स्थानके, समरता हे श्री जिन गुण सारतो ॥ ध०
 ॥ १० ॥ श्री गिरनारे जिन तणां, दिख्या नाण हे अ
 ने निरवाणतो ॥ कल्याणीक तिने नलां, ते माटे हे ए
 स्थानक प्रधानतो ॥ ध० ॥ ११ ॥ नेम जिणंद आ
 णंदमें, जय जय हे जिनवर जगदिश तो ॥ रण वि
 नोद वधामणां, पूरवज्योहे श्री सघ जगीसतो ॥ ध० ॥
 ॥ १२ ॥ चंमोत्तर सोमी ढालमें, चारुयो चारुयोहे नि
 रवाण कल्याणतो ॥ मेरु परे जे मोटीको, गुणसागरहे

सूरि साधु सुजाणतो ॥ ध० ॥ १३ ॥

दुहा ॥ पांडव पांच महामुनी, बठी कुंता माय ॥
पंचाली ए सातहिं, तप करी सोखे काय ॥ १ ॥ गुण
आचारे आगलां, दुःकर दुःकर कार ॥ चरम शरीरी
प्राणियां, पुनरपी नही अबतार ॥ २ ॥

ढाल १७५ मी ॥ ते मुनी वंदो ते मुनी वंदो ॥ ए
देशी ॥ मुनिसर पांडव पंच सुहावंदा, सुहावंदारे सु
हावंदा ॥ महामुनीसर कहावंदा, धन आंगणे जि
हां आवंदा, तिहां मोती थाल वधावंदा ॥ मु० ॥ १ ॥ गां
म नगर पुर पाटण विचरे, जवी नरां मन जावदा ॥ ज्ञान
ध्यानसुं तत्व पिबाली, एकांतम समजावंदा ॥ मु० ॥
॥ २ ॥ राग द्वेष दो दूर निवारी, त्रिकर्ण सुध करा
वंदा ॥ च्यार कषाय तजण चतुराङ्ग, इद्री पांच दसावं
दा ॥ मु० ॥ ३ ॥ पिहरीया षट काया केरा, जय सा
ते नवी आणंदा ॥ षट् आठे परीहरी नव विध, सि
यल सदा सुख जाणंदा ॥ मु० ॥ ४ ॥ दसही प्रकारे
धर्म धरंदा, इयारे अंग पठावंदा ॥ वारे व्रत प्र
तीमा पाले, क्रिया तेर तजावंदा ॥ मु० ॥ ५ ॥ च
उदे नेदे जीव विचारी, कोडा कारज सारंदा ॥ जंगम
तिरथ जिवन जगनां, आप तरे पर तारंदा ॥ मु० ॥
॥ ६ ॥ हती कल्पपुर वनमें आया, वहीरण साधु खं
दा वंदा ॥ मोक्ष कल्याणीक नेम तणो सुणी, शेत्रुजे सि
धावंदा ॥ मु० ॥ ७ ॥ अठारे हजार मुनी परीवारे,

सयारो ग्रहवंदा ॥ माताजीसुं पांचे पांडव, केवल
 मोक्ष लहावदा ॥ नृ० ॥ ८ ॥ अवर मुनिश्वर केइ मु
 गति, केइ स्वर्ग वसावंदा ॥ शेष कर्म बाकी सोधन
 ने, सुर सुखनो चित लावंदा ॥ मु० ॥ ९ ॥ पचाली
 पचम सुर लोके, जवही मांही रहावंदा ॥ अणगम
 तो आहार दियाथी, अजुह पार न पावंदा ॥ मु० ॥
 ॥ १० ॥ नारद ऋषी विधी वात करीने, निश्चल मन
 फरसावंदा ॥ पाप पखाली अणसण पाली, शिव गति
 नुं दरसावंदा ॥ मु० ॥ ११ ॥ पंचाहत्तर सोमी ढाले,
 पांरुव शिव पद पावंदा ॥ श्री गुणसागर सुरि उजाग
 र, नागर गुरु गुण गावंदा ॥ मु० ॥ १२ ॥

दुहा ॥ संघ चतुरविध तिर्थमें, शांतिनाथ दातार ॥
 थूलिचद्र आचारमें, मंत्रमें नवकार ॥ १ ॥ मणीमां मणी
 चितामणी, ग्रह गणमें दिनकार ॥ श्री गौतम गुरु गणध
 रा, तरुमें सुरतरु सार ॥ २ ॥ सुर मांही जिम सुरप
 ती, नरमें नरपती जेम ॥ वसामें हरी वंसजी, वि
 श्व वदीतो तेम ॥ ३ ॥

ढाल १७६ मी ॥ श्रेणीक राय हुंरे अनाथी निग्रंथ
 ॥ ए देशी ॥ में गायो श्रीहरी वंश उदार, सरीयारे
 मन वंगित काज ॥ में० ॥ पामी परसंसा खरी, अधि
 काइरे उपनी आज ॥ में० ॥ १ ॥ वारे दसमां जिन
 तणे, वंस ए उत्तपन ॥ में० ॥ विस्तरी शाखा घणी,
 काइ हुवारे बहु पुरुप रतन ॥ में० ॥ २ ॥ अपर ना

स सोहामणो, नृप यदुथी जोय ॥ में० ॥ राय यादव
 राजीया, कांइ पुहवीरे परसिद्धा सोय ॥ में० ॥ ३ ॥
 विसमोवली बावीसमो, ए वंशे जिणंद ॥ में० ॥ उपजीया
 आणंद, कांइ आयारे तिहां चोसठ इंद्र ॥ में० ॥ ४ ॥
 कृष्णने बलदेवजी, वंसमें अवतंस ॥ में० ॥ वासी न
 गरी द्वारीकां, काइ किधोरे आर कुल विध्वंस ॥ में० ॥
 ॥ ५ ॥ मात फूइयाए जाइ जला, धर्म नंदने जिम ॥
 ॥ में० ॥ शक्र सुत शोजा धरी, कांइ प्रौढीरे पौरखनी
 जिम ॥ में० ॥ ६ ॥ संब अने परजुननां, बल तणो
 नही पार ॥ में० ॥ एक एकाथी वमां, कांइ अगणीत
 रे हरी वंश कुमार ॥ में० ॥ ७ ॥ इंद्रनगरी द्वारीकां,
 द्वारीकां पिण सोय ॥ में० ॥ उपमा सरखी सही, कां
 इ अंतररे न दिसे कोय ॥ में० ॥ ८ ॥ नित हरख वि
 नोदमें, नित हरख विलास ॥ में० ॥ द्वारीकां नगरी
 तणो, कांइ नितकोरे वधतोरे वास ॥ में० ॥ ९ ॥
 नित्य सुत जनमोहवुं, नित्य सुत निसाल ॥ में० ॥ नि
 त्य सुत परणेतना, कांइ करीएरे घर घर कल्याण ॥
 में० ॥ १० ॥ खेल खेलनांतो खरा, घुघराना घमकारन
 में० ॥ धोक धपमप मांदला, कांइ वाजेरे वाजींत्र अ
 पार ॥ में० ॥ ११ ॥ किजीए जिन सेवनां, साधु जाग
 ती अपार ॥ में० ॥ जली जावे जावनां, कांइ नाविया
 रे जल जाव उदार ॥ में० ॥ १२ ॥ प्रघल जाव प्र
 जावनां, परम पुण्य प्रकाश ॥ में० ॥ श्रीफलां श्री

कागणी, कांइ पुगिरे पुगी मन आश ॥ में० ॥ १३ ॥
 नारी निती शोचती, पहेरीयां पटकूल ॥ में० ॥ तनु
 सोल शिणगार करी, काइ बोलेरे मुख मीठा बोल ॥
 में० ॥ १४ ॥ रंगरोल कचोलना, थाले मोती सार ॥
 में० ॥ करे सुगुरु वधामणा, कांइ वरतेरे जिनमतनी
 वार ॥ में० ॥ १५ ॥ आज अठे दिवालिका, नारी जा
 क ऊमाल ॥ में० ॥ आज परव पंजूसणां, कांइ किजे
 रे उठव सुविसाल ॥ में० ॥ १६ ॥ मीले साहमी सा
 मटा, साहमीणी सुविचार ॥ में० ॥ धवल मंगल चा
 रसुं, काइ जन जनरे जय जयकार ॥ में० ॥ १७ ॥
 गठ स्वगठ परिभाणसु, विजयवत विशेष ॥ में० ॥
 श्री विजय गठ राजीया, कांइ दिपेरे गुरु धर्म नरेश
 ॥ में० ॥ १८ ॥ विजयऋषी विद्यावली, धर्मदास मु
 निश ॥ में० ॥ क्लमासागर खेमजी, काइ जेहनिरे ज
 गमांहि जगिश ॥ में० ॥ १९ ॥ श्री पद्मसागर सूरिजी,
 सुजस सुजस नरपूर ॥ में० ॥ पाय प्रणमी श्रीगुरु त
 णां. काइ पन्नणेरे गुणसागर सूरि ॥ में० ॥ २० ॥ स
 मंत सोल वहोत्तरे, मास श्रावण शुद्ध ॥ तिज सोम सु
 सुहूरतां, कांइ वासररे वारु अविरुद्ध ॥ में० ॥ २१ ॥
 कुर्कटश्वर नगरमें, पार्थ्व स्वामी पसाय ॥ संघने उठ
 कपणे, कांइ रचियोरे मे चरित सुजाय ॥ में ॥ २२ ॥
 ढालसागर नाम ए, श्री हरिवंसनो विस्तार ॥ शुद्ध
 चावे सांजले, कांइ पामेरे सुख संपत्ति सार ॥ में० ॥

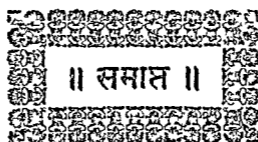
॥ २३ ॥ एकसो बहुतरे ए, ढालनो सोजाग ॥ आदे
तो आशावरी, कांइ अंतरे धन्याश्री राग ॥ में० ॥

॥ २४ ॥ जब लगे गिरी मेरुजी, सकल गिरीवर इश
॥ तब लगे हरीवंस ए, कांइ थाज्योरे थीर विश्वा
विस ॥ में० ॥ २५ ॥

कलश ॥ हरिवंस गायो सुजस पायो, ज्ञान बुद्धि
प्रकाशनो ॥ पाप त्राठो गयो नाठो, पुण्य आयो आशनो

॥ १ ॥ कर्ण पुत्र कलत्र कमला, पढत सुणत सोहाम
णो, पुज्य श्री गुणसूरि जंपे, संवरंग वधामणो ॥ २ ॥

॥ इति हरिवंस ढालसागर खंड ९ ढाळा १७६ समाप्तः ॥



जैन धर्म संबंधी ढापेला पुस्तकोनुं सूचीपत्र.

- १ अजना सतीको रास २२ ढाळालो किमत ३ आना
- २ स्तवन सजाय सग्रह जाग विजो किमत ४ आना.
- ३ अनुपूर्वीकी पोथी कपडाका कवहर वाली किमत १ आना
- ४ सिद्धचक्र जगवानको मढल पाटो किमत २ आना.
- ५ श्री चोविस तीर्थकराका दरसणकी पोथी किमत ६ आना.
- ६ आनंद घनजी कृत चोवीसी स्तवन किमत १॥ आना.
- ७ देवचद्रजी कृत चोवीसी स्तवन किमत १॥ आना
- ८ आणुपूर्वी साधी किमत अर्धा आना
- ९ जैन चैत्य वदन सग्रह किमत ३ आना.
- १० जैन थोथो (जिन स्तुती) सग्रह किमत २॥ आना.
- ११ बृहदालोयणा किमत १॥ आना.

